औ़रतों के लिये
तरबियती बयानात
हज़रत मौलाना पीर
ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी
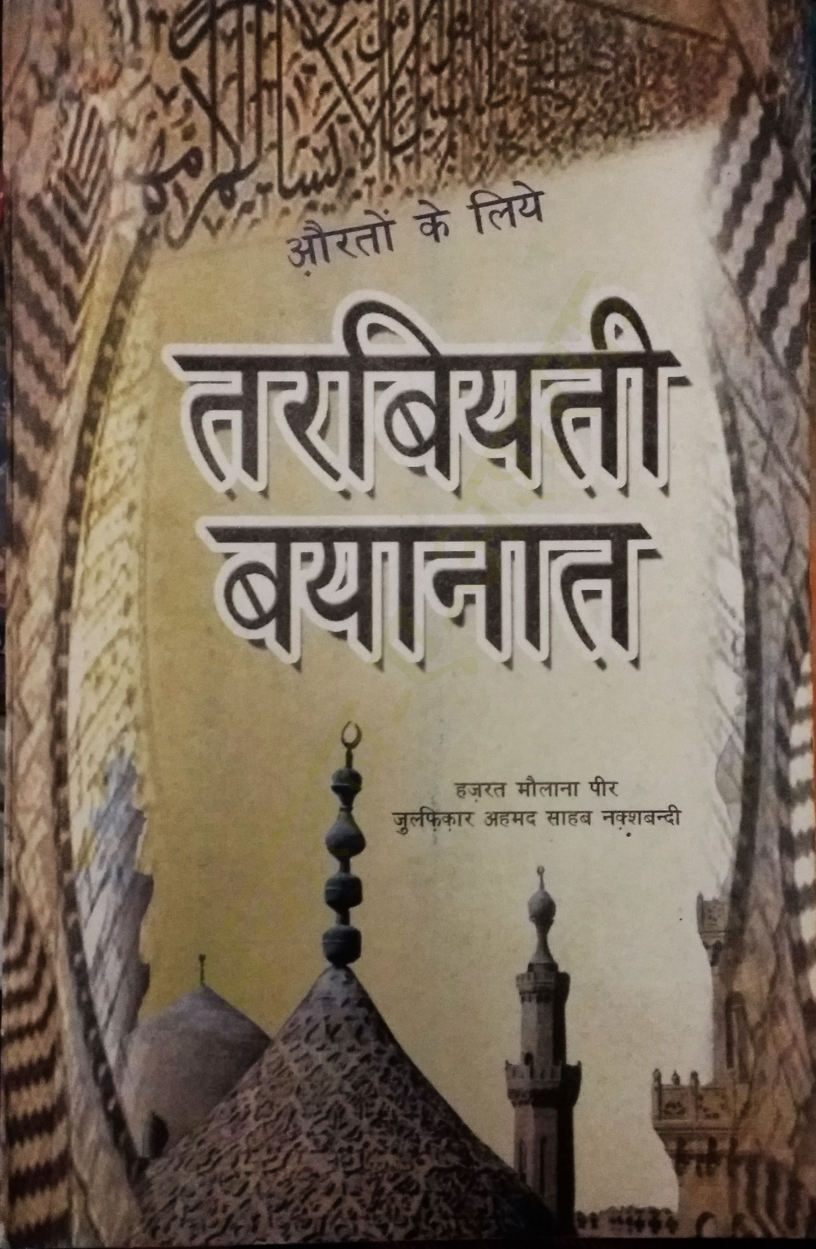
औ़रतों के लिये
तरबियती बयानात

तक़रीरें

हज़रत मौलाना पीर ज़ुल्-फ़क़ार अहमद साहिब

हिन्दी अनुवादः मुहम्मद इमरान क़ासमी

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज

नई दिल्ली-110002

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	तरबियती बयानात
तक़रीरें	मौलाना पीर ज़ुल्-फ़क़ार साहिब
हिन्दी अनुवाद	मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	2100
प्रकाशन वर्ष	2012
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-2442408)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज, नई देहली-110002

फ़ोन आफ़िस, 23289786, 23289159 आवास, 23280786

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

इस्लाम में औ़रत का मक़ाम

गुनाहों से बचिये अल्लाह का प्यारा बनिये

आख़िरत के सफ़र की तैयारी

प्रकाशक की ओर से

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

आपके हाथों में मौजूद किताब नेकियों के मौसमे-बहार रमज़ान मुबारक की मुबारक फ़िज़ाओं में दक्षिण अफ़्रीक़ा के तब्लीग़ी सफ़र में दुनिया-ए-इस्लाम के रूहानी पेशवा इस्लामी विद्वान हज़रत मौलाना हाफ़िज़ ज़ुल्-फ़क़ार अहमद नक़्शबन्दी मुजद्दिदी बरकातुहुम के बयानात का मजमूआ है।

हमारे हज़रते अक़्दस दामत बरकातुहुम के दिल में हर वक़्त यही कुढ़न रहती है कि हमारी आज की औरत अपने नेक बुज़ुर्गों के किरदार (चरित्र) और ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े से ख़ूब वाक़िफ़ हो। हदीस शरीफ़ में है:

दुनिया पूरे तौर पर ज़िन्दगी का सरमाया है और दुनिया का सबसे अच्छा सरमाया नेक औरत है। (मुस्लिम शरीफ़)

अल्हम्दु लिल्लाह यह किताब ऐसा हसीन गुलदस्ता है जिसमें औरतों की कामयाब ज़िन्दगी के राज़, औरतों की बेमिसाल ज़िन्दगी की मुकम्मल रहनुमाई, तालीम व तरबियत, शौहर को दीनदार बनाना, नेक

बीवी की सिफ़ात, घरेलू झगड़ों से निजात के लिये चन्द ज़रूरी मश्विरे, आख़िरत की दिलचस्पी पैदा करने और वहाँ के अ़ज़ाबों से डराने के लिये, जन्नत के नज़ारे और जहन्नम के दहकते हुए अंगारे, दुनिया के घर को जन्नत जैसा बनाने के लिये आसान नुस्ख़े मौजूद हैं।

एक अहम पहलू बच्चे की तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) में माँ का किरदार (भूमिका) बुनियादी हैसियत का हामिल है। हज़रत जी दामत बरकातुहुम का यह उम्मत पर एहसान है कि आपने सोज़े-जिगर से अनगिनत किताबों के मुताले (अध्यन) और अ़मली तर्जुबात के बाद हमें ऐसे मज़ामीन और क़ीमती बातों से नवाज़ा जो हमारी ज़िन्दगियों को ख़ूबसूरत बनाने के लिये एक अनमोल तोहफ़ा है।

प्रकाशक

कलिमाते-फ़क़ीर

हज़रत मौलाना सैयद अ़ब्दुल-वहाब शाह बुख़ारी नक़्शबन्दी

ख़लीफ़ा हज़रत मौलाना पीर हाफ़िज़ ज़ुल्-फ़क़ार अहमद नक़्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातुहुम

दुनिया में अनेक चीज़ें पाई जाती हैं। किसी चीज़ को देखा जाना ख़ूबी में शुमार किया जाता है और किसी चीज़ को न देखा जाना ख़ूबी शुमार की जाती है। औ़रत की ख़ूबी यह है कि मेहरम के अ़लावा किसी ने उसको न देखा हो। दुनिया का दस्तूर है कि जो चीज़ क़ीमती हो उसकी हिफ़ाज़त की जाती है। और उसको छुपाने की कोशिश की जाती है। इसी तरह औ़रत के बारे में करना चाहिये।

अल्लाह तआ़ला ने औ़रत को जो मक़ाम और रुतबा दिया है, नई-नई चीज़ों के आविशकार, खुराफ़ात और अख़बारों व पत्रिकाओं के ज़रिये औ़रत के उस मक़ाम की शक्ल को बिगाड़ कर पेश करने लिये निन्दनीय कोशिश की जा रही है। इसलिये ऐसी किताब की ज़रूरत थी जो हमारी माँओं बहनों के लिये सही राह दिखाने वाली साबित हो। क्योंकि "दारुल मुताला" बूढ़ों, नौजवानों, बच्चों और औ़रतों सबके दीनी व दुनियावी फ़ायदे के लिये क़ायम किया गया है, इसलिये औ़रतों के लिये यह किताब प्रकाशित की जा रही है ताकि वे इससे फ़ायदा उठा सकें।

इस सिलसिले में हमारे हज़रते अक़्दस मौलाना फ़क़ीर की किताब का इसलिये चयन किया गया है कि इसमें औ़रत के मक़ाम, उसकी ज़िम्मेदारी, उसकी शफ़क़त और उसके लिये अज्र व सवाब को इस अन्दाज़ में पेश किया गया है कि औ़रत के अन्दर अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करने का शौक़ इतना पैदा हो जाता है कि वह अपनी

ज़िम्मेदारी को अच्छे तरीक़े से पूरा करने में ही अपनी सआदत (नेकबख़्ती) समझती है।

बन्दे के पीर व मुर्शिद हज़रत पीर ज़ुल्-फ़क़ार अहमद दामत बरकातुहुम, हज़रत ग़ुलाम हबीब रहमतुल्लाहि अ़लैहि के तरबियत-याफ़्ता हैं जो वाक़ई बहुत बड़े मुर्शिद (बुज़ुर्ग और दीनी रहनुमाई करने वाले) थे।

आपका अक्सर वक़्त विदेशों में अल्लाह की तरफ़ दावत देने (यानी तब्लीग़) में गुज़रता है। मेरे हज़रते अक़्दस जिस मौज़ू (विषय) पर तक़रीर करें बस उसका हक़ अदा कर देते हैं। घर के अक्सर मसाईल (समस्यायें) औ़रत की तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) न होने की वजह से पैदा होते हैं, अगर औ़रत इस्लामी तरबियत के ज़ेवर से आरास्ता (सजी-संवरी) हो तो मसाईल पैदा नहीं होते।

जिस औ़रत ने भी यह किताब पढ़ ली तो हमें यक़ीन है कि इन्शा-अल्लाह उसे बहुत फ़ायदा होगा। अगर औ़रत पढ़ी हुई न हो तो उसको पढ़कर सुनाया जाये। अल्लाह तआ़ला आपको बेहतरीन बदला इनायत फ़रमाये। आमीन।

हम अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त से उम्मीद करते हैं कि इस किताब को हमारे लिये बख़्शिश व निजात और अज्र व सवाब और अपनी रिज़ा (प्रसन्नता) का सबब बनाये और हम डरते हैं कि कहीं यह अ़मल शोहरत व फ़ख़्र की वजह से अल्लाह की नाराज़गी का सबब न बन जाये। क्योंकि:

लाज़िम	है	इनसान	को	रहे	दूर रिया	से
यह	चीज़	जुदा	करती	है	बन्दे को ख़ुदा	से

फ़क़त वस्सलाम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

माँ की मुहब्बत व ममता

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم ٥

الحمد للّٰه و كفٰى وسلام على عباده الّذين اصطفٰى اما بعد!

فَاَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ نَبِّئْ عِبَادِىْ اَنِّىْ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ٥ وَاَنَّ عَذَابِىْ هُوَالْعَذَابُ الْعَظِيْمُ ٥ (سورة الحجر) وقال اللّٰه تعالٰى فى مقام اخر: اِنَّ رَحْمَتِىْ وَسِعَتْ كُلَّ شَىْءٍ (سورة الاعراف) وقال اللّٰه تعالٰى فى مقام اخر: اِنَّ رَحْمَةَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ٥ (سورة الاعراف) وقال اللّٰه تعالٰى: كنتُ كنزًا مخفيًا واحببتُ ان اعرف وخَلقتُ الخلق.

سبحٰن ربك رب العزة عما يصفون٥ وسلام على المرسلين ٥ والحمد للّٰه رب العالمين ٥ اللّٰهم صل علٰى سيّدنا محمد وعلٰى ال سيدنا محمد وبارك وسلم.

मुहब्बत की कारफ़रमाई

हदीसे-कुदसी में अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

كنتُ كنزًا مخفيًا واحببتُ ان اعرف وخلقتُ الخلق.

मैं एक छुपा हुआ ख़ज़ाना था। मैंने पसन्द किया कि मैं पहचाना जाऊँ। पस मैंने मख़्लूक़ को पैदा कर दिया।

मख़्लूक़ के पैदा होने का बुनियादी सबब यह रहा कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त को यह बात पसन्द आयी कि लोग मेरी मारिफ़त (पहचान) हासिल करें। मेरी बड़ाईयों से वाक़िफ़ हों। चूँकि मख़्लूक़ की पैदाईश का सबब मुहब्बत बनी इसलिए हमारे बड़े मुहब्बत को पहला दर्जा देते हैं।

मुहब्बत की तक़सीम

यह मुहब्बत अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने अपनी सारी मख़्लूक़ में तक़सीम फ़रमाई। हर मख़्लूक़ ने अपनी-अपनी क्षमता और सलाहियत के मुताबिक़ उसमें से हिस्सा पाया। यह मुहब्बत जानदार चीज़ों को भी मिली और जो ग़ैर-जानदार हैं उनको भी मिली। पूरी दुनिया में मुहब्बत का राज है। आपने देखा होगा कि लोहा मक़नातीस की तरफ़ बेइख़्तियार खिंचता है। यह चीज़ों में मुहब्बत की दलील है। जो भी चीज़ ऊपर से फेंकें वह ज़मीन पर गिरती है। यह जमादात (बेजान चीज़ों) में मुहब्बत की दलील है। परिन्दों ने हिस्सा पाया, जानवरों ने हिस्सा पाया, इनसानों ने हिस्सा पाया, मिल-जुलकर रहना था। अगर दिलों में कोई ताल्लुक़ ही न होता, लोग एक दूसरे से अजनबी होते, एक की तकलीफ़ का दूसरा एहसास ही न करता, कोई किसी के साथ हमदर्दी न करता तो यह ज़िन्दगी इनसान के लिए गुज़ारनी मुश्किल हो जाती।

औलाद की मुहब्बत माँ-बाप से

इस मुहब्बत के नमूने आपको घर-घर में देखने को मिलते हैं। हर बेटी को बाप से मुहब्बत होती है। बाप बीमार है, बेटी सारी रात पास कुर्सी पर बैठी जाग रही है, कि मेरे अब्बू आँख खोलेंगे तो मैं उन्हें दवाई पेश करूँगी। खाने को कुछ माँगेंगे तो मैं खाना हाज़िर करूँगी। वह अपने आपको अपने बाप की बाँदी (ख़ादिमा, सेविका) समझती है। और इस रात भर की तकलीफ़ उठाने को वह अपना फ़र्ज़ और ज़िम्मेदारी समझती है। बल्कि बहुत सी बार तो उसके दिल से दुआयें निकलती हैं कि मैं बीमार हो जाती, अल्लाह तआला मेरे अब्बू को शिफ़ा अता कर देते। यह उस मुहब्बत की वजह से है जो अल्लाह ने बेटी के दिल में बाप के लिये डाल दी है।

माँ-बाप की मुहब्बत औलाद से

वालिद (बाप) की मुहब्बत जिस तरह बेटी के दिल में है उसी तरह बेटी की मुहब्बत अल्लाह तआला ने वालिद (बाप) के दिल में डाली। इसका मन्ज़र (दृश्य) आप उस वक़्त देखा करें जब किसी जवान बच्ची को घर से रुख़्सत किया जा रहा होता है। उसका बाप अपनी कमाई का अधिकतर हिस्सा उसके दहेज पर ख़र्च कर देता है। और जब यह रुख़्सत हो रही होती है तो बाप की आँखों से आँसू जारी होते हैं। देखने से तो उसका बोझ कम हो रहा है, उसके सर से एक फ़रीज़ा अदा हो रहा है, लेकिन वह समझता है कि यह मेरे जिगर का टुक्ड़ा है। मैंने इतनी मुहब्बतों से पाला। मालूम नहीं आगे इसकी ज़िन्दगी कैसी होगी। हमने बेटी और बाप को ऐसे लिपट कर रोते देखा कि शायद लोग किसी की मौत पर भी इतना न रोते हों। तो जुदाई के वक़्त बाप और बेटी का रोना इस मुहब्बत की दलील है।

भाई और बहन की मुहब्बत

भाई और बहन के दिल में अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने मुहब्बत डाली। परदेस में बहन है। अपने बच्चों के साथ ख़ाविन्द (शौहर) के साथ ख़ुशियों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रही है। जब उसको फ़ोन पर ख़बर मिलेगी कि भाई बीमार है और अस्पताल में दाख़िल है, उसे चैन नहीं आयेगा, उसे खाना अच्छा नहीं लगेगा। नफ़्लें पढ़कर दुआयें मांगेंगी। रातों को जाग-जागकर दुआयें माँगेगी। ख़ैर की ख़बर सुनने के लिए हर वक़्त उसके कान मुन्तज़िर होंगे। ऐसी मुहब्बत होती है बहन के दिल में कि वह अपने बच्चों को भी भाई की बात समझाती है तो उसको चन्दा-मामूँ कहती है। उसकी नज़र में भाई जैसा भी है मगर चाँद से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत है। ये मुहब्बतें इस ज़िन्दगी के गुज़ारने के लिए बुनियादी ज़रूरत थीं।

मियाँ-बीवी की मुहब्बत

मियाँ-बीवी की मुहब्बत की कई मिसालें आपके सामने हैं। तकलीफ़ एक को होती है महसूस दूसरा कर रहा होता है। बस नहीं चलता कि किस तरह दूसरे को ऐसी दवा दी जाये कि वह सेहतमन्द (स्वस्थ) हो जाये। शौहर समझता है कि बीवी का ग़म मेरा ग़म है और बीवी की ख़ुशी मेरी ख़ुशी है। बीवी को देखा कि शौहर के कारोबार पर कोई बुरा वक़्त आ जाये तो अपने घर में शहज़ादी की तरह यह पली थी, मगर शौहर के घर में ग़ुरबत को बरदाश्त करेगी। दूसरे पूछें भी सही तू कैसी है? तो अपने भाई और बाप को भी बताना पसन्द नहीं करेगी। समझेगी कि यह अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की तरफ़ से है। जब शौहर मुझसे मुहब्बत करता है तो अब मेरे लिए हर तकलीफ़ को बरदाश्त करना आसान है।

औलाद और माँ-बाप की मुहब्बत

इसी तरह औलाद और माँ-बाप के दरमियान मुहब्बत होती है। हर बाप को अपनी औलाद के ऊपर शफ़क़त हासिल है। वह औलाद की हिफ़ाज़त करता है। घर में बच्चे अगर भूखे हों तो वह पसीना बहाता है। रातों को जाग-जागकर पहरा देता है। एक वक़्त में दो-दो जगह नौकरियाँ करता है। हालाँकि वह इतना कमा चुका कि वह अच्छी रोटी खा सकता है, लेकिन उसके सामने तो बच्चों की ज़रूरतें होती हैं, बाप अपने मुँह में कुछ नहीं डालेगा, अपने बच्चों के मुँह में ज़रूर डालेगा। यह मुहब्बत है जो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने औलाद के लिये बाप के दिल में रख दी।

माँ की मुहब्बत

रह गयी बात माँ की मुहब्बत की तो माँ की ममता की तो मिसाल दी जाती है। माँ की मुहब्बत वह गहरा समन्दर है कि जिसकी

गहराईयों को आज तक कोई नहीं नाप सका। माँ की मुहब्बत वह हिमालये पहाड़ है कि जिसकी बुलन्दियों को आज तक कोई नहीं छू सका। माँ की मुहब्बत वह सदाबहार फूल है जिस पर कभी ख़िज़ाँ नहीं आती। माँ तो औलाद पर कुरबान हुई जाती है। और यह सिर्फ़ इनसानों में नहीं बल्कि परिन्दों में देख लीजिये, चिड़िया एक नन्ही सी जान है। गर्मी के मौसम में उड़कर जाती है और पसीना-पसीना होती है मगर चोंच में पानी लाकर अपने बच्चों को पिलाती है। उसकी अपनी चोंच में पानी था, प्यास लगी हुई थी, यह खुद पी सकती थी, मगर पीती नहीं कि उसके बच्चे प्यासे हैं। छोटी सी जान में देखो अपने बच्चों से कैसी मुहब्बत है।

चिड़िया की फ़रियाद

एक साहबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो रहे थे। एक दरख़्त पर उन्होंने एक घौंसला देखा जिसमें छोटे-छोटे बच्चे थे। चिड़िया कहीं गयी हुई थी। उनको वे प्यारे लगे, अच्छे लगे, उनको उन्होंने उठा लिया। थोड़ी देर बाद चिड़िया आ गयी। उसने उनके सर पर चहचहाना शुरू कर दिया। वह उनके सर पर उड़ती रही चहचहाती रही। वह सहाबी समझ न पाये। आख़िरकार थक कर चिड़िया उनके कन्धे पर बैठ गयी। उन्होंने उसको भी पकड़ लिया। नबी अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में आकर पेश किया। ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! ये बच्चे कितने प्यारे ख़ूबसूरत हैं। और वाक़िआ भी सारा सुनाया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बात समझायी कि माँ के दिल में बच्चों की इतनी मुहब्बत थी कि पहले तो यह तुम्हारे सर पर उड़ती रही, फ़रियाद करती रही कि मेरे बच्चों को आज़ाद कर दो। मैं माँ हूँ मुझे बच्चों से जुदा न करो। मगर आप समझ न सके तो इस नन्हीं सी जान ने यह फ़ैसला किया कि मैं बच्चों के बग़ैर तो रह नहीं सकती, मैं

इस आज़ादी का क्या करूँगी कि मैं बच्चों से जुदा हूँ। इसलिए तुम्हारे कन्धे पर आकर बैठ गयी। अगरचे मैं क़ैद हो जाऊँगी मगर बच्चों के तो साथ रहूँगी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि इनको वापस इनकी जगह छोड़ आओ।

मुर्ग़ी की ममता

आपने मुर्ग़ी को देखा होगा। छोटे-छोटे बच्चे होते हैं। अगर कभी बिल्ली क़रीब आने लगे तो यह मुर्ग़ी उन बच्चों को अपने पीछे कर लेती है और बिल्ली के सामने डटकर खड़ी हो जाती है। मुर्ग़ी को पता है कि मैं बिल्ली का मुक़ाबला नहीं कर सकती, मगर उसको यह भी पता है कि मैं अपनी आँखों के सामने अपने बच्चों को बिल्ली का लुक़्मा बनते देख नहीं सकती। उसकी मुहब्बत बरदाश्त नहीं करती, उसकी ममता बरदाश्त नहीं करती। वह समझती है कि बिल्ली पहले मेरी जान लेगी और मेरे बाद मेरे बच्चों को हाथ लगायेगी। माँ के दिल की मुहब्बत का अन्दाज़ा लगाईये। इनसान तो आख़िरकार इनसान है, अ़क़्ल, समझ और दानिश रखने वाला है।

यह एक बड़ी नेमत है

एक औ़रत के दिल में बच्चे की कितनी मुहब्बत होती है इसका कोई अन्दाज़ा नहीं लगा सकता। जवान बच्चियाँ इस बात को नहीं समझ सकतीं। जब तक वे ज़िन्दगी के उस हिस्से तक न पहुँचें। जब खुद माँ बनेंगी तब महसूस होगा कि माँ की मुहब्बत क्या चीज़ है। यह अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने माँ के दिल में रख दी। क्योंकि उसे परवरिश करनी थी, उसे बच्चों को पालना था। माँ के दिल में ऐसी मुहब्बत है कि बच्चों को हर मामले में अपने ऊपर तरजीह देती है।

एक बच्ची जिसकी शादी को चन्द साल हो गये, औलाद नहीं हो रही। अपने घर में ग़मगीन बैठी मुसल्ले पर रो रही है, दुआ़यें माँग

रही है: ऐ अल्लाह! मुझे औलाद अ़ता फ़रमा दे। अगर कोई इस बच्ची से पूछे कि तुम्हें अल्लाह ने हुस्न व जमाल और सुन्दरता अ़ता फ़रमायी है, अच्छी तालीम अ़ता की, मुहब्बत करने वाला शौहर अ़ता किया, माल व दौलत के ढेर अ़ता किये। दुनिया की इ़ज़्ज़तें अ़ता कीं। हर नेमत तुम्हारे पास मौजूद है। क्यों परेशान हो? वह जवाब देगी कि एक नेमत ऐसी है जो सबसे बड़ी है। मैं अल्लाह से वह माँग रही हूँ।

यह हज पर जायेगी तो तवाफ़े-काबा के बाद औलाद की दुआ़र्यें करेगी। 'मक़ामे इब्राहीम' पर सज्दे करेगी तो औलाद की दुआ़र्यें करेगी। काबा के 'ग़िलाफ़' को पकड़ेगी तो औलाद की दुआ़र्यें करेगी। तहज्जुद की नमाज़ पढ़ेगी तो औलाद की दुआ़र्यें करेगी। कभी शबे-क़द्र में जागना नसीब हो तो औलाद की दुआ़र्यें क़रेगी। किसी नेक बुजुर्ग की महफ़िल में जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ तो औलाद की दुआ़र्यें करेगी। आख़िर यह कैसी नेमत है। जिसकी वजह से मग़मूम है, परेशान है।

हालाँकि बच्ची जानती है कि जब मैं माँ बनने लगूँगी तो नौ महीने का समय मेरी बीमारी में गुज़रेगा। न मेरा दिल कुछ खाने को चाहेगा। जो खाऊँगी कई बार वह भी बाहर निकल आयेगा। मुझे भूख बरदाश्त करनी पड़ेगी। बीमारों जैसी ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ेगी। मगर उसके दिल में ऐसी मुहब्बत होती है कि इस सब को वरदाश्त करने के लिए तैयार होती है।

उसको यह भी पता है कि जब बच्चे की पैदाईश का वक़्त आता है तो औ़रत को इस क़द्र तकलीफ़ होती है कि उसकी ज़िन्दगी और मौत का मसला होता है। बच्चा अपंग भी हो सकता है, माँ की मौत भी हो सकती है। लेकिन इस सबके बावजूद इस मशक़्क़त को उठाने के लिए तैयार है।

उसे यह भी पता है कि जब बच्चा हो जायेगा तो दो साल के लिए मुझे रातों को सोने का मौक़ा नहीं मिलेगा। मैं सारा दिन बच्चे के काम करूँगी और रात को भी बच्चे की ख़ातिर जागूँगी।

उसको अपनी बेआराम और नींद से ख़ाली रातों का पता होता है। उसको यह भी मालूम है कि मुझे बच्चे की ख़िदमत चन्द घन्टे नहीं बल्कि चौबीस घन्टे करनी पड़ेगी। मगर उसकी वह ख़ादिमा बनने के लिए तैयार है। आख़िर क्यों? इसलिये कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने उसके दिल में औलाद की मुहब्बत डाल दी। डॉक्टरों को चेकअप करायेगी। किसी से पढ़ने का अमल लेगी। रात की तन्हाईयों में कुरआन पढ़-पढ़कर अल्लाह से माँगेगी। आख़िर यह क्या है? यह औलाद की मुहब्बत है।

पैदाईश के बाद माँ की तवज्जोह का केन्द्र

जब बच्चे की पैदाईश होती है तो माँ की ज़िन्दगी में तब्दीली आ जाती है। यह बेचारी अपने आपको भूल जाती है। हर वक़्त बच्चे की फ़िक्र लगी है। कभी उसे दूध पिला रही है, कभी सुला रही है, कभी पहना रही है, कभी बहला रही है, हर वक़्त उसकी सोचें बच्चे के बारे में, हर वक़्त उसकी फ़िक्र बच्चे के बारे में, यह बच्चे को ख़ुश देखकर ख़ुश हो जाती है और बच्चे को दुखी देखकर ग़मगीन हो जाती है।

बच्चे की पैदाईश के बाद मुहब्बतों के पैमाने (मानदंड) बदल गये। उसका कोई क़रीबी रिश्तेदार बच्चे को प्यार न करे तो यह उसे अपना नहीं ग़ैर समझेगी। और अगर कोई ग़ैर औरत उस बच्चे से मुहब्बत का इज़हार करेगी तो यह उसे अपना समझेगी। बच्चे की जुदाई इससे बरदाश्त हो नहीं सकती। कभी अपनी बहन के घर अपने बच्चे को भेज दिया तो थोड़ी देर के बाद फ़ोन करती है कि जल्दी पहुँचा दें। और जब बच्चा इसकी गोद में आता है तो यह समझती है कि सारी दुनिया की ख़ुशियाँ मेरी गोद में आ गईं।

यह क्या चीज़ है? यह बच्चे की मुहब्बत है। जो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने माँ के दिल में डाल दी है।

यह पहले बच्चे को खिलाती है फिर ख़ुद खाती है। पहले बच्चे

को पिलाती है फिर खुद पीती है। पहले बच्चे को सुलाती है बाद में खुद सोती है। सारा दिन इसने काम किया, थकी हुई थी आँखें नींद से भरी हुई थीं, जैसे ही लेटी बच्चे ने रोना शुरू कर दिया। यह बच्चे को उठाकर बैठ जायेगी। अपने आराम को कुरबान कर देगी। अगर बच्चे को उसकी गोद में नींद आ गयी तो वहीं बैठी रहेगी। हरकत भी नहीं करेगी। दिल में यह आयेगा कि मेरी हरकत से बच्चा जाग न जाये।

यह खुद भी थकी हुई थी, जाग रही है, लेकिन बच्चे का जागना इसको गवारा नहीं। यह अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने औलाद की मुहब्बत माँ के दिल में डाल दी है।

आख़िर यह क्या है?

चुनाँचा हमने देखा कि बच्चा जवान हो गया। काम करने बाहर निकला, रात को आने में देर हो गयी। घर के सब लोग अपने वक़्त पर खाना खा लेंगे। एक माँ होगी जो इन्तिज़ार में रहेगी। बेटी भी कहती है अम्मी खाना खा लो, मियाँ भी कहता है कि खाना खा लो। यह कहेगी नहीं! मैं बाद में खाऊँगी। उसके दिल में यह होता है मालूम नहीं मेरे बेटे को खाना मिला होगा या नहीं। जब मैं उसे देखूँगी फिर वह भी खायेगा मैं भी खाऊँगी।

सारे घर के लोग सो जाते हैं। यह माँ बिस्तर पर करवटें बदल रही होती है। कभी दरवाज़े को देखती है कभी फ़ोन की घन्टी सुनने लगती है। मेरे बच्चे का कहीं से पैग़ाम आये। दिल घबराता है उठकर मुसल्ले पर बैठ जाती है। दुपट्टा आसुँओं से तर कर लेती है। अल्लाह मेरे बेटे की हिफ़ाज़त करना, ख़ैरियत से वापस आ जाये।

आख़िर यह क्या है? यह माँ के दिल में औलाद की मुहब्बत है। बल्कि सच्ची बात तो यह है कि दुनिया के सब लोग नेकों से मुहब्बत करते हैं लेकिन माँ एक ऐसी हस्ती है जो बुरी औलाद से भी मुहब्बत करती है। शौहर नाराज़ हो रहा है, तुम्हारे प्यार ने बच्चों को बिगाड़ा

दिया। यह कहेगी यह तो मुक़द्दर था उनका, मैं क्या करूँ। आख़िर मेरा तो बच्चा है।

बाप गुस्से में कह जायेगा बच्चे को कि घर से चले जाओ। माँ कभी अपनी ज़बान से कह नहीं सकती। यह नेक औलाद से भी मुहब्बत करती है और बुरी औलाद से भी मुहब्बत करती है। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने इसके दिल को ममता से भर दिया। यह वह नेमत है जो बाज़ार से नहीं मिल सकती। ममता वह नेमत है जिसकी क़ीमत कोई अदा नहीं कर सकता और उसको माँ के सिवा कोई दूसरा समझ भी नहीं सकता।

माँ की दुआ़ जन्नत की हवा

अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने शरीअ़त में माँ का बहुत बड़ा मक़ाम बना दिया। कहते हैं कि माँ की दुआ़ जन्नत की हवा होती है। जो मुहब्बत की नज़र अपनी माँ के चहरे पर डालता है, अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त एक हज या उमरे का सवाब अ़ता फ़रमा देता है। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने पूछाः जो बार-बार मुहब्बत व अ़क़ीदत से देखे। फ़रमाया जितनी बार देखेगा उतनी बार हज या उमरे का सवाब पायेगा।

इसलिए हमारे बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि माँ के क़दमों को बोसा देना (चूमना) काबे की देहलीज़ को बोसा देने के बराबर है। इसलिए कि माँ के क़दमों पें जन्नत होती है। ख़ुशनसीब है वह इनसान जिसने माँ की दुआ़यें ले लीं। जिसने माँ की ख़िदमत कर ली। माँ के दिल को राज़ी कर लिया।

एक वली (नेक आदमी) की वालिदा (माँ) का इन्तिक़ाल हो गया। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने इल्हाम फ़रमाया (यानी अपनी तरफ़ से उनके दिल में यह बात डाली)। ऐ मेरे प्यारे! जिसकी दुआ़यें तेरी हिफ़ाज़त करती थीं अब वह दुनिया से रुख़सत हो गयी। अब ज़रा संभल कर

ज़िन्दगी गुज़ारना।

माँ की दुआयें औलाद के गिर्द पहरा देती हैं। औलाद को नहीं पता होता, माँ कब-कब कहाँ-कहाँ बैठी दुआयें दे रही होती है। यह बुढ़ापे की वजह से हड्डियों का ढाँचा बन जाये। फिर भी औलाद के लिए रहमत व शफ़क़त का साया होती है। हमेशा औलाद का अच्छा सोचती है। बल्कि औलाद की तरफ़ से तकलीफ़ भी पहुँचे तो जल्दी माफ़ कर देती है।

दुनिया में माँ से ज़्यादा जल्दी माफ़ करने वाला कोई नहीं। अपने बच्चे की तकलीफ़ देख नहीं सकती। इसलिए माँ का हक़ तीन बार बताया चौथी बार बाप का हक़ बताया। इसलिए कि माँ बच्चे की पैदाईश में मशक़्क़त उठाती है और बाप का हिस्सा शहवत (संभोग की इच्छा और कामवासना) के साथ होता है। माँ का नुत्फ़ा गर्भ के ज़्यादा क़रीब होता है कि सीने से आता है। बाप का नुत्फ़ा पुश्त से दूर से आता है इसलिए माँ के दिल में औलाद की मुहब्बत अल्लाह ने ज़्यादा डाली।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के ज़माने की दो औ़रतें

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में दो औ़रतें थीं। वे दोनों अपने छोटे-छोटे एक जैसे बच्चे उठाये हुए जंगल में से गुज़र रही थीं। एक भेड़िया आया और उसने उनमें से एक औ़रत के बच्चे को छीन लिया और भाग गया। थोड़ी देर के बाद उस औ़रत के दिल में यह ख़्याल आया कि यह दूसरी औ़रत का बच्चा मैं ले लूँ। उसने झगड़ा शुरू कर दिया। मामला हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम तक पहुँचा। दोनों अपना हक़ जतलाती हैं। वह कहती है इसके बच्चे को भेड़िया ले गया।

सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया छुरी लाओ मैं इस बच्चे के दो टुक्ड़े करता हूँ और दोनों में आधा-आधा तक़सीम कर देता हूँ।

उनमें से जब एक ने यह फ़ैसला सुना तो वह कहने लगी ठीक है। लेकिन जब दूसरी ने सुना तो रोना शुरू कर दिया। कहने लगी मेरे बच्चे के टुक्ड़े न करो। इस दूसरी औ़रत को दे दो यही पाल लेगी। कम से कम मेरा बच्चा ज़िन्दा तो रहेगा। आप समझ गये कि यह बच्चा इस औ़रत का है। आपने उसे अ़ता फ़रमाया।

यह भी हक़ीक़त है कि माँ कभी बच्चे से खुद तो नाराज़ हो जाती है लेकिन दूसरों को नाराज़ नहीं होने देती। इसलिए अगर बाप डाँट-डपट करे तो माँ से बरदाश्त नहीं होता। वह कहती है कि क्यों उसको इतना डाँटते हैं? यह उस ममता की वजह से है। खुद झिड़की दे लेगी मगर किसी की झिड़की वरदाश्त नहीं होती। यह असल में मुहब्बत है। और इसकी दलील कुरआन मजीद से मिलती है।

सारी मख़्लूक़ के अन्दर जितनी मुहब्बतें हैं, इनसानों को, हैवानों को, चरिन्दों को, परिन्दों को, मछलियों को, कीड़े-मकोड़ों को, सबकी मुहब्बतों को जमा किया जाये तो ये सब मिलकर भी अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की रहमत के सत्तरहवें हिस्से के बराबर नहीं हो सकतीं।

सुनिये और दिल के कानों से सुनिये

अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त को अपनी मख़्लूक़ से इतनी मुहब्बत है कि अल्लाह अपने बन्दों पर हद से ज़्यादा मेहरबान और नर्मी करने वाले हैं। इसी लिए कुरआन मजीद से इसकी गवाही मिलती है। सुनिये और ज़रा दिल के कानों से सुनिये। कुरआन मजीद गवाही दे रहा है। ग़ज़वा-ए-उहुद (उहुद की जंग) में सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से एक भूल हुई।

चन्द सहाबा को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पहाड़ी पर खड़ा किया था। जब फ़तह हुई काफ़िर पीछे हटने लगे तो

ये समझे कि ड्यूटी मुकम्मल हो गयी। ग़लत-फ़हमी की बिना पर नीचे उतर आये। ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे। उन्होंने मौक़ा पाकर पीछे से हमला किया। मुसलमान दोनों तरफ़ से घिर गये और काफ़िरों के दरमियान में आ गये। कई सहाबा शहीद हुए। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भी पत्थर लगा, दाँत मुबारक शहीद हुए। आपके जिस्म से ख़ून निकल आया। आप इस बात पर बहुत ग़मगीन थे। बड़े-बड़े रुतबे वाले सहाबा शहीद हुए थे। और बहुत बड़ी तायदाद तो ज़ख़्मी थी।

सैयदुश्शु-हदा हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु भी शहीद हुए थे। जो नबी अ़लैहिस्सलाम के ग़मगुसार थे। चुनाँचे जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मदीना में आये तो आप ख़ामोश थे। ग़मगीन थे। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से कलाम नहीं कर रहे थे।

अब ज़रा देखिये कुरआन मजीद को अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की यह नाराज़गी पसन्द न आयी। कि यह अपने सहाबा से क्यों नाराज़ हैं। जैसे माँ को बच्चों से किसी की नाराज़गी पसन्द नहीं आती। अल्लाह तआ़ला ने सिफ़ारिश फ़रमा दी। फ़रमायाः

فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ (سورة ال عمران: ۱۵۹)

ऐ मेरे महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! उन्हें माफ फ़रमा दीजिए। उनके लिए आप इस्तिग़फ़ार कीजिए मैं ख़ुद भी उन्हें माफ़ कर दूँगा। और उन्हें मश्विरे में शामिल कर लीजिए।

तो देखो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त मोमिनों की सिफ़ारिश फ़रमाते हैं। अल्लाह तआ़ला को यह बरदाश्त न हुआ कि मेरे महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से क्यों नाराज़ हैं। एक मौक़े पर सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपने एक रिश्तेदार से नाराज़ हुए। उन्होंने हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के

बोहतान के बारे में सच समझ लिया था। ग़लत-फ़हमी दिल में आ गयी थी। सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने दिल में सोचाः मैं हर महीने उनको कुछ पैसे देता हूँ इमदाद के तौर पर, न मैं वह ताल्लुक़ रखूँगा न मैं इमदाद भेजूँगा। रब्बे करीम ने बोहतान लगाने वाले मुनाफ़िक़ों को डाँट पिलाई। जो सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम उनकी बातों में आ गये थे उनको भी फटकार लगाई। खुद डाँट-डपट कर ली मगर सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को नाराज़ न होने दिया। फ़रमायाः

وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ (سورة النور: ۲۲)

उनको चाहिए कि उनको माफ़ करें उनके साथ मुहब्बत का ताल्लुक़ रखें। क्या ये नहीं चाहते कि अल्लाह उनको माफ़ कर दें।

सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जब ये आयतें सुनीं तो आपने दिल से भी माफ़ कर दिया और आईन्दा उनको दोगुना महीना देने का इरादा फ़रमा लिया।

तो सोचने की बात है कि जिस तरह माँ खुद डाँट-डपट कर लेती है। किसी को औलाद को डाँटने का मौक़ा नहीं देती। यूँ लगाता है कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त को भी ईमान वालों के साथ ऐसी ही मुहब्बत है। खुद नाराज़ हो गये, डाँट लिया, लेकिन अपने महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नाराज़गी पसन्द न आयी। उनको फ़रमा दिया कि आप उनको माफ़ फ़रमा दीजिए। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की नाराज़गी पसन्द न आयी। उनको भी समझा दिया कि माफ़ कर दो, क्या तुम नहीं चाहते कि तुम्हें अल्लाह माफ़ कर दे।

सोचने की बात

यहाँ एक नुक्ता समझने का यह है कि जो परवर्दिगार दूसरों की नाराज़गी को बरदाश्त नहीं करता, वह अगर खुद किसी बात पर नाराज़ हो तो उसको कैसे बरदाश्त करेगा कि वह नाराज़ रहे। इसलिए अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की यह चाहत है कि मेरे बन्दे गुनाहों से सच्ची

तौबा करें। मेरे दर पर आकर माफ़ी माँग लें और मैं उनको माफ़ कर दूँ। बच्चा अपनी माँ से जब भी माफ़ी माँगता है माँ जल्दी माफ़ कर देती है। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त तो उससे भी ज़्यादा मोमिन पर मेहरबान हैं। इसलिए अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त से माफ़ी माँगना बहुत आसान है। और ख़ास तौर पर रमज़ान मुबारक के महीने में जो रहमतों का महीना है, परवर्दिगार की रहमतों और मग़फ़िरतों के दरवाज़े खुल जाते हैं। अब तो मग़फ़िरत हासिल करने के लिए बहाने की ज़रूरत है। यह हमारी ख़ुशनसीबी (सौभाग्य) है कि हम रमज़ान मुबारक के आख़िरी दशक में ज़िन्दा हैं। अल्लाह ने हमें सुनहरा मौक़ा दे दिया। अपने गुज़रे हुए गुनाहों पर नादिम और शर्मिन्दा हो जायें। माफ़ी माँग लीजिए। परवर्दिगारे-आ़लम माफ़ फ़रमा देंगे। हमारे सर से गुनाहों का बोझ हट जायेगा। माँ चाहे जितनी भी नाराज़ हो बच्चे की तक्लीफ़ नहीं देख सकती, माफ़ कर देती है।

अल्लाह की रहमत की विशालता

चुनाँचे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक बार एक क़ाफ़िले को देखा। एक माँ परेशान थी उसको अपने सर पर दुपट्टे का होश भी नहीं था। उसका बेटा गुम हो गया था। वह भागी फिर रही थी। लोगों से पूछती थीः किसी ने मेरे बेटे को देखा हो तो मुझे बताओ। यह मन्ज़र भी अ़जीब होता है कि माँ का जिगर का टुक्ड़ा उससे जुदा हो, उस पर क्या गुज़रती है। उसका दिल मछली की तरह तड़प रहा होता है। शब्दों में बयान नहीं कर सकती कि उस पर क्या मुसीबत गुज़रती है। उसकी आँखें तलाश कर रही होती हैं कि मेरा बेटा मुझे नज़र आ जाये।

नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से पूछाः यह माँ अपने बेटे की वजह से परेशान है, अगर इसे इसका बेटा मिल जाये तो क्या यह उसको आग में डाल देगी। सहाबा

रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने कहा ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! कभी नहीं डालेगी। इतनी मुहब्बत है इसको बच्चे से, यह तो गवारा नहीं करेगी। नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिस तरह माँ अपने बच्चे को आग में डालना गवारा नहीं करती इसी तरह अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त भी मोमिन बन्दे को आग में डालना गवारा नहीं करते। तो अल्लाह तआ़ला से माफ़ी माँगनी तो बहुत आसान है। इसलिए कि उनकी मुहब्बत तो सारी दुनिया की माँओं से सत्तर गुना ज़्यादा है।

हदीस पाक में आता है कि एक नौजवान सहाबी थे, उन्होंने अपनी माँ को नाराज़ कर रखा था। कोई तकलीफ़ पहुँचाई थी, नाराज़ होकर धक्का दिया और माँ को चोट आ गयी। तो वह दिल से नाराज़ थीं। अब इन सहाबी की मौत का वक़्त आ गया। आख़िरी वक़्त की कैफ़ियात तारी हैं मगर मौत नहीं आती, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया। इरशाद फ़रमायाः मैं ख़ुद चलता हूँ। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये, सूरतेहाल मालूम की, आपने उनकी वालिदा (माँ) से सिफ़ारिश फ़रमायी कि अपने बेटे को माफ़ कर दे। वह कहने लगी मैं हरगिज़ माफ़ नहीं करूँगी। उसने मुझे इतना दुख दिया इतना सताया कि मैं उसे माफ़ कर ही नहीं सकती।

जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देखा कि यह अपनी बात पर अड़ी हुई है तो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया लाओ आग के लिए लकड़ियाँ इकट्ठी करो। जब उसने यह सुना तो वह पूछने लगी कि लकड़ियाँ क्यों मंगवा रहे हैं? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया आग जलायेंगे और तुम्हारे बेटे को उस आग में डालेंगे। तू उससे राज़ी जो नहीं हो रही। उसने जैसे ही यह सुना दिल मोम हो गया। कहने लगी ऐ अल्लाह के नबी! मेरे बेटे को आग में न डालिये मैंने अपने बेटे की ग़लतियों को माफ़ कर दिया।

तो जब माँ नहीं चाहती कि बेटा आग में जाये तो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त कैसे चाहेंगे कि उसके मोमिन बन्दे जहन्नम में जायें। माँ ने जितनी भी तकलीफ़ें उठायी हों आख़िरकार माँ, माँ होती है। मुहब्बत के हाथों मजबूर होती है।

एक सबक़ लेने वाला सच्चा वक़िआ़

आपकी ख़िदमत में एक सच्चा वाक़िआ़ पेश कर दूँ। एक नौजवान की शादी हुई उसको बीवी से बहुत प्यार था। और बीवी की तबीयत कामचोर थी। वह उस नौजवान के माँ-बाप की ख़िदमत को बोझ समझती थी। कुछ अ़रसे के बाद उसने देखा कि शौहर तो मुझसे बहुत प्यार करता है, तो वह अपने शौहर से नाराज़-नाराज़ रहने लगी। जवानी थी शौहर से बरदाश्त न हुआ, उसने पूछा क्या बात है? कहने लगी मैं तुम्हारे साथ ठीक रहूँगी जब तुम यहाँ से मुझे मेरे घर वापस ले जाओ और मेरे साथ वहीं पर तुम भी रहो। मैं आपके साथ तो खुश रह सकती हूँ इन बूढ़ों की ख़िदमत करना पड़ती है। यह मुझसे नहीं हो सकता।

अब वह नौजवान ऐसा था कि उसने बीवी की बात को मान लिया। बूढ़े माँ-बाप को छोड़कर आख़िरकार दूसरे शहर में जाकर घर ले लिया। माँ-बाप ने बहुत समझाया कि बेटा तेरे सिवा हमारा कोई नहीं, मगर बच्चे के कान में जूँ भी न रेंगी। वह अपनी बीवी के साथ दूसरे शहर में ऐश व आराम के साथ ज़िन्दगी गुज़ारता रहा। आख़िरकार उसको सऊदी अ़रब जाने का मौक़ा मिल गया। नौकरी अच्छी थी। यह वहाँ चला गया। पैसे ज़्यादा आ गये, बीवी को शानदार मकान बनाकर दे दिया। सारा ख़र्चा बीवी के लिए भेजा, अपने माँ-बाप से उसने कोई राबता (संपर्क और ताल्लुक़) न रखा। बीवी कहती थी कि अगर उनसे राबता करोगे तो मैं राबता तोड़ लूँगी। मुहब्बत के हाथों मजबूर होकर उसने यह करतूत की कि अपने बूढ़े माँ-बाप को

उसने नज़र-अन्दाज़ कर दिया। इसी तरह कई साल गुज़र गये।

एक बार यह तवाफ़ कर रहा था, एक बुज़ुर्ग भी तवाफ़ कर रहे थे। तवाफ़ के बाद उन बुज़ुर्ग के पास आया, कहने लगा! मैं जब से यहाँ आया हूँ बारह साल मैं मैंने बारह हज किए सैकड़ों उमरे किए लेकिन मेरे दिल पर कोई ताला लगा हुआ है। मेरे दिल पर अंधेरी छाई हुई है, न इबादत को जी चाहता है न किसी और काम को, मालूम नहीं मैं क्यों ऐसा हूँ। उन बुज़ुर्ग ने पूछा कि तूने किसी के दिल को दुख तो नहीं दिया? जब उसको माँ-बाप की याद आयी। कहने लगा हाँ! मैं बूढ़े माँ-बाप को छोड़कर यहाँ आया। और मैं समझा कि मेरे हजों और उमरों से वह सारा गुनाह धुल जायेगा।

उन्होंने फ़रमाया कि और हज करने की ज़रूरत नहीं, जाओ और अपने माँ-बाप से पहले माफ़ी माँगो। चुनाँचे टिकट बनवाकर यह अपने मुल्क वापस आया। अपने माँ-बाप के गाँव में गया, बारह साल गुज़र चुके थे। कुछ पता नहीं था कि उसके माँ-बाप के साथ क्या गुज़री।

उस बस्ती के किनारे पर एक आदमी मिला, इसने डरते- डरते माँ-बाप के बारे में पूछा। उसने असको न पहचाना और यह बताया कि उनका एक जवान बेटा था जो उनको छोड़कर बीवी के लिए चला गया। वह मियाँ-बीवी बूढ़े थे। बहुत तंगी की ज़िन्दगी उन्होंने गुज़ारी, आख़िरकार एक वक़्त आया कि शौहर भी फ़ोत हो गया, अब बेचारी माँ घर में अकेली रह गयी। पड़ोसियों ने तरस खाया तो उन्होंने रोटी भेज दी। न भेजी तो उसने अल्लाह का शुक्र अदा कर लिया। सब्र कर लिया। फिर उस औरत को फ़ालिज हो गया। अब सुना है कि चन्द दिनों से उसकी आँखों की बीनाई (रोशनी) चली गयी है। बुढ़ापे की वजह से अन्धी हो चुकी है। फ़ालिज का शिकार है। लेकिन पता नहीं कोई बात है कि अक्सर दुआयें माँगती रहती है और किसी को याद करती रहती है।

यह अपने घर में गया, दरवाज़ा खोलकर देखा, माँ बिस्तर पर लेटी हुई थी। हड्डियों का ढाँचा बन चुकी थी। सोच रहा था कि मैंने माँ को इतना सताया यह मुझे कहेगी दफ़ा हो जाओ, मैं तुम्हें कभी माफ़ नहीं कर सकती, लेकिन जब उसके पाँवों की अहट माँ ने सुनी तो पूछने लगी कौन है? उसने बताया मैं आपका बेटा हूँ। माँ की आँखों में आँसू आ गये। बेटे तूने बहुत इन्तिज़ार करवाया, मैं इस घर में अकेली मुसीबतों की मारी लेटी हूँ। दिल की आख़िरी तमन्ना थी कि तुम आ जाते, मैं तुम्हारी शक्ल नहीं देख सकती, तुम्हारी आवाज़ तो सुन सकती हूँ। बेटे तुम्हारा चेहरा कहाँ है मुझे हाथ लगाने दो। बेटे क़रीब आओ मेरे सीने से लग जाओ। यह माँ की मुहब्बत होती है कि इतने दुख बरदाश्त करने के बावजूद भी वह सिर्फ़ बेटे के घर आ जाने से ख़ुश हो जाती है।

तो जिस तरह माँ अपने बेटे के घर आ जाने पर ख़ुश हो जाती है, सब कुछ माफ़ कर देती है। इसी तरह परवर्दिगारे आ़लम भी अपने बन्दे के अपने दर पर आ जाने से ख़ुश हो जाते हैं और बन्दों के गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं।

सुनहरी मिसाल

आप एक मिसाल ज़रा सोचिये कि अगर माँ-बाप का कोई बेटा हो जिसको उनका कोई बड़ा दुश्मन बहका ले, गुमराह कर दे और माँ-बाप से जुदा कर दे। और माँ-बाप यह समझते हों कि हमारे बेटे का भी क़सूर है, लेकिन बहकाने वाले का ज़्यादा क़सूर है। वे दुआ़यें करते हैं कि अल्लाह उसको वापस लाये। अगर मान लो किसी दिन माँ घर में अकेली है और वह बेटा अपने घर वापस आ गया, अगर दरवाज़े पर खड़ा होकर कहता है कि अम्मी दरवाज़ा खोलिये। आप क्या समझती हैं कि वह दरवाज़ा खोलेगी या बन्द रखेगी? वह तो दुआ़यें माँगती थी कि मेरा बेटा दुश्मन के हाथों से छूटकर मेरे पास

आ जाये।

बिल्कुल इसी तरह शैतान अल्लाह तआ़ला का दुश्मन है, उसने अल्लाह के बन्दों को बहकाया और गुमराह किया, अल्लाह से ग़ाफ़िल बना दिया। परवर्दिगारे आ़लम चाहते हैं कि ये दुश्मन से छूटकर मेरे पास आयें, मैं उनके लिए दरवाज़े खोल दूँगा। माँ तो फिर भी दरवाज़ा बन्द रखती है, बेटे के आने पर खोलना पड़ता है, परवर्दिगार का मामला तो यह है कि तौबा का दरवाज़ा बन्द ही नहीं करते।

सच्ची तौबा कर लीजिए

हम रमज़ान मुबारक की इन मुबारक घड़ियों में अपने गुनाहों से सच्ची माफ़ी माँगे, अपने रब को मनायें, अपनी ज़िन्दगी के पिछले सब गुनाहों से माफ़ी माँगकर अल्लाह के महबूब बन्दों में शामिल हो जायें। अल्लाह करे कि यह रमज़ान मुबारक का वक़्त हमारे लिए बख़्शिश का वक़्त बन जाये। आमीन।

आजकी इस महफ़िल को ग़नीमत समझते हुए सच्चे दिल से तौबा कर लीजिए। आईन्दा विभिन्न महफ़िलों में औ़रतों की तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) के बारे में कुछ बातें की जायेंगी। कुछ महफ़िलों में बच्चों की तरबियत के बारे में कुछ बातें बताई जायेंगी। लेकिन शुरू में यह बात ज़ेहन में आई कि काम तौबा से शुरू करना चाहिए। इसलिए आप आज उठने से पहले अपने परवर्दिगार से सच्ची माफ़ी माँगें। और अगर आप ने अपने माँ-बाप के दिल को सताया है तो उनसे सच्ची माफ़ी माँगें, पाँव पकड़कर माफ़ी माँगें। उनके पाँव को बोसा देना अपना सौभाग्य समझें। और आईन्दा की महफ़िलों पाबन्दी से तशरीफ़ लायें। अपनी दूसरी अ़ज़ीज़ रिश्तेदार औ़रतों को भी यहाँ आने को कहें। अगरचे ट्रांस्मीटर के ज़रिये आवाज़ घर भी पहुँच जायेगी मगर चलकर आने की अपनी क़ीमत होती है। आप अल्लाह के घर में चलकर आयेंगी, एक तो बात तवज्जोह से

सुनेंगी दिल पर तवज्जोह असर करेगी, और दूसरे अल्लाह तआ़ला चलकर आने की रियायत फ़रमायेंगे।

दुआ़ है कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त हमारी इन विभिन्न महफ़िलों में हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे। हमारी इस्लाह (सुधार) फ़रमा दे। और हमें अपने मक़बूल बन्दों में शामिल फ़रमा ले। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ○

अल्लाह को अपना बना लो		अल्लाह से लौ लगा लो
यह ज़िन्दगी एक मोहलत है		रूठे हुए रब को मना लो
सब रिश्तों को अब छोड़ो		अल्लाह से रिश्ता जोड़ो
हर ऐब से अब हट कट के		अल्लाह को अपना बना लो
अल्लाह से ग़फ़लत कैसी		अल्लाह से दूरी कैसी
अब सब विर्दों को छोड़ो		अल्लाह को विर्द बना लो

****

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इस्लाम और दाम्पत्य ज़िन्दगी

بسم الله الرحمن الرحيم ٥

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد!

فَاَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ٥ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً، اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ٥

سبحن ربك رب العزة عما يصفون٥ وسلام على المرسلين٥ والحمد لله رب العالمين ٥ اللّٰهم صل على سيّدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم.

विभिन्न समाजों में औरत की हैसियत

दाम्पत्य (शादीशुदा) ज़िन्दगी के उनवान पर बात करते हुए इस परिदृश्य को ज़ेहन में देखना ज़रूरी होगा कि इस्लाम से पहले दुनिया की मुख़्तलिफ़ सभ्यताओं और मुख़्तलिफ़ समाजों में औरत को क्या मक़ाम हासिल था? विश्व के इतिहास का मुताला (अध्यन) किया जाये तो यह बात रोज़े-रोशन की तरह ज़ाहिर होती है कि इस्लाम से पहले दुनिया की विभिन्न सभ्यताओं और विभिन्न मुल्कों में औरत अपने बुनियादी हुकूक़ से बिल्कुल मेहरूम थी। फ़्राँस में औरत के बारे में यह तसव्वुर था कि यह आधा इनसान है इसलिए समाज की तमाम ख़राबियों का सबब बनती है। चीन में औरत के बारे में यह तसव्वुर था कि इसमें शैतानी रूह होती है। लिहाज़ा यह बुराईयों की तरफ़ इनसानों को दावत देती है। जापान में औरत के बारे में यह तसव्वुर

था कि यह नापाक पैदा की गयी है, इसलिए इसको इबादत की जगहों से दूर रखा जाता था। हिन्दू मान्यताओं में जिस औ़रत का शौहर मर जाता उसको समाज में ज़िन्दा रहने के क़ाबिल नहीं समझा जाता था। इसलिए ज़रूरी था कि वह अपने शौहर की लाश के साथ जलकर अपने आपको ख़त्म कर ले। अगर वह ऐसा न करती तो उसको समाज में इ़ज़्ज़त की निगाह से न देखा जाता।

ईसाई दुनिया में औ़रत को अल्लाह की पहचान के रास्ते में रुकावट समझा जाता था। औ़रतों को तालीम दी जाती थी कि कुंवारी रहकर ज़िन्दगी गुज़ारें। जबकि मर्द राहिब (ईसाई धर्मगुरू और दुनियावी मामलात से बिल्कुल ला-ताल्लुक़) बनकर रहना अपने लिये सम्मान की बात समझते थे। अ़रब के इलाक़े में बेटी का पैदा होना शर्म की बात समझा जाता था। लिहाज़ा माँ-बाप खुद अपने हाथों से बेटी को ज़िन्दा दफ़न कर दिया करते थे।

औ़रत के हुक़ूक़ इस क़द्र पामाल किये जा चुके थे कि अगर कोई आदमी मर जाता तो जिस तरह विरासत की चीज़ें उसकी औलाद में तक़सीम होती थीं इसी तरह बीवी भी उसकी औलाद के निकाह में आ जाती थी। अगर किसी औ़रत का शौहर मर जाता तो मक्का मुकर्रमा से बाहर एक काल-कोठरी में उस औ़रत को दो साल के लिए रखा जाता था। तहारत (पाकी हासिल करने) के लिए पानी और दूसरी ज़िन्दगी की ज़रूरियात भी पूरी न दी जाती थीं। अगर दो साल यह जतन काटकर भी औ़रत ज़िन्दा रहती तो उसका मुँह काला करके मक्का मुकर्रमा में फिराया जाता। उसके बाद उसे घर में रहने की इजाज़त दी जाती थी।

अब सोचिये तो सही कि शौहर तो मरा अपनी मौत से, भला इसमें बीवी का क्या क़ुसूर? मगर यह मज़लूमा इतनी बेबस थी कि अपने हक़ में कोई आवाज़ ही नहीं उठा सकती थी। ऐसे माहौल में

जबकि चारों तरफ़ औरत के हुकूक़ को पामाल किया (मिटाया) जा रहा था, अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस्लाम की नेमत देकर भेजा। आप दुनिया में तशरीफ़ लाये और आपने आकर औरत के मक़ाम और रुतबे को निखारा। बतलाया कि ऐ लोगो! अगर यह बेटी है तो तुम्हारी इ़ज़्ज़त है, अगर बहन है तो तुम्हारी आबरू है, अगर बीवी है तो ज़िन्दगी की साथी है। अगर माँ है तो उसके क़दमों में तुम्हारी जन्नत है।

इस्लाम में औरत का मक़ाम

सम्मानित हज़रात! वे लोग किस क़द्र सख़्त-दिल होंगे जो अपनी बेटियों को ज़िन्दा दफ़न कर दिया करते थे। दफ़न होने वाली मासूम बच्चियों की चीख़ व पुकार उनके कानों में पड़ती होगी मगर उनका ज़मीर (दिल और विवेक) उनको नहीं झंझोड़ता होगा। ऐसे हालात में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी दो उंगलियों का इशारा करके फ़रमाया: जिस आदमी के घर में दो बेटियाँ हों और वह उनकी अच्छी परवरिश करे यहाँ तक कि उनका निकाह कर दे तो वह आदमी जन्नत में मेरे साथ ऐसे होगा जैसे हाथ की उंगलियाँ एक दूसरे के साथ होती हैं।

दाम्पत्य ज़िन्दगी की अहमियत

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरत की खोई हुई इ़ज़्ज़त को वापस दिलाया और बताया कि:

لا رھبانیۃ فی الاسلام

यानी इस्लाम में रहबानियत (१) नहीं है।

बल्कि दोटूक अलफ़ाज़ में वाज़ेह किया कि अगर औरत के साथ

(१) रहबानियत का मतलब है कि दुनियादारी को बिल्कुल छोड़ देना और जंगलों और पहाड़ों में जाकर अलग-थलग ज़िन्दगी गुज़ारना। यानी सामाजिक ज़िन्दगी से भागना और बेताल्लुक़ हो जाना।
मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

तुम दाम्पत्य ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो यह अल्लाह तआ़ला की मारिफ़त (पहचान) के रास्ते में तुम्हारी मददगार और सहायक बनेगी। इस्लाम ने वाज़ेह किया कि राहिब बनकर जंगलों और ग़ारों में जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। अल्लाह तआ़ला की तरफ़ जो रास्ता जाता है वह जंगलों और ग़ारों (खोह) से होकर नहीं जाता, इन गली कूचों और बाज़ारों से होकर जाता है। यानी इसी समाज में रहोगे और जो हुकूक़ तुम पर आ़यद होते हैं उन्हें पूरा करोगे तो तुम्हें अल्लाह तआ़ला की मारिफ़त नसीब होगी, ग़ोया इस्लाम ने रहबानियत के बजाये सामाजिक ज़िन्दगी का सबक़ दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

النكاح من سنتى فمن رغبَ عَن سنتى فليس منّى

यानी निकाह मेरी सुन्नत है। जो मेरी सुन्नत से मुँह फेरे वह मेरी उम्मत में से नहीं है।

भला निकाह की अहमियत वाज़ेह (स्पष्ट) करने के लिए इससे ज़्यादा और क्या ज़ोर दिया जा सकता है।

अम्बिया-ए-किराम की सुन्नतें

हदीस की किताब तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत है कि चार चीज़ें नबियों की सुन्नतें हैं।

१. 'हयादारी' यानी तमाम अम्बिया हया वाले हुआ करते थे।

२. तमाम अम्बिया ख़ुशबू का इस्तेमाल किया करते थे।

३. तमाम अम्बिया मिस्वाक किया करते थे।

४. तमाम अम्बिया दाम्पत्य ज़िन्दगी बसर किया करते थे।

कुरआन मजीद में अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً

ऐ मेरे महबूब! हमने आप से पहले कितने ही अम्बिया (नबी हज़रात) को भेजा और हमने उनके लिए बीवियाँ और औलादें बनाईं।

यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि तमाम अम्बिया दीन की दावत का मुक़द्दस (पवित्र) फ़रीज़ा अदा करने के लिए अल्लाह की तरफ़ से भेजे गये। वे मख़्लूक़ को अल्लाह से मिलाया करते थे, मगर औलाद या बीवी उनके रास्ते की रुकावट नहीं बना करती थी। गोया इस बात को पुख़्ता और मज़बूत कर दिया गया कि दाम्पत्य ज़िन्दगी से फ़रार तो दर हक़ीक़त सामाजिक ज़िम्मेदारियों की अदायेगी से फ़रार (भागना) है।

निकाह आधा ईमान है

हदीस पाक में है:

النكاح نصف الايمان

निकाह तो आधा ईमान है।

एक कुंवारा आदमी चाहे कितना ही नेक क्यों न हो जाये, वह ईमान के कामिल रुतबे को नहीं पहुँच सकता, जब तक वह दाम्पत्य (शादीशुदा) ज़िन्दगी में दाख़िल होकर हुक़ूक़ व ज़िम्मेदारियों को अदा न करे तब तक उसका ईमान मुकम्मल नहीं होता। इसलिए जिस लड़के की शादी न हो और वह जवान-उम्र हो, हदीस में उसको मिस्कीन कहा गया है। जिस लड़की की शादी न हो और वह जवान-उम्र हो, हदीस में उसको मिस्कीना कहा गया है। गोया ये लोग क़ाबिले रहम हैं कि उम्र के इस हिस्से में दाम्पत्य ज़िन्दगी गुज़ारने से मेहरूम हैं।

पाँच वसीयतें

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाया करते थे कि मुझे मेरे महबूब ख़ातिमुल्-मुर्सलीन ने पाँच कामों में जल्दी करने की वसीयत फ़रमाई।

१. नमाज़ के फ़ोत होने से पहले उसे अदा करो। (यानी उसका वक़्त ख़त्म हो इससे पहले उसे अदा कर लो)।

२. मौत से पहले तौबा करने में जल्दी करो।

३. जब कोई आदमी मर जाये तो उसके कफ़न-दफ़न में जल्दी करो।

४. तुम्हारे सर पर क़र्ज़ हो तो उसके अदा करने में जल्दी करो।

५. जब बेटी या बेटे के लिए कोई मुनासिब रिश्ता मिल जाये तो उसके निकाह करने में जल्दी करो।

खुश-क़िस्मत इनसान

यह एक मानी हुई हक़ीक़त है कि जिस किसी को अच्छा जीवन-साथी मिल जाये तो वह यक़ीनन खुश-क़िस्मत (अच्छे भाग्य वाला) इनसान है। हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाया करते थे कि जिस इनसान को पाँच चीज़ें मिल जायें वह अपने आपको दुनिया का खुश-क़िस्मत (भाग्यशाली) इनसान समझे। वे पाँच चीज़ें ये हैं।

१. शुक्र करने वाली ज़बान। यह अल्लाह तआ़ला की बड़ी नेमत है। आज तो अक्सर लोगों का यह हाल है कि अल्लाह तआ़ला की नेमतें खाते-खाते दाँत तो गिर जाते हैं मगर उसका शुक्र अदा करते-करते ज़बान नहीं घिसती। कहावत मशहूर है कि जिसका खाये उसके गीत गाये। हमें चाहिए कि हम अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करते रहें।

२. ज़िक्र करने वाला दिल। यानी जिस दिल में अल्लाह की याद रहती हो वह बहुत बड़ी नेमत है।

३. मशक़्क़त उठाने वाला बदन। कहावत मशहूर है कि सेहतमन्द (स्वस्थ) जिस्म में ही सेहतमन्द अ़क़्ल होती है।

४. वतन की रोज़ी। यह भी बड़ी नेमत है। कहावत मशहूर है कि वतन की आधी परदेस की सारी, फिर भी बराबर नहीं होती।

५. नेक बीवी। यानी जीवन-साथी नेक हो तो ज़िन्दगी का लुत्फ़ दोगुना हो जाता है। जिस शख़्स को ये पाँच नेमतें नसीब हों वह यूँ समझे कि मुझे अल्लाह ने दुनिया की तमाम नेमतें अ़ता कर दी हैं।

निकाह की अहमियत

यह सौ फ़ीसद पक्की बात है कि जहाँ निकाह नहीं होगा वहाँ ज़िना (बदकारी) होगा। इसलिए शरीअ़त ने निकाह की अहमियत को वाज़ेह किया है। आज जिस समाज में निकाह से फ़रार इख़्तियार करते हैं यानी निकाह करने से बचते हैं, आप देखिये वहाँ जिन्सी (लैंगिक) तस्कीन के लिए बदकारी (देह व्यापार) के अड्डे खुले होते हैं। इस्लामी शरीअ़त ने इस बात को नापसन्द किया कि इनसान गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारे। इसलिए कहा गया कि तुम निकाह करो ताकि तुम्हें अपने आपको पाकबाज़ रखना आसान हो जाये।

अगर निकाह का हुक्म न दिया जाता तो मर्द औ़रत को सिर्फ़ एक खिलौना समझ लेते। औ़रत अपने लिए कोई मक़ाम न रखती, उसकी ज़िम्मेदारी उठाने वाला कोई न होता। शरीअ़त ने कहा, अगर तुम चाहते हो कि इकट्ठे रहो तो तुम्हें उसकी ज़िम्मेदारियों का बोझ भी उठाना पड़ेगा।

मेहर के हक़ की अहमियत

निकाह एक मुआ़हिदा है जो मियाँ और बीवी में तय पाता है। इस मुआ़हिदे में अगर कोई औ़रत अपनी तरफ़ से कुछ शर्तें रखना चाहे तो शरीअ़त के हिसाब इसकी गुंजाईश है।

मिसाल के तौर पर वह कहे कि मुझे अच्छे मकान की ज़रूरत है, मुझे महीने के इतने ख़र्च की ज़रूरत है। वह कहे कि मैं निकाह तब करूँगी अगर तलाक़ का हक़ मुझे दिया जाये। शरीअ़त ने उसको इजाज़त दी है कि वह निकाह से पहले अपनी शर्तों को मनवा सकती है। लेकिन जब निकाह हो गया और तलाक़ का हक़ मर्द के पास है या मर्द अपनी मर्ज़ी से ख़र्चा देगा तो अल्लाह की बन्दी अब रोने का क्या फ़ायदा। शरीअ़त ने निकाह को एक मुआ़हिदा कहा जबकि हमें उसकी अहमियत का पता ही नहीं होता।

आजकल लड़की वाले अपनी सादगी में मारे जाते हैं। मेहर लिखने का वक़्त आया तो किसी ने कहा पाँच सौ रुपये, किसी ने कहा पचास काफ़ी हैं। ओ ख़ुदा के बन्दो! पचास काफ़ी नहीं क्योंकि यह एक बच्ची की ज़िन्दगी का मामला है इसे ऐब न समझें। अगर तुम समझते हो कि कोई बात निकाह से पहले तय कर लेना बेहतर है तो शरीअ़त ने तुम्हें इसकी इजाज़त दी है।

लड़के वालों की यही चाहत होती है कि लड़की वाले मेहर न ही लिखवायें तो बेहतर है। क्यों? ज़िम्मेदारी जो होती है। सुनिये और दिल के कानों से सुनिये कि मेहर के मामले में तीन सुन्नतें हैं। आदमी को अपनी हैसियत के मुताबिक़ इन तीनों में से किसी एक सुन्नत पर अ़मल कर लेना चाहिए।

१. मेहरे फ़ातिमी, यानी सैयदा हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का हक़्क़े मेहर या फिर सैयदा हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा का जो हक़्क़े मेहर नबी अ़लैहिस्सलाम ने अदा फ़रमाया, उसको बाँध लिया जाये तो यह भी सुन्नत है।

२. मेहरे-मिस्ल। लड़की के क़रीबी रिश्तेदारों में आ़म तौर पर लड़कियों का जो मेहर रखा जाता है उसको "मेहरे-मिस्ल" कहा जाता है। उनके बराबर उसका मेहर बाँधना भी सुन्नत है।

३. लड़की की अ़क़्लमन्दी, नेकी और शराफ़त को सामने रखते हुए उसके निकाह का मेहर बाँधा जाये, यह भी सुन्नत है। शरीअ़त ने तीन विकल्प (Options) दिये हैं, इनमें से किसी एक को पसन्द कर ले, उसे सुन्नत का सवाब मिलेगा।

निकाह के वक़्त मेहर मुक़र्रर करते हुए कहते हैं कि मेहर 'मुअ़ज्जल' होगा या "मवज्जल" होगा। उजलत (जल्दी) का लफ़्ज़ आपने पढ़ा होगा। उजलत का मतलब है जल्दी, तो "मुअ़ज्जल" का मतलब है जल्दी अदा करना। गोया मियाँ-बीवी के इकट्ठे होने (मुलाक़ात होने) से पहले मेहरे-मुअ़ज्जल अदा करना ज़रूरी है। शौहर

नहीं अदा करेगा तो गुनाहगार होगा।

मेहर की दूसरी क़िस्म "मवज्जल" है। इसका मतलब है "तलब के वक़्त" यानी जब बीवी उसको तलब करे वह शौहर से ले सकती है। शौहर को ज़ेब नहीं देता कि हक़्क़े मेहर माफ़ करवाने के लिए बीवी पर दबाव डाले। हाँ अगर कोई बीवी मेहर की रक़म वापस लौटाये तो कुरआन की रू से उस रक़म में बरकत होती है।

فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَیْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِیْٓـًٔا مَّرِیْٓـًٔا○

तर्जुमाः हाँ अगर वे बीवियाँ खुशदिली से छोड़ दें तुमको उस मेहर में का कोई हिस्सा, तो तुम उसको खाओ मज़ेदार और अच्छी चीज़ समझकर।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ऐसी रक़म से शहद ख़रीदते और पानी में मिलाकर मरीज़ों को पिलाते थे।

निकाह का प्रचार करना

शरीअ़त ने निकाह की तश्हीर (ऐलान और प्रचार) करने का हुक्म दिया है।

افشوا النكاح بينكم

निकाह का प्रचार करो। यानी उसकी शोहरत करो गुपचुप निकाह न करो।

सुन्नत यह है कि जुमे का दिन हो, जुमे के मजमे में निकाह करे या कोई और बड़ा मजमा हो, उस वक़्त निकाह करे। दोस्तों और रिश्तेदारों को बुलायें ताकि सबके इल्म में आ जाये कि आज के बाद यह लड़का और लड़की अपने नये घर की बुनियाद रख रहे हैं।

शादीशुदा के लिए सवाब ज़्यादा

जब इनसान शादीशुदा बन जाता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी इबादत का अज्र (सवाब) बढ़ा देते हैं। सुब्हानल्लाह! चुनाँचे उलेमा ने

लिखा है कि जब इनसान निकाह कर लेता है, दाम्पत्य ज़िन्दगी गुज़ारता है तो उसको एक नमाज़ अदा करने पर अल्लाह तआला इक्कीस नमाज़ों का सवाब अता फ़रमाते हैं। ऐसा क्यों? इसलिए कि यह इनसान अल्लाह के हुक़ूक़ तो पहले भी अदा कर रहा था, अब बन्दों के हुक़ूक़ को निभाते हुए अल्लाह के हुक़ूक़ को पूरा करेगा तो अल्लाह तआला उसकी इबादत का सवाब बढ़ा देंगे। गोया निकाह के बाद इबादत का सवाब बढ़ा दिया जाता है। सुब्हानल्लाह!

जब निकाह किया जाता है तो लड़के वाले लड़की में कुछ सिफ़ात (ख़ूबियाँ) देखते हैं और लड़की वाले लड़के के अन्दर कुछ सिफ़ात देखते हैं। आईये ज़रा उनका जायज़ा लें।

अच्छी बीवी कौन है?

हदीस पाक में आता है, इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत नक़ल करते हैं।

تنكح المرأة لاربع لمالها ولجمالها ولحسبها ولدينها فاظفر بذات الدين تربة يداك

औरत से चार कारणों से निकाह किया जाता है- अव्वल माल की वजह से निकाह किया जाता है कि कोई मालदार घराना हो तो लोग निकाह का पैग़ाम भेजते हैं कि चलो कारोबार ही करवा देंगे। दहेज में कोई घर लेकर देंगे और कार तो कहीं गयी ही नहीं। तो फ़रमाया कि उसके माल की वजह से उससे निकाह करते हैं। दूसरी वजह फ़रमाई कि उसके हुस्न और सुन्दरता की वजह से निकाह करते हैं। तीसरी वजह फ़रमाई कि उसके हसब व नसब (यानी ख़ानदान व घराने) की वजह से निकाह करते हैं यानी ऊँचे ख़ानदान की वजह से निकाह करते हैं। चौथी वजह फ़रमाई कि उसकी नेकी और दीनदारी की वजह से निकाह किया जाता है। तो फ़रमाया कि मैं तुम्हें इस बात की नसीहत करता हूँ कि तुम अपने लिए दीन की बुनियाद पर रिश्तों की

तलाश करो।

जब बुनियाद ही कमज़ोर होगी तो ज़िन्दगी कैसे निभेगी। जिसने सिर्फ़ ख़ूबसूरती को देखा तो बताईये शक्ल की ख़ूबसूरती कितने दिन रहती है, यह चन्द साल की बात होती है, जवानी हमेशा तो नहीं रहती। जिसकी बुनियाद ही कमज़ोर होगी उस पर बनने वाला घर भी कमज़ोर होगा।

जो शाख़े नाज़ुक पर आशियाना बनेगा ना-पायदार होगा।।

नेकी और शराफ़त ऐसी चीज़ है जो वक़्त के साथ-साथ बढ़ती चली जाती है। तो इस बुनियाद पर जो घर बनेगा वह हमेशा मज़बूत से मज़बूत-तर होता चला जायेगा। तो नेकी और दीनदारी की बुनियाद पर बीवियों को तलाश करो, इसलिए कि ख़ूबसूरत औ़रत का शौहर जब उसे देखता है तो उसकी आँखें खुश होती हैं, और नेक-सीरत औ़रत का शौहर जब भी उसे देखता है तो उसका दिल खुश हुआ करता है। तो आँखों को खुश करने की बजाये अपने दिलों को खुश किया करो।

मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है:

الدنيا متاع وخير متاعها المرأة الصالحة

दुनिया एक मताअ़ (सामान और दौलत) है और इस दुनिया की सबसे क़ीमती दैलत नेक बीवी है।

गोया अल्लाह तआ़ला जिसे नेक बीवी अ़ता करे वह समझे कि मुझे दुनिया की बहुत बड़ी नेमत मिल गयी।

انما الاعمال بالنيات

आमाल का दारोमदार नीयतों पर है।

जब नीयत में माल होगा तो आप देखेंगे कि झगड़े खड़े होंगे। नीयत में सिर्फ़ सुन्दरता होगी तो आप देखेंगे कि झगड़े खड़े होंगे, सिर्फ़ ऊँचा ख़ानदान और बड़ा घराना होने की वजह से निकाह होगा तो

झगड़े खड़े होंगे। तो शरीअ़त ने इस बात की तालीम दी कि निकाह का मक़सद यह हो कि मैं पाकबाज़ी की ज़िन्दगी जी सकूँ। जब मक़सद यह होगा तो इस मक़सद की वजह से घर आबाद हो जायेंगे।

हदीस की किताब इब्ने माजा की रिवायत है:

ماستفاد المومن بعد تقوى الله عزوجل خيرله من زوجة صالحة ان امرها اطاعته وان نظراليها سرته وان اقسم عليها ابرته وان غاب عنها نصحته فى نفسها وماله.

अल्लाह तआ़ला के तक़्वे (डर) के बाद इनसान जिस चीज़ से सबसे ज़्यादा फ़ायदा उठाता है वह कोई चीज़ नहीं मगर नेक बीवी, कि अगर उसे किसी बात का हुक्म दिया जाये तो उसकी इताअ़त (हुक्म का पालन) करे। जब उसकी तरफ़ आँख उठाकर देखा जाये तो उससे दिल खुश होना चाहिए। और अगर कोई ऐसी सूरत हो कि शौहर उसके लिए क़सम खा ले कि बीवी उसको पूरा करेगी तो उसको पूरा कर दे। और अगर बीवी से कुछ वक़्त के लिए दूर चला जाये तो बीवी उसके माल और अपनी इ़ज़्ज़त व आबरू के मामले में ख़ियानत न करे। ये नेक बीवी की सिफ़ात बताई गईं।

दुनिया की बेहतरीन औ़रत

एक बार नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की महफ़िल में बात चली कि दुनिया की औ़रतों में से बेहतरीन औ़रत कौनसी है। किसी ने कोई सिफ़त बताई और किसी ने कोई सिफ़त बताई। ख़ैर बातचीत होती रही। हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू किसी काम से घर तशरीफ़ ले गये। हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को बताया कि महफ़िल में यह तज़किरा हो रहा है कि दुनिया की बेहतरीन औ़रत कौनसी है? अभी कोई फ़ैसला नहीं हुआ। हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया मैं बतलाऊँ कि दुनिया की सबसे

बेहतरीन औ़रत कौनसी है? फ़रमाया हाँ! बताईये। फ़रमाया दुनिया की सबसे बेहतरीन औ़रत वह है जो न ख़ुद किसी ग़ैर-मर्द की तरफ़ देखे और न कोई ग़ैर-मर्द उसकी तरफ़ देख सके।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु महफ़िल में वापस तशरीफ़ लाये और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! मेरी बीवी ने दुनिया की बेहतरीन औ़रत की पहचान यह बताई है कि जो न ख़ुद किसी ग़ैर-मेहरम को देखे न ही कोई ग़ैर-मेहरम उसे देख सके। हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

فاطمة بضعة منى

फ़ातिमा तो मेरे जिगर का टुक्ड़ा है।

अच्छी बीवी की सिफ़तें

अल्लाह वालों ने लिखा है कि बीवी में चार सिफ़तें ज़रूर होनी चाहिएँ। पहली सिफ़त उसके चेहरे पर हया हो। यह बात बुनियादी हैसियत रखती है कि जिस औ़रत के चेहरे पर हया हो, उसका दिल भी हया से भरा होगा। मिसाल मशहूर है कि चेहरा इनसान के दिल का आईना होता है। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल है कि मर्दों में भी हया बेहतर है मगर औ़रत में बेहतरीन है।

दूसरी सिफ़त बयान फ़रमाई जिसकी ज़बान में मिठास हो, यानी जो बोले तो कानों में रस घोले। यह न हो कि हर वक़्त शौहर को जली-कटी सुनाती रहे या बच्चों को बात-बात पर झिड़कती रहे। तीसरी सिफ़त यह कि उसके दिल में नेकी हो। चौथी सिफ़त यह हो कि उसके हाथ काम-काज में मसरूफ़ रहें।

ये ख़ुबियाँ जिस औ़रत में हों, यक़ीनन वह बेहतरीन बीवी की हैसियत से ज़िन्दगी गुज़ार सकती है।

अच्छे शौहर की सिफ़तें

आईये अब कुरआन व हदीस की रोशनी में शौहर की सिफ़तों का जायज़ा लें।

यह बात ज़ेहन में रखिये कि अगर अपनी बेटी के लिए कोई आदमी रिश्ता ढूँढ़े तो उसके लिए दो मिसालें काफ़ी हैं जो हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुबारक ज़िन्दगी में मिलती हैं। नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी बेटी के लिए कैसे दामाद को पसन्द किया, एक मिसाल हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु की है जो रिश्ते में क़रीबी थे, जुर्रत और बहादुरी में उनके जैसा कोई नज़र न आता था। अल्लाह ने उनको शेर का दिल अ़ता किया था। मशक़्क़त उठाने वाला बदन था, ज़िम्मेदारियाँ निभाने वाले इनसान थे। सबसे बड़ी बात यह कि अल्लाह तआ़ला ने इल्म इतना अ़ता किया कि उलूम के एक असीम समन्दर थे।

तो मालूम हुआ कि अपनी बेटी के लिए रिश्ता ढूँढ़ना हो तो इससे बेहतरीन मिसाल और कोई नहीं हो सकती। दूसरी मिसाल हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु की है। अच्छा कारोबार था, समाज में इ़ज़्ज़त का मक़ाम था। इस्लाम लाने से पहले भी समाज के सम्मानित इनसान समझे जाते थे। तबीयत में नरमी थी। इस क़द्र हया वाले थे कि अल्लाह के नबी ने फ़रमायाः उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से तो अल्लाह के फ़रिश्ते भी हया (शर्म) करते हैं। बेटी के लिए रिश्ता ढूँढ़ना हो तो अल्लाह के नबी ने हमारे सामने मिसालें पेश कर दीं। इससे बेहतरीन मिसालें हमें दुनिया में कहीं और नहीं मिल सकतीं।

शौहर की ख़ूबियों में से एक बड़ी ख़ूबी यह है कि उसके मिज़ाज में संयम (बरदाश्त करने का माद्दा) हो, क्योंकि वह घर का मुखिया होता है। जिस संस्था का बॉस ही बात-बात पर बिगड़ जाये वह संस्था तो चल नहीं सकती। इसलिए इरशाद फ़रमाया गयाः

وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ

अल्लाह तआ़ला ने मर्दों को औ़रतों पर एक दर्जा अ़ता फ़रमाया। यानी उनको घर का सरदार बनाया, मर्द की मिसाल बादशाह की मनिन्द है और औ़रत की मिसाल रानी और शहज़ादी की मनिन्द। लिहाज़ा मर्द के अन्दर संयम और बुर्दबारी का होना बहुत ज़रूरी है। आपने देखा होगा कि जब यह तहम्मुल (बरदाश्त) और बुर्दबारी नहीं होती तो छोटी-छोटी बातों पर नोक-झोंक होती है। मामूली बातें जैसे खाने में नमक क्यों कम है? यह रोटी ठंडी क्यों आ गयी? गर्म आनी चाहिए थी। यह फ़लाँ काम ऐसे क्यों हुआ? बीवी बेचारी घर का काम-काज करके थकी पड़ी हो तो कभी तारीफ़ के कलिमे ज़बान से न निकलेंगे, मगर आलोचना की बात जहाँ हाथ आ गयी वहाँ बीवी की ख़ैर नहीं।

वे मर्द जिनमें तहम्मुल नहीं होता उनकी दाम्पत्य ज़िन्दगी की गाड़ी रास्ते में कहीं न कहीं खड़ी हो जाती है, किसी मामूली सी बात पर मियाँ-बीवी में सर्दी गर्मी हुई तो मियाँ ने फ़ौरन तलाक़ तलाक़ तलाक़ के गोले दाग़ दिये।

पिछले साल की बात है कि मैं स्वीडन में था। वहाँ एक परिवार में तलाक़ हुई। वजह यह थी कि शौहर किचन के सिंक में आकर ब्रश किया करता था। बीवी उसको मना करती थी कि जब बाथरूम का सिंक है तो वहाँ ब्रश किया करें। उसने कहा नहीं! मैं तो यहाँ ही करूँगा, और इस बात पर मियाँ-बीवी में तलाक़ हो गयी। जिसने सुना हैरान हुआ। बहुत जग-हंसाई हुई। काश कि दोनों अ़क़्ल से काम लेते।

पार उतरने के लिए तो ख़ैर बिल्कुल चाहिए
बीच दरिया डूबना हो तो भी एक पल चाहिए

बरदाश्त और बुर्दबारी न हो तो इनसान की ज़िन्दगी कभी भी कामयाब नहीं गुज़र सकती।

जब घर के सब लोग इकट्ठे रहते हैं तो आपस में झगड़े हो सकते हैं। कभी बेटा बेटी माँ की नाफ़रमानी कर सकते हैं। कभी माँ बच्चों पर नाराज़ हो सकती है तो मसाईल पैदा होंगे। उन मसाईल (समस्याओं) को वही हल कर सकता है जो अपने अन्दर तहम्मुल-मिज़ाजी रखने वाला हो।

मर्द की दूसरी बड़ी सिफ़त यह है कि वह घर की ज़िम्मेदारियों को निभाने में निखट्टू और कामचोर नहीं होना चाहिए। देखिये हमारे लिए इससे बढ़कर और मिसाल क्या हो सकती है कि रसूले अकरम वक़्त के नबी हैं और घर के काम-काज करते हैं। हज़रत मूसा वक़्त के नबी हैं सफ़र में बीवी को बच्चे की पैदाईश का दर्द होता है तो फ़रमाया बैठो मैं अभी जाता हूँ आग ढूँढ़ने के लिए:

قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا

मैं तुम्हारे लिए कहीं न कहीं से आग ढूँढ़ लाऊँ ताकि तुम्हें आराम मिले।

अब देखिये कि वक़्त के नबी हैं और बीवी की आसानी के लिए आग के अंगारे ढूँढ़ते फिरते हैं। यह कितनी बड़ी इबादत बनाई गयी जिसमें अल्लाह तआला के नबी मसरूफ़ (व्यस्त) हैं इसलिए घर का कोई काम मर्द को करना पड़ जाये तो उससे भागना नहीं चाहिए। जिस तरह छोटे-छोटे पत्थर मिलकर पहाड़ बन जाते हैं, इसी तरह छोटे-छोटे मसाईल इकट्ठे होकर मतभेदों (झगड़ों) के पहाड़ बन जाते हैं। दो दिलों के दरमियान दीवार खड़ी हो जाती है। नतीजा घर की तबाही की सूरत में सामने आता है। कई बार तो तीस-पैंतीस साल की दाम्पत्य ज़िन्दगी तलाक़ की भेंट चढ़ जाती है।

अगर मर्द चाहते हैं कि बीवी हमारी ख़िदमत-गुज़ार बनकर रहे तो मर्द को भी बीवी की ज़रूरतें पूरी करनी होंगी। यह बराबरी तब ही क़ायम रह सकती है कि मर्द अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाये और

औरत अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाये। शरीअत ने दोनों के दरमियान एक तराज़ू खड़ी दी है। मियाँ के ज़िम्मे है कि वह औरत के हुकूक़ अदा करे और औरत के ज़िम्मे है कि वह मर्द के हुकूक़ अदा करे। इस तरह दोनों पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ार सकेंगे। यही दाम्पत्य ज़िन्दगी का मक़सद है। अल्लाह तआला का इरशाद है:

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ○

और उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारे लिए बीवियाँ बना दीं ताकि तुम उनसे सुकून हासिल कर सको। और तुम्हारे दरमियान मुहब्बत और रहमत पैदा कर दी। सोचने वालों के लिए इसमें बड़ी निशानियाँ हैं।

अब कुरआन मजीद से यह साबित हुआ कि दाम्पत्य ज़िन्दगी का असल मक़सद प्यार व मुहब्बत से रहना और पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ारना है। सोचिये जब हम खुद ही सुकून के परख़्चे उड़ाने वाले बन जायेंगे तो फिर शादीशुदा (दाम्पत्य) ज़िन्दगी कैसे कामयाब होगी।

अच्छी और कामयाब ज़िन्दगी वह है जिसमें शौहर को भी सुकून हो और बीवी को भी सुकून हो। अगर दोनों में से किसी एक को भी सुकून नसीब न हो तो इसका मतलब यह है कि कामयाब ज़िन्दगी नहीं। और आज तो अल्लाह की शान! ऐसा मामला बन गया कि शायद ही कोई शौहर ऐसा हो जो दिन में एक बार बीवी की क़िस्मत को न रोये और शायद ही कोई बीवी ऐसी हो जो दिन में एक बार अपने शौहर को न कोसे। यह सब हमारी बेइल्मी (इल्म से ख़ाली होने) और बेअ़मली (इस्लामी तालीमात पर अ़मल न होने) का नतीजा है, हम मक़सदे असली को भूल गये। हम छोटी-छोटी बातों पर आपस में झगड़े करने बैठ जाते हैं, छोटी-छोटी बातों को अपनी अना और नाक का मसला बना लिया करते हैं। यह ग़लत है हमें समझ और होश से

काम लेने की ज़रूरत है।

दाम्पत्य ज़िन्दगी का ख़ूबसूरत तसव्वुर

कुरआन पाक ने बीवी के बारे में जो तसव्वुर (Concept) दिया वह आज तक कोई दूसरा समाज पेश नहीं कर सका। कुरआन पाक ने मियाँ-बीवी के बारे में कहाः

هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ

वे (यानी बीवियाँ) तुम्हारा लिबास हैं और तुम उनका लिबास हो।

लिबास से मिसाल देने में हिक्मतें हैं। एक यह कि लिबास से इनसान को ज़ीनत मिलती है। लिबास से उसके ऐब छुपते हैं। और दूसरी बात यह है कि इनसान के जिस्म के सबसे ज़्यादा क़रीब उसका लिबास होता है। तो बीवी को शौहर के लिए लिबास कहा और शौहर को बीवी के लिए लिबास कहा कि अब तुम दोनों एक दूसरे के इतना क़रीब हो जितना क़रीब लिबास हुआ करता है। अब बताईये कि नज़दीकी का इससे बेहतर तसव्वुर कोई दूसरा पेश कर सकता है? अल्लाहु अकबर।

रिवायत है कि "अल्लाह तआ़ला ने अम्माँ हव्वा को हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पसली से पैदा किया। क्यों? सर से इसलिए पैदा न किया कि सर पर न बिठा लें और पाँवों से इसलिए पैदा न किया कि पाँवों की जूती न बना लें। पसली से इसलिए पैदा किया कि ज़िन्दगी का साथी समझते हुए अपने दिल के क़रीब रखें।

कुरआन पाक ने यही नहीं कहा कि तुम ज़िन्दगी गुज़ारो, बल्कि फ़रमाया तुमको उन बीवियों के साथ अच्छे अन्दाज़ में ज़िन्दगी गुज़ारनी है।

मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि यह बीवियों पर अल्लाह की बड़ी रहमत है कि अल्लाह तआ़ला ने उनकी तरफ़ से मर्दों से सिफ़ारिश कर दी कि ऐ शौहर! तुम्हारे लिए इससे बढ़कर और क्या बात हो

सकती है कि तुम्हारी बीवियों के लिए तुम्हारा परवर्दिगार सिफ़ारिश कर रहा है, आज तुम उसकी सिफ़ारिश का ख़्याल रखोगे तो कल वह क़ियामत के दिन तुम्हारी बख़्शिश कर देगा। अल्लाहु अकबर कबीरा।

बेहतरीन शौहर कौन है?

हदीस पाक में आता है:

خیرکم خیرکم لاھلہٖ

तुम में सबसे बेहतरीन वह है जो अपने घर वालों के लिए बेहतरीन है।

और फ़रमायाः

انا خیرکم لاھلی

मैं अपने घर वालों के लिये तुम में सबसे बेहतरीन हूँ।

तो नबी अ़लैहिस्सलाम ने अपनी ज़िन्दगी को मिसाल बनाकर पेश किया, किसी बन्दे की अच्छाई का अन्दाज़ा लगाना हो तो उसके दोस्तों से न पूछें, कारोबार में न देखें, पूछना हो तो उसकी बीवी से ज़रा पूछें कि यह कैसा इनसान है। अगर बीवी कहे कि उसका रहन-सहन और आ़दत व अख़्लाक़ अच्छे हैं तो वह अच्छा इनसान है। फ़रमायाः

اکمل المومنین ایمانًا احسنھم خلقًا

ईमान वालों में सबसे कामिल ईमान वाला वह है जिसके अख़्लाक़ अच्छे हों।

एक बार नबी अ़लैहिस्सलाम के पास एक औ़रत आयी और कहा मेरा शौहर बात-बात पर गुस्सा करता है यहाँ तक कि मारता भी है। यह बात दोनों कान खोलकर सुनने वाली है, बाक़ी बातें तो चलो एक कान से सुन लेना मगर मर्दों से गुज़ारिश है कि यह बात ज़रा दोनों कान खोलकर सुनिये। बीवी ने आकर नबी पाक की महफ़िल में कहा ऐ अल्लाह के नबी! मेरा शौहर मुझे छोटी-छोटी बात पर झिड़कता है यहाँ तक कि मुझे मारता है। तो अल्लाह के नबी ने फ़रमायाः

يظل احدكم يضرب امرأته ضرب العبد ثم يظل يعانقها ولايستحى

तुम्हारा चेहरा सियाह हो, तुम अपनी बीवी को बाँदी की तरह मारते हो, फिर उसके साथ तुम लगते-लिपटते भी हो, क्या तुम्हें इस बात पर हया नहीं आती।

यानी एक वक़्त में तुम उसे इतना क़रीव कर रहे हो दूसरे वक़्त में तुम उसे बाँदी की तरह मार रहे हो। ये अलफ़ाज़ हमें पैग़ाम दे रहे हैं कि बीवी घर की नौकरानी नहीं बल्कि शरीके-हयात (जीवन साथी) है। हाँ अगर वह कोई कबीरा गुनाह (बड़ी ग़लती) कर बैठे और समझाने से भी ने समझे तो शरीअ़त ने मामूली तौर पर मारने की इजाज़त दी है ताकि उसे नसीहत हो सके। कहावत मशहूर है कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते, दो बातें बड़ी आ़म हैं- एक यह कि औ़रत की ज़बान क़ाबू में नहीं रहती, और दूसरी यह कि मर्द के हाथ क़ाबू में नहीं रहते। अस्तग़फ़िरुल्लाह।

बद-ज़बान औ़रत

याद रखिये मेरे दोस्तो! बद-ज़बान बीवी अपने शौहर को क़ब्र तक पहुँचाने के लिए घोड़े की डाक का काम करती है। जिसकी बीवी बद-ज़बान हो उसको सारी ज़िन्दगी सुकून नहीं मिल सकता। औ़रत को कहा गया कि वह अपनी ज़बान के अन्दर नर्मी और मिठास पैदा करे और अच्छे अन्दाज़ से बात करे। वैसे यह पक्की बात है कि मीठी से मीठी औ़रत क्यों न हो फिर भी उसके अन्दर थोड़ी बहुत तल्ख़ी (कड़वाहट) ज़रूर होती है। क्योंकि ताल्लुक़ और रिश्ता ही ऐसा नाज़ व अन्दाज़ का होता है, लेकिन औ़रत की ज़बान में नर्मी होनी चाहिए। शरीअ़त ने कहा कि अपने शौहर से नर्म अन्दाज़ में बात करे। जहाँ किसी ग़ैर-मर्द से बात करने का वक़्त हो तो सख़्ती से बात करे, ताकि उसे दूसरी बात पूछने की जुर्रत न हो। आजकल की फ़ैशन-एबल औ़रतों का मामला इसके उलट है। शौहर से बात करनी

हो तो सारी दुनिया की कड़वाहट लहजे में सिमट आती है और किसी ग़ैर से बात करनी हो तो सारी दुनिया की मिठास उनके लहजे में सिमट आती है।

बहरहाल! यह एक मानी हुई हक़ीक़त है कि जिन रिश्तों को तलवार नहीं काट सकती उनको ज़बान काट कर रख देती है। यह भी याद रखें कि औ़रत की ज़बान वह तलवार है जो कभी ज़ंग-आलूद नहीं होती। (यानी उसकी धार कभी कम नहीं होती)। बाज़ी औ़रतें तो इतनी बद-ज़बान होती हैं कि अगर औ़रतें न होतीं तो नाक़ाबिले बरदाश्त होतीं। कई औ़रतें तो अपनी बद-ज़बानी और बदगुमानी ही की वजह से घर बरबाद कर लेती हैं। शरीअ़त ने हुक्म दिया कि मेहरम मर्द से बात करो तो नर्मी से, ग़ैर-मेहरम से बात करनी पड़े तो सख़्ती से करो। किसी अंग्रेज़ का क़ौल है कि अगर औ़रत सारे दिन में एक बार अपने शौहर से नर्मी से बात करे, जिस नर्मी से वह पड़ोसी मर्द से बात करती है तो घर आबाद रहे। इसी तरह मर्द अगर पूरे दिन में एक बार बीवी को उस मुहब्बत की निगाह से देखे जिस नज़र से वह पड़ोसी औ़रत को देखता है तो भी घर आबाद रहे।

पिछले ज़माने के बुज़ुर्गों का मामूल

अल्लाह तआ़ला ने कुरआन पाक की एक पूरी सूरत जिसे सूरः निसा कहते हैं, उसमें मर्द और औ़रत की दाम्पत्य ज़िन्दगी के अहकाम बतलाये। बुज़ुर्गों का यह मामूल था कि वे अपनी बेटियों को निकाह से पहले सूरः निसा और सूरः नूर का तर्जुमा पढ़ा दिया करते थे। हमें भी चाहिए कि जिनके हाँ बेटी हो वे उसको अगर पूरा कुरआन पाक तर्जुमे के साथ नहीं पढ़ा सकते तो कम से कम सूरः निसा और सूरः नूर तर्जुमे के साथ पढ़ा दिया करें, ताकि लड़की अच्छी दाम्पत्य जिन्दगी गुज़ार सके।

बाज़ बुज़ुर्गों का तो अ़जीब मामूल था कि जब बच्ची पढ़-लिख

जाती और अभी शादी का कोई इन्तिज़ाम नहीं होता था। (उस वक़्त प्रिंटिंग प्रेस नहीं होते थे) तो बेटी के ज़िम्मे लगाते कि अपने लिए एक क़ुरआन पाक लिख लो। यह बच्ची रोज़ाना वुज़ू करके बेहतरीन लेख के साथ क़ुरआन पाक लिखती थी। और जब क़ुरआन पाक मुकम्मल हो जाता तो सुनहरी जिल्द बाँधकर बाप अपनी बेटी को दहेज में दिया करता था। यह पहले वक़्तों का दहेज हुआ करता था, गोया उसके शौहर को पैग़ाम मिल रहा होता था कि मेरी बेटी ने मेरे घर में जो ज़िन्दगी गुज़ारी है उसका फ़ारिग़ वक़्त इस क़ुरआन पाक को लिखने में गुज़ारा है।

शौहर के हुक़ूक़

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मियाँ-बीवी का तज़किरा करते हुए औ़रतों को बताया कि अगर शरीअ़त में किसी और को सज्दा करने की इजाज़त होती तो मैं औ़रत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सज्दा करे। हदीस पाक में आता है कि जो औ़रत फ़राईज़ को पूरा करने वाली हो और उसे ऐसी हालत में मौत आ जाये कि उसका शौहर उससे ख़ुश हो तो अल्लाह तआ़ला उसके लिए जन्नत का दरवाज़ा खोलते हैं ताकि वह बग़ैर हिसाब-किताब के जन्नत में दाख़िल हो सके।

यह भी कह दिया कि अगर किसी औ़रत से उसका शौहर जायज़ वजह से नाराज़ हो और वह औ़रत ज़िद करके ख़ामोश रहे और शौहर ऐसी हालत में सो जाये तो सारी रात अल्लाह के फ़रिश्ते उस औ़रत पर लानत बरसाते हैं। गोया शौहर की ख़ुशी में अल्लाह तआ़ला की ख़ुशी को शामिल कर दिया गया। शौहर की इताअ़त और फ़रमाँबरदारी में सहाबी औ़रतों (रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्-न) के वाक़िआ़त बड़े अ़जीब हैं।

एक सहाबिया (सहाबी औ़रत) रज़ि० के हाँ बेटा पैदा हुआ।

शौहर जिहाद पर गया हुआ है। जिस दिन शौहर को आना है उस दिन चन्द घन्टे पहले बेटा मर गया। अब परेशान बैठी है कि शौहर इतने अ़रसे के बाद आयेगा और जब यह मालूम होगा कि बेटा मर गया तो उसे कितना सदमा होगा, दिल में अफ़सोस होगा। काश! बच्चे को ज़िन्दगी में आकर प्यार ही कर लेता।

जब वह सहाबी औ़रत बहुत परेशान हुई तो उसने बच्चे को नहला-धुलाकर कपड़ा डालकर चारपाई पर रख दिया। किसी को इत्तिला न दी, शौहर घर आया तो पूछा कि क्या हुआ? बताया कि अल्लाह ने बेटा दिया। पूछा कि मेरा बेटा कहाँ है? कहा कि वह सुकून में है। शौहर समझा कि वह सो रहा है। चुनाँचे शौहर ने खाना खाया तो रात हो गयी। मियाँ-बीवी इकट्ठे हुए सफ़र की बातें भी हुईं लेकिन उस औ़रत को देखें जो माँ थी उसके दिल पर क्या गुज़र रही होगी। जिसके मासूम बेटे की लाश सामने चारपाई पर पड़ी है, मगर वह शौहर की खुशी की ख़ातिर सीने पर सिल रखकर इस राज़ को छुपाये बैठी है कि मेरे शौहर का दिल ग़मज़दा न हो। वह उसके साथ खाना भी खा रही है, उससे बोल भी रही है, दोनों मिल भी रहे हैं यहाँ तक कि इसी हाल में सुबह हो गयी।

सुबह अपने शौहर से पूछती है कि मुझे एक बात बताईये। शौहर ने कहा पूछो! कहने लगी अगर कोई किसी को अमानत दे और फिर कुछ अ़रसे के बाद वापस माँगे तो खुशी से देनी चाहिए या ग़मज़दा होकर। शौहर ने कहा कि खुश होकर। कहा कि अच्छा आपको भी अल्लाह ने अमानत दी थी, आपके आने से कुछ देर पहले अल्लाह ने वह अमानत वापस ले ली। अब जाईये और खुशी-खुशी अल्लाह के हवाले कर दीजिए। अल्लाहु अकबर।

उस सहाबी औ़रत ने शौहर के हुकूक़ और उसकी ख़िदमत का हक़ अदा कर दिया। सुबह उनके शौहर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि ऐ अल्लाह के

नबी! मेरे घर में यह मामला हुआ। मेरी बीवी ने मेरी ख़ुशी की ख़ातिर इतने सब्र व संयम का प्रदर्शन किया। अल्लाह के नबी ने दुआ दी। चुनाँचे अल्लाह ने उस रात में बरकत डाली और वह औ़रत अपने शौहर से मिलने की वजह से हामिला (गर्भवती) हुई। अल्लाह ने उनको एक और बेटा अ़ता किया, जो हाफ़िज़े कुरआन बना और हाफ़िज़े हदीस भी बना।

बीवी के हुक़ूक़

आईये अब जायज़ा लें कि औ़रत के शौहर पर क्या हुक़ूक़ हैं। उनमें से पहला हक़ है औ़रत का 'नान-नफ़्क़ा' यानी औ़रत के ख़र्चों को पूरा करना। एक बात ज़ेहन में रख लेना कि अल्लाह तआ़ला ने औ़रत के ज़िम्मे अपना नान-नफ़्क़ा कमाने का बोझ नहीं रखा। औ़रत अपने ख़र्चों के लिए कमाने की कोई ज़िम्मेदारी नहीं। अगर बेटी है तो बाप का फ़र्ज़ है कि वह अपनी बेटी का ख़र्चा पूरा करे। अगर बहन है तो भाई के ज़िम्मे है कि वह अपनी बहन का ख़र्चा पूरे करे। अगर बीवी है तो शौहर की ज़िम्मेदारी है कि वह बीवी का ख़र्चा पूरा करे। और अगर माँ है तो औलाद का फ़र्ज़ है कि वह अपनी माँ का ख़र्चा पूरा करे। बेटी से लेकर माँ बनने तक अल्लाह ने औ़रत पर अपनी रोज़ी कमाना कभी भी फ़र्ज़ नहीं किया।

तो यह शौहर की ज़िम्मेदारी होती है कि वह अपनी बीवी का ख़र्चा पूरा करे। उसके ख़र्चे के मुताल्लिक़ उलेमा ने मसला लिखा है कि शौहर को चाहिए कि अपनी हैसियत के मुताबिक़ बीवी का ज़ाती ख़र्चा मुक़र्रर करे। मुम्किन है कि कोई आदमी पचास डॉलर दे सकता हो, कोई आदमी सौ डॉलर दे सकता हो, और कोई आदमी सिर्फ़ दस डॉलर दे सकता हो। मात्रा और तायदाद की बात नहीं। घर की सब्ज़ी वग़ैरह के लिए ख़र्चा देना और बात है, शरीअ़त कहती है कि वह तुम्हारी बीवी है, अपने घर को छोड़कर तुम्हारा घर बसाने यहाँ आयी

है, अब तुम उसको अपनी ज़ाती ज़रूरतों के लिए कुछ पैसे दे दो और देने के बाद तुम्हें पूछने की ज़रूरत नहीं कि वे पैसे कहाँ ख़र्च किये।

इसमें भी हिक्मत है, हो सकता है कि औरत महसूस करे कि मेरी बहन ग़रीब है मैं उसको दे दूँ। मैं अपने भाई की कुछ मदद करूँ। उसे तब ख़ुशी हो जब वह किसी ग़रीब औरत का दुख बाँटे। लिहाज़ा जब ज़ाती ख़र्चा दे दिया तो अब पूछने की ज़रूरत नहीं, वह जहाँ चाहे ख़र्च कर सकती है। बीवी के हुक़ूक़ से मुताल्लिक़ दूसरी बात सुनें। फ़ुक़हा (दीन के आलिमों) ने मसला लिखा है कि जब मर्द किसी औरत से निकाह करे तो उसकी ज़िम्मेदारी है कि उस औरत को सर छुपाने के लिए अपनी हैसियत के मुताबिक़ जगह बना दे। कहावत मशहूर है कि अपना घौंसला अपना, कच्चा हो या पक्का। औरत को कोई ऐसी जगह मुहैया कराना जहाँ वह सर छुपाये, यह शौहर की ज़िम्मेदारी है।

अगर मजबूरी हो, घर के सब अफ़राद इकट्ठे रहते हों तो उसे कोई एक कमरा ही दे दिया जाये, जहाँ वह अपनी ज़रूरतों का सामान रख सके। यह न हो कि बीवी का भी कमरा वही है और उसी में माँ-बाप का सामान भी पड़ा हुआ है। किसी और का सामान भी पड़ा हुआ है। यह बात ठीक है कि हर आदमी मकान नहीं बना सकता, लेकिन जो बना सकते हैं वे बनाकर दें। यह शौहर के फ़राईज़ में से एक फ़र्ज़ है।

तीसरी बात यह है कि चूँकि शौहर अपने घर के लिए अमीर और सरदार है लिहाज़ा उसे चाहिए कि अपनी रिआया यानी अपने घर वालों के साथ नर्मी करे, अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उससे नर्मी फ़रमायेंगे। जो दूसरों को जल्दी माफ़ करने वाला होगा अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसको जल्दी माफ़ फ़रमायेंगे। जो दूसरों के ऐबों को छुपाने वाला होगा अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसके ऐबों को छुपायेंगे। इस्लाम में बीवी का तसव्वुर जीवन-साथी का तसव्वुर है, हमदम व हमराज़ का तसव्वुर है, वह कोई बाँदी का तसव्वुर नहीं है,

वह अच्छे दोस्त का तसव्वुर है। कुरआन पाक में जहाँ जहाँ मियाँ-बीवी के हुकूक़ का तज़किरा है वहाँ जगह-जगह फ़रमाया:

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ

'और तुम अल्लाह से डरते रहना'। यह इसलिए कि 'और तुम जान लेना कि तुमको अल्लाह से मुलाक़ात करनी है।

इसलिए कि बाज़ मामलात ऐसे होते हैं कि न बीवी शर्म से किसी को बता सकती है और न शौहर शर्म से किसी को बता सकता है मगर अन्दर-अन्दर दोनों एक दूसरे का दिल दुखा रहे होते हैं।
फ़रमाया कि तुम इस तरह एक दूसरे का दिल जलाया करोगे तो याद रखना कि तुमको अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात करनी है। अगर एक दूसरे को सुकून नहीं पहुँचाओगे तो क़ियामत के दिन उसको कैसे जवाब दे सकोगे।

एक बेहतरीन उसूल यह है कि अगर कोई ग़लती या कोताही बीवी से हो जाये तो वह माफ़ी माँग ले, और अगर शौहर से हो जाये तो वह माज़िरत कर ले। अपनी ग़लती पर माज़िरत कर लेने से इनसान की इज़्ज़त बढ़ती है। मुझे इस मौक़े पर अपने पीर व मुर्शिद की एक बात याद आई। ये हज़रात कितने मुख़्लिस होते हैं अपनी ज़िन्दगी के वाक़िआ़त नमूने बनाकर पेश करते हैं। फ़रमाने लगे कि एक दिन मैं वुज़ू कर रहा था (उम्र काफ़ी ज़्यादा थी) बीवी साहिबा वुज़ू कराते वक़्त पानी ठीक से नहीं डाल रही थी जिस पर मैंने उन्हें ज़रा सख़्ती से बात कह दी कि तुम क्यों ठीक तरह से वुज़ू नहीं करवा रही हो। मगर मेरे इस तरह गुस्सा करने पर वह ख़ामोश रहीं और जिस तरह मैं चाहता था वैसे कर दिया।

ख़ैर मैं वुज़ू करके घर से चला, रास्ते में ख़्याल आया कि अभी तो मैं अल्लाह की मख़्लूक़ के साथ यह बर्ताव कर रहा था, अभी मुसल्ले पर जाकर नमाज़ पढ़ाऊँगा। मेरी नमाज़ कैसे क़बूल होगी। कहने लगे कि मैं आधे रास्ते से वापस आया और बीवी से माज़िरत

की (यानी अपने रवैये पर शर्मिन्दगी का इज़हार किया) उसने मुझे माफ़ कर दिया। फिर मैंने जाकर मस्जिद में नमाज़ पढ़ायी।

दाम्पत्य ज़िन्दगी और पूर्वी समाज

मोहतरम हज़रात! दाम्पत्य ज़िन्दगी के बारे में हमारा मशरिक़ी (पूर्वी) समाज आज भी अल्हम्दु लिल्लाह बहुत पुरसुकून है। हमारा यह आकलन है कि सौ में से कम से कम निन्नानवे लड़कियाँ जब अपने माँ-बाप के घर से रुख़्सत होती हैं तो उनके दिलों में घर बसाने की नीयत होती है। यह गौरव सिर्फ़ मशरिक़ी लड़की को हासिल है कि वह जब अपने माँ-बाप के घर से चलती है तो दिल में यह नीयत होती है कि मुझे घर बसाना है। यह आगे शौहर का मामला है, अच्छा बर्ताव किया और ज़िन्दगी की गाड़ी ठीक से चलाई तो घर आबाद हो गया, और अगर सही तरीक़े से अपने घरेलू मामलात को न संभाला तो वह घर बरबाद हो गया।

बाज़ मशरिक़ी (पूर्वी देशों की) लड़कियाँ तो इस क़द्र पाकदामन होती हैं कि उनमें हूरों की सिफ़ात झलकती हैं। मिसाल के तौर पर अ़रब की औ़रतें अपने शौहर की आ़शिक़ होती हैं और ग़ैर-मर्दों की तरफ़ आँख उठाकर भी नहीं देखतीं। यह इस्लाम की बरकत है कि मशरिक़ में आज भी बाज़ ऐसी मासूम जवानियाँ होती हैं जो अपने घर से क़दम निकालती हैं तो उनके दिलों में किसी गैर-मर्द का दख़ल नहीं हुआ करता। कई ऐसी भी होती हैं कि शौहर का साया सर से उठ गया तो बच्चों की ख़ातिर अपनी पूरी ज़िन्दगी गुज़ार देती हैं।

हदीस पाक में इरशाद है कि अगर कोई बेवा औ़रत यह समझे कि मुझे अपने बच्चों की परवरिश की ख़ातिर बैठना है और ख़ुद इसको पसन्द करे तो अल्लाह तआ़ला उसको जिहाद करने का सवाब अ़ता फ़रमाते हैं। जिस औ़रत का शौहर फ़ौत हो (मर) जाये उसकी तो बहार ख़िज़ाँ में तब्दील हो गयी, मगर यह ख़िज़ाँ के मौसम में

अपने परों के नीचे अपने छोटे-छोटे मासूम बच्चों को छुपाकर अपनी ज़िन्दगी गुज़ार रही होती है। अल्लाहु अकबर।

चमन का रंग गो तूने सरासर ऐ ख़िज़ाँ! बदला
न हमने शाख़े-गुल छोड़ी न हमने आशियाँ बदला

ख़ुशगवार दाम्पत्य ज़िन्दगी

दाम्पत्य ज़िन्दगी के बारे में एक बात ज़ेहन में रखिये कि जहाँ मुहब्बत पतली हुआ करती है वहाँ ऐब मोटे नज़र आते हैं और छोटी-छोटी बातों के बतंगड़ बन जाया करते हैं। इसलिए शरीअ़त ने हुक्म दिया कि तुम आपस में मुहब्बत व प्यार से ज़िन्दगी गुज़ारो। इनसान को बड़ा हौसला रखना चाहिए। इंगलिश की एक कहावत है:

To run a big show one should have a big heart.

यानी एक बड़ा निज़ाम चलाने के लिए इनसान को दिल भी बड़ा रखना चाहिए।

इनसान को तहम्मुल और बुर्दबारी से घर के मामलात निभाने चाहिएँ। कितनी अ़जीब बात है कि शौहर अपनी बीवी से झगड़ता है, जो ज़िन्दगी शौहर के लिए वक़्फ़ कर चुकी होती है और बीवी अपने शौहर से झगड़ती है जो उसकी ज़िन्दगी में इतना बड़ा मक़ाम पा चुका होता है।

शुनीदम कि मर्दाने राहे ख़ुदा
दिले दुश्मनाँ हम न करदन्द तंग
तुरा के मयस्सर शवद ईं मक़ाम
कि बा दोस्ताँ हस्त पैकारे जंग

तर्जुमाः हमने सुना है कि अल्लाह वाले दुश्मनों के दिलों को भी

तंग नहीं किया करते, तुम्हें यह मक़ाम कहाँ से नसीब हो सकता है कि तुम अपनों के साथ भी लड़ने में लगे हुए हो।

बहुत सी बार दीन से जहालत की वजह से या तकब्बुर की वजह से पढ़े-लिखे जोड़ों में भी झगड़े होते रहते हैं मियाँ-बीवी एक दूसरे के इस क़द्र ख़िलाफ़ कि शौहर हर वक़्त बीवी की ग़लतियाँ और ऐब ढूँढ़ने की कोशिश करता है और बीवी हर वक़्त शौहर की ग़लतियाँ ढूँढ़ने की कोशिश करती है। जिस्म एक दूसरे के कितने क़रीब, दिल एक दूसरे से कितने दूर। उन दिनों का मामला इस शे'र के मिस्दाक़ होता है।

ज़िन्दगी बीत रही है दानिश
कोई बेजुर्म सज़ा हो जैसे

बहुत सी बार ये झगड़े किसी तीसरे की वजह से होते हैं। मेरी यह बात याद रखना कि मियाँ-बीवी एक दूसरे की वजह से नहीं झगड़ते, जब भी झगड़ेंगे किसी तीसरे की वजह से झगड़ेंगे या तो वे सास-ससुर होंगे या बीवी के मैके वाले। इसलिए शरीअ़त ने लड़की को एक बात समझा दी कि देखो निकाह से पहले एक माँ थी और एक बाप था। अब तुम्हारी दो माँयें हैं और दो बाप हैं, इसी तरह लड़के को बता दिया कि तुम्हारी दो माँयें और दो बाप हैं। अल्लाह तआ़ला ने सास और ससुर को माँ और बाप का दर्जा दिया। तो इसमें एक बेहतरीन उसूल याद रख लीजिए कि शादी के बाद लड़की को चाहिए कि शौहर के घर वालों को ख़ुश रखे, शौहर को चाहिए कि वह अपनी बीवी के घर वालों को ख़ुश रखे। जहाँ यह उसूल दोनों मियाँ-बीवी अपना लें वहाँ आप देखेंगे कि कभी लड़ाई नहीं होगी। कभी एक ग़ुस्से में आ जाये तो दूसरे को चाहिए कि बरदाश्त से काम ले। एक ही वक़्त में दोनों का ग़ुस्सा में आ जाना मामले को बेहद ख़राब करता है।

हदीस पाक में आता है कि अगर कोई औ़रत शौहर के ग़ुस्से पर

सब्र करे तो अल्लाह तआ़ला उसे भी 'सब्रे-अय्यूब' (हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम की तरह सब्र करने) का दर्जा अ़ता फ़रमायेंगे। तो जब सब्र का इतना अज्र व सवाब मिलता है तो उस मौक़े पर ज़रा ख़ामोश हो जाया करें।

नकारात्मक सोच से बचें

मियाँ-बीवी दोनों को मनफ़ी (नकारात्मक) सोच से बचना चाहिए। पंजाबी की कहावत है "बांधे दा सब कुछ बावे ते न भांदे दा कजवी न भावे" यानी जो आदमी अच्छा लगता हो उसका हर काम अच्छा लगता है और जो आदमी बुरा लगता हो उसका हर काम बुरा लगता है। मियाँ-बीवी में अगर नकारात्मक सोच हो तो एक दूसरे की हर बात ज़हर मालूम होती है।

हिकायत है कि एक बुज़ुर्ग की बीवी उनसे हर वक़्त लड़ती झगड़ती रहती थी। उन्होंने एक दिन दुआ़ की कि या अल्लाह! मेरे हाथ पर कोई ऐसी करामत (चमत्कार) ज़ाहिर फ़रमा जिसे देखकर मेरी बीवी भी मेरी अ़क़ीदतमन्द (श्रद्धालू) बन जाये। चुनाँचे कुदरते इलाही से उन्हें इल्हाम हुआ (यानी उनके दिल में यह बात डाली गयी) कि तुम उड़ना चाहो तो तुम्हें हवा में उड़ने की करामत मिलेगी। चुनाँचे वह बुज़ुर्ग उड़ते-उड़ते अपने घर के ऊपर से गुज़रे। जब शाम को वापस घर आये तो बीवी ने आते ही कहा "लो तुम भी बड़े बुज़ुर्ग बने फिरते हो। बुज़ुर्ग तो आज मैंने देखे जो हवा में उड़ते जा रहे थे" उस बुज़ुर्ग ने कहा "ख़ुदा की बन्दी वह मैं ही तो था" तो बीवी ने फ़ौरन कहा "अच्छा मैं भी सोच रही थी कि यह उड़ने वाला टेढ़ा-टेढ़ा क्यों उड़ रहा है" देखिए मनफ़ी (नकारात्मक) सोच कितनी बुरी चीज़ है। मियाँ-बीवी को चाहिए कि अपने अन्दर मुस्बत (सकारात्मक) सोच पैदा करें। मियाँ-बीवी को चाहिए कि क़दम उठाने से पहले देख लें कि यह रास्ता किधर को जाता है।

जो शख़्स अपनी बीवी पर एहसान करेगा यक़ीनन वह अपनी बीवी का दिल जीत लेगा। तो बीवी को ज़ोर के ज़रिये जीतने की कोशिश न करें, बीवी को एहसान और अच्छे अख़्लाक़ के ज़रिये जीतने की कोशिश करें। दाम्पत्य ज़िन्दगी में सबसे ज़्यादा नुक़सानदेह चीज़ मनफ़ी (नकारात्मक) सोच है।

देखिये सोचने के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ हाते हैं। मैं मिसाल देता हूँ। एक शाख़ (टहनी) पर फूल भी हैं काँटे भी हैं। ऐ मुख़ातब! तुझे गिला है कि फूल के साथ काँटे हैं और मुझे ख़ुशी है कि काँटो के साथ फूल भी है। यह अपनी-अपनी नज़र है। किसी की नज़र काँटों पर गयी और किसी की नज़र फूल पर गयी। सच है: नज़र अपनी-अपनी पसन्द अपनी-अपनी।

मुस्कुराना भी नेकी है

हदीस पाक में है कि जब कोई बीवी अपने शौहर की तरफ़ देखकर मुस्कुराती है और शौहर बीवी की तरफ़ देखकर मुस्कुराता है तो अल्लाह तआ़ला दोनों को देखकर मुस्कुराते हैं। अल्लाह अल्लाह!

हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की रिवायत है कि नबी अ़लैहिस्सलाम जब भी घर में दाख़िल होते तो मुस्कुराते चेहरे के साथ दाख़िल होते थे। शौहरों को चाहिए कि दफ़्तरों के झगड़े दफ़्तर ही में छोड़ आया करें। जब घर में दाख़िल हों तो मुस्कुराहटें बिखेरते हुए आयें। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत पर अ़मल का सवाब भी मिलेगा और जवाब में बीवी की मुस्कुराहट भी मिलेगी।

A Smile

A smile something nice to see, it doesnot cast a cent.

A smile is something all you own it never

can be spent.

A smile is welcome every where, it does away with frowns.

A smile is good for every one, to ease life's up and downs.

यह भी नहीं होना चाहिए कि शौहर तो मुस्कुराते चेहरे से घर आये मगर बीवी मुँह लटकाये फिरती रहे। शौहर की मुस्कुराहट का जवाब बीवी को निम्नलिखित अलफ़ाज़ में देना चाहिए।

मइय्यत गर न हो तेरी तो घबराऊँ गुलिस्ताँ में
रहे तू साथ तो सेहरा में गुलशन का मज़ा पाऊँ (१)

लिखकर लटकाईये

अंग्रज़ी का एक वाक्य है। मेरे दोस्तो इसको याद कर लीजिए बल्कि घर में कहीं लिखकर लटका लीजिए।

House is built by hands
but home is built by hearts

कहने वाले ने कहा कि मकान तो हाथों से बन जाया करते हैं मगर घर हमेशा दिलों से बना करते हैं।

ईंटे जुड़ती हैं मकान बन जाता है मगर जब दिल जुड़ते हैं तो घर आबाद हो जाया करते हैं।

मेरे दोस्तो! हम इन बातों को तवज्जोह के साथ सुनें और अच्छी दाम्पत्य ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करें। हम अपने वतन से दूर दूसरों के देश में बैठे हैं। हमारी छोटी-छोटी बातों पर होने वाले झगड़े जब स्थानीय प्रशासन को पहुँचते हैं तो वे इस्लाम पर हंसते है। वे

(१) इस शे'र में मुश्किल अलफ़ाज़ के मायने ये हैं: 'मइय्यत' साथ। 'गुलिस्ताँ' बाग़, फूलों का स्थान। 'सेहरा' जंगल, बयाबान। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात पर उंगली उठाते हैं। कितनी बद-क़िस्मती है अगर हमने अपनी कम-ज़र्फ़ी की वजह से इस्लाम पर उंगली उठाने का मौक़ा दिया। छोटी-छोटी बातें अपने घर में समेट लिया करें। ऐसा झगड़ा न बनायें जो कम्यूनिटी में चर्चा का विषय (Talk of the town) बना करें। हम अपनी ज़ात के ख़ोल (ग़िलाफ़, वेष्टन) से बाहर निकलें। हम मुसलमानों की बदनामी के बजाये मुसलमानों की नेकनामी का ज़रिया बनें। आज ऐसी सोच रखने वाले इतने थोड़े हैं कि चिराग़ लेकर ढूँढ़ने कि ज़रूरत है।

एक हुजूम है औलादे आदम का, जिधर भी देखिये
ढूँढिये तो हर तरफ़ है अल्लाह के बन्दों का काल

आ़म तौर पर देखा गया है कि जब मियाँ-बीवी क़रीब होते हैं तो एक दूसरे से लड़ाईयाँ होती हैं। अगर ऐसी हालत में शौहर मर जाये तो यही बीवी सारी ज़िन्दगी शौहर को याद करके रोती रहेगी कि जी इतना अच्छा था मेरे लिए तो बहुत ही अच्छा था। अगर बीवी मर जाये तो यह शौहर सारी ज़िन्दगी याद करके रोता रहेगा कि बीवी कितनी अच्छी थी। मेरा कितना ख़्याल रखती थी। पंजाबी की एक कहावत है कि "बन्दे दी क़दर आन्दी ऐ टरगियाँ या मर गियाँ"।

हम बन्दे की क़द्र उसके क़रीब रहते हुए कर लिया करें। कई बार यह देखा गया है कि मियाँ-बीवी झगड़े में एक दूसरे को तलाक़ दे देते हैं। जब होश आता है तो शौहर अपनी जगह पागल बना फिरता है और बीवी अपनी जगह पागल बनी फिरती है। फिर हमारे पास आते हैं कि मौलवी साहिब कोई ऐसी सूरत नहीं हो सकती कि हम फिर से मियाँ-बीवी बनकर रह सकें? ऐसी सूरतेहाल हरगिज़ नहीं आने देनी चाहिए। माफ़ी और दरगुज़र और समझने-समझाने से काम लेना चाहिए। बल्कि एक रूठे तो दूसरे को मना लेना चाहिए। किसी शायर ने क्या ही अच्छी बात कही है।

इतने अच्छे मौसम में	रूठना नहीं अच्छा
हार जीत की बातें	कल पे हम उठा रखें

आज दोस्ती कर लें

इसी मज़मून को एक दूसरे शायर ने इस तरह अपने शे'र में बाँधा है।

ज़िन्दगी यूँ ही बहुत कम है मुहब्बत के लिए
रूठकर वक़्त गंवाने की ज़रूरत क्या है

अनोखा वक़िआ

उलेमा-ए-किराम ने एक वाक़िआ लिखा है कि एक बीवी बहुत ख़ूबसूरत थी जबकि शौहर बहुत बदसूरत और शक्ल का अनोखा था। रंग काला था। बहरहाल! ज़िन्दगी गुज़र रही थी। नेक समाज में ज़िन्दगियाँ गुज़र जाया करती हैं। एक मौक़े पर शौहर ने बीवी की तरफ़ देखा तो मुस्कुराया और ख़ुश हुआ। बीवी देखकर कहने लगी कि हम दोनों जन्नती हैं।

उसने पूछा यह आपको कैसे पता चला? बीवी ने कहा जब आप मुझे देखते हैं ख़ुश होते हैं शुक्र अदा करते हैं, और जब मैं आपको देखती हूँ तो सब्र करती हूँ। और शरीअ़त का हुक्म है कि सब्र करने वाला भी जन्नती है और शुक्र करने वाला भी जन्नती है।

मुहब्बत शादी के बाद

एक अहम पहलू पर रोशनी डालना ज़रूरी है। इस्लाम ने शादी से पहले मुहब्बत (Love before marriage) की इजाज़त नहीं दी। शादी के बाद मुहब्बत (Love after marrige) की इजाज़त दी है। मुहब्बत को शादी की बुनियाद बनायेंगे तो यह बुनियाद कमज़ोर होगी। आप इसका हश्र पाश्चात्य समाज में देख रहे हैं। और 'मुहब्बत

शादी के बाद' का क्या मतलब है कि जब माँ-बाप ने वकील बनकर लड़के के लिए बेहतरीन लड़की तलाश कर ली और लड़की के लिए बेहतरीन लड़का तलाश कर लिया तो अब वे मियाँ-बीवी बन चुके हैं, अब उन्हें एक दूसरे के साथ मुहब्बत प्यार से ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिए। वे जिस क़द्र मुहब्बत और प्यार से ज़िन्दगी गुज़ारेंगे उस पर उन्हें अज्र व सवाब मिलेगा।

आईये खुशगवार दाम्पत्य ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए मैं अपने प्यारे आक़ा और सरदार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एक अ़मल आपको बता देता हूँ।

मुहब्बत भरी ज़िन्दगी

एक बार प्यारे नबी अ़लैहिस्सलाम घर तशरीफ़ लाये। सेहन में देखा कि हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा प्याले से पानी पी रही हैं। दूर से देखा तो वहीं से इरशाद फ़रमायाः हुमैरा (नाम आ़यशा था, मगर प्यार से हुमैरा कहा करते थे) नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें इसमें भी सबक़ दे दिया। दूर से फ़रमाया हुमैरा! बोलीं ऐ अल्लाह के नबी! फ़रमाईये। फ़रमाया थोड़ा सा पानी मेरे लिए भी बचा देना।

वह उम्मती थीं और बीवी थीं, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम शौहर भी थे और सैयदुल्-मुर्सलीन (तमाम रसूलों के सरदार) भी थे, रहमतुल्-लिल्आलमीन भी थे। बरकतें आपकी ज़ात से मिलनी थीं मगर सुब्हानल्लाह! मुहब्बत भी अ़जीब चीज़ है कि अपनी बीवी को देखा कि पानी पी रही हैं तो दूर से कहा कि कुछ पानी मेरे लिए भी बचा देना।

चुनाँचे हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने कुछ पानी बचा दिया। जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क़रीब तशरीफ़ लाये तो अपनी बीवी का बचा हुआ पानी हाथ में लेकर पीना चाहा। अचानक आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रुक गये और पूछाः ऐ

हुमैरा! तूने इस प्याले पर किस जगह होंठ लगाकर पिया था? हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा क़रीब आईं और उस जगह की निशानदेही की। हदीस पाक में आता है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने प्याले के रुख़ को फेरा और उस जगह अपने होंठ मुबारक लगाकर पानी पिया। अल्लाह अल्लाह!

मेरे दोस्तो! अगर शौहर बीवी को इस क़द्र प्यार देगा तो बीवी का दिमाग़ ख़राब है कि वह घर को आबाद नहीं करेगी? बल्कि वह तो घर आबाद करने के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा देगी। वह मुहब्बत का जवाब मुहब्बत से, उल्फ़त का जवाब उल्फ़त से, प्यार का जवाब प्यार से और वफ़ा का जवाब वफ़ाओं से देगी। वह शौहर की मुहब्बत को दिल में बसायेगी और अंखियों के झरोंकों में उसकी तस्वीर सजायेगी। यह है दाम्पत्य ज़िन्दगी का हसीन इस्लामी तसव्वुर। आईये नफ़रतों को दूर कीजिए और मुहब्बत भरी पाकीज़ा ज़िन्दगी की शुरूआ़त कीजिए। किसी शायर ने कहा है।

फ़ुरसते ज़िन्दगी कम है मुहब्बतों के लिए
लाते हैं कहाँ से वक़्त लोग नफ़रतों के लिए

अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हमें ख़ुशगवार दाम्पत्य ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये, आमीन।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

औलाद की तरबियत कैसे करें? (1)

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم ○

الحمد للّٰه و كفٰى و سلام على عباده الّذين اصطفٰى اما بعد!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ (سورة النحل)

سبحٰن ربك رب العزة عما يصفون ○ وسلام على المرسلين ○ والحمد للّٰه رب العالمين ○ اللّٰهم صل على سيّدنا محمد وعلٰى ال سيدنا محمد وبارك وسلم.

बच्चे का पहला मदरसा

इनसानी ज़िन्दगी की शुरूआत माँ के पेट से होती है। बच्चा माँ के पेट से पैदा होकर दुनिया में आता है। इसी लिए माँ की गोद को बच्चे का पहला मदरसा कहा जाता है। आईन्दा के एक-दो बयानात औरत की तालीम की ज़रूरत, औरत बच्चों की तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) किस तरह करे? इस उनवान पर रहेंगे। उम्मीद है कि सब औरतें तवज्जोह से सुनेंगी। अहम बातों को लिखकर सुरक्षित रखेंगी और उन बातों को अमली जामा पहनायेंगी। ताकि उनसे उनको दीनी और दुनियावी सब फ़ायदे हासिल

हो सकें। फ़ारसी का एक शे'र है।

ख़िश्ते अव्वल चूँ नहद् मेअ़मार कज
ता सुरैया मी रसद दीवार कज

जब कोई मिस्त्री किसी दीवार की पहली ईंट ही टेढ़ी रख देता है तो वह दीवार आसमानों तक ऊँची चली जाये उसका टेढ़ापन बढ़ता ही चला जाता है।

बिल्कुल इसी तरह अगर माँ की अपनी ज़िन्दगी में दीनदारी नहीं और वह बच्चे की परवरिश कर रही है तो वह बच्चे में दीन की मुहब्बत कैसे पैदा कर पायेगी, इसलिए इस पहली ईंट को ठीक करने की ज़रूरत है। माँओं की गोद को दीनी गोद बनाने की ज़रूरत है।

आज बच्चियाँ अपनी उम्र की वजह से माँ बन जाती हैं लेकिन दीनी तालीम न होने की वजह से उनको यह पता नहीं होता कि मुझे क्या करना है। वे माँ के मक़ाम से वाक़िफ़ नहीं होतीं। माँ की ज़िम्मेदारियों से वाक़िफ़ नहीं होतीं। बेचारी अपनी अ़क़्ल व समझ से जो बेहतर समझती हैं वही करती रहती हैं। कितना अच्छा होता कि उनको दीन की तालीम होती, कुरआन और हदीस के उलूम उनके सामने होते, अल्लाह वालों की ज़िन्दगियों के हालात उनको मालूम होते, क़दम-क़दम पर ये बच्चे को अच्छी हिदायात देतीं, नसीहतें करतीं, दुआ़यें देतीं। उनकी मुहब्बत भरी बातें बच्चे की ज़िन्दगी में निखर कर सामने आ जातीं।

औ़रतों की दीनी तालीम की ज़रूरत

औ़रतों को दीनी तालीम देना बहुत ज़रूरी है। यह नाचीज़ (मौलाना जुल्-फ़क़ार फ़क़ीर) पहले भी कई बार कह चुका है कि अगर किसी इनसान के दो बच्चे हों एक बेटा और एक बेटी और उसकी हैसियत इतनी हो कि दो में से एक को तालीम दिलवा सके तो उसको

चाहिए कि बेटी को तालीम दिलवाये, इसलिए कि मर्द पढ़ा तो एक फ़र्द पढ़ा, औ़रत पढ़ी तो एक परिवार पढ़ा।

आजकल के मर्दों में एक बात आ़म मशहूर है कि अजी़ हदीस पाक में आया है कि औ़रतें अ़क्ल और दीन में नाक़िस होती हैं। यह बात सौ फ़ीसद ठीक है, इसकी वजह यह है कि उनकी अ़क्ल में जज़्बातियत ज़्यादा होती है। ज़रा सी बात पर भड़क उठती हैं। महसूस जल्दी कर लेती हैं। नरम भी जल्दी पढ़ जाती हैं, गरम भी जल्दी हो जाती हैं। तो यह अ़क्ल की कमी-बेशी, यह अ़क्ल का नुक़्स है। दूसरे अपने जज़्बात पर क़ाबू नहीं रख पातीं, जज़्बात में आ जायें तो दीन की बातों को भी ठुकरा बैठती हैं, इसलिए फ़रमाया कि उनमें अ़क्ल और दीन की कमी है। वैसे अगर ये किसी काम के करने पर तुल जायें तो माशा-अल्लाह करके दिखा दिया करती हैं।

हदीस पाक में है:

مارأيت من ناقصات عقل ودين اذهبن الرجل الهاذرم من احدى كل

(الحديث)

कि औ़रतों को अ़क्ल और दीन के जैसा नाक़िस नहीं देखा, लेकिन ये ऐसी नाक़िस हैं कि बड़े-बड़े अक़्लमन्द मर्दों की अ़क्ल को उड़ा देती हैं।

इसलिए यह बात तर्जुबे में आई कि औ़रतें जब किसी चीज़ को मनवाने पर तुल जायें, ये ज़िद करें, हठधर्मी करें या शौहर को प्यार मुहब्बत की गोली खिलायें, तो शौहर को मजबूर करके अपनी बात मनवा लेती हैं। जब ये दुनिया की बातें मनवा लेती हैं तो दीन की तालीम हासिल करने की ये बात क्यों नहीं मनवा सकतीं? इसमें ग़लती मर्दों औ़र औ़रतों दोनों की तरफ़ से है। कुछ घरों के मर्द चाहते हैं कि औ़रतें दीन में आगे बढ़ें मगर औ़रतों के दिल में शौतानियत ग़ालिब होती है, रस्म व रिवाज की मुहब्बत होती है, वे आगे क़दम नहीं

बढ़ातीं और दीनदारी की ज़िन्दगी गुज़ारने पर अमादा नहीं होतीं।

और कई घरों में औरतें दीनदार होती हैं, वे चाहती हैं कि हमारे मर्द नेक बन जायें, मगर मर्दों की अक़्ल पर पर्दे पड़े होते हैं, वे सुनी अनसुनी कर देते हैं। ये बेचारी रो-रोकर उनको समझाती हैं कि यूँ न करो यह गुनाह न करो। यह गुनाह न करो, मगर ये तवज्जोह भी नहीं करते। तो ऐसे मर्दों की वजह से घर की औरतों के दीन में भी रुकावटें आ जाती हैं।

तो किसी घर में औरत रुकावट बनती है और किसी घर में मर्द रुकावट बनता है। इन रुकावटों को दूर करने की ज़रूरत है। मर्दों में जहाँ दीनदारी का शौक़ होता है इसी तरह औरतों में भी दीनदारी का शौक़ होता है, उनके अन्दर रूहानी तरक़्क़ी करने की ख़ासियत और सलाहियत मौजूद होती है। अगर उनके दिल में अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की मारिफ़त को हासिल करने का शौक़ आ जाये तो रातों की इबादत उनके लिए मुश्किल नहीं, तहज्जुद की पाबन्दी उनके लिए मुश्किल नहीं। पाँच वक़्त की नमाज़ की पाबन्दी उनके लिए मुश्किल नहीं।

वाशिंगटन की एक नौ-मुस्लिम औरत और मुहब्बते इलाही

मेरा एक बार वाशिंगटन स्टेट में जाना हुआ। एक नयी मुसलमान औरत कुछ सवालात पूछने के लिए आई। पर्दे के पीछे बैठकर उसने पूछा कि मैं पहले यहूदन थी फिर मुसलमान बनी तो चन्द सवालात उसने पूछे उसके जवाबात उसको दे दिए। उस जगह की मुसलमान औरतें उसकी बड़ी तारीफ़ें करती थीं। बातों के दौरान एक औरत ने बताया कि यह नमाज़ का इतना एहतिमाम करती है कि उसने नमाज़ों के लिए मुस्तक़िल अलग से ख़ूबसूरत पोशाकें सिलवाई हुई हैं। हर नमाज़ के लिए वुज़ू करती है, अच्छे कपड़े पहनती है, उस पर अपना

चौग़ा पहनती है, जो बहुत ख़ूबसूरत होता है, जैसे किसी मुल्क की रानी है और वह पहनकर मुसल्ले पर आकर ऐसी जमकर नमाज़ पढ़ती है जैसे डूब चुकी हो। औरतें कहती हैं कि हम तो उसको देख-देखकर हैरान होती हैं।

गुफ़्तगू के दौरान मैंने उस औरत से पूछा कि आप नमाज़ का जो यह एहतिमाम करती हैं इसकी कोई ख़ास वजह? उसने कहा मैंने कुरआन मजीद में पढ़ा, अल्लाह तआला ने मर्दों के लिए फ़रमायाः

خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ (سورة الاعراف)

तुम अगर मस्जिद में आओ तो ज़ीनत इख़्तियार करके (साफ़-सुथरे होकर और सज कर) आओ।

मैं समझ गई कि वह चाहते हैं कि मुसल्ले पर मेरे सामने जो हाथ बाँधकर खड़ा हो, उसने साफ़-सुथरे कपड़े पहने हुए हों और दुनिया का भी दस्तूर है कि जब किसी दफ़्तर में किसी अफ़सर के सामने कोई पेश होता है तो अच्छे लिबास में जाता है।

कहने लगीः मैं तो तमाम हाकिमों के हाकिम के सामने खड़ी होती हूँ। इसलिए मैं पोशाक पहनकर हाज़िर होती हूँ कि मेरे मौला इसे पसन्द करते हैं।

फिर जब मैं तकबीर पढ़ती हूँ तो मैं दुनिया को भूल जाती हूँ। बैतुल्लाह मेरे सामने है, जन्नत मेरी दाईं तरफ़ है और जहन्नम बाईं तरफ़ है, और मौत का फ़रिश्ता मेरी रूह क़ब्ज़ करने के लिए मेरे पीछे मौजूद है। और यह मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ है जो मैं पढ़ रही हूँ। सुब्हानल्लाह! अल्लाह की ऐसी नेक बन्दियाँ भी आज दुनिया में मौजूद हैं जो अपनी नमाज़ को ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ समझकर पढ़ती हैं।

तो औरत के दिल में अगर नेकी का जज़्बा आ जाये तो फिर यह नेकी के बड़े-बड़े बुलन्द मक़ामात (दर्जे) हासिल कर लेती है।

अल्लाह ने औरत को नबीया क्यों नहीं बनाया?

अल्लाह तआ़ला ने औ़रत को नबीया नहीं बनाया, मगर नबियों की माँ ज़रूर बनाया है। नबी इसलिए नहीं बनाया गया कि नबी जो आते हैं तो उनके ज़िम्मे इनसानों की तरबियत होती है, अब औ़रत हो और ग़ैर-मर्दों की तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) उसके ज़िम्मे हो तो यह कितना मुश्किल मामला है। इसलिए शरीअ़त ने औ़रत को क़ाज़ी और जज बनाने की इजाज़त नहीं दी कि दोनों में मुद्दई (दावा करने वाला) और मुद्दआ़ अ़लैह (जिस पर दावा किया जाये) दोनों को सामने देखना पड़ता है, उनके हालात का जायज़ा लेना पड़ता है, खोद-कुरेद करनी पड़ती है। फ़ितनों का दरवाज़ा बन्द करने के लिए शरीअ़त ने यह बोझ औ़रत के सर पर नहीं रखा। इसके सिवा विलायत (बुज़ुर्गी) के जितने भी मक़ामात (दर्जे) हैं वे औ़रतें हासिल कर सकती हैं। यह कुरआन मजीद की मुफ़स्सिर (व्याख्याकार) भी बन सकती हैं। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हदीसों की रिवायत भी कर सकती हैं।

इमाम अबू जाफ़र रहमतुल्लाहि अ़लैहि की बेटी और ख़िदमते-हदीस

एक किताब 'दर्से निज़ामी' (मदरसों में पढ़ाये जाने वाले कोर्स) के अन्दर मौजूद है जो भी आ़लिम बनता है उस किताब को ज़रूर पढ़ता है। इमाम अबू जाफ़र तहावी रह. की तहावी शरीफ़। यह किताब कैसे लिखी गई। इमाम साहिब हदीस बयान करते थे और उनकी बेटी इसको लिखती थी। यह उनकी बेटी के ज़रिये लिखी हुई किताब थी जो आगे चली और आज उससे हदीसें पढ़कर सब लोग आ़लिम बनते हैं।

यूँ समझिये कि जितने लोग भी आ़लिम बन रहे हैं, उनके इल्म में इमाम अबू जाफ़र रह. की बेटी का हिस्सा भी मौजूद है। ये सब के

सब उनके रूहानी शागिर्द बन गये। तो औरत ऐसे भी नेकी के काम कर सकती है कि क़ियामत के दिन वह करोड़ों इनसानों को इल्म पहुँचाने का ज़रिया बन जाये।

इस नाचीज़ ने एक छोटी सी किताब लिखी है "ख़्वातीने इस्लाम के कारनामे" उसमें अनेक बाब (अध्याय) हैं कि औरतों ने उलूमे कुरआन में कैसे ख़िदमत की, उलूमे हदीस में कैसे ख़िदमत की, मारिफ़त (दीनदारी और विलायत) के मैदान में औरतों ने कौनसे दर्जे हासिल किये। जिहाद के मैदान में क्या ख़िदमतें अन्जाम दीं। तरबियत के उनवान पर बच्चों की कैसी शानदार तरबियत की।

ये सब वाक़िआत उस छोटी सी किताब में इकट्ठे कर दिये गये हैं, ताकि औरतें उसको पढ़ें और उनको पता चले कि औरतें दुनिया में सिर्फ़ किचन के काम करने के लिए पैदा नहीं हुईं, वह तो ज़िन्दगी की एक ज़रूरत है, ज़िन्दगी का मक़सद कुछ और है, और हमें उस मक़सद को हर वक़्त सामने रखना है।

यह औरत अगर चाहे तो दीन में बहुत ज़्यादा तरक़्क़ी हासिल कर सकती है, बल्कि मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि औरत विलायत के मैदान में इतना रुतबा और दर्जा हासिल कर सकती है कि यह बड़े-बड़े वलियों की तरबियत करने वाली (प्रशिक्षक) भी बन जाती है।

हज़रत हसन बसरी रह. को हज़रत राबिया बसरिया रह. का मश्विरा

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि इस उम्मत के बड़े औलिया-अल्लाह में से गुज़रे हैं। उनके ज़माने में एक ख़ातून (औरत) थी जिसका नाम राबिया बसरिया है। कभी-कभी यह उनके पास जाया करती थीं कुछ मसाईल पूछने के लिए बात पूछने के लिए। एक बार जो उनके घर गईं तो पता चला कि वह दरिया की तरफ़ गये हैं। गर्मी का मौसम था बहुत ज़्यादा शिद्दत की गर्मी थी।

घर वालों ने बताया कि वह दरिया के किनारे इसलिए गये हैं कि वहाँ बैठकर मैं अल्लाह-अल्लाह करूँगा। उनको कुछ ज़रूरी बात पूछनी थी, यह भी दरिया के किनारे की तरफ़ चल पड़ीं। बुढ़ापे की उम्र थी जब दरिया के किनारे पर पहुँचीं तो क्या देखा कि हसन बसरी ने किनारे के बजाये पानी पर दरिया के ऊपर मुसल्ला बिछाया हुआ है और अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त के सामने हाथ बाँधकर खड़े नमाज़ पढ़ रहे हैं। यह गोया उनकी एक करामत थी जो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने उस वक़्त उन पर ज़ाहिर कर दी थी।

यह एक तरफ़ बैठकर देखती रहीं। जब हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि नमाज़ से फ़ारिग़ हुए इन्होंने राबिया बसरिया रहमतुल्लाहि अ़लैहा को देखा तो सलाम किया। राबिया बसरिया रह. ने उन्हें कहा अगर आप हवा पर चलते हैं तो आप मक्खी की मानिन्द हैं, और अगर आप पानी पर चलते हैं तो तिनके की तरह हैं क्योंकि वह भी पानी पर तैरता है। अपने दिल को क़ाबू में कर ले ताकि तू कुछ तो बन जाये।

हज़रत हसन बसरी रह. ने इक़रार किया कि वाक़ई मुझसे ग़लती हुई मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। देखिये इतने बड़े एक वली को इतना प्यारा मश्विरा किसने दिया? एक औ़रत ने दिया, जो ख़ुद विलायत के दरजात की मारिफ़त हासिल कर चुकी थी।

उम्मुल्-मोमिनीन हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का ज़बरदस्त एहसान

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा पूरी उम्मत की उस्ताद हैं, मोहसिना (एहसान करने वाली) हैं, माँ हैं, अल्लाह के महबूब की महबूबा हैं। उनके उम्मत पर कितने एहसानात हैं हम हैरान होते हैं। चुनाँचे एक हदीस पाक में आता है कि नबी अ़लैहिस्सलाम ने इरशाद

फ़रमाया कि जिसके तीन बच्चे हुए और वे मर गये, क़ियामत के दिन ये तीन बच्चे उसकी शफ़ाअ़त (बख़्शिश की सिफ़ारिश) करेंगे और क़ियामत के दिन अपने माँ-बाप को साथ लेकर जन्नत में जायेंगे।

हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने यह बात नबी अ़लैहिसस्सलाम से सुनी, अगर वह सुनकर ख़ामोश रहतीं तो तीन बच्चों वाली सिफ़ारिश की हदीस उम्मत को न पहुँचती। मगर वह ख़ामोश नहीं रहीं, उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सवाल पूछा, इतनी ख़ूबसूरत बात कही कि उम्मत के लिए आसानियाँ कर दीं। पूछने लगीं ऐ अल्लाह के महबूब! अगर किसी के दो बच्चे बचपन में मर गए और वे क़ब्रिस्तान में पहुँचे तो उसका क्या होगा? नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया वे भी उसकी शफ़ाअ़त करेंगे। माँ-बाप को जन्नत में लेकर जायेंगे। इस पर वह ख़ामोश नहीं हुईं। अगला सवाल पूछा ऐ अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! अगर किसी का एक बच्चा हो, बच्चा तो बच्चा होता है प्यारा होता है, अगर वह बचपन में उनसे जुदा होकर क़ब्रिस्तान पहुँच गया तो वह माँ-बाप की शफ़ाअ़त नहीं करेगा? नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया वह भी शफ़ाअ़त करेगा और अपने माँ-बाप को जन्नत में लेकर जायेगा।

जब यह बात पूछ ली तो बात मुकम्मल हो गयी थी, हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने एक बात और पूछीः ऐ अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! अगर कोई औ़रत हामिला (गर्भवती) हुई और इतना वक़्त गुज़र गया कि बच्चे में जान पैदा हो गयी, मगर किसी वजह से वह बच्चा ज़ाया हो गया, औ़रत को पैदाईश की तकलीफ़ तो होती ही है, उस माँ ने तो तकलीफ़ उठायी, क्या उस तकलीफ़ उठाने पर उसको अज्र व सवाब नहीं मिलेगा? नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः इस क़िस्म का बच्चा भी जिसमें ज़िन्दगी पैदा हो चुकी थी और वह क़ब्रिस्तान में चला गया वह

भी शफ़ाअ़त करेगा और अपनी माँ को लेकर जन्नत में चला जायेगा।

अब यह देखिये उनका कितना बड़ा एहसान है। अगर वह आगे से कोई बात न पूछतीं तो तीन बच्चों वाली हदीस नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमा दी थी लेकिन उनके सवालात की वजह से उम्मत के लिए आसानियाँ हो गईं और उम्मत पर अज्र व सवाब के दरवाज़े खुलते चले गये। इससे मालूम हुआ कि हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा उम्मत की मोहसिना हैं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु 'इमामुल् मुफ़स्सिरीन' (कुरआन पाक की तफ़सीर और व्याख्या करने वालों के इमाम) कहलाते हैं। यह हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के शागिर्द थे। पर्दे में बैठकर यह उनसे तफ़सीर के निकात (नुक्ते और बारीक बातें) पूछा करते थे। यही नहीं कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम तक यह सिलसिला रहा बल्कि बाद के औलिया-अल्लाह में भी ऐसी अल्लाह वाली औरतें गुज़री हैं जिन्होंने अपने बच्चों की तरबियत की और उनको मारिफ़त की (अल्लाह से ताल्लुक़ पैदा करने वाली) बातें सिखाईं।

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि की माँ का इल्मे-मारिफ़त

इमाम ग़ज़ाली रह. दो भाई थे एक का नाम मुहम्मद था और एक का नाम अहमद था। मुहम्मद ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि और अहमद ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि दोनों भाई बड़े नेक थे मगर एक का रुझान इल्म की तरफ़ ज़्यादा था और दूसरे का रुझान ज़िक्र की तरफ़ ज़्यादा था। जिनको हम इमाम ग़ज़ाली रह. कहते हैं यह आ़लिम थे अपने वक़्त के बहुत बड़े वाईज़ और ख़तीब (मुक़र्रिर और बयान करने वाले) थे। अपने वक़्त के क़ाज़ी थे एक बड़ी मस्जिद के इमाम

भी थे। उनके छोटे भाई अहमद ग़ज़ाली रह. ज़िक्र व अज़्कार (तस्बीहात और वज़ीफ़ों) में लगे रहते और उनकी आदत थी कि मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ने के बजाये अपनी नमाज़ तन्हाई में पढ़ लिया करते थे।

एक दिन इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रह. ने अपनी माँ से अर्ज़ किया: अम्माँ! लोग मुझ पर ऐतराज़ करते हैं कि तेरा सगा भाई तेरे पीछे नमाज़ नहीं पढ़ता, अपनी अलग नमाज़ पढ़ लेता है, आख़िर क्या बात है? आप भाई से कहें कि अलग पढ़ने के बजाये मेरे पीछे जमाअत से नमाज़ पढ़ लिया करे।

माँ ने छोटे बेटे को बुलाया, बेटे! तुम बड़े भाई के पीछे नमाज़ पढ़ लिया करो। कहने लगे अम्मी मैं पढूँगा। चुनाँचे अगली नमाज़ में इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रह. ने इमामत करवाई और अहमद ग़ज़ाली रह. ने उनके पीछे नीयत बाँध ली। जब दूसरी रक्अत में खड़े हुए तो अहमद ग़ज़ाली रह. ने नमाज़ की नीयत तोड़ी और जमाअत में से निकलकर अलग नमाज़ पढ़ी, घर आ गये। अब नमाज़ के बाद लोगों ने इमाम ग़ज़ाली रह. पर और ऐतराज़ किये कि तेरे भाई ने तो एक रक्अत पढ़ी और दूसरी रक्अत में नमाज़ तोड़कर चले गये।

इमाम ग़ज़ाली बड़े ग़मगीन हुए परेशान हुए। फिर आकर वालिदा (माँ) की ख़िदमत में अर्ज़ किया: अम्माँ भाई ने तो एक रक्अत पढ़ी फिर नमाज़ तोड़कर आ गया, मेरी बेइज़्ज़ती और ज़्यादा करवा दी। माँ ने बुलाकर पूछा: बेटे! तूने यह क्या काम कर दिखाया, बेटे ने कहा अम्मी! जब तक यह अल्लाह की नमाज़ पढ़ रहे थे मैं इनके पीछे खड़ा रहा, जब यह अल्लाह की नमाज़ पढ़ने के बजाये और चीज़ों में मशग़ूल हो गये तो मैंने नमाज़ तोड़ दी। अम्मी इन्हीं से पूछो। माँ ने पूछा मुहम्मद ग़ज़ाली मामला क्या है? इमाम ग़ज़ाली रह. की आँखों में आँसू आ गये। अम्मी! भाई कहता तो ठीक है मैंने जब नमाज़ की नीयत बाँधी तो मेरी तवज्जोह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की तरफ़ थी, मैं

नमाज़ की पहली रकअ़त तवज्जोह के साथ पढ़ता रहा। जब दूसरी रकअ़त में खड़ा हुआ तो मैं नमाज़ से पहले औ़रतों के हैज़ व निफ़ास (माहवारी और ज़चगी के बाद आने वाले ख़ून) के मसाईल का अध्यन कर रहा था, थोड़ी देर के लिये उन्हीं मसाईल की तरफ़ मेरा ध्यान चला गया। फिर मैंने तवज्जोह ठीक कर ली।

जब उन्होंने यह बात कही तो माँ ने ठण्डी साँस ली, दोनों बेटे हैरान हुए। अम्माँ! आप ठण्डी साँस क्यों ले रही हैं? कहने लगी मेरे दो बेटे और दोनों मेरे किसी काम के न हुए। बड़ी हैरानी हुई उनको सुनकर। इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रह. ने कहा अम्मी मैं भी किसी काम का नहीं, इमाम अहमद ग़ज़ाली रह. ने पूछा अम्मी मैं भी किसी काम का नहीं? माँ ने कहा हाँ तुम दोनों तो मेरे किसी काम के बेटे न बने।

उन्होंने पूछा वजह क्या है? माँ ने कहा एक आगे नमाज़ पढ़ाने खड़ा हुआ तो वह औ़रतों के हैज़ व निफ़ास (माहवारी और ज़चगी के बाद आने वाले ख़ून और इस मुद्दत के मसाईल) के बारे में सोच रहा था और दूसरा उसके पीछे खड़ा हुआ वह भी ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जह होने के बजाये भाई के दिल में खड़ा झाँक रहा था। दोनों में से किसी की तवज्जोह अल्लाह की तरफ़ नहीं थी। तो मेरे दोनों बेटों में से कोई भी काम का न बना।

सोचने की बात है कि जब औ़रत मारिफ़त (अल्लाह की पहचान) का इल्म हासिल करती है तो इतनी बुलन्दियों को पा लेती है कि बड़े-बड़े वलियों की तरबियत करती है और उनको मारिफ़त के नुक्ते समझा देती है।

औ़रत की असाधारण सलाहियतें

अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने औ़रत के अन्दर बड़ी ग़ैर-मामूली (असाधारण) सलाहियतें रखी हैं। आ़म तौर पर कहते हैं कि औ़रत के अन्दर जल्द-बाज़ी होती है लेकिन अगर उसको इल्म आ जाये,

तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) हो जाये तो उसके अन्दर बड़ी तहम्मुल- मिज़ाजी (संयम) भी पैदा हो जाती है सब्र भी पैदा हो जाता है। जितना सब्र औ़रत कर सकती है शायद मेरी नज़र में मर्द भी उतना सब्र नहीं कर पाते। जितने संयम से औ़रत काम ले सकती है उतना संयम तो शायद मर्द में भी पैदा नहीं हो सकता और इसकी कई मिसालें हैं।

हज़रत जाबिर रजियल्लाहु अ़न्हु की बीवी का सब्र व तहम्मुल

चुनाँचे एक हदीस पाक में आता है, हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का एक छह-सात साल का बच्चा था। सफ़र पर जाना पड़ा, बच्चा पीछे बीमार था, सफ़र से वापस हुए उसी रात वह बच्चा मर गया। बीवी ने क्या किया कि बच्चे को नहला कर कपड़ा ऊपर डाल दिंया, शौहर आये तो उनका इस्तिक़बाल (स्वागत) किया और उनको बैठाया। उन्होंने आते ही पूछा कि मेरे बेटे का क्या हाल है? फ़रमाने लगीं अल्हम्दु लिल्लाह सुकून से है। अल्लाह की तारीफ़ें हैं कि बेटा आ़फ़ियत और ख़ैरियत के साथ है। शौहर समझे कि वह सो रहा है। चुनाँचे उन्होंने खाना खाया खाने के दौरान मियाँ-बीवी दोनों बातचीत करने लगे, आपस में उल्फ़त व मुहब्बत की बातें होने लगीं और शौहर का मिज़ाज मुहब्बत की तरफ़ माईल हुआ तो उस वक़्त अपने शौहर से पूछती हैं: एक मसला मुझे आप से पूछना है कि अगर कोई किसी को अमानत दे और कुछ वक़्त के बाद वापस माँगे तो खुशी- खुशी अमानत देनी चाहिए या उसको तंगदिल होकर अमानत देनी चाहिये? हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि नहीं- नहीं! खुशी-खुशी देनी चाहिये, अमानत तो उसका हक़ होता है।

जब उन्होंने यह बात कही तो फ़रमाने लगीं अल्लाह रब्बुल- इ़ज़्ज़त ने भी हम दोनों को अमानत दी थी, अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने

वह अमानत वापस ले ली। अब आप भी खुशी-खुशी उस अमानत को वापस कर दीजिए।

हज़रत जाबिर हैरान होकर पूछने लगे क्या बात है? फ़रमाने लगीं कि बेटा अल्लाह को प्यारा हो गया है। मैंने नहला दिया, कफ़न पहना दिया, लेटा हुआ है उसे जाकर क़ब्रिस्तान में दफ़न कर दीजिए। सोचने की बात है कि औ़रत के अन्दर सब्र का पहाड़ आ गया, इल्म ने उसको पहाड़ जैसी हिम्मत अ़ता फ़रमा दी। आज की औ़रतें होतीं तो रो-रोकर बुरा हाल किया होता। शौहर आता तो बीवी को देखकर उसको भी रोना पड़ता, कोहराम मचा होता, मगर वे औ़रतें बात को समझती थीं, उन्होंने यह सोचा कि मेरा शौहर परदेस से आ रहा है, आते ही उसे यह ख़बर मिलेगी तो सदमा पहुँचेगा, तो अपने शौहर को मैं सदमे से बचा लूँ। कितनी अच्छी बीवी थी जिसने शौहर का मुहब्बत से स्वागत किया और खाना खिलाया और जब मियाँ-बीवी दोनों मुहब्बत प्यार की बातें कर चुके और शौहर का दिल उस वक़्त हर बात को सुनने के लिए आमादा हो गया तब उनको यह बात बताई। तब उनके शौहर ने जाकर अपने बेटे को दफ़न किया। तो औ़रत के अन्दर तो ऐसा तहम्मुल (बरदाश्त और सहन करने की शक्ति) भी पैदा हो जाता है।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तसल्ली

उम्मत की मोहसिना हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा हैं, उनके उम्मत पर बड़े एहसानात हैं। चुनाँचे जब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का उनसे निकाह हुआ, उन्होंने अपना पूरा माल नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश कर दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम निकाह से पहले मक्का के ग़रीब लोगों में

से समझे जाते थे जिनके पास पैसों की कमी होती है, लेकिन निकाह के बाद मक्के के मालदारों में शामिल हो गये। अल्लाह तआ़ला ने वह सब माल दीन की ख़ातिर ख़र्च करवा दिया।

चुनाँचे जब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ग़ारे-हिरा (हिरा पहाड़ की खोह) में तशरीफ़ लेजाते थे। एक दिन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर वह्य (अल्लाह का पैग़ाम) उतरी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को असली शक्ल में देखा, उनके छह सौ पर थे। हदीस पाक का मफ़्हूम है कि एक पर को फैलायें तो वह पूरब को ढाँप ले, दूसरे को फैलायें तो वह पश्चिम को ढाँप ले, इतना बड़ा उनका क़द है कि वह पूरे आसमान को ढाँप लें।

उनका चेहरा सूरज से ज़्यादा रोशन है और इतनी ज़्यादा बिजली जैसी तेज़ी उनके अन्दर है कि अगर बारिश का क़तरा ज़मीन से एक बालिश ऊँचा हो, इससे पहले कि वह क़तरा ज़मीन पर गिरे, जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम 'सिद्रतुल् मुन्तहा' (सातवें आसमान पर एक जगह का नाम है) से ज़मीन पर आकर फिर वापस जा सकते हैं। अल्लाह ने इतनी तेज़-रफ़्तारी अ़ता फ़रमाई।

अब इतने बड़े फ़रिश्ते को आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पहली बार असली हालत में देखा तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ऊपर एक ख़ौफ़ की-सी कैफ़ियत तारी हो गयी। चुनाँचे आप घर आये। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

زمّلونی زمّلونی

मुझे कम्बल उढ़ा दो, मुझे कम्बल उढ़ा दो।

चुनाँचे बीबी ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़ौरन कम्बल उढ़ा दिया। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम लेट गये। नबी पाक ने फ़रमायाः

لقد خشیتُ علٰی نفسی

मुझे डर है कि कहीं मेरी जान न निकल जाये।

पूछा ऐ मेरे आक़ा क्या हुआ? नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूरा वाक़िआ सुनाया। कोई आज की औ़रत होती तो रोने पीटने बैठ जाती कि मेरे शौहर पर असर हो गया, मेरे शौहर ने जिन्न देख लिया, मेरे शौहर पर किसी ने कुछ कर डाला, मेरी ज़िन्दगी का क्या बनेगा। मगर वह ऐसी औ़रत नहीं थी। उन्होंने इतनी बड़ी बात सुन ली मगर फिर कहने लगीं ऐ अल्लाह के नबी! आप इत्मीनान रखिये। हरगिज़ नहीं, अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआ़ला आपको कभी ज़ाया नहीं करेंगे, रुस्वा नहीं करेंगे। इसलिये कि आप तो सिला-रहमी करने वाले हैं। और जिसके पास कुछ नहीं होता उसको कमा कर देने वाले हैं। और आप मेहमान-नवाज़ी करने वाले हैं, और आप तो दूसरों का बोझ उठाने वाले हैं, और आप तो नेक बातों में मदद और सहयोग करने वाले हैं।

चुनाँचे इन अलफ़ाज़ से नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तसल्ली दी। आज कौन बीवी है जिसका शौहर परेशान हो और वह शौहर की अच्छी सिफ़ात गिनवा कर कहे कि आपके अन्दर ये-ये अच्छी बातें हैं अल्लाह आपकी मदद करेंगे। औ़रतें तो ऐसे मौक़े पर और ज़्यादा दूसरों का दिल थोड़ा कर बैठती हैं, मगर हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाह अ़न्हा का एहसान है कि उन्होंने तसल्ली के अलफ़ाज़ भी कहे और फिर उनका जिगर देखिए! उनका दिल देखिये! यही नहीं कि ज़बानी तसल्ली दी, बल्कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की थोड़ी सी हालत बेहतर हुई तो आपका हाथ पकड़ कर वह आपको अपने एक रिश्तेदार के पास ले गईं जिनका नाम वर्क़ा बिन नोफ़ल था। यह पहले तो मुश्रिकीन में से थे लेकिन उन्होंने किताब का इल्म हासिल किया और वह किताब की किताबत (लिखाई) किया करते थे। और यह अह्ले किताब में शामिल हो गये थे। मुश्रिकीन में से यही हैं जिनका शुमार अह्ले किताब में से हुआ।

उन्होंने उनको जाकर कहा कि यह आपके भतीजे क्या कहते हैं इनकी बात तो सुनिये? यानी सुनिये कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क्या कहते हैं। वर्क़ा बिन नोफ़ल ने कहाः ऐ भतीजे! तूने क्या देखा? नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूरा वाक़िआ़ सुनाया। उन्होंने फ़रमाया मैं आपको ख़ुशख़बरी देता हूँ यह वही 'नामूस' (इ़ज़्ज़त वाली चीज़) है जो मूसा अ़लैहिस्सलाम पर वह्य (अल्लाह का पैग़ाम) लाता था, यह आप पर भी अल्लाह का पैग़ाम लेकर आया है। फिर फ़रमाया मैं बूढ़ा हूँ अगर मैं जवान होता तो तुम्हारी मदद करता। सुब्हानल्लाह!

सयैदा हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का पूरी उम्मत पर एहसान देखिये, उन्होंने ज़बान से भी तसल्ली दी और अपने अ़मल से भी उन्होंने ऐसे शख़्स के पास आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को पहुँचाया जिन्होंने पूरे मामले को खोलकर रख दिया। तो जब ये औ़रतें दीन को समझ लेती हैं तो फिर इनके दिलों में पहाड़ों जैसे इस्तिक़ामत (जमाव) आ जाती है। ग़ैर-मामूली (असाधारण) तहम्मुल-मिज़ाजी आ जाती है। बड़े-बड़े सदमे बड़े आराम से बरदाश्त कर जाती हैं, यहाँ तक कि मर्द भी हैरान हो जाते हैं।

ये सब बरकतें दीनदारी की हैं, इल्मे दीन की हैं। और अगर ये बेचारी इल्मे दीन से मेहरूम हों तो इनका क्या क़ुसूर फिर तो ये छोटे दिल की हो जाती हैं। बेचारी छोटी-छोटी मकड़ियों से डरती हैं और कभी-कभी तो सिर्फ़ दरवाज़ा खटक जाये आँधी से, तब भी डर पड़ती हैं। उनका दिल इतना छोटा होता है। इसलिए इनको दीन का इल्म सिखाना और दीनदार बनाना बहुत ज़रूरी है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की फूफी का सब्र

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जंगे-उहुद में जब अपने चचा हज़रत अमीर ह़मज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु को देखा, उनकी लाश का 'मुसला' (१) बना पड़ा था। उनका दिल निकाल लिया गया था और उनकी आँखें निकाल ली गयी थीं। कान काट दिये गये थे। हिन्दा ने उनका हार बनाकर अपने गले में पहना था।

अब सोचिये पीछे लाश का क्या हाल होगा। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देखा तो आप बहुत ग़मगीन आँखों में आँसू आ गये और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस वक़्त पाबन्दी लगा दी कि मेरी फूफी हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की बहन हज़रत हमज़ा को देखने के लिये न आयें। क्योंकि अगर वह देखने के लिये आएँगी तो ऐसा न हो कि दूसरी औ़रतों की तरह वह देखें और उन्हें सदमा पहुँचे। घर की औ़रतें अपने-अपने मर्दों को देखने के लिये आ गयीं कि उनको नहलायें दफ़नायें, तो उस वक़्त में आपकी फूफी जो थी वह भी आ गयीं मगर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने रोक दिया कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मना फ़रमा दिया है कि आप अपने भाई की लाश को नहीं देख सकतीं।

उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा कि आपने क्यों मना फ़रमा दिया? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम उनकी लाश को देखने का हौसला न रखोगी। पूछने लगीं ऐ अल्लाह के नबी! मैं अपने भाई की लाश पर रोने के लिए नहीं आई, मैं तो अपने भाई को मुबारकबाद देने के लिए आई हूँ।

जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ये अलफ़ाज़ सुने

(१) 'मुसला' का मतलब है किसी लाश के साथ ऐसा मामला किया जाये कि उसके अंगों को काट डाला जाये, उसकी शारीरिक हालत को अस्त-व्यस्त कर दिया जाये। **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी**

तो फ़रमायाः अच्छा फिर तुम्हें देखने की इजाज़त है। सोचिये कितना बड़ा दिल कर लिया कि मैं तो अपने भाई को मुबारकबाद (बधाई) देने के लिए आई हूँ। तो यह सब्र व तहम्मुल इन औ़रतों में आ जाता है। यही नहीं कि पहले ज़माने के औ़रतों में था आज भी जो दीनदार औ़रतें हैं उनके दिलों में ऐसी इस्तिक़ामत (मज़बूती) होती है।

एक साबिरा की हिक्मते-अ़मली

हमारे क़रीबी लोगों में से एक आदमी से वाक़िआ़ पेश आया वह १६७१ ई० से पहले पूर्वी पाकिस्तान के अन्दर काम करता था। उसके बड़े-बड़े गैस के स्टेशन थे। करोड़ों रुपये का मालिक था, बल्कि अरबों का मालिक था। सैकड़ों की तायदाद में उसके गैस स्टेशन थे अल्लाह की शान देखिए कि इतने माल पैसे वाला था कि उसका एक काम करने वाला उसके दो लाख रुपये चोरी करके भाग गया। उसने उसके ख़िलाफ़ कोई ऐक्शन न लिया। कुछ अ़रसे के बाद फिर वापस आ गया, रोने धोने लगा, मुझसे ग़लती हो गयी, उसने वे दो लाख रुपये भी माफ़ कर दिये और उसको नौकरी पर भी बहाल कर दिया।

सोचिये कि वह कितना बड़ा कारोबार और माल रखने वाला बन्दा होगा जिसको परवाह ही नहीं थी दो लाख रुपये की। इतना कुछ उसके पास माल व जायदाद थी लेकिन जब जंग में ढाका अलग हुआ तो यह इस हाल में कराची उतरा कि उसकी बीवी के सर पर फ़क़त दुपट्टा था। दोनों की जेबें ख़ाली थीं, कुछ हाथ में नहीं था। सब कुछ वहाँ छोड़ आया।

अब कराची में उसके एक भाई थे। उनके घर आकर ठहरे। वह खुद यह वाक़िआ़ सुनाते थे कि जब मैं आया तो मुझे यक़ीन नहीं आता था कि मैं ज़िन्दा हूँ। मैं करोड़ों अरबों का मालिक इनसान और आज एक पैसा भी मेरे पास नहीं। मैं किस से मागूँगा मैं कैसे ज़िन्दगी गुज़ारूँगा? कहने लगे क़रीब था कि मेरी दिमाग़ की नस फट जाये,

मगर बीवी नेक थी दीनदार थी पहचान गयी कि मेरे शौहर के ऊपर ये हालात आ गये।

चुनाँचे जब हम खाने के लिये दस्तरख़्वान पर बैठते तो मेरे भाई और उनके बच्चे भी होते, तो मेरी बीवी यह वाक़िआ छेड़ती और कहती कि हमारे ऊपर इतना बड़ा सदमा आया, मैं औ़रत हूँ मैं ज़्यादा घबरा गयी हूँ और मेरे शौहर को तो अल्लाह ने पहाड़ जैसा दिल दिया है। उन्होंने उसको हाथों का मैल बनाकर उतार दिया है। इनको परवाह ही नहीं। कहने लगे मैं अन्दर दिल से ख़ौफ़ज़दा था और वह ऐसी बातें करती कि सुन-सुनकर मुझे तसल्ली होने लगी कि जब मेरी बीवी को कोई ग़म नहीं तो मैं क्यों इतना परेशान हो रहा हूँ। मैं घबराहट और परेशानी का शिकार क्यों हो रहा हूँ।

चुनाँचे बीवी ऐसी बातें करती कि इनका दिल तो बहुत बड़ा है, इन्होंने तो इतने माल को हाथों का मैल समझ लिया है। इनको तो अल्लाह ने पहले भी बहुत दिया वही परवर्दिगार अब इनको यहाँ भी बहुत दे देगा। यह तो क़िस्मत के बादशाह हैं। क़िस्मत के धनी हैं। जब उसने ऐसी-ऐसी बातें कीं तो कहने लगे मेरी तबीयत बहाल हो गयी।

हमने मश्विरा किया, भाई से उधार लेकर एक ट्रक ख़रीद लिया और उसको किराये पर चलाना शुरू कर दिया। मैंने मेहनत की मेरे मौला ने मेरी मदद की। कहने लगा पाँच साल के बाद सैकड़ों ट्रकों की कम्पनी का मैं फिर मालिक बन गया। आज फिर अरबों का मालिक बनकर ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूँ मगर मैं अपनी बीवी का एहसान कभी नहीं उतार सकता जिसने उस हालत में भी मुझे संभाल लिया।

औ़रतों की इल्मी और अख़्लाक़ी तरक़्क़ी में रुकावट क्या है?

औ़रतों के अन्दर अगर दीन का इल्म हो और दीनदारी हो तो वे

बड़े-बड़े सदमे अपने दिलों पर बरदाश्त कर जाती हैं। हैरानी होती है इतनी नाज़ुक होती हैं मगर लोहे की तरह अपने ऊपर सब बोझ उठा लेती हैं और अपने दूसरे घर वालों को पता भी नहीं चलने देतीं। सुब्हानल्लाह!

अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने उनके अन्दर ये सलाहियतें रखी हैं। लेकिन देखने में एक बात आयी है, यह भी कहता चलूँ कि बाज़ औरतों की इल्मी और अख़्लाक़ी तरक़्क़ी में उनके मर्द रुकावट बन जाते हैं। इसकी वजह क्या होती है कि बाज़ मर्द यह समझते हैं कि औरतों का काम तो बच्चे पालना और घर के काम करना, शौहर को खुश रखना, सिर्फ़ यही कुछ है। यही कुछ उनका दीन है।

यह नहीं समझते कि उनको दीन का इल्म भी पढ़ना है, इबादत भी करनी है, अपने रब की बन्दी बनकर भी ज़िन्दगी गुज़ारनी है। इसी ग़लत-फ़हमी की वजह से ऐसे मर्द अपनी औरतों को दीन की तालीम नहीं दिलवाते। बस वाजिबी सा कुरआन मजीद पढ़ा दिया, चन्द मसाईल बहिश्ती ज़ेवर के सिखा दिये और ज़्यादा नहीं पढ़ने देते हालाँकि औरतों में इल्म की सलाहियत ज़्यादा होती है। वे अगर चाहें तो बुख़ारी शरीफ़ तक की तालीम हासिल कर सकती हैं, मगर घर के मर्द उनको इजाज़त नहीं देते।

बाज़ तो ऐसे हैं कि विभिन्न जगहों पर दीनी मज्लिस हों उनमें जाने की इजाज़त नहीं देते। ऐसे मर्द औरतों की तरक़्क़ी में रुकावट बन जाते हैं। हर वक़्त उनको घर के कामों में लगाये रखते हैं।

क़ियामत के दिन सवाल होगा

हदीस पाक में आता है:

كلكم راع وكلكم مسئول عن رعيته

तुममें से हर एक ज़िम्मेदार और सरदार है और हर एक से उसकी रईयत (यानी जो उसके मातेहत हैं उन) के बारे में पूछा

जायेगा।

तो शौहर से बीवी बच्चों के बारे में पूछा जायेगा और बीवी से बच्चों के बारे में पूछा जायेगा, हर एक से उसके मातेहतों के बारे में पूछा जायेगा। तो कल इन मर्दों को जब जवाब देना पड़ेगा कि तुम्हारी औ़रतों को तो पाकी और नापाकी के मसाईल का पता नहीं था, उनको तो फ़राईज़ व वाजिबात का भी सही पता नहीं था, नमाज़ के मसाईल का पता नहीं था। और वे तो इबादत में कोताहियाँ करती थीं, बताओ तुमने उनको दीन की तालीम क्यों नहीं दिलवाई? मालूम नहीं ये अल्लाह के सामने जवाब पेश कर पायेंगे, या फिर उस वक़्त अल्लाह के इताब (नाराज़गी और प्रकोप) का सबब बनेंगे।

इसलिए ज़रूरी है कि हम घर की औ़रतों को मुहब्बत व प्यार के साथ दीन की तालीम की तरफ़ माईल करें, अगर उनके अपने दिल नहीं भी चाहते, यह औ़रतों की फ़ितरत है, प्यार से अगर मनवा लो तो पहाड़ से भी छलाँग लगा जायेंगी और अगर गुस्से से बात करो तो क़दम भी नहीं उठायेंगी। प्यार से ज़्यादा बेहतर चीज़ उनके लिए और कुछ भी नहीं, और यही चीज़ हदीस पाक से भी मिलती है।

इ़ज़्ज़त वाला और ईमानदार कौन?

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः औ़रतों के साथ लुत्फ़ व मुरव्वत से पेश आओ।

ان اکرم المومنین احسنکم اخلاقًا الطفکم لینًا

तुममें से बेहतरीन इ़ज़्ज़त वाला ईमान वाला वह है जो तुममें से अच्छे अख़्लाक़ वाला है और अपने घर वालों के साथ नर्मी का सुलूक करने वाला है। तो अगर नर्मी के साथ औ़रतें बात मान जायें तो फिर गर्मी की क्या ज़रूरत है। बेहतर यह है कि अच्छे अख़्लाक़ के साथ उनको मुहब्बत व प्यार के साथ मुतवज्जह किया जाये।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आख़िरी वसीयत

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने औ़रतों के बारे में वसीयत फ़रमायी। जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस दुनिया से पर्दा फ़रमाने लगे तो आख़िरी अलफ़ाज़ जो आपकी मुबारक ज़बान से सुने गये, ये थे। आपने फ़रमायाः

اتقوا الله النساء

ऐ मर्दो! औ़रतों के बारे में अल्लाह से डरते रहना।

लोग औ़रतों को अपने घर की बाँदियाँ समझ लेते हैं। हालाँकि ये तो अमानत होती हैं। ये माँ-बाप ने आज़ाद पैदा कीं, बाँदियाँ नहीं, बल्कि अल्लाह ने उनको निकाह के ज़रिये मर्दों की अमानत में दे दिया है। तो यह अमानत का ख़्याल करें उसमें ख़ियानत न करें, उनके दीन में आगे बढ़ने के लिये उनके साथ मदद करने का सबब बनें। बाज़ मर्द तो ऐसे होते हैं कि वे औ़रत को अपने माँ-बाप से मिलने की इजाज़त नहीं देते। हमें कितनी ऐसी औ़रतों ने ख़त लिखे। कई-कई साल से रोती फिर रही हैं उनको माँ-बाप, बहन-भाई से मिलने की इजाज़त नहीं, शौहर से पूछा कोई ख़ास वजह है? कोई ख़ास वजह भी नहीं, बस मैं चाहता हूँ यह न जाये।

सोचने की बात है कि उस बेचारी का भी दिल है। यह उस घर में पैदा हुई, माँ-बाप ने जन्म दिया। बहन-भाईयों में पली बढ़ी, कई साल के बाद अगर उसका जी चाहा कि मैं उनसे मिल लूँ तो शौहर उसको मना कर देता है, इसलिए कि न शौहर के पास दीन का इल्म होता है न उसको हुकूक़ का पता होता है। इसलिए ऐसी तरबियती मज्लिस में मियाँ बीवी सब का आना और अपने-अपने उनवानात के तेहत मज़ामीन का सुनना इन्तिहाई ज़रूरी है, ताकि घरों की ज़िन्दगी बेहतर हो जाये।

औरतों में बेदीनी के असबाब

जिन घरों में मर्दों की बेतवज्जोही की वजह से औरतें बेदीन और बेअ़मल बन रही हैं तो ये मर्द क़ियामत के दिन जवाबदेह होंगे। बाज़ घरों में तो हमने देखा, कहते हैं कि यह मेरी बेटी की वीडियो कैसिट लाईब्रेरी है। हैरत होती है, उनकी बेटी उन वीडियो कैसिटों को देखकर दिल में गुनाह के क्या-क्या मनसूबे बनाती होगी, कैसे उसकी इज़्ज़त महफ़ूज़ रहती होगी। मगर उनको दीन का कोई ध्यान नहीं। अल्लाह ने माल पैसा ख़ूब दे दिया रेल-पेल है और अब इस नशे में ऐश व आराम की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

और बाज़ तो ऐसे कमबख़्त होते हैं जो अपने पास जवान बेटियों को बैठाकर ड्रामे देखते हैं, फ़िल्में देखते हैं। योरप की गन्दी फ़िल्में जिनमें गन्दी अश्लील हरकतें हो रही होती हैं अपने जवान बेटे बेटियों के साथ बैठकर देखते हैं। ऐसे मर्दों को क़ियामत के दिन ज़न्जीरों में बाँधकर पेश किया जायेगा और जब तक ये जवाब नहीं देंगे उनकी ज़न्जीरों को नहीं खोला जायेगा।

इसलिए चाहिये कि घर के बच्चों और घर की औरतों की दीनी तालीम के लिए मर्द हर वक़्त फ़िक्रमन्द रहें। उनसे उनके बारे में भी पूछा जायेगा और उनके बीवी बच्चों के बारे में भी पूछा जायेगा।

सीरत के हुस्न व जमाल को अपनायें

एक और बुनियादी ग़लती जो हमारी समाजी ज़िन्दगी में इस वक़्त आई हुई है जिसको मैंने बहुत देर ग़ौर-ख़ोज़ के बाद सोच व विचार के बाद, अल्लाह की तरफ़ तवज्जोह के बाद पाया। वह यह ग़लती है कि आजकल के नौजवान की नज़र में औरत का हुस्न व जमाल ही औरत की अच्छाई का मेयार है। इसलिए अगर नौजवान अपने लिये बीवी ढूँढ़ता है तो पहली बात यही होती है कि बीवी ख़ूबसूरत हो।

मालूम नहीं यह ऐसा शौक़ दिलों में बैट गया कि जिसने पूरे समाज की हालत को बदल कर रख दिया है। मेयार को बदल कर रख दिया है।

याद रखना! औरतों में सूरत के हुस्न व जमाल (ज़ाहिरी सुन्दरता) के बजाये सीरत के हुस्न व जमाल को देखें तो यह ज़्यादा बेहतर है। इसलिए कि आम तौर पर देखा है कि जो नौजवान शक्ल व सूरत को देखकर शादियाँ करते हैं, थोड़े दिनों के बाद उन्हीं के घरों में झगड़े होते हैं, लड़ाईयाँ होती हैं। इसलिए कि घर की ज़िन्दगी तो अच्छे अख़्लाक़ से गुज़रती है, वे जिसको हूर-परी समझकर लाये थे वह हठधर्मी करती है, ज़िद करती है, बात नहीं मानती, ज़िन्दगी के गुज़ारने में उनकी मदद नहीं करती, फिर उनको परेशानी होती है। फिर आकर पूछते हैं हज़रत! बीवी बात नहीं मानती बड़ा परेशान रहता हूँ तलाक़ देने को दिल करता है। अब मैं क्या करूँ। अरे भाई यह तो तुमको पहले सोचना चाहिये था।

शादी के लिए औरत का चयन

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः लोग औरत से चार वजह से शादी करते हैं। बाज़ उसके बड़े ख़ानदान की वजह से, बाज़ उसके माल व दौलत की वजह से, बाज़ उसके हुस्न व जमाल की वजह से और बाज़ उसकी दीनदारी की वजह से। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमा दिया कि तुम औरतों से उनके अच्छे अख़्लाक़ और दीनदारी की वजह से निकाह किया करो। तो नौजवानों को चाहिये कि ये सबसे पहली चीज़ तो अच्छे अख़्लाक़ देखें, ख़ूबसूरती को नम्बर दो पर रखें। ऐसा न हो कि केवल ज़ाहिर की ख़ूबसूरती को मुक़द्दम कर लें और सीरत को मुक़द्दम न करें।

एक बात ज़ेहन में रखना, औरत चाहे कितनी ही ख़ूबसूरत हो अगर किरदार (चरित्र) की बुरी है तो उसकी ख़ूबसूरती किस काम की। और अगर औरत की शक्ल अच्छी नहीं मगर वफ़ादार है, ख़िदमत

करने वाली है, जाँनिसार बीवी है, हर वक़्त शौहर की ख़िदमत में लगी रहती है, उससे बेहतर ज़िन्दगी का साथी कोई नहीं हो सकता। इसलिए औरत जो ज़िन्दगी की साथी है, उसको हुस्न की कसौटी पर तौलने के बजाये नौजवानों को चाहिये कि वे सीरत की कसौटी पर तौलें, अच्छे अख़्लाक़ की कसौटी पर तौलें, उनको दीनदारी की कसौटी पर तौलें।

दुनिया में फ़ितनों की वुजूहात

दुनिया में जितने भी फ़ितने औरत के ऊपर आते हैं, वे उसके ज़ाहिरी हुस्न की वजह से आते हैं। यह ज़ाहिरी हुस्न इनसान के लिए इम्तिहानों का सबब बन जाता है। इसलिए जो हुस्न व जमाल को ज़्यादा देखते हैं उन्हीं के घरों में परेशानियाँ भी ज़्यादा होती हैं।

क़ुरआन करीम में आपने पढ़ा होगा कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने हुस्न व जमाल ऐसा दिया था जिसकी कोई मिसाल ही नहीं, बल्कि हदीस पाक में फ़रमाया:

فاذا قد اوتیه حشروا الحسن

उनको अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने आधी दुनिया का हुस्न दिया था यानी यूँ समझिये कि सारी दुनिया के हसीनों का हुस्न जमा किया जाये तो वह एक हिस्सा है और इतना ही हिस्सा हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को दे दिया गया था। तो कैसा हुस्न व जमाल होगा, लेकिन हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को उनके भाईयों ने आख़िरकार कुएँ के अन्दर डाल ही दिया। फिर जब कुएँ से निकाल कर उनको बेचा गया, क़ुरआन मजीद में आयत है:

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ (سورة يوسف)

उनको बेचा गया चन्द खोटे सिक्कों के बदले में।

ज़ाहिरी हुस्न की क़ीमत

अजीब बात है, नुक्ते की बात है, ज़रा दिल के कानों से

सुनिएगा। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का हुस्न तो मादर-ज़ाद (पैदाईशी) था, माँ के पेट से हसीन पैदा हुए थे। लेकिन अनमिट हुस्न था। उस वक़्त तक उनको इल्म नहीं मिला था, हुकूमत नहीं मिली थी, इल्म और हुकूमत तो जवान होकर मिली। वह तो भरपूर जवानी की उम्र में मिली, बचपन में उनके पास सिर्फ़ हुस्न था, उस ज़ाहिरी हुस्न की क़ीमत अल्लाह की नज़र में देखिए अल्लाह फ़रमाते हैं:

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ (سورة يوسف)

उनको चन्द खोटे सिक्कों के बदले में बेच दिया।

ऐ हुस्न के पीछे भागने वालो! इब्रत की बात है, अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की नज़र में ज़ाहिरी हुस्न की क़ीमत चन्द खोटे सिक्कों के सिवा कुछ नहीं, तुम किस दौलत के पीछे भागते हो? तुमने किसकी पूजा शुरू कर दी? किसके दीवाने बन गये? अरे चन्द खोटे सिक्कों की क़ीमत है जिसके बारे में अल्लाह ने फ़रमा दिया। चन्द सिक्के और वे भी खोटे? इसलिए ज़ाहिरी हुस्न अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की नज़र में कोई हैसियत नहीं रखाता, मुसलमान मर्दों को चाहिये कि केवल हुस्न व जमाल की कसौटी में तौलने के बजाये कि नाक-नक़्शे ऐसे हों, हाथ पाँव ऐसे हों, चेहरा ऐसा हो, इन चीज़ों को सिर्फ़ कसौटी बनाने के बजाये पहले तो यह देखो कि इनसानियत भी उसमें है कि नहीं, होनी तो वह चाहिये ताकि उसके अन्दर अच्छे अख़्लाक़ हों, अ़क़्ल की अच्छी हो, अख़्लाक़ की अच्छी हो। फिर शक्ल की भी अच्छी हो तो यह सोने पर सुहागा, मगर सिर्फ़ ज़ाहिरी हुस्न को कसौटी बना लेना यह मर्दों की बहुत बड़ी ख़ामी है।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का मेयारे अख़्लाक़ व किरदार

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के ज़माने में अख़्लाक़ को

कसौटी बनाया जाता था, दीनदारी को कसौटी बनाया जाता था। इसलिए अगर दीनदार औ़रत बेवा (विधवा) भी हो जाती थी तो दूसरे मर्द उससे निकाह करने के लिए तैयार हो जाते थे, इसलिए कि दीनदारी होती थी। आज तो अगर कोई औ़रत बेवा हो जाये, अ़जीब ज़माना आ गया, कोई उससे निकाह करने के लिए तैयार नहीं होता, बेचारी जवानी की उम्र इसी तरह गुज़ारती है, कोई उसकी हमदर्दी करने वाला ग़मगुसार नहीं होता, कोई उसका दुख बाँटने वाला नहीं होता।

तो इनसानियत की बुनियाद ख़त्म हो गयी। फ़क़त नफ़सानी ख़्वाहिशों की बुनियाद आ गयी। इसलिए मर्दों को चाहिये कि ये सिर्फ़ ज़ाहिरी हुस्न को बुनियाद बनाने के बजाये इनसान के किरदार को बुनियाद बनायें, इल्म को बुनियाद बनायें, अख़्लाक़ को बुनियाद बनायें।

ज़ाहिरी और बातिनी हुस्न का फ़र्क़

एक नुक्ता याद रखना। ज़ाहिरी हुस्न वक़्त के साथ-साथ घटता चला जाता है, और बातिनी हुस्न, अख़्लाक़ का हुस्न, वह उम्र के साथ-साथ बढ़ता चला जाता है। जितनी उम्र ज़्यादा होगी अख़्लाक़ का हुस्न बढ़ता चला जायेगा। अगर उम्र ज़्यादा होगी तो ज़ाहिरी हुस्न घटता चला जायेगा, इसलिए घटने वाली चीज़ को पसन्द करने के बजाये बढ़ने वाली चीज़ को पसन्द करना चाहिये ताकि ज़िन्दगी का अन्जाम अच्छा गुज़रे। चूँकि इसकी वजह से इनसान की सारी ज़िन्दगी अच्छी गुज़रती है।

इसलिए अपनी बीवियों के अन्दर सबसे पहले इनसानियत को देखें, अच्छे अख़्लाक़ को देखें, नेकी को देखें। जब यह चीज़ मौजूद है तो इसका मतलब है कि एक अच्छा इनसान है। यह अच्छी साथी साबित होगी। अच्छी ख़ादिमा साबित होगी। इसलिए दीन को बुनियाद बनाना चाहिये और यही हदीस पाक में नबी करीम अ़लैहिस्सलाम ने

इरशाद फ़रमाया कि तुम औरत से उसकी दीनदारी की वजह से निकाह किया करो। सुब्हानल्लाह!

इनसानियत के मोहसिन ने कैसे क़ीमती मोती और हीरे अता फ़रमा दिये, हम इन पर अमल करेंगे तो हमारी अपनी ज़िन्दगियों के अन्दर ख़ैर आयेगी। फ़क़त ज़ाहिरी हुस्न और नाक-नक़्शे को देखकर शादी कर लेते हैं फिर बाद में घर में दीनदारी नहीं होती, रोते फिरते हैं, औलाद बिगड़ रही है, बीवी तवज्जोह नहीं देती तो अब क्यों रोते हैं, अपने आप पर रोयें कि उन्होंने फ़ैसला ही ग़लत किया था। एक शायर ने क्या अजीब बात कही।

जिससे आँचल भी नहीं सर का संभाला जाता
उससे क्या ख़ाक तेरे घर की हिफ़ाज़त होगी

कि जो लड़की सर का दुपट्टा नहीं संभाल सकती ओ ख़ुदा के बन्दे! वह तेरे घर को क्या संभालेगी, और तेरे बच्चों को क्या संभालेगी, और तेरे बच्चों की अच्छी माँ कैसे बनेगी? उनकी तरबियत कैसे करेगी? इसलिए यह बहुत बड़ी ख़ामी आजकल के नौजवानों के ज़ेहन में आ गयी और इस ख़ामी (कमी और कोताही) का फिर आगे नतीजा निकलता है।

बेपर्दगी की असल वुजूहात

चूँकि औरतों को उनकी ज़ाहिरी शक्ल व सूरत की वजह से पसन्द किया जाता है। बच्चियाँ पैदा होती हैं तो वे बेचारी अपने ज़ाहिर को सजाने संवारने पर लगी होती हैं। उनकी हर वक़्त यही सोच होती है कि मैं कपड़े ऐसे पहनूँ कि मैं अच्छी लगूँ। मेरी आँखें अच्छी लगें, चेहरा अच्छा लगे, हाथ अच्छे लगें, बेचारियाँ हर वक़्त इसी सोच में रहती हैं। क्योंकि उनको पता होता है कि हमें ज़िन्दगी का साथी इसी मेयार की वजह से बनाया जायेगा।

मालूम हुआ कि मर्दों की इस सोच ने औरतों की ज़िन्दगी का रुख़ बदल दिया। अगर उनको पता होता कि हमें हमारी दीनदारी की वजह से ज़िन्दगी का साथी बनाया जायेगा तो ये हदीस पढ़तीं, तफ़सीर पढ़लीं, ये अच्छे अख़्लाक़ बनातीं, ये अपनी इज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त करतीं, ये पर्दे के साथ ज़िन्दगी गुज़ारतीं, तहज्जुद-गुज़ार बनतीं, अल्लाह की वलिया बनतीं, इनको कोई ज़िन्दगी का साथी बना लेता मगर मेयार ही बदल गया। मेयार ज़ाहिरी ख़ूबसूरती है लिहाज़ा बच्चियों को देखा है कि बेचारी पैदा होती हैं तो उस वक़्त से ये बच्चियाँ इस सोच में होती हैं कि कोई ऐसी सूरत इख़्तियार करें कि हम देखने वालों को अच्छी लग सकें और यही चीज़ आख़िरकार उनको बेपर्दगी पर भी आमादा कर देती है।

जिनको अल्लाह ने कुछ शक्ल अच्छी दे दी वे तो ख़ुशी- ख़ुशी बेपर्दा फिरती हैं, लोग मुझे देखेंगे सोचेंगे कि यह कितनी ख़ूबसूरत है। देखिए बेपर्दगी भी इसी वजह से हुई, फ़ैशन परस्ती भी इसी की वजह से हुई और औरतों की दीन से दूरी भी इसी की वजह से हुई कि मर्दों ने कसौटी क्या बना ली, कि औरत को ख़ूबसूरत होना चाहिये।

ख़ूबसूरत के बजाये ख़ूबसीरत

तो ख़ूबसरत के बजाये पहले ख़ूबसीरत होनी चाहिये उसके अन्दर नेकी होनी चाहिये अच्छे अख़्लाक़ होने चाहियें। अगर मर्द अपनी ज़िन्दगी की तरतीब को बदल लें और नेक सीरत बीवी को ढूँढ़ना शुरू कर दें तो देखना ये औरतें जो आज फ़ैशन की दीवानी कहलाती हैं, ये सबसे बड़ी तहज्जुद-गुज़ार बन जायेंगी। नेक बन जायेंगी और माहौल के अन्दर नेकी आ जायेगी। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हमें नेकी पर ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे। आमीन।

हमेशा की इ़ज़्ज़तों का राज़

दुनिया में इनसान को जो इ़ज़्ज़तें मिलती हैं वे हुस्न व जमाल से नहीं मिलतीं, वे तो अख़्लाक़ की वजह से मिलती हैं। इसलिए हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को हुस्न की वजह से क़ैद खाने में जाना पड़ा, ज़ाहिरी हुस्न की वजह से उनके ऊपर इतनी बड़ी मुसीबत आई कि नौ साल तन्हा रहे, न कोई रिश्तेदार न माँ-बाप न कोई बहन-भाई न कोई और है, कोई ख़बर लेने वाला नहीं, और नौ साल क़ैद के अन्दर तन्हाई की ज़िन्दगी गुज़ारी। यह तन्हाई की क़ैद कोई मामूली बात नहीं होती, मगर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने उसको बरदाश्त किया, यह सब ज़ाहिरी हुस्न की वजह से था। फिर उसके बाद अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने उनको तख़्त व ताज अ़ता फ़रमाया और जब तख़्त व ताज मिला तो सुनिये क़ुरआन पाक की आयत, क़ुरआन फ़रमाता है कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने यह कहा:

اجْعَلْنِی عَلٰی خَزَآئِنِ الْاَرْضِ اِنِّیْ حَفِیْظٌ عَلِیْمٌ○

मुझे ख़ज़ानों का वाली (ज़िम्मेदार) बना दीजिए कि मैं अच्छा मुहाफ़िज़ हूँ और इल्म वाला हूँ।

मुझे पता है कि ख़ज़ाने को कैसे रखना चाहिये। आपने यह तो नहीं कहा कि मैं बड़ा हसीन और बड़ा ख़ूबसूरत हूँ इसलिए ख़ूबसूरती की बुनियाद पर आप ख़ज़ाने मुझे दे दीजिए। मालूम हुआ जो ख़ज़ाने मिले वे हुस्न व जमाल की वजह से नहीं मिले बल्कि उनको फ़ज़्ल व कमाल की वजह से मिले। ज़ाहिरी हुस्न मिटने वाली चीज़ है, जो साये की मानिन्द चीज़ है। जवानी में लड़की हूर-परी की तरह ख़ूबसूरत होती है, बुढ़ापे में उसका चेहरा छुवारे की तरह बन जाता है, देखने को भी दिल नहीं करता। ऐसे ख़त्म हो जाने वाले हुस्न के पीछे क्या भागना, इसलिए हमको चाहिये कि हम सीरत (आ़दात व अख़्लाक़ और सलीक़े व तहज़ीब) को देखें।

सीरत पायदार हुस्न है

सीरत उम्र के साथ-साथ और अच्छी होती है। उम्र जितनी ज़्यादा होती है इनसान के अख़्लाक़ और ज़्यादा बेहतर हो जाते हैं। पायदार चीज़ को मेयार बनाने की ज़रूरत है। इसलिए अगर आज यह चीज़ मेयार बन जाये, देखना हमारे माहौल में कितनी नेकी आ जायेगी। हाँ अगर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त किसी को दीनदारी के साथ-साथ ख़ूबसूरती भी अ़ता फ़रमा दें तो यह सोने पर सुहागा है। यह अल्लाह का फ़ज़्ल और इनायत है वह जिसको चाहे नवाज़ सकता है।

इसलिए हमें चाहिये कि औ़रतों की दीनदारी की ज़्यादा फ़िक्र करें और यह भी ज़ेहन में रखें कि औ़रतें अपने दौलत-मन्द घरों में रहते हुए भी दीनदार बन सकती हैं। बाज़ औ़रतों के ज़ेहन में यह ख़्याल होता है कि शायद ग़रीब लोगों की बेटियाँ दीन पढ़ें, हम तो अमीर माँ-बाप की बेटियाँ हैं।

माँ-बाप भी सोचते हैं कि हम अपनी बेटी को कैम्ब्रिज में पढ़ायेंगे, हम तो बेटी को लन्दन भेजेंगे, फ़लाँ जगह भेजेंगे। अंग्रेज़ी की तालीम दिलवायेंगे और दीन की तालीम दिलवाने की इतनी रुची नहीं होती, यह ग़लत-फ़हमी है। औ़रत बड़े-बड़े घरों के अन्दर रहते हुए भी बड़े तक़्वे और परहेज़गारी वाली ज़िन्दगियाँ गुज़ार गईं। ऐसी बहुत सारी मिसालें हैं।

रानी ज़ुबैदा की मिसाली ज़िन्दगी

ज़ुबैदा ख़ातून को देखिए यह अपने वक़्त की रानी थी लेकिन इतनी नेकदिल थी, कितने अच्छे-अच्छे काम किये कि जिसकी वजह से आज तक उनका शुमार नेक औ़रतों में होता है। इसके बारे में लिखा है कि उसने अपने घर में तीन सौ लड़कियाँ, नौकरानियाँ रखी हुई थी, यानी ख़ादिमायें रखी हुई थीं। वे सबकी सब क़ुरआन पाक की हाफ़िज़ थीं, क़ारी थीं, उनकी शिफ़्टें उसने बना दी थीं। और अपने महल में

विभिन्न कोनों पर एक-एक ख़ादिमा को बैठा दिया था, कुरआन की हाफ़िज़ और क़ारी लड़कियों को बैठा दिया था, और उनका काम था कि हर एक को चार-छह घंटे कुरआन पाक की तिलावत करनी है। एक शिफ़्ट ख़त्म होती तो दूसरी आ जाती, वह ख़त्म होती तो तीसरी आ जाती, वह ख़त्म होती तो अगली आ जाती। तीन सौ कुरआन की हाफ़िज़ दिन रात उसके महल के तमाम बरामदों में कमरों में बैठकर कुरआन पाक की तिलावत करती थीं। पूरा महल कुरआन पाक का गुलशन और बाग़ नज़र आता था।

सुब्हानल्लाह! ऐसी भी बीबियाँ गुज़री हैं जिनको अल्लाह ने वक़्त की मलिका भी बनाया, माल व दौलत के ख़ज़ाने क़दमों के नीचे हैं मगर उनकी दीनदारी देखिये कि पूरे महल को कुरआन की नेमतों से सजा दिया और दिल में दूसरों की हमदर्दी इतनी थी उस वक़्त के लोग जब हज पर जाते थे तो रास्ते में पानी न मिलने की वजह से जानवर मर जाते, लोग मर जाते, उसने शौहर से फ़रमाईश की कि एक नहर बना दीजिए जो 'फ़ुरात' दरिया से लेकर अ़रफ़ात के मक़ाम तक हो। चुनाँचे एक नहर बनाई गयी आज भी जब लोग हज पर जाते हैं तो उसके कुछ हिस्से देखने में आ जाते हैं। हैरान होते हैं, कोई तो ऐसी थी कि जिसने अपने शौहर से ताज-महल बनवाया, कोई ऐसी थी जिसने अपने शौहर से गुलशन-आरा बाग़ बनवाया, और यह ख़ुदा की बन्दी ऐसी थी जिसने नहरे-ज़ुबैदा बनवाई।

क़ियामत के दिन लाखों इनसान होंगे, परिन्दे होंगे, जानवर होंगे जिन्होंने पानी पिया होगा और उन सबके पानी पिलाने का अज्र उस नेक ख़ातून को जायेगा। तो मालूम हुआ कि दौलत मन्द माहौल में रहकर भी औ़रत नेक और पाकबाज़ ज़िन्दगी गुज़ार सकती है।

काबुल के बादशाह अमीर दोस्त मुहम्मद की बीवी के यक़ीन का हैरत-अंगेज़ वाक़िआ

एक अमीर काबुल के बादशाह गुज़रे हैं जिनका नाम था दोस्त मुहम्मद। उनके बारे में आता है कि एक बार दुश्मन ने हमला किया, उन्होंने बेटे को भेजा कि अपनी फ़ौज लेकर जाओ और जाकर उनके साथ जंग करो। अब जब वह जंग हुई कुछ दिनों के बाद उनकी एजेन्सी ने उनको आकर इत्तिला दी कि शहज़ादा भागा और दुश्मन ने उस पर वार किया, उसकी पीठ पर ज़ख़्म भी आये मगर वह बच निकला और कहीं छुप गया और उसको शिकस्त हो गयी।

अब यह सुनकर काबुल के अमीर का दिल बड़ा ग़मगीन हुआ, बड़ा परेशान हुआ। घर आया बीवी नेक थी, पहचान गयी कि शौहर को कोई सदमा है। नेक बीवियाँ ऐसे वक़्त में अल्लाह की रहमत की प्यामबर बनकर आती हैं और अपने शौहर के दुख बाँट लेती हैं। उसने प्यार से पूछा आज मैं आपको ग़मज़दा पाती हूँ क्या बात है? शौहर ने बताया कि इत्तिला आई है कि मेरे बेटे ने शिकस्त खायी, उसकी पीठ पर ज़ख़्म आये, ज़ख़्मी हालत में बच निकला और कहीं छुप गया है। मेरी एजेन्सियों ने इत्तिला दी है। जब उसने यह सुना कहने लगी आपकी बात ठीक होगी मगर मेरे नज़दीक यह बात ग़लत है, यह बात कभी ठीक नहीं हो सकती। शौहर ने कहा वह क्यों? कहने लगी बस मैं कह रही हूँ मैं उसकी माँ हूँ मैं उस बेटे को जानती हूँ। यह ख़बर बिल्कुल ग़लत है। आप तसल्ली रखिये ग़मज़दा होने की ज़रूरत नहीं, हमारा बेटा ऐसा कभी नहीं कर सकता।

काबुल के अमीर हैरान हैं। वह कहने लगे तुझे क्यों नहीं समझ आ रही मुझे कितने लोगों ने इत्तिला दी है। यह कहने लगी हरगिज़ नहीं! यह बात बिल्कुल ग़लत है, चाहे सैकड़ों लोग आकर कहें मगर

फिर भी यह बात ग्लत है।

उस शौहर ने सोचा औ़रतों की आ़दत होती है। मुर्ग़े की एक टाँग हाँकती रहती हैं। और यह बात मानती नहीं, ज़िद करके रह जाती हैं। मेरी बीवी भी शायद यही कर रही है। मगर तीसरे दिन इत्तिला मिली कि वह पहली ख़बर तो बिल्कुल ग़लत थी, शहज़ादे को अल्लाह ने फ़तह अ़ता फ़रमा दी, और वह फ़ातेह (विजयी) बनकर वापस लौट रहा है।

जब काबुल के बादशाह को इत्तिला मिली उसने घर आकर बताया कि वह तो बात वाक़ई ग़लत निकली, मेरी एजेन्सियों की बात ठीक नहीं थी, मगर यह तो बातओ कि तुम्हारा मामला क्या है? तुमने कैसे कह दिया कि यह बात ग़लत है। तुम्हें कैसे पता चल गया? वह कहने लगी यह एक राज़ है। मैंने अपने और अल्लाह के दरमियान रखा था, सोचा था किसी को नहीं बताऊँगी। कहने लगा मैं शौहर हूँ मुझे ज़रूर बता दो।

कहने लगी राज़ यह है कि जब यह बच्चा मेरे पेट में आया मैंने उस वक़्त से कोई संदिग्ध लुक़्मा अपने मुँह में नहीं डाला, और जब बच्चे की पैदाईश हुई मैंने नीयत कर ली कि मैं अपने इस बच्चे को हमेशा वुज़ू की हालत में दूध पिलाऊँगी, मैंने उसको कभी बेवुज़ू दूध नहीं पिलाया। इसकी बरकत थी जिसकी वजह से बच्चे के अन्दर बहादुरी आई, अच्छे अख़्लाक़ आये। यह कैसे मुम्किन है कि मेरा बच्चा शिकस्त खाता, यह शहीद हो सकता था, यह दुश्मन के सामने कट सकता था मगर पीठ फेरकर नहीं भाग सकता था। यह तो बुज़दिलों का काम होता है। अल्लाह ने मेरे गुमान को सच्चा कर दिया।

दखिये! पहले वक़्त की मलिका (रानी) भी ऐसी नेक होतीं थीं, अपने बेटों को वुज़ू करके दूध पिलाती थीं, और आजकल की बच्चियों का तो यह हाल है क्रि सीने से लगाकर बच्चों को दूध पिला रही होती

हैं और सामने टी० वी० पर ड्रामे देख रही होती हैं, गाने सुन रही होती हैं। थिरकते जिस्मों को देख रही होती हैं।

ऐ माँ! तू जब बच्चे को दूध पिलाती है तो यह तेरा बेटा बड़ा होकर इमाम ग़ज़ाली कैसे बनेगा? तूने तो बचपन में ही इसकी रूहानियत का गला घोंट कर रख दिया कि ऐसी हालत में दूध पिलाया, यह दूध उसके अन्दर जाकर क्या फ़साद (बिगाड़) मचायेगा। इसलिए चाहिये कि हम अपने बच्चों की अच्छी तरबियत करें।

औरतों के लिए दीनी तालीम की फ़िक्र कीजिए

औरतों को दीन की तालीम दिलवाई जाये। इन बेचारियों को दीन की तरफ़ मुतवज्जह किया जाये। अगर मर्द इनको तरग़ीब नहीं देंगे इनको फ़ज़ाईल नहीं सुनायेंगे, ये तो अपने कपड़े जूती में मस्त रहेंगी, इनकी सोच यहीं तक है। ये इसी में रहती हैं, बल्कि अल्लाह ने कुरआन में फ़रमा दिया:

اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا فِى الْحِلْيَةِ وَهُوَفِى الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ○ (سورة زخرف)

ये बेचारियाँ तो बस सोने के खिलौनों में ही पलती हैं और उसी में उनकी ज़िन्दगी गुज़रती है। और बात तो सच्ची है कि बेटी बेचारी दूध पीना छोड़ती है तो माँ-बाप उसके कानों में सुराख़ करवा देते हैं कि इसमें हम बालियाँ डालेंगे। ज़रा बड़ी होती है तो नाक सिलवा देते हैं कि इसमें हम सोने की लोंग डालेंगे। ज़रा बड़ी होती है तो गले में एक लॉकेट डाल दिया जाता है। यानी सोने का तौक़ डाल देते हैं। और ज़रा बड़ी होती है तो हाथों में चूड़ियाँ यानी सोने की हथकड़ियाँ डाल देते हैं। और ज़रा बड़ी हो जाती हैं, शादी की उम्र हो गयी तो पाँव में सोने का ज़ेवर सोने की बेड़ियाँ पाँव में डाल दी जाती हैं। ये बेचारी सोने-चाँदी की क़ैदी हैं।

बचपन से जवानी तक माँ-बाप ने उसको सोने में क़ैद कर दिया इसलिए उसके दिल में सोने की मुहब्बत होती है माल की मुहब्बत होती

है। उसकी तबीयत ऐसी बन जाती है कि बेचारी को हर वक़्त इन्हीं सजने-संवरने की चीज़ों की फ़िक्र रहती है। अपने सोने-चाँदी की फ़िक्र रहती है, बल्कि बाज़ औरतों में सोने-चाँदी की रग़बत (दिलचस्पी) इतनी होती है, ज़ेवर पहनने का शौक़ ऐसा होता है कि अगर उनको कहा जाये कि तुम्हारे पूरे जिस्म के अन्दर हम कीलें टोंक देंगे मगर कीलें सोने की होंगी, उसी वक़्त तैयार हो जायेंगी। कहने लगेंगी जल्दी करो। आपने जो कहा था पूरा करो। बेचारी पूरे जिस्म में सोने की कीलें ठुकवा लेंगी।

ज़ाहिरी सजने-संवरने के बजाये दीनी ज़िन्दगी अपनाईये

मर्दों को चाहिये कि उनको ज़ाहिरी आराईश (सजावट) के ऊपर लगाने के बजाये उनको दीन के ऊपर लगायें। उनके सामने बात को खोलें। ये दीनदार बनें, अपने रब की नज़र में नेक बनकर अच्छी बनकर ज़िन्दगी गुज़ारें ताकि उनको क़ियामत के दिन की इज़्ज़त नसीब हो जाये। आज तो बच्ची पैदा होती है माँ उस दिन से सोचना शुरू कर देती है, मुझे बच्ची का दहेज बनाना है। एक दिन आयेगा बच्ची को लेने वाले आयेंगे मेरी बच्ची अच्छा दहेज लेकर जाये।

ऐ माँ! तू बच्ची के बारे में अभी से सोच रही है, यह तो अभी दूध पीती बच्ची है, जिसको अभी रुख़्सत होने में बीस साल लगेंगे, कि इसका दहेज बनेगा, ऐसा न हो इसका दहेज तैयार न हो और बच्ची की रुख़्सती के वक़्त बच्ची को परेशानी हो।

तुझे अपनी इस बेटी की फ़िक्र है जो अभी खिलौनों में खेलती फिर रही है, तुझे अपनी फ़िक्र नहीं, तुझको भी अल्लाह के सामने पेश होना है और तेरा नेकियों का दहेज भी अल्लाह के सामने खोला जायेगा। अगर उसमें कुछ न हुआ, अरे तेरी बेटी को शर्मिन्दगी क्या होनी थी उससे बढ़कर शर्मिन्दगी तुझे होगी।

ऐ बहन! दो दहेजों की तैयारी कर

ऐ बहन! तू अपना दहेज तो पहले तैयार कर ले, हर औ़रत को दो दहेज तैयार करने पड़ते हैं- एक माल का दहेज शौहर के लिए और एक नेकियों का दहेज परवर्दिगार के लिए। तू शौहर के सामने थोड़ा दहेज भी लेकर पहुँची, चलो कोई बात नहीं, लेकिन अगर परवर्दिगार के सामने ख़ाली हाथ पहुँची और नेकियों का दहेज न हुआ तो कितनी शर्मिन्दगी होगी। उस दिन परेशान खड़ी होगी, अकेली होगी, न माँ साथ देगी न बाप साथ देगा, न शौहर होगा न बेटा होगा और न भाई होगा, अकेली खड़ी उस वक़्त परेशानी की हालत में पुकार रही होगी:

رَبِّ ارْجِعُوْنِ

ऐ अल्लाह मुझे मोहलत दे दे। मैं वापस जाऊँगी और वापस जाकर नेकी वाली ज़िन्दगी गुज़ारूंगी। अल्लाह फ़रमायेंगे: हरगिज़ नहीं! हरगिज़ नहीं! तुझे मोहलत दी थी तूने दुनिया के खेल-तमाशे में उस वक़्त को गुज़ार दिया, रस्म व रिवाज में गुज़ार दिया। आज तू मेरे पास ख़ाली हाथ आयी। आज देख हम तेरा क्या बन्दोबस्त करते हैं। उस दिन इनसान परेशान होगा।

लिहाज़ा ज़रूरत है कि हम बच्चियों को नेकी सिखायें, दीन की तालीम दिलवायें ताकि ये बच्चियाँ दीनदार बन जायें। हमने इसके असरात देखे, बड़ी-बड़ी फ़ैशन करनी वाली बच्चियाँ जब दीनी मदरसों में आती हैं, दीनी माहौल में आती हैं तो उनकी ज़िन्दगी की तरतीब बदल जाती है। तहज्जुद-गुज़ार बन-बनकर वापस जाती हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह पाकिस्तान में इस आ़जिज़ के एक दर्जन के क़रीब बच्चियों के मदरसे हैं। हम देखते हैं कि एम. ए. पास बच्चियाँ आती हैं और अल्लाह की रहमत से बिल्कुल बाक़ायदा दीनदार बनकर जाती हैं। बल्कि एक डबल एम. ए. बच्ची पिछले साल या उससे

पिछले साल दाख़िल हुई। वह कहने लगी जब अल्लाह ने मुझे इतनी समझ दी कि मैं डबल एम. ए. कर सकती हूँ। एम. ए. भूगोल उसने किया एम. ए. केलीग्राफ़ी उसने किया था, तो कहने लगी मैं अल्लाह का कुरआन क्यों नहीं पढ़ सकती? उसने फिर दाख़िला लिया। सात महीने में कुरआन सीने में सजा कर चली गयी।

सुब्हानल्लाह! ऐसी-ऐसी हमारे सामने मिसालें मौजूद हैं। हमने दारुल-हिसान वाशिंगटन के अन्दर अल्हम्दु लिल्लाह औरतों की एक क्लास शुरू की है। बड़ी उम्र की औरतें और बच्चों वाली औरतें हैं। उनके शौहर हैरान होते हैं, आकर बताते हैं कल टेस्ट (Test) था मेरी बीवी एक हाथ से सालन पका रही थी दूसरे हाथ में किताब लेकर सर्फ़ की गर्दानें याद कर रही थी। 'नह्व' में तालीलात पढ़ रही थी। हैरान होते हैं, बच्चों वाली औरतें जिनसे कोई उम्मीद भी नहीं कर सकता, जब उनको दीन की तरफ़ रग़बत (तवज्जोह) दिलाई जाती है तो बच्चे भी पालती हैं, खाने भी पकाती हैं, शौहरों के हुकूक़ भी पूरे करती हैं, मगर उसके साथ-साथ दीन की तालीम भी पढ़ती हैं और माशा-अल्लाह साथ-साथ दीनदार भी बन जाती हैं। अल्हम्दु लिल्लाह हमने इसके कई जगहों पर नमूने देखे। इसलिए ज़रूरी है कि बच्चियों को दीन की तालीम दें।

एक फ़ैशन-पसन्द लड़की का इब्रत-अंगेज़ वाक़िआ

एक आदमी ने अपनी बेटी की तालीम का कोई ख़्याल न किया यहाँ तक कि उसको ख़ूब माल पैसा दिया, फ़ैशन-पसन्द ख़ूबसूरत लड़की बन गयी। यहाँ तक कि जवानी में उसको मौत आ गयी। उसकी बड़ी तमन्ना थी कि बेटी को कभी ख़्वाब में तो देखूँ मेरी बेटी किस हाल में है।

एक दिन उसने ख़्वाब में देखा कि अपनी बेटी की क़ब्र पर खड़ा है, अचानक उसकी बेटी की क़ब्र खुल गयी। क्या देखता है कि बेटी

बेलिबास (नंगी) पड़ी है। उसने अपने सतर को छुपाया मगर उसकी तो हालत अ़जीब थी, उसका सर बिल्कुल गंजा है और उसकी शक्ल अ़जीब। उसने पूछा बेटी तेरा क्या हाल है? कहने लगी अब्बू मैं बेपर्दा फिरती थी। जब यहाँ क़ब्र में आई तो मेरे सर को बहुत बड़ा बना दिया गया, पहाड़ों की तरह, मेरा हर-हर बाल बढ़ाकर दरख़्त की तरह बना दिया गया जिसकी शाख़ें ज़मीन में दूर तक फैली होती हैं। फिर फ़रिश्ते आये उन्होंने मेरे एक-एक बाल को नोचा और जिस तरह लड़के दरख़्त को खींच लें ज़मीन में गड्ढ़े पड़ जाते हैं, अब्बू एक-एक बाल को नोचने से मेरे सर के अन्दर गड्ढ़े पड़ गये, इसलिए मेरे सर की खाल भी चली गयी, सिर्फ़ हड्डी है जो आप देख रहे हैं।

उसने कहा बेटी तुम्हारा चेहरा भी नहीं? वह कहने लगी अब्बू आप देख रहे हैं आपको मेरे दाँत नज़र आ रहे हैं होंठ नहीं हैं, इसकी वजह यह है कि मेरे होंटों पर सुर्ख़ी लगी हुई थी और मैं उसी तरह वुज़ू करके नमाज़ें पढ़ लेती थी। फ़रिश्ते आये उन्होंने कहा तू तहारत (पाकी) का ख़्याल नहीं करती थी। तेरा गुस्ल भी नहीं होता था, चुनाँचे उन्होंने मेरी सुर्ख़ी को जो खींचा यह सुर्ख़ी चिपक गयी थी, मेरे होंठों से सुर्ख़ी के साथ ऊपर और नीचे के दोनों होंठ भी कट गये इसलिए आपको मेरे बत्तीस दाँत नज़र आ रहे हैं। होंठ ऊपर नहीं हैं।

बाप ने कहा बेटी तेरे हाथों की उंगलियाँ ज़ख़्मी नज़र आती हैं। कहने लगी अब्बू मैं नाख़ून पालिश लगाया करती थी, फ़रिश्ते आये, कहने लगे तेरे नाख़ूनों को हम खींचेंगे। उन्होंने मेरे एक-एक नाख़ून को खींचा, अब्बू मेरे हाथ पर ज़ख़्म हैं, मेरे चेहरे पर ज़ख़्म हैं, मेरे सर पर ज़ख़्म हैं। मैं बता नहीं सकती आपने मुझे इतनी मुहब्बत दी थी। मैंने जो ख़्वाहिश की, अब्बू आपने पूरी कर दी, मुझे इतनी मुहब्बत दी मैं तो ग़म परेशानो को जानती नहीं थी। शहज़ादों की तरह आपने पाला। काश! अब्बू आप मुझ पर एक एहसान करते मुझे कुछ दीन की समझ भी बता देते, तो मैं आज इस अ़ज़ाब में गिरफ़्तार न होती। न

मैं शौहर को बुला सकती हूँ न मैं आपको पैग़ाम भेज सकती हूँ। मैं अकेली यहाँ पड़ी हूँ फ़रिश्ते आते हैं हाथों में गुर्ज़ (एक हथियार जो ऊपर से मोटा और गोल होता है और नीचे से पतला होता है) होते हैं मेरी पिटाई करते हैं। अब्बू मेरा दुख बाँटने वाला कोई नहीं।

इसके बाद उसकी आँख खुल गयी तब उसको एहसास हुआ काश कि मैं अपनी बेटी को दीन सिखाता तो मेरी बेटी आगे जाकर जन्नत की नेमतों में पल जाती। तो जिन बेटियों को इतने प्यार मुहब्बत से पालते हैं उनको अगर हम दीनदार नहीं बनायेंगे तो ये जहन्नमी फ़रिश्तों के हाथों में जायेंगी और इनका बुरा हाल बनेगा। इसलिए बेहतर यह है कि हम अपनी बेटियों को दीन पढ़ायें दीनदार बनायें, अपनी बेटियों अपनी बीवियों को दीनदार बनायें, औ़रतों के दीनी मामलात में उनका सहयोग और मदद करें। उनको तवज्जोह दिलायें, उनको दीन की बुनियाद पर ज़िन्दगी का साथी बनायें ताकि माहौल के अन्दर दीनदारी आये।

औ़रतों को भी चाहिये कि वे खुद भी कोशिश करें। जब वे मर्दों से दुनिया की बातें मनवा लेती हैं तो दीन की बातें क्यों नहीं मनवा सकतीं? मर्दों को चाहिये कि अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी करें। औ़रतों को चाहिये कि वे अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी करें ताकि हम नेक बनकर ज़िन्दगी गुज़ारें और अपने रब के फ़रमाँबरदार बन्दे बन जायें। यह रमज़ान मुबारक का आख़िरी अ़शरा (आख़िरी दशक यानी आख़िरी दस दिन) है, मग़फ़िरत का अ़शरा है।

अब अपने रब को तन्हाईयों में रो-रोकर मनाने की ज़रूरत है। अपने रब को सज्दे में जाकर मनाना, अपने रब से हाथ उठाकर दुआ़यें माँगना, दामन फैलाकर दुआ़यें माँगना। ऐ अल्लाह! तेरे दर पर एक फ़क़ीरनी हाज़िर है तेरी रहमत की तलबगार है। वह परवर्दिगार जो मर्दों को हुक्म देता है कि औ़रतों के साथ नर्मी से पेश आओ, जब आप दुआ़यें माँगेगी वह परवर्दिगार आपके साथ क्यों नहीं नर्मी

फ़रमायेगा? इसलिए रमज़ान के वक़्तों को ग़नीमत समझ लीजिए। अपने गुनाहों को बख़्शवाईये और आईन्दा नेकी की ज़िन्दगी का दिल में इरादा कर लीजिए। अल्लाह तआला हमारे आने वाले वक़्त को गुज़रे वक़्त से बेहतर फ़रमा दे। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ○

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

औलाद की तरबियत कैसे करें? (2)

بسم الله الرحمن الرحيم ○

الحمد لله وكفٰى وسلام على عباده الّذين اصطفٰى اما بعد!

فَاَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ يَآاَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْاقُوْٓااَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَاالنَّاسُ وَالْحِجَارَةُ (سورة التحريم) وقال الله تعالٰى فى مقام اٰخر: اِنَّمَآاَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ (سورة التغابن)

سبحٰن ربك رب العزة عما يصفون ○ وسلام على المرسلين ○ والحمد لله رب العالمين ○ اللّٰهم صل علٰى سيّدنا محمد وعلٰى اٰل سيدنا محمد وبارك وسلم.

फ़ितरी ख़्वाहिश

हर इनसान के अन्दर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने एक फ़ितरी (पैदाईशी) ख़्वाहिश रखी है, कि जब वह जवानी की उम्र को पहुँचे तो शादी के बाद औलाद वाला हो जाये। औलाद का होना एक ख़ुशी होती है और औलाद का नेक होना दोगुनी ख़ुशी होती है। इसलिये जब भी अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त से औलाद की दुआयें माँगें तो हमेशा नेक औलाद की दुआयें माँगें। बच्चों का नेक होना, माँ-बाप का अपनी औलाद की तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा)

करना यह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त को बहुत पसन्द है।

हज़रत लुक़मान अ़लैहिस्सलाम ने अपने बेटे को नसीहतें कीं, प्यारी-प्यारी बातें सुनायीं। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त को इतनी अच्छी लगीं कि उनको कुरआन मजीद में नक़ल फ़रमाया। और सूरः का नाम भी लुक़मान रख दिया। अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम ने अपनी ज़िन्दगियों में औलादों के लिये दुआ़यें माँगीं लेकिन अगर उनकी दुआ़ओं के अलफ़ाज़ देखे जायें तो उन्होंने केवल औलाद नहीं माँगी बल्कि नेक औलाद माँगी।

अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की औलाद के लिये दुआ़यें

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सला को बुढ़ापे में जाकर औलाद मिली तो दुआ़ माँगते थेः

رَبِّ هَبْ لِیْ مِنَ الصَّالِحِیْنَ (سورة ال عمران)

ऐ अल्लाह! मुझे नेक बेटा अ़ता फ़रमा।

हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम बूढ़े हो गये, मगर औलाद की नेमत नसीब नहीं हुई। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त से दुआ़यें करते हैं मायूस नहीं हुए। अगरचे ज़ाहिरी बदन में बुढ़ापे के आसार ज़ाहिर हो गये। हड्डियाँ घुलने लगीं, सारे बाल सफ़ेद होकर चमकने लगे। इस उम्र में तो इनसान की हिम्मतें टूट जाती हैं। ना-उम्मीदी दिल में आने लग जाती है मगर वह तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के पैग़म्बर थे। उन्हें पता था कि यह सब कुछ अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के हुक्म से होता है। चुनाँचे बुढ़ापे में भी दुआ़यें माँगने लगे। कुरआन मजीद ने प्यारे अन्दाज़ में इस दुआ़ को नक़ल कियाः

كٓهٰيٰعٓصٓ o ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا o اِذْنَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً ا خَفِيًّا o

(سورة مریم آیت:۱-۳)

जब उन्होंने पुकारा अपने रब को धीरे से। अब सोचिये कि जब दिल में तमन्ना होती है तो बेइख़्तियार इनसान के दिल से दुआ़यें

निकल रही होती हैं। इनसान कभी तन्हाईयों में जाकर दुआयें माँगता है। कभी ऊँची आवाज़ से माँगता है कभी पोशीदा तौर पर माँगता है। मगर हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ने दुआ क्या माँगी। क़ौल यह अर्ज़ किया:

رَبِّ اِنِّیْ وَھَنَ الْعَظْمُ مِنِّیْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَیْبًا وَّلَمْ اَکُنْ بِدُعَآئِکَ رَبِّ شَقِیًّا○ (سورۃ مریم)

ऐ अल्लाह मेरी हड्डियाँ अब घुलने का वक़्त आया, मेरे बाल सफ़ेद होकर चमकने लग गये। लेकिन ऐ अल्लाह मैं जो आपसे दुआ माँगता हूँ इस बारे में ना-उम्मीद नहीं हूँ।

अब दुआ माँगते-माँगते जिस पर बुढ़ापा आ जाये और फिर भी वह इतनी लजाजत और इस क़द्र आजिज़ी और नियाज़मन्दी से दुआयें माँग रहा हो तो परवर्दिगार की रहमत को जोश आया। उनकी दुआ क्या थी?

وَاِنِّیْ خِفْتُ الْمَوَالِیَ مِنْ وَّرَآءِیْ وَکَانَتِ امْرَاَتِیْ عَاقِرًا فَھَبْ لِیْ مِنْ لَّدُنْکَ وَلِیًّا○ یَّرِثُنِیْ وَیَرِثُ مِنْ اٰلِ یَعْقُوْبَ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِیًّا○ (سورۃ مریم: ٥-٦)

कितनी प्यारी दुआ माँगी। बेटा भी माँगा तो ऐसा कि जो अपने बाप दादा के कमालात का वारिस बने। अपने बाप दादा के उलूम का वारिस बने। यही असल मक़सूद होता है कि औलाद हो और नेक हो, जो इनसान के लिये सदक़ा-ए-जारिया बन जाये।

नेक औलाद बेहतरीन सदक़ा-ए-जारिया

हदीस पाक में आता है कि जब इनसान इस दुनिया से चला जाता है तो उसके अ़मल का सिलसिला टूट जाता है सिवाये तीन अ़मलों के, उनमें से एक अगर उसने अल्लाह के रास्ते में सदक़ा किया तो सदक़ा-ए-जारिया (बराबर जारी रहने वाले सदके) का सवाब उसे मिलता रहता है। और दूसरा अगर उसने अपने इल्म से दूसरों को

फ़ायदा पहुँचाया तो यह भी उसको सवाब मिलता रहता है। और तीसरा हदीस पाक में फ़रमाया "नेक औलाद" अगर उसने अपने पीछे नेक औलाद छोड़ी, औलाद का जितना भी अ़मल होगा उनके अज्र के मुताबिक़ औलाद को भी मिलेगा और अल्लाह तआ़ला उनके माँ-बाप के नामा-ए-आमाल में भी लिखेंगे। बल्कि बाज़ रिवायतों में आता है कि बच्चा जब दुनिया में पैदा होता है उस वक़्त से लेकर मरने तक अगर वह नेक बना तो जितनी मर्तबा दुनिया में साँस लेता है हर-हर साँस के बदले उसके माँ-बाप को अज्र दिया जाता है। इसी लिये औलाद माँगें तो हमेशा नेक माँगे।

हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम दुआ़यें माँग रहे हैं। अल्लाह तआ़ला की शान देखिये कि बीबी मरियम मस्जिद की मेहराब में हैं, ज़करिया अ़लैहिस्सलाम उनको छोड़कर कहीं दावत के काम पर चले गये। देर से ज़रा वापस आये तो उनको बे-मौसम के फल खाते हुए देखा। पूछाः

يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ، اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ○ (سورة ال عمران:٣٧)

ऐ मरियम! ये फल कहाँ से आये? हज़रत मरियम ने जवाब दिया कि यह अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की तरफ़ से। जब मरियम ने यह बात कही कि बेमौसम के फल मुझे परवर्दिगार ने अ़ता किये अब दिल में बेटे की तमन्ना तो थी ही, दुआ़यें तो पहले भी माँगते थे, लेकिन मौक़े के मुताबिक़ फिर दिल में याद आ गई। कुरआन ने बतला दियाः

هُنَالِكَ دَعَازَكَرِيَّا رَبَّهٗ

ज़करिया अ़लैहिस्सलाम को अपनी बात याद आ गई और इस मौक़े पर उन्होंने अपने रब से पुकार की, दुआ कीः

رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ (سورة ال عمران:٣٨)

ऐ अल्लाह! मुझे भी पाक नेक बेटा अ़ता फ़रमा दे। ऐ अल्लाह! आप मरियम को बेमौसम के फल दे सकते हैं मैं भी बूढ़ा हो चुका हूँ मेरी भी औलाद का मौसम तो नहीं मगर मुझे भी बेमौसम का फल अ़ता कीजिये। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने दुआ़ को उसी वक़्त क़बूल फ़रमाया। हज़रत ज़करिया को फ़रिश्ते ने आकर बताया:

اَنَّ اللّٰہَ یُبَشِّرُکَ بِیَحْیٰی مُصَدِّقًا بِکَلِمَۃٍ مِّنَ اللّٰہِ وَسَیِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِیًّا مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ O (سورۃ ال عمران: ۳۹)

बेटा भी दिया तो यहया अ़लैहिस्सलाम ऐसा नाम जो पहले कभी किसी ने रखा नहीं। और फिर यह भी फ़रमा दिया कि यह इतना पाकबाज़ होगा कि यह औ़रतों से एक तरफ़ रहने वाला, अल्लाह का नबी नेकोकार होगा। अल्लाह तआ़ला औलाद भी देते हैं और नेकोकार भी देते हैं, यही सबसे बड़ी तमन्ना होती है।

चुनाँचे बाप की दुआ़ कुरआन मजीद में आपने सुन ली, कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने भी दुआ़यें माँगीं और हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम ने भी दुआ़यें माँगीं। आख़िरकार अल्लाह रब्बुल्- इज़्ज़त ने उनको नेक बच्चे अ़ता फ़रमाये। चुनाँचे कब से यह दुआ़यें शुरू होती हैं? कुरआन मजीद की तरफ़ रूजू करें।

हज़रत इमरान की बीवी थीं उनको उम्मीद हो गई, गर्भ ठहर गया, अब जिस वक़्त से उम्मीद लग गई उन्होंने अपने दिल में नीयत की, कुरआन मजीद में वह ख़ूबसूरत नीयत नक़ल की गयी है। फ़रमाने लगीं:

رَبِّ اِنِّیْ نَذَرْتُ لَکَ مَافِیْ بَطْنِیْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّیْ (سورۃ ال عمران: ۳۵)

हज़रत इमरान की बीवी पूरी आ़जिज़ी के साथ दुआ़ करने लगीं, अपने परवर्दिगार के सामने दामन फैलाकर दुआ़ माँगी ऐ मेरे मालिक! जो कुछ मेरे पेट में है मैंने उसको तेरे दीन के लिये वक़्फ़ (समर्पित) कर दिया। ऐ अल्लाह! उसको मेरी तरफ़ से क़बूल फ़रमा ले।

अभी तो बच्चे की पैदाईश भी नहीं हुई अभी तो सिर्फ़ बुनियाद पड़ी है। उम्मीद लगी है, मगर माँ को उस वक़्त से फ़िक्र होती है कि मेरी होने वाली औलाद नेक बन जाये। चुनाँचे उन्होंने उस वक़्त दुआ़ माँगीः

رَبِّ اِنِّیْ نَذَرْتُ لَكَ مَافِیْ بَطْنِیْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّیْ (سورة ال عمران: ٣٥)

ऐ मेरे रब! जो कुछ मेरे पेट में है मैंने उसको तेरे दीन के लिये वक़्फ़ (समर्पित) कर दिया। ऐ अल्लाह! उसको मुझसे (मेरी तरफ़ से) क़बूल फ़रमा ले।

तो सोचिये नेक औलाद के लिये माँ-बाप कब से दुआ़यें माँगनी शुरू कर देते हैं।

अनमोल मोती

उलेमा ने लिखा है कि कुरआन मजीद की यह आयत अगर कोई भी औ़रत हमल (गर्भ) के बाद कसरत के साथ पढ़ेगी तो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त उसको नेक और पाक औलाद अ़ता फ़रमायेंगे। और यह हमारे बुज़ुर्गों का दस्तूर रहा है और उन्होंने तस्दीक़ भी की कि जो हामिला (गर्भवती) औ़रत भी हमल के दिनों में इस आयत को पढ़ती रहती है समय-समय पर तो उसकी नेक-नीयती की वजह से अल्लाह तआ़ला उसको नेक औलाद अ़ता फ़रमाते हैं। (१)

यहाँ से माँ-बाप की दुआ़यें हैं। अभी बच्चे की बुनियाद पड़ रही है। और कब तक माँ-बाप की तमन्नायें रहती हैं कि औलाद नेक बन जाये, जब तक इस दुनिया से रुख़्सत न हो जाये। चुनाँचे कुरआन पाक की तरफ़ रुजू करें।

(१) हम पढ़ने वालियों की सहूलियत के लिये इस आयत का उच्चारण हिन्दी में लिखते हैंः
"रब्बि इन्नी नज़र्तु ल-क मा फ़ी बत्नी मुहर्ररन् फ़-तक़ब्बल् मिन्नी" मुहम्मद इमरान क़ासमी

हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की अपनी औलाद को नसीहत

हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम ने अपनी मौत के वक़्त अपने बेटों को जमा किया, फ़रमाया:

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ اِذْقَالَ لِبَنِيْهِ مَاتَعْبُدُوْنَ مِنْ بَعْدِىْ

(سورة البقرة:١٣٣)

अब देखिये मौत का वक़्त आ गया उस वक़्त हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम अपने बेटों को इकट्ठा करके उनसे पूछते हैं: मेरे बेटो! मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे। जब बच्चों ने अच्छा जवाब दिया कि हम आपके माबूद की इबादत करेंगे तो ख़ुश हो गये। अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन पाक में फ़रमा दिया:

وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرَاهِيْمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ، يٰبَنِىَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَO (سورة البقرة:١٣٢)

और नसीहत की इब्राहीम और याक़ूब ने अपने बेटों को। अब देखिये माँ के पेट में जब हमल ठहरता है उस वक़्त से माँ की दुआ़यें बाप की दुआ़यें उससे भी पहले की और कब तक दुआ़यें रहती हैं। जब बाप दुनिया से जा रहा है उस वक़्त उसकी आख़िरी तमन्ना यही होती है कि मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिये दीन को पसन्द किया। तुम्हें मौत न आये मगर इस हाल में कि तुम इस्लाम पर रहो, ईमान पर मौत हो।

मालूम हुआ कि यह तो सारी ज़िन्दगी का मसला है। यह तो कोई जाकर माँ-बाप से पूछे कि उनके दिल की दुआ़यें कहाँ-कहाँ निकलती हैं। कोई मौक़ा नहीं होता, कोई दिन नहीं होता, नेक माँ-बाप की तो दुआ़यें होती हैं। यह इसलिये पूरी ज़िन्दगी का मामला होता है बल्कि आप हैरान होंगी कि हर छोटा बच्चा जिसने पाँच-छह बरस की उम्र में

नमाज़ पढ़नी सीखी वह उस वक़्त से दुआयें माँगता है। और दुआ क्या माँगता है हर बच्चाः

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ (سورة ابراهیم: ٤٠)

ऐ अल्लाह! मुझे नमाज़ का पाबन्द बना दे और मेरी औलाद को भी नमाज़ का पाबन्द बना दे।

अब इस पाँच-छह साल के बच्चे की औलाद तो नहीं होती मगर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के इल्म में है कि यह बच्चा जब जवानी की उम्र को पहुँचेगा उस वक़्त इसकी औलाद होगी तो अब सोचिये कि जिसको जवानी की उम्र में पच्चीस साल की उम्र में जाकर औलाद मिलनी थी, उसने पाँच-छह साल की उम्र में माँ-बाप से नमाज़ सीखी थी। और उस वक़्त से अपनी तोतली ज़बान से यह दुआयें माँगता है:

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ (سورة ابراهیم: ٤٠)

ऐ अल्लाह! मुझे भी नमाज़ का पाबन्द बना दे, मेरी औलाद को भी नमाज़ का पाबन्द बना दे।

अब जिस बच्चे ने पाँच साल की उम्र में ये दुआयें माँगनी शुरू कर दीं। हालाँकि औलाद पच्चीस साल की उम्र में जाकर मिली, फिर उसके बाद भी वह यही दुआयें माँगता रहा, यहाँ तक कि उसकी मौत का वक़्त आ गया। अब सोचिये कि अगर उस वक़्त भी उसकी औलाद नमाज़ की पाबन्द नहीं होती तो बाप के दिल पर कितना सदमा होता है, कोई बन्दा उसको महसूस नहीं कर सकता सिवाये उसके कि जो बाप हो।

हासिल यह कि अल्लाह तआला ने माँ-बाप के अन्दर फ़ितरी तौर पर नेक औलाद की तमन्ना रखी होती है इसलिये सारी ज़िन्दगी उसके लिये दुआयें की जाती हैं। कुरआन मजीद ने भी दुआ सिखाई कि मोमिन बन्दे यह दुआ माँगा करें। दुआ यह है।

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّیّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْیُنٍ (سورة فرقان: ٧٤)

रब्बना हब् लना मिन् अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना कुर्र-त अअ्युनिन् (सूरः फुरक़ान आयत ७४)

ऐ अल्लाह! हमारी बीवियों में से हमारी औलादों में से ऐसा बना दे कि हमारी आँखों की ठन्डक बने।.

وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًاo

वज्अ़ल्ना लिल्मुत्तक़ी-न इमामा।

और खुद हमें भी मुत्तक़ियों का इमाम (पेशवा) बना दे।

अब सोचने की बात है कि दुआ़यें माँगी जा रही हैं कि औलाद आँखों की ठन्डक बने और वह तो तभी बनेगी ना जब वह नेक होगी, फ़रमाँबरदार होगी। तो पता चलता है कि कुरआन पाक से यह साबित होता है कि माँ-बाप तो सारी ज़िन्दगी औलाद के लिये दुआ़यें माँगते हैं।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की अपनी औलाद के लिये दुआ़ अपनी

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ अपनी औलाद के बारे में बहुत ही अ़जीब व ग़रीब है। उन्होंने जब अपनी औलाद को बैतुल्लाह शरीफ़ के पास लेजाकर छोड़ा, हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम को और उनकी वालिदा हज़रत हाजरा को तो यह दुआ़ माँगीः

رَبَّنَآ اِنِّیْٓ اَسْکَنْتُ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ بِوَادٍ غَیْرِ ذِیْ زَرْعٍ عِنْدَ بَیْتِکَ الْمُحَرَّمِ

ऐ मेरे परवर्दिगार! मैंने अपनी औलाद को एक ऐसी वादी में ठहराया और सुकूनत दी कि जिसमें ज़र्रात भी नहीं। हरियाली और ज़र्रात का नाम व निशान भी नहीं। ऐसी जगह पत्थर ही पत्थर हैं। पानी नहीं कि जिसकी वजह से न फल है न फूल न दरख़्त है न कुछ और है, ऐसी बेउपजाऊ जगह पर मैंने अपने बच्चों को छोड़ दिया। तेरे हुर्मत वाले घर के पास जो कि बैतुल्लाह शरीफ़ वहाँ था, और मैंने

अपनी औलाद को वहाँ अल्लाह के घर के पास बसाया।

(सूरः इब्राहीम आयत ३७)

अल्लाह के घर के पास बसाने के बाद यह दुआ करते हैं:

لِيُقِيمُوا الصَّلٰوةَ

ऐ अल्लाह! नीयत यह है कि वे नमाज़ पढ़ने वाले बन जायें। यानी इबादत गुज़ार बन जायें।

अगरचे लफ़्ज़ 'सलात' का इस्तेमाल किया मगर सलात का लफ़्ज़ इबादत की तरफ़ इशारा कर रहा है। तो यह बताया गया, ऐ अल्लाह तेरे घर के पास छोड़ा, ताकि नमाज़ पढ़ें। नमाज़ का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया ताकि तेरे घर में जाकर इबादतें कर सकें।

उसके बाद यह दुआ फ़रमाई:

فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِىٓ اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ٥

ऐ अल्लाह! लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ माईल फ़रमा दे। ताकि उनको लोगों के अन्दर महबूबियत नसीब हो, क़बूलियत नसीब हो, इज़्ज़त नसीब हो। ऐ अल्लाह उनको ऐसा बना दे कि लोग उनके पास आया करें। ऐ अल्लाह! उनको खाने के लिये फल अ़ता कर दीजिये। ताकि ये आपका शुक्र अदा कर सकें।

इतनी प्यारी दुआ़ हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने बच्चों के लिये माँगी। आज भी चाहिये कि हर माँ हर बाप अपने बच्चों के लिये यही दुआ़ माँगे। हम यह नीयत करें ऐ अल्लाह! हमारी औलाद एक ऐसी जगह ज़िन्दगी गुज़ार रही है जो दीनी एतिबार से बे-अ़मली का माहौल है, दीनी एतिबार से बुराई और गुनाहों का माहौल है, नेकी कम है बुराई ज़्यादा है। इसलिये यह भी एक तरह से एक ऐसी वादी की तरह है जो ग़ैर-उपजाऊ है।

लोगो! मुसलमानों के घर आ़म तौर पर मस्जिद के क़रीब होते हैं। कभी चन्द मिनट में पहुँच जाते हैं, कभी दस मिनट में पहुँच गये।

थोड़ा सा फ़ासला होता है। तो यह नीयत करें कि ऐ अल्लाह! तेरे घर के पास हमने अपनी औलाद को मकान बनाकर दिया। यहाँ का माहौल दीनी नहीं। ऐ अल्लाह! हमारी नीयत यह है कि हमारी औलाद नमाज़ें पढ़ने वाली बन जाये। ऐ अल्लाह! उनका राब्ता मस्जिद के साथ पक्का हो जाये। तेरे घर से उनको मुहब्बत हो जाये।

चूँकि हदीस पाक का मफ़्हूम है कि जिसको मस्जिद में कसरत से आते देखो उसके ईमान की गवाही दो। लिहाज़ा मस्जिद के अन्दर उनका दिल लग जाये। और ऐ अल्लाह! ऐसा न हो कि उनके हासिद हों, उनके मुख़ालिफ़ हों, उनको तकलीफ़ पहुँचाने वाले लोग हों। ऐसा न हो। और यह दुआ करें कि ऐ अल्लाह! लोगों के दिलों में उनकी मुहब्बत डाल दीजिये लोग उनसे इज़्ज़त से पेश आयें। लोग उनका इक्राम करें, लोग उनकी तारीफ़ें करें, लोग खुशी-खुशी उनसे मिलें और अच्छे अख़्लाक़ का बर्ताव करें।

ऐ अल्लाह! हमारी औलाद को ऐसी क़बूलियत दीजिये। ऐ अल्लाह! उनको खाने को फल दीजिये। अगर फल मिल सकते हैं तो रोटी पानी तो पहले की बात है। इसका मतलब है कि अल्लाह तआ़ला सिर्फ़ रोटी पानी ही नहीं बल्कि उसके साथ-साथ उनको खाने के लिये फल भी अ़ता फ़रमायेंगे। हलाल और पाक रिज़्क़ ख़ूब ज़्यादा अ़ता फ़रमायेंगे। और मक़सद क्या होगा? मक़सद यह होगा कि ऐ अल्लाह! वे आपका शुक्र अदा कर सकें।

अब यह "वे आपका शुक्र अदा कर सकें" एक नुक्ता है उन्होंने यह इसलिये कहा कि शुक्र अदा करने वाले बन्दे थोड़े होते हैं। अल्लाह तआ़ला ने सूरः सबा के अन्दर खुद इसका इज़्हार फ़रमाया है। कि मेरे बन्दों में से थोड़े होते हैं जो शुक्र गुज़ार होते हैं।

तो देखिये हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ कितनी प्यारी और ख़ूबसूरत है। हर माँ और बाप को चाहिये कि अपनी औलाद की नीयत करके उनके मफ़्हूम को ज़ेहन में रख कर इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम

की तरह दुआ माँगे। अल्लाह तआला ने जैसे इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद को इज़्ज़तें बख़्शीं उनमें से अम्बिया को पैदा किया, इसी तरह अल्लाह तआला आपकी औलादों में औलिया-अल्लाह को पैदा फ़रमायेंगे। जिस तरह इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलादों में से तमाम नबियों के सरदार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पैदा किया इसी तरह अल्लाह तआला आपकी औलादों में से किसी बड़े वली को पैदा फ़रमायेंगे। जिस तरह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने उनको बड़ी मात्रा में रिज़्क़ अता किया, आज देखिये अरब मुल्कों के जितने लोग हैं इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में से नीचे आ रहे हैं। अल्लाह तआला ने आज भी उनको खाने के लिये फल अता किये।

लिहाज़ा इस दुआ से फ़ायदा उठाईये। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हमारी औलादों को नेक बना दे। नेक औलाद इनसान के लिये नेमत है और बुरी औलाद इनसान के लिये वबाल है। इसलिये कि नेक औलाद सदक़ा-ए-जारिया बनेगी।

क़ुरआन मजीद ने बता दिया। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम अपने वालिद की नेक औलाद थे। दुआ माँगते थे:

رَبِّ اَوْزِعْنِیْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْٓ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَعَلٰی وَالِدَیَّ

(سورۃ الاحقاف:۱۵)

देखिये वह शुक्र अदा कर रहे हैं जो नेमतें अल्लाह ने उनपर कीं या उनके वालिदे मोहतरम पर कीं। नेक औलाद तो माँ-बाप के लिये भी नेक दुआयें करती है और बुरी औलाद तो इनसान के लिये दुनिया में भी तकलीफ़ का सबब बनती है और आख़िरत में भी शर्मिन्दगी का सबब बनेगी।

बुरी औलाद का क्या बतायें इनसान के लिये वह छठी ऊंगली की तरह होती है न उसको इनसान काट सकता है न बरदाश्त कर सकता है। जो औलाद होती है। अब माँ-बाप को उनके पास रहना तो होता ही है मगर दिल ही दिल में घुट-घुटकर जी रहे होते हैं, उस बुरी

औलाद का क्या कहना।

बुरी औलाद के परिणाम

एक वाक़िआ लिखा है। एक आदमी के यहाँ औलाद नहीं थीं वह मक्का मुकर्रमा में रहता था, बड़ी दुआयें माँगता था। किसी ने उसे कहा कि 'मक़ामे इब्राहीम' पर जाकर दुआयें माँगो, अल्लाह तआला तुम्हें औलाद अ़ता फ़रमा देंगे। लेकिन उस बेचारे को यह समझ नहीं थी कि मुझे नेक औलाद माँगनी है।

चुनाँचे वह 'मक़ामे इब्राहीम' (यह काबा शरीफ़ के पास एक स्थान है जहाँ दुआ क़बूल होती है) पर गया और वहाँ जाकर उसने दो रक्अ़त नफ़िल पढ़कर खड़े होकर दुआ माँगी: ऐ अल्लाह! मुझको बेटा दे दे।

अब चूँकि बेटे की दुआ माँगी अल्लाह ने दुआ क़बूल कर ली लेकिन बेटा नाफ़रमान निकला। जैसे ही उसने जवानी में क़दम रखा उसने अ़य्याशी वाले काम करने शुरू कर दिये। लोगों की इज़्ज़तें ख़राब करने लगा। माहौल के अन्दर समाज के अन्दर उसकी वजह से बहुत परेशानी आ गई। लोग उसको बुरा समझते और उसकी वजह से माँ-बाप को भी बुरा कहते। यहाँ तक कि उस नौजवान ने ऐसे बदमाशी के काम किये कि माँ-बाप कानों को हाथ लगाते। बाप बड़ा परेशान हुआ बच्चे को समझाता। उसके कान पर जूँ न रेंगती। उसको जवानी का नशा चढ़ा हुआ था। वह बात को एक कान से सुनता और दूसरे कान से निकाल देता। बुरी सोहबत में पड़ चुका था। बुरे कामों की लज़्ज़त उसको पड़ चुकी थी। इसलिये वह अपनी मस्तियों में लगा रहता, बाप जितना भी समझाता बच्चा बात न सुनता। यहाँ तक कि एक दिन बाप ने डाँट पिलाई समझाने की ख़ातिर, इस्लाह की ख़ातिर, लेकिन नौजवान गुस्से में आ गया कि तुमने मुझे क्यों ऐसी-ऐसी बातें कहीं और वहाँ से निकल पड़ा।

उस नौजवान ने भी सुना हुआ था कि फ़लाँ जगह जाकर अगर दुआयें करें तो वे क़बूल होती हैं, ग़ुस्से में आकर वह नौजवान बैतुल्लाह (काबा) शरीफ़ की तरफ़ आया और मक़ामे इब्राहीम पर जहाँ पहले बाप ने बेटे के पैदा होने की दुआ की थी उसी जगह पर खड़े होकर नौजवान ने बाप के मरने की दुआ की। बुरी औलाद का तो यह हाल है। इनसान उनको प्यार मुहब्बत से पालता है मगर वे बड़े होकर इनसान के दुश्मन बन जाते हैं। दुनिया में भी उनका यही मामला है और क़ियामत में भी उनका यही हाल होगा।

क़ियामत के दिन नाफ़रमान औलाद, बदकार औलाद को जब खड़ा किया जायेगा और पूछा जायेगा कि तुम क्यों नाफ़रमान बने, तो वे अपना सारा बोझ अपने माँ-बाप पर डाल देंगे। कहेंगे:

رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَ نَا (سورة الاحزاب:٦٧)

कहेंगे ऐ परवर्दिगार! हमने अपने बड़ों की, माँ-बाप की अपने सरदारों की तामील की (यानी उनकी आज्ञा का पालन किया)।

इन्होंने कहा था कि बेटी तुझको ग्रेजुऐशन (Graduation) करनी है मैंने करके दिखा दी। इन्होंने कहा था कि तुझको बिज़नेस की डिग्री हासिल (Management) करनी है, मैंने करके दिखा दी। इन्होंने कहा कि तुझको कम्प्यूटर साईन्स पढ़नी है मैंने पढ़कर दिखा दी। जो दुनिया के लक्ष्य इन्होंने दिये थे, या अल्लाह! मैंने करके दिखा दिये। माँ-बाप काश मुझे दीन के रास्ते पर डालते, मैं भी दीनदार बन जाता। इन्होंने तो मुझे दुनिया की इज़्ज़तों के पीछे लगाया कि दुनिया में नाम हो, दुनिया में तारीफ़ें हों, दुनिया का रिज़्क़ अच्छा हो, जो इन्होंने कहा ऐ अल्लाह हमने करके दिखा दिया। यह हमारा क़सूर नहीं। यह हमारे माँ-बाप का क़सूर है।

رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ٥ (سورة الاحزاب:٦٨)

ऐ अल्लाह! हमारे माँ-बाप को दोगुना अ़ज़ाब दीजिये। ऐ अल्लाह!

उनपर लानतों की बारिश बरसा दीजिये।

देखिये कुरआन मजीद की आयतें क्या बता रही हैं। अगर हमने इस औलाद को दीन न सिखाया, नेक न बनाया, दुआयें न माँगीं तो यह क़ियामत के दिन मुक़दमा दायर करेगी, करतूत अपने होंगे, बदमाशियाँ अपनी होंगी, गुनाह अपने होंगे मगर अपने आपको बचाने के ख़ातिर माँ-बाप के सिर पर डाल देंगे। कहेंगे ऐ अल्लाह! उनको दोगुना अ़ज़ाब दीजिये। और सिर्फ़ अ़ज़ाब की बात नहीं कुरआन मजीद के अलफ़ाज़ हैं कि साथ-साथ यह भी कहेंगे: ऐ अल्लाह! इन पर लानतों की बारिश बरसा दीजिये।

अ़जीब बात है, औलाद यह कहेगी। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला फ़ैसला फ़रमायेंगे तुम सबके लिये दोगुना अ़ज़ाब है बच्चों को भी दोगुना माँ-बाप को भी दोगुना, तो औलाद अगर बुरी हुई तो माँ-बाप पकड़े जायेंगे।

كلكم راع وكلكم مسئول عن رعيته (الحديث)

तुम में से हर आदमी राई (चरवाहा और ज़िम्मेदार) है और उससे उसकी रईयत के बारे में क़ियामत के दिन पूछा जायेगा।

लिहाज़ा औलाद जो माँगें तो नेक माँगें। इसलिये कि वह सदक़ा-ए-जारिया बनेंगी। और अगर यह बुरी हुई तो इनसान के लिये वबाले-जान बन जायेगी। इसलिये बच्चों की तरबियत इस्लाम मज़हब में एक बहुत अहम काम है। तो बाप को भी फ़िक्रमन्द होना चाहिये, माँ को भी फ़िक्रमन्द (चिन्तित) होना चाहिये।

माँ-बाप की दुआ़ओं के असरात

आ़म तौर पर लोग समझ लेते हैं कि माँ की गोद बच्चे की पहली दर्सगाह (पाठशाला) होती है। यह बात शरीअ़त ने नहीं बताई बल्कि यह बताया कि माँ की गोद में आने से पहले ही बच्चे पर असरात आने शुरू हो जाते हैं। चुनाँचे बच्चे की पैदाईश से पहले ही माँ-बाप

की दुआओं का असर होता है। माँ-बाप की नेकियों का असर होता है। यह असर तो पहले से ही शुरू हो जाता है।

सुनिये इस्लाम ने पहले से ही निशानदेही कर दी। चुनाँचे हज़रत नोमान एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उन्होंने अपने बेटे साबित को एक बार हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िदमत में हाज़िर किया और कहा कि ऐ अमीरुल-मोमिनीन! मेरे बेटे के औलाद नहीं आप इसके लिये दुआ़ फ़रमा दें। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने दुआ़ फ़रमा दी। साबित को बेटा मिला उसने अपने वालिद के नाम पर उसका नाम नोमान रखा। चुनाँचे यह बच्चा नोमान बिन साबित बिन नोमान जब बड़ा हुआ तो यह अपने वक़्त का इमामे-आज़म अबू हनीफ़ा बना।

मालूम हुआ कि माँ-बाप ने दुआयें करवाईं, अल्लाह वाले के हाथ उठ गये, अल्लाह ने उनको हीरे-मोती जैसा बेटा अ़ता फ़रमा दिया। तो यह उस वक़्त से असरात शुरू हो जाते हैं।

चुनाँचे एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं पहली सदी जब मुकम्मल हुई तो उससे तक़रीबन पन्द्रह बीस साल पहले की बात है। जिनका नाम अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ था। वह एक बुज़ुर्ग के पास जाते थे जिनका नाम अबू हाज़िम था। बड़े अल्लाह वाले थे। यह उनकी ख़िदमत में आते जाते, नियाज़मन्दी से बैठते। चुनाँचे अबू हाज़िम ने एक मर्तबा ख़ुश होकर अपनी रोटी का एक ख़ुश्क टुक्डा बचा हुआ उनको भी दे दिया कि यह आप ले लें। उन्होंने उसको तबर्रुक (बरकत की चीज़) समझा कि यह अल्लाह वाले का बचा हुआ खाना है वैसे ही मोमिन के खाने में शिफ़ा होती है। फिर एक नेक बन्दे ने खाना दिया तोहफ़ा दिया यह तो तबर्रुक (बरकत की चीज़) था।

हज़रत अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ उस टुक्डे को लेकर अपने घर आये। अब सोचने लगे कि मैं क्या करूँ। बीवी से भी मश्विरा किया सोचा कि इसको इस तरह से इस्तेमाल करना चाहिये कि इसकी बरकतें हासिल कर सकें। चुनाँचे उन्होंने नीयत कर ली कि मैं इसके तीन टुक्ड़े करता

हूँ रोज़ाना रोज़ा रखूँगा और मैं रोज़ाना इस रोटी के टुक्ड़े से रोज़ा खोलूँगा। यह इसका बेहतरीन इस्तेमाल है। दिल के अन्दर अदब था, अन्दर नेकी थी, चुनाँचे उन्होंने तीन रोज़े रखे, पहला रोज़ा पहले टुक्ड़े से इफ़्तार किया और दूसरा रोज़ा दूसरे टुक्ड़े से इफ़्तार किया और तीसरा रोज़ा तीसरे टुक्ड़े से इफ़्तार किया। अल्लाह की शान जब तीसरा रोज़ा मुकम्मल हुआ तो रात को मियाँ-बीवी आपस में इकट्ठे हुए। अल्लाह ने उस रात में उनको बरकत अ़ता फ़रमा दी और उनके यहाँ एक बेटा हुआ जिसका नाम उन्होंने उमर रखा। यह उमर जब जवान हुआ तो अल्लाह ने इसको उमर बिन अ़ब्दुल्-अ़ज़ीज़ बना दिया। तो ये असरात होते हैं।

माँ-बाप का असर औलाद पर

औलाद के लिये माँ की गोद पहला मदरसा नहीं होती बल्कि उससे पहले से असरात शुरू हो जाते हैं। यह दीन इस्लाम की ख़ूबी है, उसने हमें निशानदेही कर दी, पहले से बता दिया कि उसको फ़लाँ जगह से फ़लाँ पेट से असरात आते हैं बल्कि समझ लीजिये कि औलाद की उम्मीद लगने से पहले माँ-बाप की ज़िन्दगी नेकी पर होगी और माँ-बाप के अन्दर इख़्लास होगा और माँ-बाप के अन्दर अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त का डर होगा तो उनकी दुआ़यें उनके लिये नेक औलाद का सबब बनेंगी। इस उम्र से उनके ऊपर असरात होते हैं।

चुनाँचे एक दुर्वेश (अल्लाह वाले) कहीं जा रहे थे नहर के किनारे के ऊपर भूख भी लगी हुई थी मगर कुछ खाने को भी नहीं था। अल्लाह-अल्लाह करते जा रहे थे। उस भूख के आ़लम में उन्होंने जब नहर के पानी को देखा तो एक सेब उनको तैरता हुआ नज़र आया। उनको भूख लगी हुई थी उन्होंने वह सेब ले लिया और खा लिया। जब कुछ पेट में चला गया फिर ख़्याल आया यह सेब मेरा तो नहीं, मालूम नहीं कि किस ख़ुदा के बन्दे का था। मैंने तो बिना इजाज़त सेब

खा लिया। क़ियामत के दिन क्या जवाब देना पड़ेगा। अब परेशानी हुई।

देखिये अल्लाह वालों को छोटी-छोटी बातों से भी परेशानी होती है कि हमसे अल्लाह तआ़ला की थोड़ी सी भी नाफ़रमानी न हो। किसी बन्दे का थोड़ा सा भी हक़ हमारे ऊपर न आये।

चुनाँचे सोचने लगे कि मैं क्या करूँ। दिल में ख़्याल आया कि जिधर से पानी आ रहा है उधर ही वापस चला जाऊँ। हो सकता है कि जिस बन्दे का सेब गिरा हो मुझे वह बन्दा मिल जाये। अब दुआ़यें माँगते हुए उधर जा रहे हैं कुछ दूर आगे चले उनको सेब का एक बाग़ नज़र आया जिसके दरख़्तों की शाख़ें नहर के पानी के ऊपर तक फैली हुई थीं। यह समझ गये कि किसी परिन्दे ने यह सेब गिराया होगा और वह पानी में बहता हुआ मुझे मिला और मैंने खा लिया। चलो इस बाग़ के मालिक से मैं इसकी माफ़ी माँग लेता हूँ मेरे पास पैसे तो नहीं।

चुनाँचे यह बाग़ के मालिक को मिले और उनको जाकर बताया कि मैं भूखा था एक सेब नज़र आया। वह मैंने खा लिया है खाने के बाद ख़्याल आया कि यह किसी का हक़ मेरे ऊपर आ गया है अब या तो मुझसे मज़दूरी ले लें मेरे पास पैसे तो नहीं जो मैं दे सकूँ और या फिर मुझे माफ़ कर दीजिये।

उस बाग़ के मालिक को पता नहीं क्या सूझी कहा कि हाँ मैं आपको माफ़ नहीं करूँगा। मैं आपसे क़ियामत के दिन अपना हक़ मागूँगा। वह दुर्वेश उनसे मिन्नत-समाजत करने लगा कि भाई मुझसे ग़लती हो गई अल्लाह के लिये मुझे माफ़ कर दो। अगर माफ़ नहीं करते तो मुझसे कोई मशक़्क़त या मज़दूरी ले लो।

बाग़ का मालिक कहने लगा अच्छा मैं माफ़ तो नहीं करता मगर मैं मशक़्क़त और मज़दूरी लूँगा। दुर्वेश कहने लगा कि कौनसा काम करवाओगे मैं करने के लिये तैयार हूँ। दुनिया की तकलीफ़ें उठाना

आसान है, आख़िरत की तकलीफ़ उठाना बड़ा मुश्किल है।

बाग़ के मालिक ने कहा! मेरी एक बेटी है जवान है लेकिन अन्धी है, बहरी है, गूँगी है, लूली-लंगडी है। एक गोश्त का लोथड़ा समझ लें। अगर तुम उससे निकाह करो और सारी ज़िन्दगी उसकी ख़िदमत करो तो फिर मैं तुम्हें अपना हक़ माफ़ करूँगा। वरना माफ़ नहीं कर सकता।

अब यह बेचारे सोचने लगे फिर दिल में ख़्याल आया कि इस तरह ज़िन्दा लाश से निकाह कर लेना और सारी ज़िन्दगी उसकी ख़िदमत करना आसान है, लेकिन क़ियामत के दिन किसी बन्दे के हक़ का जवाब देना बड़ा मुश्किल काम है। चुनाँचे तैयार हो गये। वक़्त तय हो गया। निकाह हो गया निकाह के बाद रुख़सती हुई। जब यह पहली रात अपनी बीवी को मिलने के लिये तशरीफ़ ले गये, क्या देखते हैं कि वह इन्तिहाई ख़ूबसूरत थी कि जैसे हूर-परी होती है। जिसकी आँखें अच्छी, ज़बान अच्छी, कान अच्छे, हाथ पाँव अच्छे, वह दुल्हन बनकर बैठी हुई है।

उसने सलाम किया इन्होंने सलाम का जवाब दिया, पूछा कि आप उस बाग़बाँ की बेटी हैं? कहने लगी कि जी। पूछा कि आपकी कोई और बहन भी है? उसने कहा कि नहीं, मैं अपने बाप की एक ही बेटी हूँ। बड़े हैरान हुए और दिल में सोचते रहे कि इसके वालिद ने मुझे जो बातें (तफ़सीलात) बताई थीं वे तो कुछ और बताई थीं और यह तो इतनी प्यारी ख़ूबसूरत बीवी है कि इनसान तसव्वुर भी नहीं कर सकता। मियाँ बीवी की रात अच्छी गुज़र गई।

अगले दिन उनकी अपने ससुर से मुलाक़ात हुई तो ससुर साहिब ने सलाम के बाद फ़ौरन पूछा सुनायें कि आपने अपने मेहमान को कैसा पाया? यह कहने लगे कि जी आपने तो बताया था कि वह अन्धी है बहरी है गूँगी है लूली है लंगडी है और मेरे ज़ेहन में तो यही ध्यान था। लेकिन मेरी बीवी. वह तो सही सलामत तन्दुरुस्त ही नहीं बल्कि

इतनी ख़ूबसूरत है कि लाखों में एक है। यह क्या मामला है?

उस लड़की के बाप ने कहा कि वजह यह है कि मेरी बेटी कुरआन की हाफ़िज़ा है, हदीस की आ़लिमा है। उसने सारी ज़िन्दगी तक़्वा व तहारत के साथ गुज़ारी, कभी उसने ग़ैर-मेहरम पर निगाह नहीं उठाई। मैंने इसलिये कहा कि यह अन्धी है। कभी ग़ैर-मेहरम से कलाम नहीं किया, मैंने कहा कि यह गूँगी है। कभी उसने बग़ैर इजाज़त घर से बाहर क़दम नहीं रखा मैंने कहा कि यह लंगडी है। इस तरह की पाक ज़िन्दगी गुज़ारने वाली मेरी बेटी इतनी ख़ूबसूरत थी, मेरा दिल चाहता था कि उसका शौहर ऐसा हो जिसके दिल में अल्लाह का डर हो। इसलिये कि बीवी के हुक़ूक़ वही अच्छे तरीक़े से पूरे कर सकता है जिसके दिल में अल्लाह का डर होगा।

इसी लिये सूरः निसा को पढ़कर देखिये हर चन्द आयतों के बाद अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं: "अल्लाह से डरो" यह जो अल्लाह से डरने का हुक्म दिया, अल्लाह तआ़ला जानते हैं कि तक़्वा (अल्लाह के डर) के बग़ैर मियाँ-बीवी आपस के ताल्लुक़ात में तवाज़ुन (संतुलन) नहीं रख सकते और यह परहेज़गार इनसान ही हो सकता है जो बीवी के हुक़ूक़ ठीक-ठीक अदा करे और कमी न आने दे।

लिहाज़ा वह कहने लगे कि मेरे दिल में यह था कि जिसके दिल में तक़्वा हो, ख़ौफ़े ख़ुदा हो, उसको मैं अपनी बेटी के लिये शौहर के तौर पर चुन लूँ। जब आप मेरे पास एक सेब की माफ़ी माँगने आये तो मैं पहचान गया कि आपके दिल में ख़ौफ़े-ख़ुदा है। इसलिये मैंने आपका निकाह अपनी बेटी से कर दिया।

यह इतना नेक बाप था और इतनी नेक माँ थी अल्लाह ने उनको एक बेटा अ़ता फ़रमाया। उन्होंने उसका नाम अ़ब्दुल-क़ादिर रख दिया। और यह वह अ़ब्दुल-क़ादिर बच्चा था जो बड़ा होकर अ़ब्दुल-क़ादिर जीलानी बना। जब माँ ऐसी होती है, बाप ऐसा होता है तो फिर बेटा भी औलिया का बादशाह बना करता है।

तो माँ-बाप के असरात पहले से ही उनकी दुआओं के असरात बच्चों के ऊपर मुन्तक़िल होते हैं। इसलिये यह ज़ेहन में मत रखना कि माँ की गोद ही बच्चे का पहला मदरसा है, बल्कि माँ की गोद से पहले बहुत सारे काम हो चुके होते हैं।

इसलिये जब से इनसान औलाद की नीयत करे उस वक़्त से दुआयें माँगे। और उस वक़्त से हर चीज़ का ख़्याल रखे। शरीअत ने निशानदेही कर दी और फ़रमा दिया कि जब मियाँ-बीवी एक दूसरे के साथ मिलने का इरादा करें तो उनकी नीयत नेक औलाद की होनी चाहिये। नेक औलाद की नीयत होगी तो हदीस के मफ़्हूम (यानी आमाल का दारोमदार नीयतों पर है) के मुताबिक़ उनको अल्लाह तआ़ला नेक औलाद इनायत फ़रमायेंगे। तो जब भी मियाँ-बीवी मिलें उनकी नीयत यही हो कि अल्लाह तआ़ला हमें नेक औलाद अ़ता फ़रमा दें।

बिस्मिल्लाह की बरकतें

उलेमा ने लिखा है कि जब इनसान जिस्म से अपने लिबास को हटाये, अगर वह बिस्मिल्लाह पढ़ ले तो अल्लाह तआ़ला उसके गिर्द एक हिफ़ाज़त का पर्दा डाल देते हैं। शैतान उसको नहीं देख सकता, जिन्नात उसको नहीं देख सकते। इसलिये सुन्नत है कि इनसान कपड़े बदलना चाहे या नहाने के लिये कपड़े उतारना चाहे तो उसको चाहिये कि बिस्मिल्लाह पढ़ ले ताकि उसके गिर्द अल्लाह की तरफ़ से हिफ़ाज़त की चादर आ जाये। और शैतान और जिन्नात उसे देख न सकें।

आजकल लोग सुन्नत का ख़्याल रखते नहीं और जिस्म से लिबास हटाते हैं। शैतान और जिन्नात उनको देखते हैं फिर कहते हैं कि जी बच्ची पर जिन्न का असर हो गया। फ़लाँ पर जिन्न का असर हो गया। शैतानी असरात हो गये। हमने नबी की सुन्नत को छोड़कर खुद अपने लिये मुसीबतें ख़रीद ली हैं। इसलिये मियाँ-बीवी को चाहिये कि

जब इकट्ठा होने का इरादा करें तो अपने जिस्म से कपड़े अलग करने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ लें। ताकि उनको आपस में मिलते हुए कोई शैतान न देख सके। कोई जिन्न न देख सके।

और शरीअ़त ने यह भी नुक्ता बता दिया और यह भी फ़रमा दिया कि दोनों को क़िब्ला-रू नहीं होना चाहिये। (यानी ख़ास हालत में क़िब्ले की तरफ़ रुख़ नहीं करना चाहिए) बल्कि शरीअ़त ने यह बात कही कि अगर जिस्म से अपना लिबास हटायें तो एक बड़ी चादर हो जिसके अन्दर दोनों एक दूसरे से मिलें। उस बड़ी चादर की वजह से अल्लाह तआ़ला उनकी होने वाली औलाद में हया (शर्म) पैदा फ़रमायेंगे।

लिहाज़ा उलेमा ने इस बात की किताबों में तस्दीक़ की कि जिन मियाँ-बीवी ने अपने ऊपर बड़ी चादर लेने का एहतिमाम किया तो अल्लाह तआ़ला ने फ़ितरी (स्वभाविक) तौर पर उनकी औलाद को शर्मीला बनाया। हया वाला बनाया। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की तरफ़ से ये मामलात होते हैं। देखिये शरीअ़त ने हमें कैसी-कैसी बारीक बातों के बारे में बता दिया।

बुख़ारी शरीफ़ में हमबिस्तरी (मियाँ-बेवी के ख़ास काम के लिये मिलाप) के वक़्त की यह दुआ़ भी बयान की गयी है कि मर्द को चाहिये कि यह दुआ़ पढ़ ले:

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطٰنَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَارَزَقْتَنَا

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्-म जन्निबूनश्शैता-न व जन्निबिश्शैता-न मा रज़क़्तना

और जब मर्द को इन्ज़ाल हो (यानी उसका वीर्य औ़रत के अन्दर गिरे) तो किताब 'हिस्ने हसीन' के अन्दर यह दुआ़ पढ़ना बयान किया गया है।

اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ لِلشَّيْطَانِ فِيْمَا رَزَقْتَنِيْ نَصِيْبًا

अल्लाहुम्-म ला तज्अ़ल् लिश्शैतानि फ़ीमा रज़क़्तनी नसीबन्

इन दुआ़ओं को याद कर लेना चाहिये।

चुनाँचे मियाँ-बीवी दोनों मिलाप कर चुकें तो उसके बाद उनको चाहिये कि तहारत (पाकी हासिल करने) के अन्दर जल्दी करें। जल्दी की आख़िरी हद यह है कि उनकी नमाज़ क़ज़ा न हो। उलेमा ने किताबों में लिखा है कि अगर मियाँ-बीवी के मिलाप से औलाद का नुत्फ़ा (वीर्य का क़तरा) ठहर गया मगर मियाँ या बीवी की अगली नमाज़ क़ज़ा हो गई तो उनकी औलाद फ़ासिक़ (बुरे काम करने वाली) बनेगी। लिहाज़ा यह एक ऐसा मामला है जिसमें मर्दों और औ़रतों दोनों की तरफ़ से कोताही होती है।

फिर अगली नमाज़ अगर फ़ज्र की है तो क़ज़ा हो गई या कोई और नमाज़ क़ज़ा हो गई, औ़रतें गुस्ल की एहतियात ज़रा देर से करती हैं और उसी में नमाज़ क़ज़ा कर बैठती हैं।

नाफ़रमान औलाद क्यों जन्म लेती है?

एक नुक्ते की बात याद रखना। जब भी मियाँ-बीवी के मिलाप की वजह से उनकी अगली नमाज़ कज़ा हुई और उस मिलाप की वजह से उनको औलाद हो गई तो उस औलाद के अन्दर फ़िस्क़ व फ़ुजूर (गुनाह करने का माद्दा) आ जायेगा। जब माँ ने ही इस अ़मल की वजह से अल्लाह के हुक्म हो तोड़ दिया तो फिर फल भी तो ऐसा ही मिलना है। इसलिये इस बात का बड़ा ख़्याल रखें।

कराची में हमारे एक दोस्त हैं उनकी वालिदा का जब इन्तिक़ाल होने लगा जिनकी उम्र अस्सी साल के क़रीब थी। उन्होंने अपने सब बच्चे-बच्चियों को बुलाया और बताया कि मैं थोड़े ही दिनों में चली जाऊँगी तुम्हें मैं एक बात नसीहत के तौर पर बताना चाहती हूँ कि जब मेरी शादी हुई तो मेरी उम्र बीस साल थी और आज मैं मौत के बिस्तर पर पड़ी हुई हूँ। आज मेरी उम्र अस्सी साल है और इस साठ

साल की दाम्पत्य ज़िन्दगी में कभी भी मेरी कोई भी नमाज़ क़ज़ा नहीं हुई। सुब्हानल्लाह! आज के दौर मैं भी ऐसी नेक बीबियाँ हैं। साठ साला दाम्पत्य ज़िन्दगी में उनकी कभी भी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं हुई। मालूम हुआ कि सर्दियों, गर्मियों में उठने के लिये उन्होंने कैसा वक़्त चुना होगा कि उनकी कोई भी नमाज़ क़ज़ा न हुई। ऐसे वक़्त में फिर अल्लाह तआ़ला नेक औलाद अ़ता करते हैं।

माँ के असरात बच्चे पर

साईन्सी दुनिया का एतिराफ़

साईन्स की दुनिया ने आज मान लिया कि Genetic में बच्चे की माँ के असरात नज़र आते हैं। उसको Behoaviourl Espect of DNA कहते हैं कि बच्चे के DNA के अन्दर माँ-बाप की तरफ़ से हया, बहादुरी, शर्म और अच्छे अख़्लाक़ मुन्तक़िल होते हैं। इसको साईन्स की दुनिया में कहते हैं Behoaviourl Espect of DNA. तो माँ-बाप के अन्दर अगर नेकी होगी और माँ-बाप नेकी का ख़्याल करेंगे और अल्लाह से डरने वाले माँगने वाले होंगे तो फिर बच्चे के DNA में भी यही असरात आयेंगे।

यह बात याद रखना कि जब बाप अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु होता है, माँ फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा होती है तो फिर बेटे हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु जन्नत के सरदार बना करते हैं।

जब बाप इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हो और बीवी हाजरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा हो तो फिर बेटा इस्माईल अ़लैहिस्सलाम बना करता है। इसलिय मियाँ-बीवी को चाहिये कि अपनी ज़िन्दगी का रुख़ ठीक करें। नेक बन जायें, अपनी औलाद के लिये आज से दुआ़यें शुरू कर दें।

जब एक दूसरे के साथ मिलाप हो तो शरीअ़त के अहकाम के

मुताबिक़ हो। उसकी वजह से नमाज़ें क़ज़ा न हों। बेशर्मी और बेहयाई का मामला न हो, बल्कि अल्लाह से नेक औलाद की तमन्ना हो, जानवरों वाला मामला न हो।

आजकल यूरोप की वजह से ऐसी बेहयाई आ गई। फ़िल्मों में, विडियो में, मुसलमान जवान बच्चे और बच्चियाँ ऐसी हरकतें देखते हैं कि जानवरों से भी बढ़कर। यूरोप ने बेहयाई का ऐसा सबक़ दिया कि हमारे नौजवान भी उसी को अपना रहे हैं। फिर अपनी औलादों के बारे में रोते फिरते हैं। औलाद माँ-बाप को जूते मारती फिरती है।

पहले ज़माने में तो तसव्वुर नहीं किया जाता था। नये दौर की बात है। हमें आकर बाप बताता है कि मेरे बेटे ने मुझे जूते से मारा। माँ कहती है दुआ कीजिये बेटे की हिदायत के लिये, बेटी की हिदायत के लिये।

एक माँ ने अमेरिका में दुआ करवाई कि मैं अपना ग़म किसको बताऊँ? मैंने बेटी से कहा कि लड़कों को दोस्त न बनाओ तो बेटी ने ग़ुस्से में आकर मुझे जूते से मारा। जब माँ-बाप इस क़िस्म की जानवरों वाली हरकतों में उस वक़्त मुलव्वस होंगे तो फिर औलाद ऐसी ही तो होगी जो माँ-बाप को अपने जूतों से मारेगी। ऐसी कमबख़्त औलाद से अल्लाह तआला हमें महफ़ूज़ फ़रमा दें। आमीन।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात

कामयाबी का रास्ता

इसलिये यूरोप की तालीमात पर अ़मल के बजाये इस्लाम की तालीमात को अपनायें। शरीअ़त ने मेल-मिलाप का जो दस्तूर बनाया उसमें बरकत है उसमें रहमत है, अल्लाह की मदद है और नेकी है। उसके मुताबिक़ अगर आप चलेंगी और ज़िन्दगी गुज़ारेंगी तो आपकी अपनी ज़िन्दगी भी अच्छी गुज़रेगी और औलाद भी ऐसी मिलेगी जो

आपकी आँखों की ठन्डक होगी। क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने भी आपकी इ़ज़्ज़त का सबब बनेगी। रब्बे करीम हमें अपनी औलाद की सही तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन।

लिहाज़ा आज के बयान में हमने विषय यह रखा कि माँ की गोद तो मदरसा होती ही है उसकी बातें तो कल से शुरू होंगी। माँ की गोद से पहले ही कोख में ही बच्चे पर असरात शुरू हो जाते हैं। हमने आज के उनवान में इस बात को खोला है कि माँ-बाप पहले ही से दुआ़यें करें और शरीअ़त की इन बातों का ख़्याल रखें। ताकि बच्चे की बुनियाद पड़ने से पहले ही अल्लाह की तरफ़ से ख़ैर के फ़ैसले हों। रब्बे करीम हमारी औलादों को नेकोकार बना दे और हमारी ग़लतियों और कोताहियों से दरगुज़र फ़रमा दे। और जो ग़लतियाँ हम माज़ी (अपनी पिछली ज़िन्दगी) में कर चुके अब नदामत के सिवा हमारे हाथ में क्या है, अल्लाह रमज़ान मुबारक की इन बरकत वाली घड़ियों में हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे। हमें औलाद की तरफ़ से ख़ुशियाँ अ़ता फ़रमा दे। औलाद के ग़मों से महफ़ूज़ फ़रमा दे। औलाद के दुखों से महफ़ूज़ फ़रमा दे। औलाद की परेशानियों से महफ़ूज़ फ़रमा दे।

जब बाप को बेटे की तरफ़ से परेशानी हो, माँ को बेटे की तरफ़ से परेशानी हो तो कोई आदमी उनके दुख का अन्दाज़ा नहीं लगा सकता। दूसरों को क्या पता बेचारे छुप-छुपकर रो रहे होते हैं। तन्हाईयों में रो रहे होते हैं। रोते भी हैं लोगों को आँसू भी दिखने नहीं देते। यह तो दिल का ग़म होता है जो एक वक़्त का नहीं, चौबीस घन्टे का है। सोते हैं तो दिल ग़मगीन होता है, जागते हैं तो दिल परेशान होता है। अल्लाह तआ़ला ऐसे ग़मों को दूर फ़रमा दे। हमारी औलादों को नेकोकार बना दे। क़ियामत के दिन हम सबको अपने सामने सुर्ख़रूई (इ़ज़्ज़त और कामयाबी) अ़ता फ़रमा दे। आमीन।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

औलाद की तरबियत कैसे करें? (3)

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

औलाद अल्लाह के ख़ज़ानों की नेमत

औलाद की तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) से मुताल्लिक़ मज़मून चल रहा है। उलेमा ने लिखा है कि ज़ब कोई भी औ़रत अपने शौहर से हामिला (गर्भवती) हो, उसको चाहिये कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त का शुक्र अदा करे कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने उसको माँ बनने की सआ़दत (सौभाग्य) अ़ता फ़रमाई। यह औलाद की नेमत अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की तरफ़ से होती है। कितने लोग ऐसे हैं कि जिनके पास माल भी है, हुस्न व जमाल भी है, दुनिया की सब नेमतें हैं मगर औलाद जैसी नेमत से मेहरूम होते हैं। मुख़्तलिफ़ देशों में जाकर इलाज-मुआ़लिजा करवाते हैं, हकीम, डाक्टर की हर दवाई इस्तेमाल करते हैं लेकिन औलाद नहीं होती। यह बाज़ार से ख़रीदने वाली चीज़ नहीं यह तो अल्लाह तआ़ला के ख़ज़ानों की नेमत है। जिसे चाहें अ़ता फ़रमा दें।

गर्भ का बोझ उठाने पर बहुत बड़ा सवाब

जब कोई औ़रत हामिला (गर्भवती) हो तो हदीस पाक में आता है कि ज़िस लम्हे हमल (गर्भ) ठहरे अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त उसके पिछले

सब गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं। यह इसलिये कि अब यह बोझ उठा रही है और जब किसी पर बोझ डाला जाये तो उसकी रियायत भी की जाती है। चुनाँचे अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की तरफ़ से बच्चे की बुनियाद पड़ते ही माँ के पिछले सब गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं। हामिला को अक्सर ये अलफ़ाज़ पढ़ने चाहियें:

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ

अल्लाहुम्-म लकल्-हम्दु व लकश्शुक्रु

ऐ अल्लाह! सब तारीफ़ें आपके लिये हैं और आपका ही मैं शुक्र अदा करती हूँ।

बल्कि दो रक्अ़त नफ़िल शुक्राने के पढ़ ले तो और बेहतर है। फिर उसके बाद अपनी सेहत का हर वक़्त ख़्याल रखे। खाने मे ताज़ा सब्ज़ियाँ इस्तेमाल करे।

हामिला औ़रत के लिये मुफ़ीद मश्विरे

उलेमा ने किताबों में लिखा है कि जो औ़रत हमल (गर्भ) के दौरान दूध का कसरत से इस्तेमाल करती है तो उसका होने वाला बच्चा ख़ूबसूरत और अ़क्लमन्द होता है और इसको हकीमों ने सौ साल के तर्जुबे के बाद तस्दीक़ से साबित कर दिया है कि कई औ़रतें तो दूध इस्तेमाल कर लेती हैं, आ़दत होती है, और कुछ औ़रतों से दूध पिया ही नहीं जाता। उनको चाहिये कि वे दूध से बनी चीज़ें इस्तेमाल करें। कस्टर्ड बनाकर इस्तेमाल कर सकती हैं, आईस्क्रीम इस्तेमाल कर सकती हैं, खीर इस्तेमाल कर सकती हैं, दूध किसी न किसी शक्ल में अगर उनके पेट में जायेगा तो यह सन्तुलित ग़िज़ा है। हर विटामिन और हर प्रोटीन इसके अन्दर मौजूद है।

तो बच्चे के लिये जो ज़रूरी ग़िज़ा (Required food) होगी वह माँ की तरफ़ से इस बच्चे को मिलती चली जायेगी, यह तर्जुबा-शुदा बात है कि दूध के इस्तेमाल करने से बच्चा ख़ूबसूरत भी

होता है और अ़क्लमन्द भी होता है। दूध पीने की दुआ़ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बताई:

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ

अल्लाहुम्-म बारिक् लना फ़ीहि व ज़िद्ना मिन्हु

गर्भ के दौरान चन्द सावधानियाँ और करने के काम

शुरू के तीन महीने और आख़िर के तीन महीने ऐसे होते हैं कि शौहर के साथ मख़्सूस ताल्लुक़ात से परहेज़ करना चाहिये। हमल के दौरान जितना भी समय हो औ़रत को चाहिये कि वह नेक लोगों के वाक़िआ़त पढ़े। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की क़ुदरत की निशानियों में ग़ौर करे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरत की किताबें पढ़े। जन्नत के बाग़ात और जन्नत के मामलात के बारे में ज़्यादा सोचे। इसलिये कि माँ के बच्चे पर हयातियाती (Biological) असरात होते हैं। जितना यह अच्छी-अच्छी चीज़ों के बारे में सोचेगी उतना ही बच्चे का विकास माँ के पेट में अच्छा होगा। बल्कि अगर कोई नेक मॉडल इनसान उसके दिमाग़ में होता है कि मेरा बेटा तो ऐसा हो और बेटी ऐसी हो तो ऐसे नेक लोगों के ख़्यालात अगर ज़ेहन में होंगे तो उसकी ज़हानत और समझ (Genetically) के बच्चे के ऊपर असरात होंगे। इसलिये हमेशा अच्छी सोच रखनी चाहिये। और अच्छी चीज़ों के बारे में सोचना चाहिये।

शौहर पर यह ज़िम्मेदारी होती है कि वह अपनी बीवी को हमल के बाद ज़्यादा आराम पहुँचाये, ख़ास तौर पर उसको ज़ेहनी परेशानी से बचाये। अगर शौहर की वजह से सास या नन्द की वजह से हामिला औ़रत को ज़ेहनी दबाव का शिकार होना पड़े तो ये लोग शरअ़न गुनाहगार होंगे। बहुत ज़्यादा इसका लिहाज़ और ख़्याल रखना चाहिये।

ख़ुद औ़रत को चाहिये कि वह झूठ और ग़ीबत से बचे, गुनाह

वाले कामों से बचे, इसलिये कि उसकी नेकी के असरात भी उसके बच्चे पर होंगे और गुनाह के असरात भी उसके बच्चे पर होंगे। ख़ास तौर पर हलाल खाने में बहुत ज़्यादा कोशिश करे मुश्तबा (संदिग्ध) लुक़्मे से और हराम खाने से परहेज़ करे।

बच्चे पर नेकी के असरात कैसे हों?

एक मियाँ-बीवी ने दिल में यह सोचा कि हमारी होने वाली औलाद नेक हो, लिहाज़ा उसके लिये हम हलाल खाएँगे, हर नेक काम करेंगे, ताकि बच्चे पर नेकी के असरात हों। जब से हमल ठहरा तो मियाँ-बीवी दोनों ने नेक आमाल करने शुरू कर दिये, बाक़ायदगी के साथ नेकी करते रहे, लेकिन बच्चे की जब पैदाईश हुई तो उन्होंने बच्चे के अन्दर नाफ़रमानी के असरात देखे। वह ज़िद्दी निकला, हठधर्म निकला, बात नहीं मानता था।

एक दफ़ा दोनों मियाँ-बीवी सोच रहे थे कि हमने इतनी मेहनत की तब भी कोई अच्छा नतीजा बरामद न हुआ। आख़िर क्या बात है। सोचते-सोचते बीवी के दिल में ख़्याल आया, उसने कहा कि वाक़ई हम से ग़लती हो गई। शौहर ने पूछा कि क्या ग़लती? बीवी कहने लगी कि पड़ोसी का एक बेरी का दरख़्त है जिसकी शाख़ें हमारे आँगन में भी आती हैं तो कई मर्तबा ऐसा होता था कि गर्भ के दौरान बेर गिरते थे, मुझे अच्छे लगते थे, मैं खा लेती थी। मैंने पड़ोसी से इजाज़त ही न ली हुई थी। मैंने बग़ैर इजाज़त के चीज़ जो खाई उसके असरात मेरे बच्चे पर आ पड़े। इस क़िस्म के बहुत सारे वाक़िआत हैं।

संदिग्ध खाने का असर औलाद पर

एक बुज़ुर्ग थे। उनकी सारी औलाद बड़ी नेकोकार थी। लेकिन उनमें से एक बच्चा बहुत ही नाफ़रमान और बे-अदब क़िस्म का था। एक अल्लाह वाले उनके यहाँ मेहमान आये, उन्होंने यह फ़र्क़ देखा तो

उन बुज़ुर्ग से पूछा कि आख़िर क्या वजह है? यह बच्चा क्यों ऐसा नाफ़रमान निकला? वह बुज़ुर्ग बड़े ग़मगीन हुए। आँखों से आँसू आ गये फ़रमाने लगे कि इसका क़ुसूर नहीं यह मेरा क़ुसूर है।

एक बार घर में फ़ाक़ा था और हमारे घर में शाही दावत का बचा हुआ खाना आ गया। किसी ने हदिये-तोहफ़े के तौर पर भेजा था। आ़म तौर पर मैं ऐसे खाने से परहेज़ करता हूँ। लेकिन भूख की वजह से उस दिन मैंने वही खाना खा लिया, फिर वही रात थी कि हम मियाँ-बीवी ने मुलाक़ात की, और अल्लाह ने उसी रात बच्चे की बुनियाद रखी। यह संदिग्ध खाने का असर है कि हमारा बच्चा नाफ़रमान निकला।

इसलिये इस हालत में औ़रत को चाहिये कि वह हलाल लुक़्मे का बहुत ख़्याल करे। बाहर की बाज़ार की बनी हुई चीज़ें जिनकी पाकी नापाकी का कोई पता नहीं होता, उनसे भी परहेज़ करे।

खुश रहना सेहत का बेहतरीन राज़

लेकिन औ़रत अपने ज़ेहन के अन्दर हमेशा सकारात्मक सोच (Positive Thinking) रखे। हामिला (गर्भवती) औ़रत को हर वक़्त खुश रहना चाहिये। अ़रब के लोगों के अन्दर यह बात मशहूर थी कि जो हामिला औ़रत खुश रहेगी तो अगर उसके बेटा हुआ तो वह बड़ा बहादुर बनेगा, और बेटी हुई तो कम रोने वाली होगी। इसलिये माँ को चाहिये कि होने वाले बच्चे की ख़ातिर अपने आपको खुश रखे। ज़िन्दगी में खुशियाँ भी होती हैं ग़म भी होते हैं। कई बार लोग तकलीफ़ पहुँचाते हैं, दिल दुखाते हैं, सदमे पहुँच जाते हैं मगर यह तो इनसान के बस में है कि सदमों के बावजूद मुस्कुराता फिरे।

पुरसुकून ज़िन्दगी के राज़

लोगों के बुरे व्यवहार के बावजूद मुस्कुराता फिरे। मुस्कुराहट तो

इनसान की अपनी होती है। अगर ज़ेहन के अन्दर उन चीज़ों को ही न महसूस करे। फिर उसके ऊपर कोई चीज़ हावी नहीं होती, या कोई ऐसी बात नहीं आती।

मिसाल के तौर पर अगर आप थोड़ी देर के लिये एयरपोर्ट पर हैं या रेलवे स्टेशन पर हैं और आपका जी चाहता है कि अच्छी चाय पियें और वहाँ आपको अच्छी चाय नहीं मिलती तो आप कभी ग़मज़दा नहीं होतीं। आप समझती हैं कि थोड़ी देर की बात है मैं अपने घर जाऊँगी और वहाँ अच्छी चाय बनाकर पी लूँगी। बिल्कुल इसी तरह अल्लाह वाले भी सोचते हैं कि यह दुनिया मुसाफ़िर ख़ाना है, गुज़रने की जगह है, अगर यहाँ इनसान को ख़ुशियाँ न मिलें तो कौनसी ऐसी बात है इन्शा-अल्लाह जन्नत में जाकर ख़ुशियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारेंगे।

इसलिये अगर आपको कोई सदमा पहुँच भी जाये तो उसको अपने ज़ेहन से हटा दें। ऐसे समझें कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं। बल्कि अगर आपको कोई दुख दे या किसी नेमत से मेहरूम कर दिया जाये तो आप सोचें कि अल्लाह ने मुझे अ़क्ल अ़ता फ़रमाई, शक्ल अ़ता फ़रमाई, मुझे अल्लाह ने सेहत अ़ता फ़रमाई, सही सालिम हाथ और पाँव अ़ता फ़रमाये, बोलने की ताक़त अ़ता फ़रमाई, देखने की ताक़त अ़ता फ़रमाई, सब दौलतें अल्लाह ने बिन माँगें अ़ता कीं। मुझ पर तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की बड़ी नेमतें हैं। मैं तो उनका शुक्रिया भी अदा नहीं कर सकती।

जब इनसान ऐसी चीज़ों को देखता है तो बे-इख़्तियार दिल से अल्हम्दु लिल्लाह (यानी अल्लाह की तारीफ़ और शुक्र) के अलफ़ाज़ निकलते हैं।

सकारात्मक सोच के ज़रिये परेशानियों का हल

एक औ़रत ग़रीबी की हालत में थी। उसकी जूती फटी हुई थी और वह एक घर से दूसरे घर जा रही थी और यही सोच रही थी

कि मेरा मुक़द्दर भी अल्लाह ने कैसा लिखा कि मेरे पाँव में जूती भी है तो वह भी टूटी हुई। थोड़ी दूर आगे बढ़ी उसने देखा कि एक औरत पाँव से माज़ूर है और बेसाखियों के बल चलती हुई आ रही थी। अब इसके दिल पर चोट पड़ी, या अल्लाह! मैं तो जूती के टूटने का शिकवा कर रही थी, यह भी तो खुदा की बन्दी है जिसकी टाँगें भी सही नहीं है और वह बेचारी माज़ूर है और चल रही है।

जब इनसान नीचे के लोगों को देखता है तो फिर उसे अल्लाह तआ़ला की नेमतों की क़द्रदानी का एहसास होता है। इसलिये चाहिये कि आपको कोई ऐसी नापसन्दीदा बात भी पेश आये तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की नेमतों पर ग़ौर करें और शुक्र अदा करें।

हर इनसान की अपनी सोच होती है। ग़ाज़ी बुस्तामी (एक बुज़ुर्ग) कहीं जा रहे थे। नये कपड़े पहने, नहाये-धोये मस्जिद की तरफ़ जा रहे थे, रास्ते में एक औरत ने अपने घर की छत से कुछ गन्दगी, कुछ राख नीचे गली में फेंकी। उसको पता नहीं था कि नीचे से कोई गुज़र रहा है या नहीं। आप बिल्कुल नीचे थे वह सारी राख आपके सर के ऊपर आ पड़ी। चुनाँचे सर में भी राख पड़ गई कपड़ों पर भी राख पड़ गई। कई लोग हैरान थे कि आपकी तबीयत में गुस्सा आयेगा, लेकिन आप अल्हम्दु लिल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह कहने (यानी अल्लाह का शुक्र अदा करने) लगे।

आपने फ़रमाया मैं तो दिल में यह सोच रहा था: ऐ अल्लाह! मैं तो इस क़ाबिल था कि मेरे सर पर आग के अंगारे बरसाये जाते, तूने तो मेरे सर पर सिर्फ़ राख को डालकर मामले को हलका कर दिया।

तो सोचिये कि सर पर राख पड़ी और अभी भी सोचते हैं कि मेरा सर अंगारे बरसाये जाने के क़ाबिल था। यह तो मौला ने तरस फ़रमा दिया कि राख के साथ मामला निबट गया।

इसी तरह जब कोई मुसीबत पहुँचे तो बड़ी मुसीबत के बारे में सोचें कि मुझे अल्लाह ने उससे बचा लिया। सोचें कि लोग अगर मेरे

साथ सही बर्ताव नहीं कर रहे तो अल्लाह ने मेरे साथ कितनी रहमत फ़रमाई कि मुझे उसने माँ बनने की सआ़दत अ़ता फ़रमाई। जब इस क़िस्म की अच्छी बातें सोचेंगी तो आपके ज़ेहन से ग़म दूर हो जाँएगे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुबारक आ़दत यह थी कि नमाज़ के बाद परेशानियों के दूर होने के लिये एक दुआ़ पढ़ा करते थे:

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ

اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّی الْهَمَّ وَالْحُزْنَ

बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हुवर्रह्मानुर्रहीम। अल्लाहुम्-म अज़्हिब् अ़न्निल् हम्-म वल्-हुज़्-न

इस दुआ़ से अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की रहमत से इनसान की हर परेशानी दूर हो जाती है। आप भी इस दुआ़ को याद करें और नमाज़ के बाद पढ़ने की आ़दत डालें। दिल में यह नीयत रखें कि मेरे होने वाली औलाद जो भी होगी मैं उसे नेक बनाऊँगी। ताकि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्मत में एक नेक बन्दे का इज़ाफ़ा हो जाये।

नेक औलाद की तमन्ना

हदीस पाक में आता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः तुम ऐसी औ़रतों से शादी करो जो ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली हों, क़ियामत के दिन मैं अपनी उम्मत के ज़्यादा होने पर फ़ख़्र (गर्व) करूँगा। दिल में यह नीयत करना कि मेरी औलाद जो भी होगी बेटा हो या बेटी हो, मैं उसे नेक बनाऊँगी ताकि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्मत में से एक नेक जान बढ़ जाये।

इसी लिये जो औ़रत इस तरह अपने बच्चों की परवरिश करती है, हदीस पाक में आता है कि उसके बच्चे ज़िन्दगी में जितने साँस लेते हैं अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त हर-हर साँस के लेने पर उसकी माँ को अज्र व सवाब अ़ता फ़रमाते हैं। तो यह बहुत बड़ी सआ़दत

(नेकबख़्ती) है। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हर किसी की औलाद को नेक बनाये।

ज़माना-ए-जाहिलिय्यत की बुरी आ़दतें

बाज़ जगहों पर देखा गया है कि लड़की की पैदाईश को बोझ समझते हैं और लड़के की पैदाईश को अच्छा समझते हैं। यह ज़माना-ए-जाहिलिय्यत की नापसन्दीदा आ़दत है। बेटा हो या बेटी अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के इख़्तियार में होता है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ (سورة شورى)

वह जिसको चाहता है बेटा अ़ता करता है और जिसको चाहता है बेटी अ़ता करता है। यह तक़सीम अल्लाह की है और जो इनसान अल्लाह की तक़सीम पर राज़ी हो जायेगा अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन अपने उस बन्दे पर राज़ी हो जायेंगे। इसलिये बेटा नेमत है और बेटी अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की रहमत होती है। दोनों में से जो भी अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त अ़ता फ़रमा दे इनसान अल्लाह तआ़ला का शुक्रगुज़ार हो, लेकिन एक बात याद रखना कि बेटियाँ ज़्यादा वफ़ादार होती हैं। माँ-बाप को मॉडल स्पोर्ट (Model Support) बेटियों की तरफ़ से ज़्यादा मिलती है। वे दुख-सुख की साथी होती हैं। ख़ुशी और ग़म में शरीक होती हैं। आ़म तौर पर देखा गया है कि बेटे लापरवाह होते हैं, ठीक है दुनिया के चन्द टके कमा करके ले आते हैं लेकिन जितनी मुहब्बतें बेटियाँ देती हैं माँ-बाप को, उतनी मुहब्बत बेटे नहीं देते।

बेटियों का अपना मर्तबा होता है और यह बात भी ज़ेहन में रखना कि अक्सर अम्बिया-ए-किराम तो बेटियों के बाप बने। हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की बेटियों का तज़किरा क़ुरआन मजीद में है। अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते है कि वे दोनों आईं, बड़े शर्मीले

तरीक़े से चलती हुईं। तो अल्लाह ने उनकी हया की तारीफ़ें क़ुरआन में कीं। अल्लाह करे ऐसी बेटी हर किसी को नसीब हो जिसकी हया की तारीफ़ें अल्लाह ने क़ुरआन में कीं।

बेबी मरियम की पाक-दामनी की तारीफ़ें क़ुरआन ने कीं। चुनाँचे ऐसी बेटी की पैदाईश पर रंजीदा नहीं होना चाहिये, ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बेटा तो अ़ता किया मगर बचपन में वह जुदा हो गया। अल्लाह को प्यारा हो गया और बेटियाँ सलामत रहीं और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बेटियों के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी।

तो जिसकी बेटियाँ हों वह दिल में यही सोचे कि मुझको अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़िन्दगी से गोया मुशाबहत (यानी एक तरह की समानता) मिल गई। तो इस ख़ुशी पर उसको चाहिये कि अल्लाह का शुक्र अदा करे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जिसकी दो बेटियाँ हों और वह उनकी अच्छी तरबियत करे, तालीम दिलवाये यहाँ तक कि उन बेटियों को रुख़्सत कर दे, निकाह कर दे, वह जन्नत में मेरे साथ ऐसे होगा जैसे हाथ की दो उंगलियाँ एक दूसरे के साथ होती हैं।

तो बेटियों की पैदाईश पर तंगदिल होना यह जाहिलिय्यत की रस्म है। पढ़े लिखे लोग, समझदार लोग बेटी को भी अल्लाह की रहमत समझते हैं। उस पर भी अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं।

एक यह बात ज़ेहन में रख लेना कि कई जगहों पर अगर किसी लड़की के यहाँ बेटी की पैदाईश हुई तो आ़म तौर पर देखा गया है कि मर्द उस पर इतने ज़ुल्म नहीं करते जितना औ़रतें ज़ुल्म करती हैं। एक औ़रत दूसरी औ़रत के लिये ज़ालिमा बन जाती है। शौहर कहता है कि कोई बात नहीं, मगर सास कह रही होती है, नन्द कह रही होती है कि बेटा होता, अपनी भाभी का जीना तंग कर देती हैं।

आ़म तौर पर आप देखेंगे कि मर्द औ़रत पर इस बारे में इतना जुल्म नहीं करते जितना औ़रतें दूसरी औ़रतों पर जुल्म करती हैं। अगर कोई सास अपनी बहू को इसलिये तकलीफ़ देती है कि उसके यहाँ बेटियाँ हैं, इसलिये नापसन्द करती है। सोचना चाहिये कल उसकी अपनी बेटी पर यह मामला पेश आया, उसकी बेटी की सास ने उसके साथ इस तरह का सुलूक किया तो फिर उसके दिल पर क्या गुज़रेगी। यह भी तो आख़िर किसी की बेटी है। अब इसका क्या क़ुसूर कि अल्लाह ने इसको बेटी अ़ता की।

लिहाज़ा आ़म तौर पर इसमें औ़रतें ही औ़रतों पर जुल्म करती हैं। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त समझ अ़ता फ़रमा दे।

एक चीज़ जो साईन्सी तरीक़े से साबित हो चुकी है, आजकल की मॉडर्न साईन्स की रोशनी में जो खुलकर सामने आ चुकी है वह यह है कि बेटी हो या बेटा इसका मामला मर्द के साथ है। औ़रत के साथ इसका कोई ताल्लुक़ नहीं। मैडिकल साईन्स ने यह बता दिया कि औ़रत के जिस्म में जो क्रोमोसोम होता है उसको X X कहते हैं और मर्द का जो क्रोमोसोम होता है उसको X Y कहते हैं अगर X Y मिले तो बेटा होता है और अगर X X मिलें तो बेटी होती है। जब दोनों को क्रोमोसोम इकट्ठे होते हैं तो मर्द का X Y भी आपस में Seplit हो जाता है और औ़रत का भी XX, Seplit हो जाता है। अब मर्द के अगर Post ने X के साथ जाकर मिलाप किया तो बेटा होगा और अगर उसके Post-X ने औ़रत के Post-x के साथ मिलाप किया तो बेटी होगी। औ़रत के पास तो है ही X X क्रोमोसोम तो औ़रत बेचारी का क्या क़ुसूर? वह तो न बेटी के अन्दर दख़ल दे पाई न बेटे के अन्दर दख़ल दे पाई। यह तो मर्द का क्रोमोसोम था Y क्रोमोसोम अगर यह प्रभावी (Effective) हो गया तो बेटा हुआ और अगर X Effective हो गया तो बेटी हुई। क़ुसूर तो मर्द का बनता है, मगर औ़रतें क़ुसूर बहू का निकाल देती हैं।

मैडिकल साईन्स ने इस बात को साबित कर दिया कि बेटी होना या बेटा होना इसका ताल्लुक़ बीवी से नहीं, शौहर से होता है। मगर आ़म तौर से बेचारी माँ के ऊपर मुसीबतें आ पड़ती हैं। यह तो बेटियों वाली माँ है हालाँकि माँ का इसमें कोई क़सूर नहीं होता, इसलिये शौहरों को भी चाहिये कि वे इस बारे में बीवी को परेशान न करें। अगर किसी के यहाँ बेटियाँ हो रही हैं, यह तो अल्लाह की तरफ़ से है, और मामला तो मर्द का है। क़सूर तो मर्द को अपने ज़िम्मे लेना चाहिये। मगर बेचारी औ़रत को परेशान कर दिया जाता है।

तो साईन्स ने आज इस चीज़ को सौ फ़ीसद साबित कर दिया कि इसमें औ़रत का कोई क़सूर नहीं होता। लिहाज़ा बेटी होने पर औ़रत से नफ़रत करना, उसको बुरा कहना और यह कहना कि मैं तो बेटे की दूसरी शादी करूँगी, इसके तो बेटियाँ ही होती हैं, यह जाहिलों वाली बातें हैं। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त इस जहालत की बातों से हमें महफ़ूज़ फ़रमा दे।

नवजात बच्चे को माँ का पहला तोहफ़ा

जब अल्लाह तआ़ला बच्चे की पैदाईश फ़रमा दे तो माँ के लिये यह ख़ुशी का मौक़ा होता है। और बच्चे के लिये पहला तोहफ़ा जो माँ उसको पेश कर सकती है वह माँ का अपना दूध होता है। माँ को चाहिये कि बच्चे को अपना दूध ज़रूर पिलाये, हाँ! अगर दूध मैडिकली ठीक नहीं है, बच्चे के लिये नुक़सानदेह है तो और बात है, लेकिन अगर माँ का दूध बच्चे के लिये है तो इससे बेहतर ग़िज़ा बच्चे को और कोई नहीं मिल सकती। हर माँ को चाहिये कि वह दूध ज़रूर पिलाये। ताकि बच्चे के अन्दर माँ की मुहब्बत आ जाये।

अगर माँ दूध ही नहीं पिलायेगी तो माँ की मुहब्बत बच्चे के अन्दर कैसे आयेगी। आ़म तौर पर कई बच्चियाँ अपनी ख़ूबसूरती और जवानी को सामने रखते हुए दूध पिलाने से घबराती हैं, और शुरू से

ही बच्चे को डिब्बे के दूध पर लगा देती हैं। फिर जब डिब्बे का दूध पीकर बच्चे बड़े होते हैं तो माँ को माँ नहीं समझते, इसलिये किसी शायर ने कहा...

तिफ़्ल से बू आये क्या माँ-बाप के एतिबार की
दूध डिब्बे का पिया तालीम है सरकार की

जब न दीन की तालीम पाई है न माँ का दूध पिया है तो फिर उसमें अच्छे अख़्लाक़ कहाँ से आयेंगे।

बच्चे पर माँ के दूध के असरात

एक माँ अपने बेटे से नाराज़ होकर कहने लगीः बेटे तुमने मेरी बात नहीं मानी तो मैं कभी भी तुम्हें अपना दूध माफ़ नहीं करूँगी। उसने मुस्कुराकर कहा अम्मी मैं तो नेडो के डिब्बे का दूध पीकर बड़ा हुआ हूँ आपने तो मुझे अपना दूध पिलाया ही नहीं। मुझे माफ़ क्या करेंगी।

वाक़ई ऐसा देखा गया है कि डिब्बों के दूध के असरात और होते हैं और माँ के दूध के असरात और होते हैं।

बच्चे को दूध पिलाने के आदाब

माँ को चाहिये कि बच्चे को खुद दूध पिलाये। दूध पिलाते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ ले। और जितनी देर बच्चा दूध पीता रहे माँ अल्लाह के ज़िक्र में मशग़ूल रहे। माँ अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की याद में मशग़ूल रहे। माँ दुआ करती रहेः ऐं अल्लाह मेरे दूध के एक-एक क़तरे में मेरे बेटे को इल्म का समन्दर अ़ता फ़रमा। माँ की उस वक़्त की दुआ अल्लाह के यहाँ क़बूल होती है।

हमारे बुज़ुर्ग जो पहले गुज़रे हैं, उनकी माँओं ने तो तरबियत ऐसे की कि वुज़ू करके अपने बच्चों को दूध पिलाती थीं। अगर आज कोई वुज़ू करके दूध पिलाये तो वह बड़ी खुशनसीब है। और अगर नहीं

पिला सकती तो कम से कम दूध पिलाते वक़्त दिल में अल्लाह का ज़िक्र तो कर सकती है। और यह न करे कि उधर दूध पिला रही है इधर बैठी ड्रामा (यानी टी. वी.) देख रही है। अगर गुनाह की हालत में दूध पिलायेंगी तो यह बच्चा नाफ़रमान निकलेगा। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त का भी और माँ-बाप का भी। बाद में रोने का फिर क्या फ़ायदा। इसलिये बचपन से ही बच्चे की तरबियत ठीक रखी जाये।

अगर माँ का दूध कम हो तो उसको चाहिये कि डॉक्टर से मश्विरा करके अपना इलाज कराये। फ़ौरन डिब्बे के दूध पर डालने की क्या ज़रूरत है। बच्चियाँ आ़म तौर पर यह ग़लती कर लेती हैं। समझती हैं कि हमारे दूध पूरा नहीं और थोड़ा-थोड़ा डिब्बे का देना शुरू कर देती हैं।

अब डिब्बे के दूध का ज़ायक़ा कुछ और, और माँ के दूध का ज़ायक़ा कुछ और। आ़म तौर पर बच्चे माँ का दूध छोड़कर डिब्बे का दूध शुरू कर देते हैं। ऐसा हरगिज़ न करें। जब तक कोई बहुत बड़ी मजबूरी न हो। वरना तो बच्चे को अपना दूध पिलाएँ। फिर देखें कि आपकी मुहब्बत बच्चे के दिल में कैसे जड़ नहीं पकड़ती है।

माँ अपना दूध पिलाएगी तो बच्चे के अन्दर माँ के अख़्लाक़ भी आँएगे। माँ की ईमानी कैफ़ियत की बरकतें भी बच्चे के अन्दर आएँगी।

फ़ीडर, चूसनियाँ बीमारी का केन्द्र

यह बात ज़ेहन में रखना कि अक्सर औ़रतें तो डिब्बों के दूध पिलाती हैं तो उनके बच्चे बीमार रहते हैं। इस बीमारी का सबब उनके फ़ीडर और चूसनियाँ हैं। ये फ़ीडर और चूसनियाँ तो बीमारी की केन्द्र होती हैं जहाँ पर लाखों करोड़ों की तायदाद में कीटाणु बैक्टेरिया परवरिश पाते हैं। आप जितना मर्ज़ी उनको धोती रहें, जितना मर्ज़ी गरम पानी में डालती रहें। चूँकि वे रबड़ के बने हुए होते हैं इसलिये

उनके अन्दर बैक्टेरिया का छुपना आसान होता है।

या तो यह करें कि अगर डिब्बे का दूध ही मजबूरन पिलाना है तो हर दूसरे दिन उसका फ़ीडर और चूसनी का निप्पल बदलते रहें। ताकि बैक्टेरिया उसमें पैदा ही न हो सकें। और अगर इतना बरदाश्त नहीं कर सकतीं तो फिर दूसरा तरीक़ा यह है कि बच्चे को स्टील के बर्तन और चम्मच के साथ दूध पिलाएँ।

जो माँ बच्चे को स्टील के साफ़ बर्तनों में दूध पिलाती हैं उस बच्चे के पेट में ख़राबी नहीं आती। या तो अपना दूध पिलाएँ या स्टील के बर्तनों में चम्मच के साथ दूध पिलाएँ।

अगर यह भी नहीं कर पातीं और फ़ीडर चूसनी देनी पड़ती है तो फिर हर दूसरे तीसरे दिन उसको बदलती रहें। एक फ़ीडर एक महीना चलाना तो बच्चे के मुँह में बैक्टेरिया की एक ज़बरदस्त फ़ौज दाख़िल करने के मानिन्द है। अब यह बच्चा बीमार होगा मगर क़सूर माँ का होगा।

बच्चे मासूम होते हैं, ये माँ-बाप की ला-इल्मी (अज्ञानता) और लापरवाहियों की वजह से बेचारे सेहत के बजाये बचपन से ही बीमार होते हैं। सारी उम्र इस कमज़ोरी के असरात रहते हैं। इसलिये सबसे अच्छा तो यही है कि अपना दूध हो। जिसकी बरकतें भी साथ जा रही हों।

पैदाईश के बाद 'तहनीक' देना

जब बच्चे की पैदाईश हो तो बच्चे की 'तहनीक' करवाना सुन्नत है। कि किसी नेक बन्दे के मुँह में दी हुई कोई खजूर हो या कोई और मीठी चीज़ शहद वग़ैरह हो तो ऐसी चीज बच्चे के मुँह में डालना यह अल्लाह के नेक बन्दों के मुँह का पानी जब बच्चे के मुँह में जाता है तो उसकी अपनी बरकतें होती हैं।

चुनाँचे यह तहनीक किसी नेक बन्दे से करवानी चाहिये। वह मर्द

भी हो सकता है और औ़रत भी हो सकती है। इसकी हमने बड़ी बरकतें देखी हैं। इसलिये जो हामिला (गर्भवती) बच्चियाँ होती हैं वे पहले से ही तहनीक के लिये कुछ न कुछ तैयार करवाकर रखती हैं। मौक़े पर तो कहीं नहीं भागा जाता। इसलिये इसका भी ख़ास ख़्याल रखना चाहिये।

तहनीक के बाद अज़ान और तकबीर का अ़मल

तहनीक करवाने के बाद बच्चे के दाँयें कान में अज़ान और बाँयें कान में तकबीर कही जाती है। यह अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त का नाम है जो बच्चे के दोनों कानों में लिया जाता है। सुब्हानल्लाह!

छोटी उम्र में बच्चा अभी समझ-बूझ नहीं रखता मगर उसके कानों में अल्लाह ने अपनी बुलन्दी और अ़ज़मतों के तज़किरे करवा दिये। एक कान में भी अल्लाहु अकबर कहते हैं और दूसरे कान में भी अल्लाहु अकबर कहते हैं।

गोया अल्लाह की अ़ज़मत और बड़ाई उसको सिखा दी गई और यह भी एक पैग़ाम पहुँचा दिया गया कि जिस तरह दुनिया के अन्दर अज़ान होती है फिर उसके बाद तकबीर होती है और तकबीर के बाद नमाज़ में थोड़ी देर होती है, बिल्कुल इसी तरह ऐ बन्दे! तेरी ज़िन्दगी की अज़ान भी कही जा चुकी, तेरी ज़िन्दगी की तकबीर भी कही जा चुकी। तेरी ज़िन्दगी नमाज़ की मानिन्द है और नमाज़ तो हमेशा इमाम के पीछे पढ़ी जाती है। एक शरई तरीक़े पर पढ़ी जाती है। तो यह पैग़ाम है कि तू अपनी ज़िन्दगी को भी सही गुज़ारना चाहता है तो शरीअ़त के तरीक़े को अपना लेना। और नबी अ़लैहिस्सलाम को ज़िन्दगी की नमाज़ का इमाम बना लेना। फिर तेरी नमाज़ क़बूल हो जायेगी। आख़िरकार तुझे क़ब्र में जाना ही है। तो शुरू ही में अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त का पैग़ाम इस बच्चे के ज़ेहन में पहुँचा दिया जाता है।

बच्चे का नाम हमेशा अच्छा रखें

बच्चे का नाम हमेशा अच्छा रखें। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त को अ़ब्दुल्लाह नाम सबसे ज़्यादा पसन्द है। अ़ब्दुर्रह्मान नाम पसन्द है। अ़ब्दुर्-रहीम नाम पसन्द है। ऐसे नाम रखें कि क़ियामत के दिन जब पुकारे जाएँ तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त को उस बन्दे को जहन्नम में डालते हुए हया महसूस हो। अल्लाह तआ़ला महसूस फ़रमायें कि मेरा बन्दा मेरे रहमत वाले नाम के साथ सारी ज़िन्दगी पुकारा जाता रहा, अब इसको जहन्नम में मैं कैसे डालूँ। ऐसा नाम होना चाहिये।

आजकल की बच्चियाँ नये-नये नामों की ख़ुशी में बेमानी (अर्थहीन) क़िस्म के नाम रख लेती हैं। उलटे-सीधे नाम जिसका न उसकी माँ को मायने का पता और न किसी और को पता। बेकार क़िस्म के नाम रख देती हैं। यह बच्चे के साथ ज़्यादती होती है। बच्चे के हुक़ूक़ में से है कि माँ-बाप ऐसा नाम रखें कि जब बच्चा बड़ा हो और उसके नाम से उसको पुकारा जाये तो बच्चे को ख़ुशी हो। यह बच्चे का हक़ है जो माँ-बाप के ऊपर होता है।

इसलिये बच्चे को हमेशा अच्छा नाम दें। अम्बिया (नबियों) के नामों में से नाम दें। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के नामों में से नाम दें। औलिया-ए-किराम के नामों में से नाम दें।

एक रिवायत में आता है कि जिस घर के अन्दर कोई बच्चा मुहम्मद नाम का होता है अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त इस नाम की बरकत से उस घर के तमाम रहने वालों को जहन्नम की आग से बरी फ़रमा देते हैं। तो मुहम्मद का नाम अहमद का नाम बहुत प्यारा है। हमारे बुज़ुर्ग तो दस-दस नसलों तक बाप का नाम मुहम्मद फिर उसके बेटे का नाम मुहम्मद फिर उसके बेटे का नाम मुहम्मद, यह नाम इतना प्यारा था कि दस-दस नसलों तक यही नाम चलता चला जाता था। लेकिन आजकल इस नाम को रख तो देते हैं साथ ही कोई दूसरा

लफ़्ज़ लगा देते हैं और नाम से ज़्यादा दूसरा लफ़्ज़ मशहूर होता है। मसलन मुहम्मद उवैस नाम रखा अब उवैस ज़्यादा मशहूर कर दिया। मुहम्मद का नाम कोई जानता भी नहीं। इसलिये मुहम्मद नाम अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त को प्यारा है। अहमद नाम कुरआन में है, अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त को प्यारा है। चाहें तो मुहम्मद अहमद नाम भी रख सकती हैं। बहुत ही प्यारा नाम है। अ़ब्दुल्लाह रख सकती हैं। अ़ब्दुल्लाह इब्राहीम रख सकती हैं। अम्बिया, औलिया के नामों पर बच्चों के नाम रखें ताकि क़ियामत के दिन उन ही के साथ उनका हश्र हो जाये। और अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की रहमत हो।

बच्चियों के नाम भी इसी तरह सहाबियात (सहाबी औ़रतों) के नामों पर रखें। उम्महातुल्-मोमिनीन (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक बीवियों) के नामों पर रखें। नबी अ़लैहिस्सलाम की बेटियों के नामों पर रखें। बच्चियों के नाम भी अच्छे रखें। ऐसे नाम न रखें कि जिनका कोई मतलब ही न हो। बहरहाल! इस बात का भी ख़ास ख़्याल रखें।

पैदाईश के बाद अ़क़ीक़ा

जब बच्चे की पैदाईश हो सातवें दिन अ़क़ीक़ा करना सुन्नत है। बेटे के लिये दो बकरे और बेटी के लिये एक बकरा यह ख़ुशी का इज़्हार है। ख़ुद भी उसको खाएँ और रिश्तेदारों को भी खिलाएँ। ग़रीबों को भी दें इसके लिये हर तरह की इजाज़त होती है। जब बच्चे की पैदाईश हो जाये तो माँ-बाप को घर के कामकाज भी करने होते हैं, इबादत भी करनी होती है, तो जब भी माँ इबादत, तिलावत के लिये बैठे तो अपने बच्चे को अपनी गोद में लेकर बैठे और फिर अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त का कुरआन पढ़े, आपके कुरआन पढ़ने की बरकतें आपके बच्चे के अन्दर उस वक़्त उतर जायेंगी।

माँ की तिलावत के असरात बच्चे पर

एक मशहूर वाक़िआ है कि एक माँ-बाप ने अपने बच्चें को मदरसे में दाख़िल किया। कुछ अ़रसे के बाद उसका बाप मदरसे में गया कि अपने बच्चे की कारकर्दगी का जायज़ा लूँ। क़ारी साहिब से पूछा तो उन्होंने बताया कि इस बच्चे ने तीन पारे तो इतनी जल्दी हिफ़्ज़ कर लिये कि हमें यक़ीन नहीं आता। ऐसा लगता है कि जैसे यह तो पहले से ही हाफ़िज़ था। उन तीन पारों के बाद फिर उसने आ़म मामूल के मुताबिक़ आ़म रफ़्तार के मुताबिक़ सबक़ लेना शुरू कर दिया।

उस शख़्स ने यह बात आकर अपनी बीवी को बताई। बीवी मुस्कुरा पड़ी। शौहर ने पूछा मुस्कुराने वाली बात कौनसी है? वह कहने लगी बात यह है कि मैं तीन पारों की हाफ़िज़ा हूँ। जब भी मैं पढ़ने बैठती थी बच्चे को गोद में लेकर बैठती थी। और बार-बार तीन पारों की तिलावत करती थी। उन तीन पारों का नूर मेरे पारों का नूर मेरे बेटे के सीने में उतर गया, यह उसकी बरकत है। जब यह मदरसा में गया तो तीन पारों का हाफ़िज़ जल्द बन गया। जैसे यह नूर पहले से ही अल्लाह ने उसके दिल मे रख दिया हो।

तो माँ की तिलावत के असरात बच्चे के ऊपर पड़ा करते हैं। इसलिये जब भी दुआ़ माँगने बैठें, क़ुरआन मजीद पढ़ने बैठें, या इबादत करने बैठें तो बच्चे को अपनी गोद में लेकर बैठने की कोशिश करें। जब बच्चे को खिलाना हो या सुलाना हो तो बच्चे को लोरी भी अच्छी दें और अल्लाह का नाम उसके सामने कहने की कोशिश करें।

बच्चे की तरबियत करने पर ख़ुशख़बरी

हदीस पाक में आता है कि जिस माँ ने या बाप ने बच्चे की तरबियत ऐसी की कि उसने बोलना शुरू किया और उसने सबसे पहले अल्लाह का नाम ज़बान से निकाला तो अल्लाह तआ़ला उसके माँ-बाप

के सब पिछले गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं। अब यह कितना आसान काम है, लेकिन बच्चियाँ इस तरफ़ तवज्जोह नहीं देतीं। कई बच्चियों को तो पता ही नहीं होता, बच्चों के सामने अम्मी और अब्बू का लफ़्ज़ पहले न कहें, हमेशा अल्लाह का लफ़्ज़ बार-बार कहें। जब आप अल्लाह का लफ़्ज़ कहेंगी और जो भी उठाये तो उसको हिदायत करें कि वह बच्चे के सामने सिर्फ़ अल्लाह का नाम ले। जब बार-बार अल्लाह-अल्लाह का लफ़्ज़ लेंगी तो बच्चा भी अल्लाह ही का लफ़्ज़ बोलेगा।

उलेमा ने लिखा है कि हरकात (ज़बर, ज़ेर, पेश) तीन होती हैं- एक 'ज़बर' एक 'ज़ेर' और एक 'पेश'। इसमें सबसे आसान चीज़ जो बोली जाती है उसको ज़बर कहते हैं। यह इन तीनों में सबसे ज़्यादा अफ़ज़ल और बेहतर है। इसलिये पेश और ज़ेर का लफ़्ज़ बोलना बच्चे के लिये मुश्किल होता है, ज़बर का लफ़्ज़ आसान होता है।

इससे मालूम होता है कि अगर अल्लाह का लफ़्ज़ लिया जायेगा तो यह बच्चे के लिये सबसे आसान लफ़्ज़ है जो बच्चा सीख सकता है। और इस पर इनसान को अल्लाह की तरफ़ से इनाम भी मिलेगा कि बच्चे ने अल्लाह का नाम पुकारा माँ-बाप के पिछले गुनाहों की मग़फ़िरत हो गई।

तो बच्चे के सामने कसरत के साथ अल्लाह का नाम लेती रहें और अगर सुलाना पड़े तो उस वक़्त लोरी भी उसको ऐसी दें कि जो प्यार वाली हो, नेकी वाली हो।

पिछले ज़माने की माँएँ अपने बच्चों को ऐसी लोरी देती थीं:

हस्बी रब्बी जल्लल्लाह। मा फ़ी क़ल्बी ग़ैरुल्लाह। नूरे मुहम्मद सल्लल्लाह। ला इला-ह इल्लल्लाह।

यह ला इला-ह इल्लल्लाह की ज़रबें लगती थीं तो बच्चे के दिल पर उसके असरात होते थे। माँ ख़ुद भी नेक होती थीं। उसके दो फ़ायदे थे एक तो माँ का अपना वक़्त ज़िक्र में गुज़रा और दूसरा बच्चे

को अल्लाह का नाम सुनने का मौक़ा मिला। ला इला-ह इल्लल्लाह की ज़रबों के उसके दिल पर असरात हों और अगर उसके अ़लावा भी और कोई लोरी कहे तो वह भी नेकी के पैग़ाम वाली हो। नेकी की बातों वाली हो।

हमारी उम्र इस वक़्त पचास हो गई लेकिन बचपन के अन्दर जब माँ लोरी देती थी तो जो अलफ़ाज़ वह कहा करती थी, बहन वे अलफ़ाज़ सुनाती थी कि इन अलफ़ाज़ से लोरी देते थे। अब अ़जीब बात है कि वे अलफ़ाज़ दिल पर ऐसे नक़्श हो गये कि पचास साल की उम्र में भी यूँ महसूस होता है कि लोरी के अलफ़ाज़ कानों में गूँज रहे हैं।

माँ कहती थी “अल्लाह अल्लाह लोरी, दूध भरी कटोरी, जुलफ़ी पियेगा, नेक बनकर जियेगा” शायद यह माँ की वे दुआ़यें हैं अल्लाह ने नेकों के क़दमों में बैठने की जगह अ़ता फ़रमा दी।

आज से पचास साल पहले, आधी सदी गुज़र गई मगर वह नेक बनकर जिएगा के अलफ़ाज़ आज भी ज़ेहन के अन्दर अपने असरात रखते हैं। इसलिये माँ को चाहिये कि अगर लोरी भी दे तो ऐसी हो कि जिसमें नेकी का पैग़ाम बच्चे को पहुँच रहा हो।

बच्चों के सामने

बेशर्मी वाली हरकतों से गुरेज़ कीजिये

बच्चे का दिमाग़ कैमरे की तरह होता है। हर चीज़ का अ़क्स अपने अन्दर सुरक्षित कर लेता है। बुद्धिजीवियों ने लिखा है कि छोटे बच्चे के सामने भी कोई बेशर्मी वाली हरकत न करे। मियाँ-बीवी कोई ऐसा मामला न करें कि यह बच्चा छोटा है इसको क्या पता। अगरचे वह छोटा होता है लेकिन उसके ज़ेहन के बैक-ग्राऊंड के अन्दर ये सब मनाज़िर (दृश्य) नक़्श हो रहे होते हैं। इसलिये इसका बड़ा ख़्याल रखें।

को अल्लाह का नाम सुनने का मौक़ा मिला। ला इला-ह इल्लल्लाह की ज़रबों के उसके दिल पर असरात हों और अगर उसके अलावा भी और कोई लोरी कहे तो वह भी नेकी के पैग़ाम वाली हो। नेकी की बातों वाली हो।

हमारी उम्र इस वक़्त पचास हो गई लेकिन बचपन के अन्दर जब माँ लोरी देती थी तो जो अलफ़ाज़ वह कहा करती थी, बहन वे अलफ़ाज़ सुनाती थी कि इन अलफ़ाज़ से लोरी देते थे। अब अजीब बात है कि वे अलफ़ाज़ दिल पर ऐसे नक़्श हो गये कि पचास साल की उम्र में भी यूँ महसूस होता है कि लोरी के अलफ़ाज़ कानों में गूँज रहे हैं।

माँ कहती थी "अल्लाह अल्लाह लोरी, दूध भरी कटोरी, जुलफ़ी पियेगा, नेक बनकर जियेगा" शायद यह माँ की वे दुआयें हैं अल्लाह ने नेकों के क़दमों में बैठने की जगह अता फ़रमा दी।

आज से पचास साल पहले, आधी सदी गुज़र गई मगर वह नेक बनकर जिएगा के अलफ़ाज़ आज भी ज़ेहन के अन्दर अपने असरात रखते हैं। इसलिये माँ को चाहिये कि अगर लोरी भी दे तो ऐसी हो कि जिसमें नेकी का पैग़ाम बच्चे को पहुँच रहा हो।

बच्चों के सामने

बेशर्मी वाली हरकतों से गुरेज़ कीजिये

बच्चे का दिमाग़ कैमरे की तरह होता है। हर चीज़ का अक्स अपने अन्दर सुरक्षित कर लेता है। बुद्धिजीवियों ने लिखा है कि छोटे बच्चे के सामने भी कोई बेशर्मी वाली हरकत न करे। मियाँ-बीवी कोई ऐसा मामला न करें कि यह बच्चा छोटा है इसको क्या पता। अगरचे वह छोटा होता है लेकिन उसके ज़ेहन के बैक-ग्राऊंड के अन्दर ये सब मनाज़िर (दृश्य) नक़्श हो रहे होते हैं। इसलिये इसका बड़ा ख़्याल रखें।

बच्चे को ख़ालिके-हकीकी का तआरुफ़ करायें

बच्चे का ईमान मज़बूत करने के लिये माँ को चाहिये कि कोशिश करती रहे। बच्चा बड़ा हो गया और उसको कोई डराने की बात आई तो कभी भी कुत्ते बिल्ले से न डराएँ। किसी जिन्न-भूत से मत डराएँ! जब भी कोई बात हो तो बच्चे के ज़ेहन मे अल्लाह का तसव्वुर डालें। बेटा अगर ऐसे करोगे अल्लाह मियाँ नाराज़ हो जायेंगे।

अब जब आप प्यार से समझायेंगी कि अल्लाह मियाँ नाराज़ हो जायेंगे तो बच्चा पूछेगा कि अल्लाह मियाँ कौन हैं। अब आपको अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त का तआरुफ़ (परिचय) करवाने का मौक़ा मिल जायेगा। आप तआरुफ़ करवाएँ। अल्लाह मियाँ वह है जिसने आपको दूध अ़ता किया। अल्लाह मियाँ वह है जिसने आपको सुनने की ताक़त दी। देखने की कुव्वत दी। जिसने आपको अ़क़्ल अ़ता की। जिसने मुझे भी पैदा किया और आपको भी पैदा किया। हम सब अल्लाह तआ़ला के बन्दे हैं।

जब आप अल्लाह की ऐसी तारीफ़ें करेंगी और उसके इनामात का तज़किरा करेंगी तो बचपन से ही बच्चे के अन्दर अल्लाह की मुहब्बत और जन्नत में जाने का शौक़ पैदा हो जायेगा और वह आप से पूछेगा कि हम जन्नत में कब जायेंगे।

चुनाँचे एक शख़्स ने अपने बच्चे के सामने जब इसी तरह अल्लाह की तारीफ़ की और जन्नत की नेमतों का ज़िक्र किया तो उस बच्चे ने पूछा कि हम जन्नत में कब जायेंगे। मुझे उसकी बात इतनी अच्छी लगी कि देखो बच्चे को जन्नत की बातें सुनाईं और अभी से पूछ रहा है कि अब्बू हम जन्नत में कब जायेंगे? अभी से इसको इन्तिज़ार और शौक़ नसीब हो गया।

माँ को भी चाहिये कि इसी तरह बच्चे के अन्दर नेकी के असरात डाले और उसके दिल में अल्लाह तआ़ला का ईमान मज़बूत करे। सब्र

से काम ले।

डाँट-डपट से बच्चे की शख़्सियत पर बुरे असरात

बच्चे से कोई भी ग़लती हो जाये ज़रा सी ग़लती पर डाँट-डपट करने बैठ जाना यह अच्छी माँओं की आदत नहीं होती। बच्चे को इ़ज़्ज़त के साथ डील करें और आपने बच्चे को इ़ज़्ज़त के साथ डील किया तो बच्चे के अन्दर अच्छी शख़्सियत पैदा होगी। अगर आपने बात-बात पर डाँटना शुरू कर दिया तो बच्चे की सिफ़ात खुल नहीं सकेंगी। उसकी शख़्सियत के अन्दर कभी क़ायदाना (रहनुमा और लीडर बनने की) सिफ़ात पैदा नहीं होंगी। इसलिये बच्चे की तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) करना माँ का सबसे पहला फ़रीज़ा होता है। अगर बच्चे से ग़लती हो जाये या नुक़सान हो जाये तो बच्चे को प्यार से समझायें।

मिसाल के तौर पर आपकी बेटी है, उसको पानी पीना है, आप किसी काम में लगी हुई हैं। उसने फ्रिज का दरवाज़ा खोल दिया और दरवाज़ा खोलकर पानी निकालने लगी। उसमें कोई खाना बना रखा था, जो दावत के लिये आपने पकाया था। मेहमान आने वाले थे। वह खाना प्लेट से नीचे गिरकर ज़ाया हो गया। अब देखते ही गुस्से में आकर बेटी को कोसना और डाँटना अच्छी बात नहीं। आप आयें और बेटी को प्यार से कहें कि बेटी कोई बात नहीं, यह तो मुक़द्दर में ऐसे ही था। यह ऐसे ही अल्लाह ने लिखा था। इसको नीचे गिरना था। बेटी कोई बात नहीं, आईन्दा अगर तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मैं तुम्हें उठाकर दे दिया करूँगी। मुझसे कह दिया करो। आप बिल्कुल परेशान न हों। यह तो अल्लाह की तरफ़ से ऐसे ही होना था।

जब आप ऐसा कहेंगी तो बेटी जवाब देगी कि अम्मी में आईन्दा से एहतियात करूँगी। मैं गन्दी बच्ची नहीं बनूँगी। मैं आपको ही ऐसी बातें बता दिया करूँगी तो फिर बेटी आपसे पूछेगी कि अम्मी अब्बू

आयेंगे तो आपको डाँटेंगे तो नहीं? अम्मी! अब्बू को अगर पता चल गया कि मैंने यह नुक़सान किया है तो वह मुझे मारेंगे तो नहीं? आप बच्ची को तसल्ली दें कि नहीं! हरगिज़ नहीं! मैं तुम्हारा नाम नहीं बताऊँगी। यही कहूँगी कि यह गिरकर ज़ाया हो गया। मैं तुम्हारे अब्बू को फ़ोन कर देती हूँ कि वह आते हुए कुछ और खाने का बन्दोबस्त करके ले आयें ताकि मेहमानों के सामने कुछ स्वीट डिश रखी जा सके।

ऐसी बात में आप देखेंगी कि बच्ची आपको अपना निगहबान समझेगी। सर का साया समझेगी। वह समझेगी कि माँ मेरी ग़लतियों को छुपाती है और मेरा साथ देती है।

अच्छी तरबियत के सुनहरे उसूल

बचपन में जब माँ अपने बच्चों की हमदर्द ग़मगुसार बनेगी तो बड़ी होकर यही बच्ची होगी जो आपके दुख बाँटेगी और आपकी ख़िदमत में पूरी ज़िन्दगी गुज़ार देगी। इसी तरह बच्ची के अन्दर शख़्सियत की अज़मत (बड़ाई और अहमियत) पैदा करें। और बच्ची के दिल में अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की मुहब्बत पैदा करें। जब खाना ज़ाया हो गया तो अल्लाह का तसव्वुर डालें कि अल्लाह को ऐसा ही मन्ज़ूर था। और साथ ही यह भी कहें कि बेटी! अल्लाह के सामने इस्तिग़फ़ार कर लो। अल्लाह ने एक नेमत हमें दी थी मगर वह हमसे ज़ाया हो गई। आईन्दा हमें नेमतों से मेहरूम न कर दे।

जब आप बच्ची को बहाने से अल्लाह की रहमतों की तरफ़ तवज्जोह दिलाएँगी तो बेइख़्तियार उसके दिल में ईमान मज़बूत होगा। अच्छी माँओं की तो यही बात होती है। हर-हर बात में से नुक्ते निकाल कर बच्चों का ध्यान अल्लाह की तरफ़ ले जाती हैं। नेकी की तरफ़ ले जाती हैं। दीन की तरफ़ ले जाती हैं। इसी का नाम अच्छी तरबियत है। जब बच्चे आपके सामने आयें तो बच्चों को छोटी-छोटी क़ुरआनी आयतें याद कराएँ। छोटी-छोटी सूरतें याद कराएँ। छोटे बच्चे

भी याद कर लेते हैं। इनसान हैरान हो जाता है कि कितनी छोटी सी उम्र में बच्चे ऐसी चीज़ों को याद करना और ज़ेहन में बिठाना शुरू कर देते हैं।

मुझे याद है कि हमारी एक शागिर्दा थी, मुरीदा थी। कुरआन पाक की हाफ़िज़ा, आ़लिमा और क़ारिया थी। उसकी शादी हुई। अल्लाह ने उसको बेटा अ़ता किया। उसने अपने बेटे की अच्छी तरबियत की। फिर एक मर्तबा उसने अपने मियाँ को भेजा। बेटा साथ था, कहा कि जाएँ और उस बच्चे को कहा कि हज़रत साहिब को तुम्हें सबक़ सुनाना है। और शर्त लगाई कि हज़रत साहिब के सामने तुमको खड़े होकर सबक़ सुनाना है।

उसका शौहर बेटे को लेकर आया। बच्चा इतना छोटा था कि अभी पूरी तरह खड़ा नहीं हो सकता था। हमने उसको खड़ा करने की कोशिश की मगर वह तो बेचारा अपना सन्तुलन भी बरक़रार नहीं रख सकता था, गिरने लगता। चुनाँचे मैंने कहा कि यह बैठकर सुना दे। उसने कहा नहीं! इसकी अम्मी ने कहा था कि हज़रत साहिब के सामने खड़े होकर सुनाना है।

अ़जीब बात यह थी कि यह कैसे खड़ा हो। चुनाँचे हमने उसकी तरकीब यह निकाली कि उस बच्चे को दीवार के साथ लगाकर खड़ा किया और दोनों तरफ़ तकिये रख दिए। बच्चे ने दोनों हाथ तकिए पर रखे। सहारे के साथ खड़ा हुआ।

मेरा ख़्याल था कि बच्चा बिस्मिल्लाह पढ़ेगा या कोई और ऐसी चीज़ पढ़ेगा जो उसकी माँ ने उसे याद करवाई होगी। इतना छोटा बच्चा तोतली ज़बान से थोड़े-थोड़े अलफ़ाज़ गोया अभी बोलना सीखा था। जब उसने पढ़ना शुरू किया तो हम हैरान रह गये। उसने तबा-रकल्लज़ी से सबक़ शुरू किया। उसने पूरी सूरः मुल्क को सुना दिया। आज तक हम हैरान हैं। इतना छोटा बच्चा सूरः मुल्क का हाफ़िज़ कैसे बन गया। जब पूछा गया तो माँ ने बताया कि मेरे दिल

की तमन्ना थी, यह छोटा सा था बोलना भी नहीं जानता था कि मैं इसके सामने रोज़ाना रात को सोते वक़्त सूरः मुल्क पढ़ती थी। सोते वक़्त सूरः मुल्क पढ़ना मेरा मामूल बन गया। मैं इस बच्चे को ऐसे सुनाती थी जैसे किसी उस्ताद को सुनाते हैं। थोड़ा-थोड़ा बच्चे ने बोलना शुरू किया उसने अलफ़ाज़ याद करने शुरू कर दिए। इतनी छोटी सी उम्र में अल्लाह ने उसको सूरः मुल्क का हाफ़िज़ बना दिया।

तो यह माँओं पर निर्भर है कि छोटी उम्र में ही बच्चे के सामने दीन की बातें करने लग जाएँ। माँ बनना तो आसान है मगर माँ बनकर तरबियत करना मुश्किल काम है। आजकल की सबसे बड़ी ख़राबी हमारी यही है कि बच्चियाँ जवान हो जाती हैं अपनी शादी के बाद माँ बन जाती हैं मगर दीन का इल्म नहीं होता, इसलिये उनको यह समझ नहीं होती कि हमको बच्चों की तरबियत कैसे करनी है। इसलिये ऐसी महफ़िलों में आना इन्तिहाई ज़रूरी होता है ताकि बच्चियों को पता चल सके कि दीनी नुक्ता-ए-नज़र से हमको अपनी औलादों की तरबियत कैसे करनी है। बल्कि ऐसे तक़रीरों के प्रोग्राम हों, किताबें हों उनको तोहफ़े के तौर पर दूसरों को हदिये में पेश करना चाहिये। ताकि वे भी उन बातों को सुनकर अपनी ज़िन्दगी में लागू कर सकें।

चुनाँचे जब बच्चा सात साल का हो जाये तो शरीअ़त का हुक्म है कि उसको नमाज़ पढ़ाना शुरू कर दें, और जब दस बरस का हो तो नमाज़ पढ़ने के लिये उस पर सख़्ती करने लग जायें। यह माँ-बाप की ज़िम्मेदारी है कि वे बच्चे को दीन सिखायें। दीन की तालीम दें।

औलाद का हक़ माँ-बाप पर

हदीस पाक में आता है कि एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सामने एक बाप अपने बेटे को लेकर आया। बेटा जवानी की उम्र में था मगर वह माँ-बाप का नाफ़रमान था। उसने आकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सामने अपना मुक़दमा पेश किया कि मेरा

बेटा मेरी कोई बात नहीं मानता। नाफ़रमान बन गया है। आप इसे सज़ा दें या समझायें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब बाप की यह बात सुनी तो बेटे से पूछा कि बेटे बताओ अपने बाप की नाफ़रमानी क्यों करते हो?

उस बेटे ने हज़रत उमर से पूछाः ऐ अमीरुल-मोमिनीन! क्या माँ-बाप के ही औलाद पर हक़ होते हैं या कोई औलाद का भी माँ-बाप पर हक़ होता है? आपने फ़रमाया हाँ! औलाद के भी माँ-बाप पर हक़ होते हैं। उसने कहा कि मेरे बाप ने मेरा कोई हक़ अदा नहीं किया।

सबसे पहले उसने जो माँ चुनी वह बाँदी थी जिसके पास कोई इल्म नहीं था। न उसके पास अख़्लाक़ ऐसे न इल्म ऐसा। इसने उसको अपनाया और उसके ज़रिये से मेरी पैदाईश हुई।

जब मैं पैदा हुआ तो मेरे बाप ने मेरा नाम 'जअ़ल' रखा जिसके लफ़्ज़ी मायने गन्दगी का कीड़ा होता है। यह भी कोई रखने वाला नाम था जो मेरे माँ-बाप ने रखा। फिर माँ के पास चूँकि दीन का इल्म नहीं था, उसने मुझे कोई दीन की बात नहीं सिखाई। और मैं बड़ा होकर जवान हो गया। अब मैं नाफ़रमानी नहीं करूँगा तो और क्या करूँगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब यह सुना तो फ़रमाया कि बेटे से ज़्यादा तो माँ-बाप ने उसके हुक़ूक़ को पामाल (ज़ाया और बरबाद) किया। इसलिये अब यह बेटे से कोई मुतालबा नहीं कर सकते। आपने मुक़द्दमे को ख़ारिज कर दिया।

माँ-बाप की सबसे पहली ज़िम्मेदारी

माँ-बाप को चाहिये कि वे औलाद को दीन सिखायें ताकि बच्चे बड़े होकर माँ-बाप के भी फ़रमाँबरदार बनें और अल्लाह तआ़ला के भी फ़रमाँबरदार बनें। शुरू से ही बच्चे को नेकी सिखाना यह माँ की ज़िम्मेदारी होती है।

यहाँ एक नुक्ता यह भी ज़ेहन में रख लें कि माँ को चाहिये कि जब दीनी शख़्सियतों का नाम आये, उलेमा का नाम आये, औलिया-ए-किराम का नाम आये, बुज़ुर्गों का नाम आये, अम्बिया का नाम आये, सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का नाम आये, जब ऐसी शख़्सीयतों के नाम आयें तो माँ को चाहिये कि बड़े अदब के साथ बच्चे के सामने नाम ले।

जब माँ दीनी शख़्सियतों का नाम बड़े अदब के साथ बच्चे के सामने लेगी तो बच्चे को इससे यह पैग़ाम मिलेगा कि बेटा तुम भी ऐसा बनना, तुम्हें भी इ़ज़्ज़त मिलेगी। चुनाँचे जब आप इस तरह से उनके सामने अच्छा नाम लेंगी तो बच्चा आ़लिम, हाफ़िज़, क़ारी बनने की कोशिश करेगा। नेक बनने की कोशिश करेगा। नेक बन्दों को वाक़िआ़त और हालात उसको सुनाएँ और बच्चों से उनका तआ़रुफ़ करवाएँ। जब आप अल्लाह के नेक बन्दों का तआ़रुफ़ (परिचय) करवाएँगी तो बच्चे के पास इल्म का ज़ख़ीरा आ जायेगा और यह शौक़ पैदा होगा कि मुझे भी ऐसा ही बनना है।

आ़म तौर पर माँ अपने बच्चों को ऐसे वाक़िआ़त नहीं सुनातीं बल्कि कभी सुनाना भी है तो किसी ने मुर्ग़े की कहानी सुनाई किसी ने बिल्ली की कहानी सुनाई और किसी ने चिड़िया की कहानी सुनाई।

बड़ी ख़ुश होती हैं कि मेरा बच्चा मुर्ग़े की कहानी सुनकर सो जाता है। उनको जन्नत की बातें सुनाएँ तो इससे बच्चे के अन्दर नेकी का शौक़ आता है।

बच्चों को सलाम और शुक्रिया अदा करने की आ़दत डालें

छोटे बच्चे को सलाम करने की आ़दत डालें। उसे बतायें कि बेटे दूसरों को देखो तो सलाम करते हैं। दोनों हाथों से सलाम करने की

आ़दत डालो, सलाम के अलफ़ाज़ बच्चों को सिखायें। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

افشوا السلام بينكم

तुम सलाम को आ़म करो। एक दूसरे के दरमियान सलाम को रिवाज दो।

तो हमें चाहिये कि ज़्यादा से ज़्यादा बच्चे को सलाम करने ही आ़दत डालें। इससे बच्चे के दिल से झिझक दूर हो जाती है और वह डिप्रेशन में नहीं जाता। दूसरों को देखकर ख़ौफ़ज़दा नहीं होता बल्कि उसको सलाम करने की आ़दत होती है। तो माँ को चाहिये कि बच्चे को सलाम करने के तरीक़े सिखायें ताकि बच्चे के दिल से मख़्लूक़ का डर दूर हो जाये और बच्चे के अन्दर जुर्रत आ जाये, बुज़दिली से वह बच जाये।

इसी तरह बच्चे को शुक्रिये की आ़दत बचपन से सिखायें। छोटी उम्र का है ज़रा समझ-बूझ रखने वाला हो तो उसको समझायें कि जब तुमसे कोई नेकी करे, भलाई करे, तुम्हारे किसी काम में तुम्हारी मदद करे तो बेटा उसका शुक्रिया अदा करते हैं। चुनाँचे उसको शुक्रिये की आ़दत बचपन से डालें।

जब वह इनसानों का शुक्रिया अदा करेगा तो फिर उसको अल्लाह का शुक्रिया अदा करने का भी सबक़ मिल जायेगा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

من لم يشكر الناس لم يشكر الله

जो इनसानों का शुक्रिया अदा नहीं करता वह अल्लाह का भी शुक्रिया अदा नहीं करता।

तो यह शुक्रिये की आ़दत हमें डालनी चाहिये। अ़जीब बात है कि हमें इतना ज़्यादा इसका हुक्म दिया गया मगर आज शायद ही कोई माँ हो ज़ो अपने बेटे को शुक्रिये के अलफ़ाज़ सिखाये। "जज़ाकुमुल्लाह"

मुँह में चावलों का एक लुक़्मा डाला, जब लुक़्मा बच्ची ने खा लिया तो वह कहने लगी कि शुक्रिया कहो। (Say tank you) चुनाँचे उस बच्ची ने कहा Thank you फिर दूसरा लुक़्मा डाला फिर Thank you कहलवाया। हर लुक़्मा डालने के बाद वह माँ अपनी बच्ची से Thank you का लफ़्ज़ कहलवाती। मेरे अन्दाज़े के मुताबिक़ उस फ़्रान्सीसी लड़की ने उस खाने के दौरान क़रीब ३६ बार Thank you का लफ़्ज़ पनी बच्ची से कहलवाया होगा।

अब मैं हैरान था कि यह Thank you की आदत वाक़ई बच्ची की घुट्टी में पड़ जायेगी। और यह सारी उम्र शुक्रिया अदा करने वाली बन जायेगी। तो यह अ़मल तो मुसलमानों का था, मुसलमान बेटियों ने भुला दिया और काफ़िरों की बेटियों ने अपना लिया। इसलिये हमें चाहिये कि हम बचपन से ही बच्चे को यह आ़दात सिखायें। सलाम करने की आ़दत डालें, शुक्रिया अदा करने की आ़दत डालें।

जब माँ ने बच्चे को शुक्रिये की आ़दत नहीं डाली होती तो बड़ा होकर यह बच्चा न बाप का शुक्रिया अदा करता है, न बहन का शुक्रिया अदा करता है, न माँ-बाप का शुक्रिया अदा करता है। और कई तो ऐसे मन्हूस होते हैं कि ख़ुदा का शुक्रिया भी अदा नहीं करते। नाशुक्रे बन जाते हैं।

यह ग़लती किसकी थी? माँ ने शुरू से यह आ़दत डाली ही नहीं थी, इसलिये जब भी बच्चे को कोई चीज़ दें। बच्चे को कोई चीज़ खिलाएँ, उसको कपड़े पहनाएँ, कपड़े बदलवाएँ, कोई भी बच्चे का काम करें तो बच्चे को कहें कि बेटा मुझे "जज़ाकल्लाह" कहो। फिर बच्चा जब आपको "जज़ाकल्लाह" कहेगा तो उसको पता होगा कि मुझे शुक्रिया अदा करना है। यह एक आ़दत होगी जो बच्चे के अन्दर पुख़्ता हो जायेगी।

सबसे बड़ी बीमारी, दूसरों का दिल दुखाने से बचिये

एक बात बच्चे को सिखायें कि बेटे नेकियों में से बड़ी नेकी यह है कि तुम्हें किसी को दुख नहीं देना चाहिए। किसी को तकलीफ़ नहीं देनी चाहिए।

बच्चे छोटे होते हैं, एक दूसरे से जल्दी झगड़ पड़ते हैं, जल्दी लड़ पड़ते हैं। लेकिन जब आप बच्चे को सिखायेंगी कि बेटे तुम्हें किसी को तकलीफ़ नहीं देनी, किसी का दिल नहीं दुखाना तो ऐसा करने से बच्चे के दिल में इस बात की अहमियत आयेगी कि दूसरों का दिल दुखाना यह अल्लाह तआ़ला को बहुत नापसन्द है।

याद रखनाा कि बीमारियों में से सबसे बड़ी दिल की बीमारी, रूहानियत में सबसे बड़ी बीमारी किसी का दिल दुखाना है। बहुत सी बार ऐसी बातें कर देती हैं कि दूसरा तन्हाईयों में जाकर रोता है। दूसरे का दिल को दुखाना आज सबसे आसान काम बन गया, हालाँकि अल्लाह के यहाँ सबसे ज़्यादा बड़ा गुनाह यही है कि किसी बन्दे के दिल को दुखा दिया जाये। कहने वाले ने कहा:

मस्जिद ढा दे, मन्दिर ढा दे, ढा दे जो कुछ ढेंदा
पर किसी दा दिल न ढाँवें रब दिलाँ विच रहन्दा

तू मस्जिद गिरा दे मन्दिर गिरा दे, जो तेरे दिल में आता है गिरा दे, लेकिन किसी का दिल न गिराना इसलिये कि दिल में तो अल्लाह तआ़ला बसते हैं।

जब आप बच्चे को यूँ समझायेंगी कि दिल अल्लाह का घर है किसी का दिल न तोड़ना, तो बच्चे को एहसास होगा कि मुझे अच्छे अख़्लाक़ अपनाने हैं। दूसरे के दिल को कभी सदमा नहीं देना।

बच्चे को ग़लती पर माफ़ी माँगने का एहसास दिलाएँ

अगर बच्चा कभी लड़ पड़े तो आप देखें कि किसकी ग़लती है, उसको प्यार से समझायें कि बेटा अभी ग़लती की माफ़ी माँग लो तो क़ियामत के दिन अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त के सामने तुम्हारी यह ग़लती पेश ही नहीं होगी। बच्चे को माफ़ी माँगने की फ़ज़ीलत सुनायें। माफ़ी माँगने का तरीक़ा बतायें। उसके ज़ेहन से शर्म ख़त्म करें। वह बेझिझक होकर माफ़ी माँगने का आ़दी हो जायेगा।

ग़लतियाँ छोटों से भी होती हैं बड़ों से भी होती हैं, बच्चे को समझायें कि बेटे जब भी कोई ऐसी ग़लती हो जाये और आदमी कोई ऐसा काम कर बैठे जो काम नहीं करना था, तो ऐसे वक़्त में माफ़ी माँग लेनी चाहिये। बन्दे से भी माफ़ी माँगे। अपने बहन-भाईयों से अगर बेतमीज़ी करे या उनको कोई तकलीफ़ दी या झगड़ा किया तो वह उनसे भी माफ़ी माँगे।

फिर उससे कहें कि अल्लाह तआ़ला से भी माफ़ी माँग लो ताकि अल्लाह तआ़ला भी आप से नाराज़ न हों। हर वक़्त अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी की बात उसके दिल में डालें कि नेक काम करने से अल्लाह तआ़ला ख़ुश होते हैं, फ़लाँ काम करने से नाराज़ होते हैं, यहाँ तक कि बच्चे के दिल में यह बात उतर जाये कि अल्लाह की नाराज़गी सबसे बड़ी चीज़ है। यह बच्चे की तरबियत के लिये सब से ज़रूरी है।

अब इसका मतलब यह नहीं कि बच्चे को शुरू से ही क़ैदी बनाकर रख दें, कि उसको-खेलने कूदने का मौक़ा ही न दें। बच्चे की यही उम्र खेलने-कूदने की होती है। बच्चे को जायज़ तरीक़े से अच्छी तरह उछले-कूदने खेलने का मौक़ा दें। भागने दौड़ने का मौक़ा दें। यह बच्चे के जिस्मानी विकास के लिये ज़रूरी होता है।

बच्चों से बड़ों जैसी उम्मीद मत रखिये

बच्चा, बच्चा ही होता है। जब तक वह खेले-कूदेगा नहीं उसका जिस्मानी विकास और बढ़ोतरी कैसे होगी। और बच्चे से वही कुछ उम्मीद और अपेक्षा रखें कि जो बच्चे से रख सकते हैं। बड़ों जैसी उम्मीद आप उससे मत रखिये।

बच्चे कच्चे होते हैं, इसलिये बातें भी जल्दी भूल जाते हैं। इसलिये उनकी छोटी-छोटी बातों से मासूम बातों से कभी-कभी दरगुज़र भी कर दिया करें। अन्जान बन जाया करें। जैसा कि आपने देखा ही नहीं। तो इस तरह बच्चे की तरबियत अच्छी हो जाती है।

इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अ़लैहि के बारे में आता है कि तेरह साल की उम्र में उन्होंने दीनी उलूम को हासिल कर लिया था और एक जगह उन्होंने क़ुरआन करीम का दर्स भी देना शुरू कर दिया था।

अ़जीब बात है कि तेरह साल की उम्र में उन्होंने क़ुरआन का दर्स देना शुरू कर दिया था। हमारे बुज़ुर्गों ने छोटी उम्र में बड़े-बड़े कमालात हासिल कर लिए।

ख़्वाजा मासूम रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने अपने वालिद हज़रत मुजद्दिद् अल्फ़े-सानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि से बारह साल की उम्र में ख़िलाफ़त पाई थी। तो पहले वक़्तों के हज़रात को बचपन से नेकी मिलती थी। माँ की गोद से उनको असरात मिलते थे इसलिये बारह पन्द्रह साल की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते वे बड़े उलूम हासिल कर लिया करते थे। और बड़े-बड़े कमालात हासिल कर लिया करते थे।

इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने बचपन की उम्र में दर्से-क़ुरआन देना शुरू कर दिया। उनके दर्से-क़ुरआन में कई बड़े-बूढ़े सफ़ेद दाढ़ी वाले आकर बैठते थे। और उनके इल्मी मआ़रिफ़ (कमालात और ख़ूबियों) पर आधारित दर्स को सुना करते थे। चुनाँचे एक बार इमाम शाफ़ई दर्से-क़ुरआन दे रहे थे यानी क़ुरआन पाक की

तफ़सीर बयान कर रहे थे। दो चिड़ियाँ लड़ते-लड़ते उनके क़रीब आकर गिरीं। जैसे ही ये आकर गिरीं उन्होंने अपने सर से अ़मामा (पगड़ी) उतारा और दोनों चिड़ियों के ऊपर रख दिया।

जब उन्होंने दर्स (अपनी तक़रीर) के दौरान यह किया तो जो बड़े-बूढ़े क़िस्म के लोग थे, सन्जीदा उम्र के लोग थे, उन्होंने इस चीज़ को बुरा महसूस किया कि दर्से-कुरआन के दौरान आपने यह बच्चों वाली हरकत कर दी। इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अ़लैहि भी आख़िर आ़लिम बन गये थे और उनको अल्लाह ने समझ अ़ता फ़रमा दी थी। यह भी समझ गये। चुनाँचे उन्होंने अ़मामा (पगड़ी) उठाकर फिर अपने सिर पर रख लिया और हदीस सुनाई कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

الصبی صبی لو کان ابن نبی

बच्चा बच्चा ही होता है अगरचे किसी नबी का बेटा ही क्यों न हो।

तो इस हदीस को सुनाने से जिन लोगों के दिलों में कोई बात वारिद हुई थी वह बात साफ़ हो गयी। तो बच्चा तो बहरहाल बच्चा ही होता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का बच्चों से प्यार व मुहब्बत

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बच्चों के साथ बड़े प्यार व मुहब्बत से पेश आते थे। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु एक सहाबी हैं, बचपन से ही नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आते जाते थे।

खुद फ़रमाते हैं कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझे कोई काम कहा कि जाकर यह काम कर दो। मैं घर से

बाहर निकला, मैंने रास्ते में लड़कों को खेलते देखा तो मुझे खेल अच्छा लगा, मैं खेल देखने में मसरूफ़ हो गया। बहुत देर हो गई नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरा इन्तिज़ार फ़रमाते रहे। यहाँ तक कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी घर से बाहर तशरीफ़ लाये, मुझे खड़े हुए देखकर आप मेरे पास आये। प्यार से मेरे सर पर हाथ फैरा और कहा कि अनस! मैंने तुझे जो काम कहा था वह कर आओ। मैंने कहा कि अभी करके आता हूँ।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने डाँटा नहीं, नबी करीम ने मारा नहीं, नबी पाक ने टोका नहीं, बस अपनी बात दोबारा याद दिला दी, कि अनस! मैंने तुझे काम कहा था वह जाकर कर आओ। कहने लगे कि मैं भाग कर गया और मैंने वह काम कर दिया। तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरबियत का यह मामला था कि बच्चे के साथ प्यार व मुहब्बत के साथ पेश आते थे।

खुद फ़रमाते हैं कि एक बार मेरी वालिदा ने एक अंगूर का गुच्छा दिया कि जाकर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश कर आओ। फ़रमाने लगे कि मैं अंगूर का गुच्छा लेकर चल पड़ा। छोटी उम्र थी, रास्ते में ख़्याल आया कि पता नहीं अंगूर कितने मीटे हैं, मैंने उनमें से एक खा लिया। जब खाया तो अच्छा लगा, फिर दूसरा खा लिया फिर तीसरा खा लिया। चलता भी जा रहा था, और हर-हर क़दम पर अंगूर भी खाता जा रहा था।

कहने लगे कि पता तब चला जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के घर के क़रीब पहुँचा तो अंगूर का पूरा गुच्छा ख़त्म हो चुका था। मैं सोचने लगा कि अब मैं कैसे आगे जाऊँ। और इस बात को गोल कर गया।

काफ़ी दिनों के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमारे घर तशरीफ़ लाये, मेरी वालिदा ने बातों के दरमियान पूछा ऐ अल्लाह के महबूब! मैंने आपकी ख़िदमत में तोहफ़ा भेजा था वे अंगूर आपको

पसन्द आ गये। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया मुझे अंगूर नहीं मिले। आप समझ गये कि वे मेरे पेट में पहुँच गये।

चुनाँचे उसके बाद जब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मुझे मिलते थे, प्यार से मुझे देखते थे। प्यार से मेरा कान पकड़ कर कहते: अनस मेरे अंगूर का गुच्छा कहाँ है। आप भी मुस्कुराते और मैं भी मुस्कुराता। और फिर इस बात को छोड़ देते थे।

देखो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कितने प्यार से इस बच्चे की तरबियत फ़रमाई। प्यार और शफ़क़त का मामला फ़रमाया, खुद फ़रमाते हैं कि मेरे भाई ने एक तोता पाला हुआ था, परिन्दा पाला हुआ था और एक बार उसका परिन्दा मर गया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उसके बाद जब भी हमारे घर आये। मेरे भाई को चूँकि उस परिन्दे के मरने से सदमा पहुँचा था, क्योंकि वह उससे खेलता था, नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरे भाई को बुलाते और फ़रमाते:

يا اباعميرما فعل النغير

ऐ अबू उमैर! तेरे परिन्दे ने तेरे साथ क्या किया कि तुझे छोड़कर चला गया।

यानी छोटे बच्चे के साथ ऐसी बातें करते जो छोटे बच्चे के दिल के मुताबिक़ हों। उसके ज़ेहनी स्तर के मुताबिक़ हों। चुनाँचे ये बच्चे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से दिली मुहब्बत करने वाले बन जाते।

बच्चों की तरबियत महबूबे-खुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की कई साल ख़िदमत की। आपने न कभी

मुझे मारा और न कभी टोका, न कभी मुझे रोका। मैंने कभी आपकी ज़बान से "ना" का लफ़्ज़ नहीं सुना। इतने अच्छे तरीक़े से अल्लाह के नबी मेरी तरबियत फ़रमाते थे।

यह तरबियत हमारे लिये आज रोशनी का मीनार है। माँओं को चाहिये कि अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नक़्शे-क़दम पर चलते हुए बच्चों की प्यार और मुहब्बत के साथ तरबियत करें।

लेकिन प्यार और मुहब्बत का यह मतलब नहीं कि बेजा लाड-प्यार के ज़रिये बच्चे को बिगाड़ डालें। याद रखना कि बच्चा ग़लती करे तो ग़लती की निशानदेही ज़रूर करनी चाहिये। ग़लती को देखकर चुप हो जायेंगी तो बच्चा ग़लती के ऊपर पक्का हो जायेगा। तो ग़लतियों पर ख़ामोश रहना बड़ी ग़लती हुआ करती है। प्यार से समझायें, उलझें नहीं। नाराज़ न हों, कोसें नहीं, बल्कि प्यार से उसे समझायें कि बेटा ऐसे नहीं, ऐसे करना चाहिये।

माँयें रोक-टोक के बजाये समझायें

जब आप समझायेंगी, आ़म तौर पर देखा गया है कि माँ तो सिर्फ़ रोक-टोक करती हैं, समझाती नहीं। बच्चों को बात बैठकर समझानी पड़ती है, दलीलें देनी पड़ती हैं। बच्चा बात को सुनता है तब जाकर वह बात उसके ज़ेहन में आती है।

अक्सर तो यही देखा गया है कि बच्चा अगर कोई ग़लती कर ले, बद्तमीज़ी कर ले तो माँ गुस्से में आकर दो थप्पड़ लगा देती हैं और फिर खुद बैठकर रोने लग जाती हैं। ये दो थप्पड़ लगाकर खुद बैठकर रोने से क्या फ़ायदा? इससे बेहतर था कि बच्चे को प्यार से बैठाकर समझातीं। साबित करतीं कि बेटे जो काम आपने किया यह बुरा काम है। जब बच्चे के ज़ेहन में वह बात उतर जाती तो आईन्दा उस ग़लती से बाज़ आ जाता।

याद रखें कि अगर बच्चे को किसी बुरे काम के ऊपर आप सज़ा देना चाहती हैं तो सज़ा ऐसी हो कि बच्चा उसको बोझ समझे, मगर हलका बोझ समझे। जो बच्चे के लिये नफ़रत का सबब न बने, तंगी का सबब न बने। बल्कि बच्चे को समझाना होता है।

और अगर बुरे काम से माँ बच्चे को रोक-टोक करती है तो बच्चे का हक़ बनता है कि जब वह कोई अच्छा काम करता है तो माँ फिर उसे शाबाशी भी दे।

आ़म तौर पर माँ बच्चों को शाबाशी नहीं देतीं। उनकी तारीफ़ नहीं करतीं। बच्चे तारीफ़ से ख़ुश हो जाते हैं। बच्चे अपने अच्छे काम को देखकर ख़ुश होते हैं। जिस काम को आप समझें कि यह अच्छा है तो बच्चे की ख़ूब तारीफ़ करें उसको शाबाशी और बधाई दें। जब बच्चे को आप शाबाशी देंगी तो बच्चा उस काम को बार-बार करने की कोशिश करेगा।

मिसाल के तौर मेहमान आये, बच्चे ने जाकर सलाम किया। फिर आकर माँ को बताया अम्मी मैं सलाम करके आया हूँ। तो सारा दिन बच्चे को बार-बार कहती रहें कि बेटे तूने बहुत अच्छा काम किया, मेरा दिल बड़ा ख़ुश हुआ।

एक तो बच्चे की आ़दत पक्की हो जायेगी दूसरे वह यह भी महसूस करेगा कि मैं अच्छे काम भी करता हूँ। यह न महसूस करे कि माँ तो उस शख़्सियत का नाम है जो हर वक़्त बन्दे को रोक-टोक करने वाली होती है। और अगर रोक-टोक भी करें तो बच्चे को शाबाशी भी दें। तारीफ़ें भी करें। हर अच्छा काम करने से बच्चे को इनाम दें कि इनाम से बच्चे और ज़्यादा राग़िब होते हैं। यह तो अब जानवरों में भी देखा गया है।

देखिये मछलियाँ जो हैं वे करतब करती हैं, छलांगें लगाती हैं, मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खेल करती हैं तो उनको भी उनको ट्रेनिंग देने वाले मुँह के अन्दर मछलियाँ डालते हैं। तो अगर एक जानवर को

इनाम मिलता है तो जानवर भी तरबियत पा जाता है। अगर इनसान के बच्चे को इनाम मिलेगा फिर वह क्यों नहीं तरबियत पायेगा। अब इन सारी बातों का ख़्याल माँ को इसलिये रखना होता है कि माँ हर वक़्त घर में होती है। मगर इसका यह मतलब नहीं कि माँ के ज़िम्मे सब कुछ पड़ गया, बाप साहिब फ़ारिग़ हो गये।

बच्चों की तरबियत और माँ-बाप की ज़िम्मेदारियाँ

जब बाप घर में आये उसे चाहिये कि अब अपनी बीवी को ज़रा फ़ारिग़ कर दे, बच्चे को ख़ुद लेकर बैठे। प्यार की बातें करे। बच्चे की तरबियत की बातें करे।

जब बच्चा माँ से भी तरबियत की बातें सुनेगा बाप से भी तरबियत की बातें सुनेगा तो फिर बच्चे के अन्दर दीनदारी पक्की हो जायेगी। मगर अब तो हालत यह है कि जब माँ होती है तो बच्चे को डाँट रही होती है, और जब बाप आता है वह उसकी माँ को डाँट रहा होता है। तो बच्चा यही समझता है कि दुनिया में डाँट के सिवा कुछ नहीं होता। बच्चे से अलग जाकर अपनी यह हसरत वहाँ मिटा लें, बच्चे के सामने करेंगे तो न उसके दिल में माँ का सम्मान रहेगा और न बाप की बड़ाई रहेगी। इस चीज़ का बड़ा ख़्याल करना चाहिये।

बच्चे ज़िद्दी क्यों होते हैं?

यह बात भी ज़ेहन में रखें कि जब बच्चे को अहमियत नहीं मिलती तो फिर बच्चा रो-रोकर ज़िद करके अपनी अहमियत को जताता है। तो यह बच्चे के अन्दर फ़ितरी तक़ाज़ा होता है। वह अहमियत चाहता है। अगर आप बच्चों को नज़र-अन्दाज़ करना शुरू कर दें तो यह बच्चा या तो रोएगा या ज़िद करेगा। या आपका काम नहीं करेगा और हक़ीक़त में वह आपसे अहमियत और तवज्जोह माँग रहा होता है।

मायें इस बात को समझने की कोशिश करें। अगर बच्चे को वैसे ही आप अहमियत दे देंगी तो फिर ज़िद नहीं करेगा। बल्कि काम जल्दी कर दिया करेगा। बच्चे के काम में जब रुकावट पैदा हो या नज़र-अन्दाज़ करे तो फिर बच्चे को गुस्सा आता है। हर माँ को चाहिये कि वह बच्चे की नफ़्सियात (मनोविज्ञान) का मुताला करे।

याद रखना हर बच्चा अलग दिमाग़ लेकर पैदा होता है। ज़रूरी नहीं होता कि एक माँ-बाप के सब बच्चे एक ही शख़्सियत के मालिक हों। कुछ बच्चों के अन्दर बुज़दिली होती है, कुछ के अन्दर शर्मीलापन होता है। कुछ के अन्दर बहादुरी होती है। कुछ के अन्दर ज़िद्दीपन होता है। मुख़्तलिफ़ बच्चों की तबीयतें मुख़्तलिफ़ होती हैं।

बच्चों की नफ़्सियात समझने के तरीक़े

माँ को चाहिये कि वह बच्चे की नफ़्सियात का मुताला (अध्यन) करे। मुताला करने के तीन तरीक़े हैं- एक ध्यान यह रखे कि मैं बच्चे को जब यूँ कहती हूँ वह कैसे उसका जवाब देता है और उस वक़्त वह कैसा रवैया अपनाता है। किस वक़्त में कौनसी बात मान लेता है। किस वक़्त में कौनसी बात नहीं मानता है।

जब यह ऐसी बातों का ध्यान रखेगी उसको पता होगा कि मुझे किस बच्चे को कैसे संभालना है और उसके साथ कैसा रवैया इख़्तियार करना है। एक तो इस बात का ध्यान करने से और दूसरे अगर कोई बच्चा बुरी बात कर जाये तो फिर जब प्यार का वक़्त हो, वही बच्चा जिसने ज़िद की, जिसने बात न मानी, और फिर माँ से थप्पड़ भी खा लिये, थोड़ी देर के बाद खाना खाते वक़्त अम्मी से प्यार की बातें बैठा कर रहा होगा।

जब आप देखेंगी कि अम्मी से प्यार की छोटी-छोटी बातें कर रहा है उस वक़्त आप उससे सवालात पूछें: बेटे! आपने ऐसा क्यों किया था? आपके ज़ेहन में सोच क्या थी? तो यह माँ उससे ये सवालात

पूछेगी। इन सवालात के पूछने से बच्चे की ज़ेहनी कैफ़ियत सामने आयेगी। यह दूसरा तरीक़ा है बच्चे की नफ़्सियात को जानने और समझने का।

तीसरा तरीक़ा यह है कि बच्चे के साथ उसके मुताबिक़ बर्ताव करें। और एक तरीक़ा यह है कि बच्चे से मश्विरा कर लिया करें, कि बेटे एक बात बताओ कि जब मैं तुम्हें ऐसा कहती हूँ और आप मेरी बात मान लेते हो, देखो मुझे कितनी ख़ुशी होती है। कई बार ऐसा होता है कि मैं कहती हूँ मगर तुम नहीं मानते, वजह क्या होती है? तो बच्चे से मश्विरा लिया करें। बच्चा बतायेगा कि यह वजह थी जो मैंने आपकी बात न मानी।

तो तीन चीज़ों से बच्चे की शख़्सियत का पता चल जाता है। मुशाहदे (हालात को देखने और उसकी हरकतों का अध्यन करने) के ज़रिये से, सवालात के ज़रिये से, मश्विरे के ज़रिये से। माँ को चाहिये कि बच्चे की शख़्सियत की बातें ख़ुद महसूस करे। अपने मियाँ को बता दे। फिर मियाँ-बीवी मश्विरा कर लें कि इस बच्चे को हमें कैसे बनाना है। और कैसे तरबियत करनी है।

हमारे बुज़ुर्ग तो बच्चों की ख़ूब तरबियत किया करते थे। याद रखना हर अ़ज़ीम (महान और बड़े) इनसान के पीछे अ़ज़ीम माँ-बाप हुआ करते हैं। जिसकी वजह से बच्चे बड़े बनते हैं।

अ़ज़ीम माँ! बच्चे को कभी बद्दुआ़ न देना

आज बच्चियों को तरबियत का पता नहीं होता। कई तो बेचारी ऐसी होती हैं कि छोटे से बच्चे से अगर ग़लती हुई या बच्चे ने रोना शुरू कर दिया तो ग़ुस्से में आकर उनको पता ही नहीं चलता कि क्या कह रही हैं। कभी अपने आपको कोसना शुरू कर देती हैं। मैं मर जाती तो अच्छा था। कभी बच्चे को बद्दुआ़यें देनी शुरू कर देती हैं।

याद रखना कि बच्चे को कभी बद्दुआ़यें न देना, कोई ज़िन्दगी में

ऐसा वक़्त न आये कि गुस्से में आकर बद्दुआ देने लग जाना, ऐसा कभी न करना। अल्लाह के यहाँ माँ का जो मक़ाम होता है, माँ के दिल और ज़बान से जो दुआ निकलती है वह सीधी ऊपर जाती है, अर्श के दरवाज़े खुल जाते हैं।

तो दुआ अल्लाह के यहाँ पेश कर दी जाती है, और क़बूल कर दी जाती है। मगर शैतान बड़ा मर्दूद है वह माँ के ज़ेहन में यह डालता है कि मैं गाली तो देती हूँ मगर मेरे दिल से नहीं होती। यह शैतान का बड़ा फन्दा है। हक़ीक़त में तो यह बद्दुआ के अलफ़ाज़ कहलवाता है और माँ को तसल्ली देता है कि तूने कहा तो था कि मर जाओ मगर तुम्हारे दिल में नहीं था। कभी भी शैतान के धोखे में न आना। बच्चे को बद्दुआ न देना।

कई माँ बच्चों को बद्दुआयें देकर उनकी आक़िबत (अन्जाम और आखिरत) ख़राब कर देती हैं। अपनी ज़िन्दगी बरबाद कर देती हैं।

माँ की बद्दुआ का असर

एक औरत को अल्लाह ने बेटा दिया मगर वह गुस्से में क़ाबू नहीं पा सकती थी। छोटी-छोटी बातों पर बच्चे को कोसने लग जाती। एक बार बच्चे ने कोई बात ऐसी कर दी गुस्सा आया और कहने लगी कि तू मर जाता तो अच्छा था।

अब माँ ने जो ये अलफ़ाज़ कह दिये अल्लाह ने उसकी दुआ को क़बूल कर लिया, मगर बच्चे को उस वक़्त मौत नहीं दी बल्कि उस बच्चे को अल्लाह तआला ने नेक बनाया। अच्छा बनाया लायक़ बनाया। वह बच्चा बड़ा हुआ और ऐन भरपूर जवानी का वक़्त था, यह नेक बन गया, लोगों में इज़्ज़त हुई। लोग कहते कि बेटा हो तो फ़लाँ जैसा हो।

फिर अल्लाह ने उसको अच्छा मुक़द्दर भी दिया। कारोबार भी अच्छा हो गया था लोगों में उसकी इज़्ज़त थी। तज़किरे और चर्चे थे।

अब माँ ने उसकी शादी का प्रोग्राम बनाया। ख़ूबसूरत लड़की को ढूँढ़ा। शादी की तैयारियाँ कीं।

जब शादी में सिर्फ़ चन्द दिन बाक़ी थे, उस वक़्त अल्लाह ने उस बेटे को मौत अ़ता कर दी।

अब माँ रोने बैठ गई। मेरा तो जवान बेटा रुख़्सत हो गया और रो-रोकर हाल ख़राब हो गया। किसी अल्लाह वाले ने ख़्वाब में बताया कि हमने उसकी दुआ़ को क़बूल किया था जिसने बचपन में कहा था कि तू मर जाता तो अच्छा था। हमने नेमत उस वक़्त वापस नहीं ली। हमने इस नेमत को भरपूर बनने दिया। जब यह ऐन जवानी के आ़लम में पहुँचा, नेमत पक कर तैयार हो गई तो हमने उस वक़्त फल तोड़ा ताकि माँ को समझ आ जाये कि उसने नेमत की नाक़द्री की।

अब सोचिये अपनी बद्दुआ़यें अपने सामने आती हैं। यह क़सूर किसका हुआ? औलाद का हुआ या माँ-बाप का हुआ? इसलिये बच्चियों को दीनी तालीम देना और उनको समझाना कि बच्चों की तरबियत कैसे की जाती है, यह इन्तिहाई ज़रूरी है।

हमारा यह उनवान इन्शा-अल्लाह आगे भी चलेगा। इसमें बताया जायेगा कि माँ को बच्चों की तरबियत के लिये किन-किन बातों का ख़्याल रखना चाहिये। यह इन्शा-अल्लाह कल बताया जायेगा।

आज छब्बीसवाँ रोज़ा है। आने वाली रात सत्ताईसवीं रात है। सब औ़रतें आज की रात अल्लाह से ख़ूब माँगें अपनी औलाद के बारे में, अपने शौहरों के बारे में, अपने घर वालों के बारे में, उम्मते मुस्लिमा के बारे में।

आज की रात को इबादत में गुज़ारने की नीयत कर लें। अगर साल में एक रात हमने जाग कर भी गुज़ार दी तो कौनसा फ़र्क़ पड़ता है। अब रमज़ान के जितने रोज़े गुज़र चुके आपको उनकी थकावटें तो याद नहीं लेकिन उनका अज्र आपके नामा-ए-आमाल में लिखा हुआ है।

इसी तरह आज रात और आप जागेंगी तो यह थकावट तो आख़िरकार उतर जायेगी और इसका अज्र आपके नामा-ए- आमाल में लिखा जायेगा।

तो उम्मते-मुस्लिमा के लिये दुआएँ माँगें। अपने लिये, घर वालों के लिये, सबके लिये दुआएँ माँगें और आज की रात मस्जिद का जो प्रोग्राम होगा अपने मर्दों को बाक़ायदगी के साथ तर्ग़ीब (प्रेरणा) के साथ भेजिए ताकि वे भी यहाँ की दुआओं से फ़ायदा उठाएँ। बयानात से फ़ायदा उठाएँ।

अल्लाह तआ़ला आजकी रात हम सबके गुनाहों से मग़फ़िरत की रात बना दे और हमें अल्लाह तआ़ला आज की रात में अपना वस्ल (यानी शबे-क़द्र) अ़ता फ़रमा दे, और एतिकाफ़ वाले लोग जो अल्लाह का दर पकड़ कर बैठे हैं, ये तो अल्लाह का दीदार चाहते हैं, ये अल्लाह की रहमतें चाहते हैं। अल्लाह करे आ़ज की रात उनके लिये अल्लाह की निकटता हासिल करने की रात बन जाये।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَـآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ○

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

औलाद की तरबियत कैसे करें? (4)

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

औलाद की तरबियत कैसे?

बच्चा ग़लती करे, आपको तकलीफ़ पहुँचाए। जितना मर्ज़ी सताये, किसी हाल में भी बच्चे को बद्दुआ न दें। शैतान धोखा देता है, माँ के दिल में यह बात डालता है कि मैं दिल से बद्दुआ नहीं दे रही, बस ऊपर-ऊपर से कह रही हूँ। और इस धोखे में कई बार माँयें आ जाती हैं और ज़बान से बुरे अलफ़ाज़ कह जाती हैं।

नेमत की नाक़द्री

याद रखना यह औलाद अल्लाह की नेमत है। इसको बद्दुआयें देना नेमत की नाक़द्री है। अल्लाह कितना करीम है हम जैसे नाक़द्रों को भी नेमतें अ़ता फ़रमा देता है। उसकी क़द्र कीजिये और उसको दुआयें दीजिये बल्कि ये तंग करें तो इसके बदले में आप दुआएँ दें। यह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत है-

जो आ़सी को कमली में अपनी छुपा ले
जो दूशमन को भी ज़ख़्म खाकर दुआ दे
उसको और क्या नाम देगा ज़माना
वह रहमत नहीं है तो फिर और क्या है

तो रहमत का तक़ाज़ा यही है, मुहब्बत का तक़ाज़ा यही है कि बच्चे चाहे जितनी भी तकलीफ़ पहुँचाएँ तो माँ आख़िरकार माँ होती है। किसी हाल में भी अपनी ज़बान से बद्दुआ न दे। बल्कि बच्चों के लिये ख़ूब दुआएँ किया करे। रात की तन्हाईयों में अपनी नमाज़ों में अल्लाह से लौ लगाकर बैठा करे।

हज़रत मरियम अलैहस्सलाम की माँ की दुआ

बीबी मरियम अलैहस्सलाम के लिये उनकी माँ ने कितनी दुआएँ कीं। और फिर यें दुआयें करती रहें। यही नहीं कि बच्चे की पैदाईश हो गई तो दुआएँ बन्द कर दीं। कुरआन मजीद में है कि यह उसके बाद भी वे दुआएँ करती रहीः

اِنِّیٓ اُعِیۡذُھَا بِکَ وَذُرِّیَّتَھَا مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ (سورۃ ال عمران)

ऐ अल्लाह! मैंने अपनी इस बेटी को और इसकी आने वाली नसल को शैतान मर्दूद के ख़िलाफ़ आपकी पनाह में दिया।

तो गोया बच्ची छोटी है मगर माँ की मुहब्बत देखिये। सिर्फ़ इस बच्ची के लिये ही दुआएँ नहीं माँग रही बल्कि उसकी आने वाली नसलों के लिये भी दुआयें माँग रही हैं। अल्लाह रब्बुल्- इ़ज़्ज़त को माँ की यह बात इतनी पसन्द आई कि फ़रमायाः

فَتَقَبَّلَھَا رَبُّھَا بِقَبُوۡلٍ حَسَنٍ وَّاَنۡۢبَتَھَا نَبَاتًا حَسَنًا (سورۃ ال عمران)

अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने फिर उस बच्ची को क़बूल फ़रमा लिया और फिर उसकी तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) ऐसी अच्छी फ़रमाई कि बहुत ही अच्छी तरबियत।

तो यह माँ की दुआ थी और मुरब्बी (पालने वाला और तरबियत करने वाला) तो हक़ीक़त में अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त है। वह बन्दे की तरबियत फ़रमाते हैं। तो माँ की दुआओं को क़बूलियत हासिल है। इसलिये दुआ कीजिये ताकि बच्चे पर अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की ख़ास नज़र हो जाये।

बच्चों की हिफ़ाज़त के लिये अनमोल वज़ीफ़ा

जब बच्चे सो रहे हों तो उन पर हिफ़ाज़त का 'हिसार' (घेरा और दायरा) ज़रूर बना लिया करें। हमारे बुज़ुर्गों ने एक हिफ़ाज़त का हिसार बताया और उसकी इतनी बरकतें हैं, उन्होंने फ़रमाया कि मौत के सिवा कोई मुसीबत नहीं आ सकती।

मेरे पीर-व-मुर्शिद ने जब इस आ़जिज़ को इस हिसार की इजाज़त दी तो फ़रमाने लगे कि हमने इस हिसार को कई बार मरने वालों को जो क़ब्र में पहुँच चुके थे, उनके गिर्द भी बाँधा, तो कश्फ़ की नज़र से देखा कि अल्लाह ने उनको उस रात के क़ब्र के अ़ज़ाब को माफ़ फ़रमा दिया। तो यह बुज़ुर्गों की तरफ़ से बहुत ही क़ीमती अ़मल है और इस आ़जिज़ को इसकी इजाज़त है। और आज यह आ़जिज़ सब सुनने वाले मर्द और औरतों को इजाज़त दे रहा है ताकि ये अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की हिफ़ाज़त में आ जायें।

वह हिसार (दायरा और घेरा) क्या है? वह यह है कि पहले दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया करें, फिर अल्हम्दु शरीफ़ पूरी सूरः पढ़ लिया करें। फिर आयतुल्-कुर्सी पढ़ें और चारों कुल पढ़ें, आख़िर में दुरूद शरीफ़ पढ़ लें। यानी अव्वल व आख़िर में दुरूद शरीफ़ पढ़ना और दरमियान में सूरः फ़ातिहा आयतुल्-कुर्सी और चारों कुल पढ़ना और यह सब कुछ पढ़कर अपने गिर्द, बच्चों के गिर्द, घर के गिर्द, जहाँ बिज़नेस, दुकान दफ़्तर वग़ैरह हो उन सबका तसव्वुर करके उनके गिर्द अपने तसव्वुर में एक दायरा बना दें। जिस-जिस चीज़ के गिर्द आप दायरा बना देंगी, वे सब चीज़ें अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की हिफ़ाज़त में आ जायेंगी।

अल्लाह के कलाम की हमने बड़ी बरकतें देखीं और सैकड़ों वाक़िआ़त हैं अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की हिफ़ाज़त के, जिनको बताने का अब मुनासिब वक़्त नहीं है। इसलिये इतना कह देना काफ़ी है कि यह

हिसार जिस दिन में और जिस रात में आप बच्चों के गिर्द बनायेंगी आपके बच्चे फ़ितनों से, आफ़तों से, मुसीबतों से महफ़ूज़ रहेंगे।

और जिस दिन कोई मुसीबत आनी होगी आप देखना कि आप इस अ़मल को भूल बैठेगीं। तब कोई मुसीबत आयेगी, वरना तो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की हिफ़ाज़त में रहेंगे।

वुज़ू की हालत में खाना पकाईये

बच्चों के लिये खाना पकाया करें तो कोशिश किया करें कि वुज़ू की हालत में खाना पकाएँ। अगर वुज़ू रखने में मुश्किल हो तो कम से कम सुब्हानल्लाह पढ़ लिया करें। अल्हमदु लिल्लाह पढ़ लिया करें। अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करें। ला इला-ह इल्लल्लाह का विर्द किया करें।

यह विर्द इन अलफ़ाज़ का तो औ़रत हर हाल में कर सकती है। जिस्म पाक हो फिर भी कर सकती है, नहीं पाक हो फिर भी इनको पढ़ सकती है। नापाकी की हालत में सिर्फ़ कुरआन मजीद पढ़ने से मना किया गया है बाक़ी इस क़िस्म के अज़कार (वज़ीफ़े और दुआयें) ज़बान से किये जा सकते हैं।

तो खाना पकाते हुए अगर आप अल्लाह का ज़िक्र करेंगी जैसे सुब्हानल्लाह, उसकी बरकतें होंगी। और अगर पाकी के दिन हैं और आपको कुछ सूरतें याद हैं तो उन सूरतों को पढ़िये ताकि कुरआन पढ़ने की बरकतें आपके खाने में आ जायें। यह सहाबियात (सहाबी औ़रतों) का अ़मल है।

वुज़ू की हालत में खाना पकाना

सहाबियात रज़ि० का अ़मल

एक सहाबिया (सहाबी औ़रत) रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने तन्दूर पर रोटियाँ लगवाईं। जब रोटी पक कर तैयार हो गईं तो फ़रमाने लगीं: ले

बहन! मेरा तो खाना भी तैयार हो गया और मेरे तीन पारे की तिलावत भी मुकम्मल हो गई। मालूम हुआ कि जितनी देर में ये रोटियाँ लगाती थीं, ये ज़बान से अल्लाह का कुरआन पढ़ती रहती थीं। तो यह सहाबियात रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्-न की सुन्नत (तरीक़ा और अ़मल) है। आप भी इसको अदा करें।

कुछ समय पहले कराची में हमारे संबधित लोगों में से किसी के यहाँ जाना पड़ा। उन्होंने कहा कि हज़रत! यह आपका खाना घर में बना तो इसको पकाने के लिये मेरी बीवी ने २१ बार सूरः यासीन शरीफ़ मुकम्मल पढ़ी। ख़ुशी हुई कि आज भी ऐसी नेक औ़रतें हैं जो बावुज़ू खाने बनाती हैं। और खाना पकाने के दौरान अल्लाह का क़ुरआन उनकी ज़बान पर होता है।

छोटी-छोटी आयतें याद हों तो वही पढ़ लीजिये। सूरः इख़्लास (कुल हुवल्लाह) तो हर मुसलमान बन्दे को याद होती है। इसी को पढ़ती रहें तो यह भी काफ़ी है। और अगर सूरतें भी नहीं पढ़ सकती, पाकी की हालत नहीं है, तो चलो ज़िक्र कर लें- सुब्हानल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह, अल्लाहु अक्बर। ये कलिमात पढ़ने में बहुत आसान हैं। बुख़ारी शरीफ़ की आख़िरी हदीस यह है:

كلمتان خفيفتان على اللسان ثقيلتان فى الميزان حبيبتان الى الرحمن:
سبحان الله وبحمده سبحان الله العظيم

कि ये दो कलिमे ऐसे हैं कि पढ़ने में बहुत हलके हैं और अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त को बड़े महबूब हैं लेकिन आमाल की तराज़ू के अन्दर बड़े भारी हैं। वे दो कलिमे ये हैं:

सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही सुब्हानल्लाहिल् अ़ज़ीम।

वुज़ू की हालत में पके हुए खाने के असरात

आप जब इस तरह क़ुरआन पढ़कर और ज़िक्र करके खाना पकाएँगी, यह खाना आपके मियाँ खायेंगे तो उनके दिल में नेकी का

शौक़ आयेगा। बच्चे खाएँगे तो उनके दिल के अन्दर नेकी का शौक़ आयेगा। यह जो कुछ हम खाते हैं वही तो हमारे जिस्म का गोश्त बनता है। अगर हलाल माल है और ज़िक्र से पका हुआ है तो फिर उसके टिशूज़ (शरीर के तंतुः) बनेंगे यक़ीक़न उनमें अल्लाह की मुहब्बत समोई हुई होगी। और अगर हराम खायेंगे, नापाकी और ग़फ़लत की पकी हुई ग़िज़ा खाएँगे, पाकी-नापाकी का ख़्याल नहीं रखेंगे, तो फिर जो ग़िज़ा खाएँगे उसके ज़रिये जो टिशूज़ (शरीर के तंतुः) जिस्म में जाकर बनेंगे इनसान को वे गुनाह पर उकसाएँगे।

जिस माँ ने अपने बच्चों को ग़िज़ा अच्छी दे दी वह समझ ले कि मैंने बच्चों की आधी से ज़्यादा तरबियत कर दी, उसका इतना असर है बच्चों के नेक बनने में।

लिहाज़ा उनको ज़िक्र वाला खाना खिलाईये और वुज़ू की हालत में खाना खिलाईये। ताकि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त उनके असरात बच्चों पर वारिद फ़रमाएँ।

बच्चे को सुकून की नींद दिलाने की दुआ

जब बच्चे रात को सोने लगें, कई बार बच्चे रात को जल्दी नहीं सोते, रोते रहते हैं। नींद नहीं आती। वजह यह है कि वे बेचारे बोल भी नहीं सकते। जिस्म की तकलीफ़ बता भी नहीं सकते। माँ खुद अन्दाज़ा लगाये तब उसे पता चलेगा कि फ़लाँ वजह से रो रहा है, वरना नहीं।

अब माँ खुद-ब-खुद उसपर गुस्सा होती है। रोता है सो नहीं रहा। ऐसे वक़्त में बरदाश्त से काम लीजिये। एक दुआ बुज़ुर्गों ने बताई है:

اَللّٰهُمَّ غَارَتِ النُّجُوْمُ وَهَدَاَتِ الْعُيُوْنُ اَنْتَ حَیٌّ قَیُّوْمٌ لَا تَاْخُذُكَ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ

يَاحَیُّ يَاقَيُّوْمُ اَهْدِ لَيْلَهٗ وَاَنِمْ عَيْنَهٗ

अल्लाहुम्-म ग़ारतिन्नुजूमु व ह-द-अतिल् उयूनु अन्-त हय्युन् क़य्यूमुन् ला तअ्खुज़ु-क सि-नतुंव्-व ला नौमुन् या हय्यु या क़य्यूमु अह्दि लैल-हू व अनिम् अैनहू।

जब यह दुआ पढ़कर आप बच्चे पर दम करेंगी तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त बच्चे को सुकून की नींद अ़ता फ़रमा देंगे। अगर बच्ची है तो "लैलहू" की जगह "लैलहा" और "अ़ैनहू" की जगह "अ़ैनहा" के अलफ़ाज़ इस्तेमाल कर लें।

इस तरह इस दुआ को पढ़ लेने से और दम कर देने से बच्चों को नींद जल्दी आ जाती है।

बच्चे कोरे काग़ज़ के तरह हैं

याद्द रखिये कि बच्चे कोरे काग़ज़ की तरह होते हैं। उन पर ख़ूबसूरत फूल बूटे बनाना या उल्टी सीधी लकीरें लगाना यह सब माँ का काम होता है। अगर माँ ने अच्छी परवरिश की तो सब फूल-बूटे बन गये और अगर उसको तरबियत का पता नहीं तो फिर उसने उल्टी-सीधी लकीरें लगा दीं। और गोया उन बच्चों को बिगाड़ने में उनकी मददगार बन गई।

परवरिश से मुराद यही नहीं होता कि बच्चे का जिस्म बड़ा करना होता है, बल्कि परवरिश से मुराद यह है कि जिस तरह जिस्म बढ़े साथ ही दिल की सिफ़तें भी बढ़ें। दिमाग़ी तरक़्क़ी और सलाहियतें भी खुलकर सामने आयें।

तो जो अच्छी माँ होती हैं वे सिर्फ़ बच्चे के जिस्म को बड़ा नहीं करतीं, उसके दिल को भी बड़ा करती हैं, उसके दिमाग़ को भी बड़ा करती हैं। और उसके अन्दर ऐसी सोच डाल देती हैं कि छोटी उम्र में ही उसकी दिमाग़ी सलाहियतें खुलकर सामने आ जाती हैं। यह दिल व दिमाग़ की सलाहियतों को खोलना भी माँ की ज़िम्मेदारी होती है।

कई माँ तो बच्चों की इतनी अच्छी परवरिश करती हैं कि उनके

बच्चों को देखकर दुआएँ देने को जी चाहता है।

एक सलीक़ेमन्द बच्चे के ईमानी रूहानी कलिमात

हमारे एक दोस्त किसी आ़लिम के घर गये। उन्होंने अपने एक बेटे को जिसकी उम्र आठ या नौ साल थी, उनकी ख़िदमत में लगा दिया। वही उनका बड़ा बेटा था।

वह बच्चा इतना सलीक़ेमन्द था कि जब इस मेहमान के सामने दस्तरख़्वान लगाता बरतनों के खटकने की आवाज़ न आती। इतने प्यार से वह बरतन रखता और उठाता, इतने सलीक़े से काम करता कि हमारे वह दोस्त बहुत मुतास्सिर (प्रभावित) हुए। जब वह नहाने के लिये जाते, बाहर निकलते तो उनके जूते पालिश हैं, उनके कपड़े स्त्री हैं। हर चीज़ उनकी मौक़ा-ब-मौक़ा तैयार होती। वह हैरान होते कि छोटे से बच्चे को ख़िदमत का ऐसा ढंग किसने सिखाया।

चुनाँचे उनका जी चाहा कि मैं बच्चे से बात करूँ। लेकिन बच्चा उनके पास आता और जो ज़रूरत की चीज़ होती वह रखता और फ़ौरन वापस चला जाता, फ़ालतू कुछ देर भी उनके पास नहीं बैठता था।

उन्होंने सोचा कि अब अगर आया तो मैं उससे पूछूँगा कि माँ-बाप ने उसकी तरबियत कैसे की। वह फ़रमाते हैं कि जब बच्चा अगली बार मेरे पास आया और अपना काम करके जाने लगा तो मैंने उसे रोकते हुए कहा कि बच्चे! तुम सबसे बड़े हो? मक़सद मेरा पूछने का यह था कि क्या औलाद में यही पहला बेटा है। तो मैंने उससे पूछा कि बच्चे तुम सबसे बड़े हो? तो जैसे ही मैंने पूछा वह बच्चा इतना प्यारा था, अदब वाला था, वह मेरी बात सुनकर थोड़ा शर्मा गया। पीछे हटा और कहने लगा अंकल सच्ची बात तो यह है कि अल्लाह सबसे बड़े हैं। हाँ! बहन-भाईयों में मेरी उम्र ज़्यादा है।

वह कहने लगे कि मुझे शर्म की वजह से रोना आ गया कि उम्र

में मैं इतना बड़ा हूँ और मैं इस नुक्ते तक न पहुँच सका और इस बच्चे की सोच कितनी अच्छी है। उसने इस नुक्ते को नोट कर लिया। मेरा फ़िक़रा था कि 'तुम सबसे बड़े हो?' बच्चा जवाब देता है कि अंकल 'अल्लाह सबसे बड़े हैं, हाँ बहन-भाईयों में उम्र मेरी ज़्यादा है।'

माँ-बाप बच्चों के लिये नमूना बनें

तो जब मायें बच्चों की तरबियत अच्छी करती हैं तो फिर बच्चों के सिर्फ़ जिस्म ही नहीं बढ़ते, उनके दिल और दिमाग़ की सलाहियतें भी खुलती हैं। माँ उनके के लिये मुर्शिद का काम कर रही होती है। ये बच्चे मादर-ज़ाद वली (माँ के पेट से बुज़ुर्ग और नेक) बन जाते हैं। माँ की गोद से ही वली साबित होते हैं। इसलिये माँ की तरबियत की अहमियत बहुत ज़्यादा है।

यह चीज़ अपने ज़ेहन में रखिये कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने बच्चे को फ़ितरी तौर पर नक़लची बनाया है और वह जो अपने बड़ों को करते देखता है वही बात खुद करता है। "Childern always copy their parents" बच्चे हमेशा अपने माँ-बाप की नक़ल किया करते हैं। इसलिये माँ-बाप को चाहिये कि वे सिर्फ़ आलोचना करने वाले न बनें, तनक़ीदें (आलोचानायें) ही न करें, रोक-टोक ही न करते रहें। बल्कि बच्चों के सामने एक नमूना बनकर भी रहें। बच्चों को नमूना (मॉडल) देखने की ज़्यादा ज़रूरत है आलोचना करने वालों के मुक़ाबले में। तनक़ीद तो दुनिया का हर बन्दा कर लेता है लेकिन मॉडल बनकर रहना मुश्किल काम होता है।

तो माँ-बाप को चाहिये कि वे बच्चों के सामने एक मॉडल की हैसियत से ज़िन्दगी गुज़ारें। फिर देखें कि बच्चे खुद-ब-खुद माँ-बाप के हर काम की नक़ल करेंगे।

बच्चे अपने बड़ों के नक़्शे-क़दम पर

बच्ची वही करेगी जो माँ को करते देखती है। बच्चा वही करेगा जो बाप को करते देखता है। हमारे एक दोस्त की बेटी थी। एक बार वह बैठी खाना खा रही थी। खाना खाते हुए उसने पानी पिया, ज़रा बड़े घूँट ले लिये तो इच्छू लग गया, यानी धंसका (Chokong) होने लगा। अब जब Chokong हुई तो साँस बन्द होने लगा, उसकी माँ ने उसकी कमर के ऊपर हलके से एक दो हाथ लगाये और कहने लगीः बेटी आहिस्ता-आहिस्ता धीरे-धीरे, यानी तुम आहिस्ता आहिस्ता पानी पियो।

जब माँ ने ये अलफ़ाज़ कहे तो बच्ची की वह हालत यानी Chokong ठीक हो गई। अब माँ वह बात भूल गई। बहुत अ़रसे की बात है कई सालों की, एक बार वह माँ ख़ुद पानी पी रही थी। कहने लगी कि मैंने पानी जो पिया तो मुझे धंसका लगा, साँस बन्द होने लगा, कुदरतन् वही मेरी छोटी सी बेटी मेरे पास थी उसने मेरी पीठ पर हाथ रखा। कहती है अम्मी आहिस्ता- आहिस्ता धीरे-धीरे। जो माँ ने बेटी को कहा था अब वही अलफ़ाज़ बेटी ने माँ को कहे। बच्चे तो माँ-बाप की नक़ल किया करते हैं।

बच्चा फ़ितरी तौर पर नक़लची है

हमारे एक दोस्त एक बड़े विधुत प्रोजेक्ट के ऊपर चीफ़ इन्जीनियर थे। उनकी एक आ़दत थी कि जब भी उनको बाहर से फ़ोन आता जवाब में कहतेः चीफ़ इन्जीनियर बोल रहा है (Chief Engineer speaking) उनको अक्सर दफ़्तर के फ़ोन आते थे इसलिये वह अपना परिचय करवाते थे।

वह ख़ुद यह वाक़िआ़ सुनाने लगे कि एक दफ़ा मैं नहाकर गुस्लख़ाने (बाथरूम) से बाहर निकला। मैंने देखा कि मेरे घर के फ़ोन

की घन्टी बज रही है। मेरा छोटा सा तीन साल, चार साल का बेटा था, वह भागा हुआ उस फ़ोन की तरफ़ गया और उसने जाकर रिसीवर उठाकर अपने कान मुँह से लगाया, लगाते ही कहने लगा Hello, Chief Engineer mungla speaking अब उस बच्चे को कुछ नहीं पता कि इसका क्या मतलब है। लेकिन उसने तो अपने बाप को यह कहते हुए सुना। इसलिये वह वही अलफ़ाज़ कह रहा है जो उसके बाप ने कहे।

तो यह ज़ेहन में रखना कि बच्चा फ़ितरी तौर पर नक़लची होता है। माँ-बाप की नक़ल करता है। माँ-बाप चाहते हैं कि हम तो अपनी ज़िन्दगी में जो मर्ज़ी करें, बस हमारे बच्चे नेक बन जायें। यह काम हरगिज़ ऐसे नहीं हो सकता। दोनों में चोली-दामन का साथ है। हाँ माँ-बाप मॉडल बनेंगे तो उनके बच्चे उनके रास्ते को अपना लेंगे, और अगर माँ-बाप कोताहियाँ करेंगे और सिर्फ़ नेक तमन्ना रखेंगे कि बच्चे नेक बन जायें तो फिर ऐसी बात तो पूरी नहीं होती। इसलिये बच्चों की तरबियत के लिये माँ-बाप को ख़ुद भी अ़मली नमूना बनने की ज़रूरत है।

बच्चे को शुरू से ही सफ़ाई का आ़दी बनाना

बच्चे को बचपन से ही सफ़ाई रखना सिखायें। यह माँ की ज़िम्मेदारी होती है। उसको यह समझायें कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त पाकीज़ा रहने वालों से मुहब्बत फ़रमाते हैं और अल्लाह तआ़ला तहारत करने वालों से मुहब्बत फ़रमाते हैं। कहीं तो फ़रमाया "पाकीज़गी तो आधा ईमान है" आप यूँ समझायेंगी कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त तो बच्चों की सफ़ाई को पसन्द फ़रमाते हैं, तो फिर बच्चा साफ़ रहना पसन्द करेगा।

चुनाँचे अच्छे लोग पैदा नहीं होते बल्कि अच्छे लोग तो बनाये जाते हैं। माँ अपनी गोदों में लोगों को अच्छा बना दिया करती हैं। गर्मी

के मौसम में बच्चे को रोज़ाना गुस्ल करवाएँ कपड़े गन्दे देखें तो फ़ौरन बदल दें। बिस्तर नापाक हरगिज़ न रहने दें। फ़ौरन उसे पाक कर दें।

बहरहाल! बच्चे की यह ड्यूटी तो देनी पड़ती है और इसी पर माँ को उसका अज्र व सवाब मिलता है। लिहाज़ा बच्चों की तरबियत का ख़ास ख़्याल रखें।

कई बार ऐसा भी होता है कि कई बच्चे हैं, बहुत छोटे हैं, एक पेट में है, दूसरा गोद में है तीसरे ने उंगली पकड़ी हुई है, चौथा आंगन के अन्दर शोर मचा रहा है, पाँचवाँ पड़ोसी के बच्चे को सता रहा है। अब औरत को समझ में नहीं आ रहा कि क्या करे। यह माँ बेचारी किस पर तवज्जोह दे और किस पर तवज्जोह न दे।

इस बारे में सुन लीजिये। "फ़तावा शामी" और "फ़तावा आलमगीरी" ने यह फ़तवा लिखा है कि बच्चों की तरबियत की ख़ातिर दो बच्चों के दरमियान मुनासिब वक़्फ़ा (फ़ासला और अंतराल) हो कि जिसमें बच्चों की तरबियत अच्छी हो सके।

आमाल का दारोमदार नीयतों के ऊपर होता है। अगर दिल में नीयत हो कि हम ग़रीब हैं आने वाले बच्चे को कैसे पालेंगे, उसकी ज़रूरतें कैसे पूरी करेंगे, तो यह कुफ़्र की बात है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ

यह जो "ख़श्य-त इम्लाक़" यानी तंगदस्ती के डर से, के अलफ़ाज़ हैं, मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि शर्त लगा दी गई। अगर ज़ेहन में है कि ये खायेंगे कहाँ से। बच्चियाँ ज़्यादा हो गईं तो हम उनके दहेज कहाँ से बनायेंगे। अगर रिज़्क़ का डर है तो इस डर से अगर कोई ऐसी बात की तो कुफ़्र है, मना है, हराम है। लेकिन अगर नीयत कोई और है जैसे मैडिकली कोई दिक़्क़त है, डाक्टर ने कह दिया कि सेहत इजाज़त नहीं देती, या तरबियत का मामला है, औरत

चाहती है कि मेरे बच्चे तरबियत पाएँ। बजाये इसके कि ये बुरे हों और दुनिया में गुनाहगार लोगों का इज़ाफ़ा ज़्यादा हो जाये, मैं बच्चों की अच्छी तरबियत करना चाहती हूँ। लिहाज़ा तरबियत की नीयत से अगर कुछ वक़्फ़ा (Gap) रखने के लिये कोई दवाई खानी चाहे तो फ़तावा शामी और आ़लमगीरी में उलेमा ने इसके बारे में इजाज़त लिखी है।

बच्चों को बोलने का अदब सिखाना

यह भी ज़ेहन में रखना कि बच्चों को अदब के साथ बोलना सिखायें। बाज़ बच्चे "तू और तुम" कहकर बात करते हैं। उनको समझायें कि बेटा "आप" कहने से मुहब्बत बढ़ती है। लिहाज़ा छोटों को भी आप कहो, बड़ों को भी आप कहो।

अगर बच्चा "हाँ" कह दे तो उसको समझायें कि "जी हाँ" कहने में ज़्यादा मुहब्बत है। इस तरह छोटी-छोटी बातें बच्चा गोद में सीखता है और फिर वे उसे याद रहती हैं।

याद रखना कि बचपन की बातें इनसान कभी नहीं भूलता, सारी ज़िन्दगी याद रहती हैं। इसलिये बच्चों की तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) अच्छी करें। यह तो तयशुदा बात है कि जो घास जंगलों में पैदा हो वह बाग़ की घास की तरह नहीं होती, कि जंगलों की घास में कोई ख़ूबसूरती नहीं होती, तरतीब नहीं होती और बाग़ की घास के अन्दर तो ख़ूबसूरती और जमाल होता है।

इसी तरह जो बच्चे अनपढ़ माँ के ज़रिये पले हुए हों वे जंगलों की घास की तरह होते हैं। और जो पढ़ी-लिखी नेक माँ के पले हुए बच्चे हों वे बाग़ की घास की तरह हैं, तो माँ को चाहिये कि बच्चों की तरबियत पर ज़्यादा तवज्जोह दे।

झूठ से बचिये

यह भी ज़ेहन में रखिये कि कभी भी अपने बच्चों को बेजा ज़ालिमाना धमकियाँ न दें। कई औरतें बच्चों को धमकाती हैं- घर से निकाल दूँगी, मैं अभी भूत को बुला लूँगी, मैं फ़लाँ-फ़लाँ को बुला लूँगी। इस क़िस्म के डर बच्चे को न डरायें इसलिये कि भूत बुलाती तो हैं नहीं, घर से निकालती तो हैं नहीं, तो बच्चे शुरू में तो मुतास्सिर होते हैं, बाद में अपनी अम्मी को झूठा समझना शुरू कर देते हैं।

आप तो उसको डराती हैं, वह दिल ही दिल में आपको झूठा समझ रहा है। जब एक बात में आपको झूठा समझा तो हर बात में आपके बारे में शक में पड़ जायेगा। अम्मी तो झूठ बोलती हैं। तो गोया आपने बच्चे को झूठ बोलने में मदद दी।

इसी तरह बच्चे से कोई झूठा वायदा न करें। ऐसा वायदा करें जिसको आप पूरा कर सकें। अगर पूरा नहीं कर सकतीं तो कभी झूठा वायदा न करें। बच्चा झूठ बोलने का आदी बन जायेगा और इसका गुनाह आपको होगा।

इसलिये अगर बच्चे को डराना भी हो तो अल्लाह से डराएँ कि बेटा अल्लाह नाराज़ होते हैं। इस चीज़ से अल्लाह नाराज़ होते हैं। बस एक अल्लाह का ख़ौफ़ उसके दिल में बैठाईये किसी और का ख़ौफ़ दिल में बैठाने की क्या ज़रूरत है। यह अल्लाह का ख़ौफ़ एक ऐसी नेमत है कि अगर यह दिल में बैठ गया तो अल्लाह के ख़ौफ़ की वजह से शरीअ़त की जो बात भी है बच्चा उस पर अ़मल करता चला जायेगा।

बच्चे को डराने-धमकाने के नुक़सानात

अ़रब के लोगों में यह मशहूर है कि अगर बच्चे को किसी चीज़ से डराया न जाये, जैसे औ़रतें बिल्ली, कुत्ते से डराती हैं, तो वे कहते

हैं कि बच्चा बड़ा होकर बहादुर बनता है।

और यह भी ज़ेहन में रखिये कि अपने बच्चे को यह भी धमकी न देना कि अच्छा तुम ज़रा सब्र करो, तुम्हारे अब्बू आयेंगे तो मैं तुम्हें ठीक करवाऊँगी। याद रखना यह फ़िक्रा (बात और जुमला) बहुत ज़हरीला जुमला है। बच्चे को अगर माँ कह देगी कि तुम सब्र करो तुम्हारे अब्बू आयेंगे तो तुम्हें ठीक करवाऊँगी।

तो जब उसने यह कह दिया तो गोया अपनी ज़बान से तस्लीम कर लिया कि मेरी कोई हैसियत नहीं, बस तुम्हारा बाप ही तुम्हें आकर ठीक करेगा। इस जुमले (वाक्य) को सुनने के बाद फिर बच्चा अपनी माँ को अल्लाह मियाँ की गाय समझना शुरू कर देता है। उसका डर दिल से निकल जाता है। फिर माँयें रोती हैं कि बच्चे तो हमारी सुनते ही नहीं।

यह तरबियत का मामला है। आप अल्लाह मियाँ की गाय न बनिए बल्कि शेरनी की तरह बनकर रहिए। बच्चे को धमकाना है तो खुद धमकाएँ। अगर कभी थप्पड़ लगाना भी ज़रूरी है तो बाप से लगावाने के बजाये खुद लगाएँ। बच्चे को डर हो कि अम्मी मेरी तरबियत करने वाली हैं।

इसलिये इस बात का ख़ास ख़्याल रखें कि जो कुछ भी करना है माँ को खुद ही करना है। अगर ज़बान से कह दिया कि तुम्हारे अब्बू आयेंगे तो मैं ठीक करवाऊँगी, बच्चे को तसल्ली हो जाती है कि अब्बू हैं तो दब कर रहना है, अब्बू गये तो जिसका था डर वह नहीं है घर, अब जो चाहे कर। इसलिये वे घर मे तूफ़ाने बद्तमीज़ी मचाते हैं। माँ कहती है कि हमारी बात का असर नहीं होता है। हक़ीक़त में उन्होंने अपना डर बच्चे के ज़ेहन से निकाला होता है।

इसलिये इन तरबियत की बातों को ख़ूब अच्छी तरह समझ लीजिये। कई बार बच्चा किसी वजह से रोना शुरू कर देता है और फिर बाज़ नहीं आता है, इसके पीछे कोई न कोई वजह रहती है।

माँ बच्चे की नफ़्सियात को कैसे समझे?

रोते हुए बच्चे को मुस्कुराने पर आमादा कर लेना यह माँ का बड़ा फ़न होता है। इस राज़ को माँ समझती है। इस भेद को माँ ही समझती है। इस मौक़े पर मैं कौनसी बात करूँ कि यह बच्चा अभी रोता हुआ हंसने लग जायेगा।

हमने बच्चों को देखा कि एक लम्हे में उनकी आँखों में आँसू आ रहे हैं और दूसरे लम्हे में वे मुस्कुराकर कोई बात कर रहे हैं। यह बच्चों का रोना हंसना ऐसा ही होता है इसलिये बच्चे को किस तरह हंसाना है, रोते हुए बच्चे को किस तरह मुस्कुराने पर तैयार करना है, आप इस बात को अच्छी तरह समझें कि यह बच्चा किस बात पर मुस्कुराता है। जब आपको यह पता चल जायेगा तो आप ऐसी बात कर देंगी कि रोता हुआ बच्चा हंसते हुए आपको मिलना शुरू कर देगा।

जब बच्चा सामान्य हो जाये तो हमेशा उससे बात-चीत किया करें कि बेटे! जब तुम इतना रो रहे थे आख़िर इसकी क्या वजह थी? बच्चे की याददाश्त इतनी कम होती है कि वह खुद ही आपको सब कुछ बता देगा।

उसको यह पता नहीं होता कि मैं बताऊँगा तो मेरी अम्मी को पता चल जायेगा। वह आपको खुद ही बता देगा कि अम्मी मैं तो इस वजह से बार-बार रो रहा था, और चुप ही नहीं हो रहा था। इस तरह आपको उस वजह का पता चल जायेगा तो आईन्दा उसका ख़्याल रखें। औरतें बच्चों से ऐसी बातों के बारे में गुफ़्तगू नहीं करतीं। उनसे अन्दर का राज़ नहीं उगलवातीं और अन्दर की बात का उनको पता नहीं चलता।

इसलिये फिर दूसरे समय जब बच्चा ऐसा करता है तो उसको सही तरीक़े पर संभाल नहीं पातीं।

यह बात भी ज़ेहन में रखिये कि अगर आपका बच्चा कोई ग़लती कर रहा था, कोई चोरी कर रहा था, या कोई और बात कर रहा था, और आप ऐन उस मौक़े पर पहुँच गईं तो बच्चे को रंगे-हाथों कभी न पकड़ें। देखी अनदेखी कर दें। यूँ बन जायें जैसे आपने देखा ही नहीं। बच्चा ख़ामोश हो जायेगा, दब जायेगा, लेकिन वह अपनी बे-इज़्ज़ती महसूस नहीं करेगा कि मुझे तो पकड़ लिया गया। इस तरह उसके ज़ेहन से हया ख़त्म हो जायेगी वह कहेगा अम्मी ने तो देख ही लिया तो इस हया को बाक़ी रहने दें। फिर प्यार-प्यार से बात करके उसको समझायें। उस ग़लती के बारे में तो बच्चा ख़ुद माफ़ी माँग लेगा। अपना क़सूर मान लेगा कि अम्मी मैं ऐसी ग़लती नहीं करूँगा।

बच्चे को न ग़ुलाम बनायें और न सेठ

बच्चे को न तो आप ग़ुलाम बनायें और न ही बच्चे को सेठ बनायें। कई माँ बच्चे को इतना मिटा देती हैं कि बच्चों की अपनी शख़्सियत ही नहीं उभरती, और कई उनको शुरू ही से सेठ और बादशाह बना देती हैं, कि बच्चों के फिर क़दम ज़मीन पर ही नहीं लगते, वे हवाओं में ही उड़ते रहते हैं।

बच्चे को इस तरह हद से आगे बढ़ाकर बिगाड़ने की कोशिश न करें। याद रखें कि यह बच्चा तो एक नर्म चीज़ की तरह होता है, उसको जिस साँचे के अन्दर ढाल देंगी यह बच्चा उसी साँचे की शक्ल इख़्तियार करेगा। तो बच्चों को शुरू में समझाना और बच्चों को अच्छा इनसान वनाना यह माँ की ज़िम्मेदारी होती है।

बच्चों की इस्लाह कैसे हो? चन्द तर्जुबात का निचोड़

आपको एक नुक्ते की बात बता दें जो तर्जुबे के बाद पाई और जिसका बहुत बड़ा फ़ायदा देखा। आप इसको आज़मा कर देखिए। आप इसका फ़ायदा ख़ुद महसूस करेंगी।

जब बच्चे मदरसा-स्कूल जाने की उम्र के हो जायें, छोटे हों या बड़े, जब भी वे वापस आयें और जैसे ही दरवाज़े से आयें यह बड़ा ख़ास लम्हा होता है। माँ बच्चे को एक दम से घर में दाख़िल न होने दें बल्कि जब भी आयें उनको तलक़ीन (हिदायत और निर्देश) करें कि बेटा जब भी घर में आना है मैं जहाँ भी हूँ आपको आकर मुझे सलाम करना है। इस सलाम की ख़ूब ताकीद करें। आप किसी कमरे में बैठी हैं। कहीं किचन में हैं, बच्चा जब भी घर में आये हमेशा माँ के पास आये और आकर अपनी अम्मी को सलाम करे।

अगर बच्चा सलाम नहीं करता, सलाम की आ़दत डलवायें। अगर भूल गया तो बच्चे को बाहर भेजें कि बेटा दरवाज़े से बाहर जाओ और फिर घर में दाख़िल होकर आओ और अपनी अम्मी को सलाम करो। यह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत है, तुम्हें अज्र व सवाब मिलेगा। बच्चा जब बार-बार सलाम करेगा तो उसके अन्दर यह सुन्नत ज़िन्दा हो जायेगी।

जब बच्चा स्कूल से आकर आपको सलाम करे तो आप हमेशा उसके सलाम का जवाब दें और जवाब देने के बाद उससे ज़रूर पूछें कि बेटे आपने स्कूल में कैसे वक़्त गुज़ारा। तीन-चार मिनट इस मौक़े पर बच्चे को दे दें। ज़रूरी सवालात करें। छोटे बच्चे से एक तो यह पूछें कि बेटा आज स्कूल में कैसी गुज़री। बच्चा आपको थोड़ी देर में सब कुछ बता देगा। उस्ताद ने यह कहा, जो भी ख़ास बातें होंगी, क्लास में जो कुछ हुआ होगा वह सब कुछ बता देगा। मुझे आज यह इनाम मिला, मुझे आज मार पड़ी, उस्ताद ने यह कहा। मेरे दोस्त ने यह कहा।

जब उसने सब बातें बता दीं तो जो अच्छी बातें हैं उन पर बच्चे को शाबाशी दें। जो बुरी बातें समझें उन पर वहीं बच्चे को हिदायत कर दें कि बेटा आपके दोस्त ने आपको सही बात नहीं बताई, यह ऐसे नहीं ऐसे है। तो गोया उसने आठ घन्टे के अन्दर जो कुछ सीखा

उसमें जो अच्छी बातें थीं आपने उनको उसके दिल में पक्का कर दिया, और जो ग़लत बातें थीं आपने उनको उसके ज़ेहन से निकाल दिया। यह आपके आठ मिनट आठ घन्टे पर भारी होंगे।

अगर आपने बच्चे से कुछ नहीं पूछा तो जो उसने क्लास में सुना, अच्छा सुना या बुरा सुना, वे तमाम बातें उसके दिल में पक्की हो जायेंगी। अपने दोस्तों से सुनी हुई बातें वह अपने ज़ेहन में पक्की कर लेगा। इसलिये ये चन्द मिनट आपके लिये बहुत अहम होते हैं।

जब भी कोई बच्चा आये, घर में आकर आपको सलाम करे, सलाम के बाद उससे ज़रूर पूछें कि बेटा आपने स्कूल में दिन कैसे गुज़ारा। बेटी तुमने स्कूल में आज दिन कैसे गुज़ारा। वह आपको चन्द मिनट में बता देगी कि अम्मी यह-यह हुआ। आप सुन लें, अच्छी बातों की तस्दीक़ कर दें और बुरी बातों से उसको मना कर दें। कि बेटा यह बात अच्छी नहीं होती। आपके दोस्त ने यह बात अच्छी नहीं की। बेटा यह ऐसे है, यूँ बात नहीं करते। चन्द मिनट लगते हैं लेकिन इन चन्द मिनट में आपने अपने बच्चे को बुरे असरात से बचा लिया और नेकी के ऊपर जमा दिया।

जब आप ऐसा कर लें तो फिर उसके बाद आप इस बच्चे को अपने पास बुला लें। बच्चा जब क़रीब आ जाये तो बच्चे के सर पर प्यार से हाथ रखें। यह सर पर शफ़क़त का हाथ रखना, बच्चे को सारी ज़िन्दगी इसका स्पर्श महसूस होगा। फिर बच्चे के माथे या रुख़्सार का बोसा लें, कि बेटा आपने अच्छा दिन गुज़ारा। आपने जब यह एक आ़दत बना ली कि बच्चा आपको आकर सलाम करेगा तो पहले आप उसकी कारगुज़ारी पूछेंगी फिर अच्छी बातों की तस्दीक़ कर देंगी बुरी बातों को उसके दिमाग़ से निकाल देंगी। फिर उसको अपने पास बुलाकर सर पर मुहब्बत का हाथ रखेंगी। यह साया ही तो होता है जो बच्चों को यक़ीन दिलाता है कि तुम्हारे सर पर माँ-बाप की शफ़क़तें मौजूद हैं।

उस वक़्त आपका बच्चे के सर पर हाथ रख देना बच्चे के ऊपर रहमत के साये की तरह होता है। बच्चा अपने आपको बड़ा ख़ुशनसीब और सुरक्षित महसूस करता है। वह अपने दिल के अन्दर एक अ़जीब तरह की ख़ुशी महसूस करता हैं। वह अपने दिल के अन्दर महसूस करता है कि मेरे सर पर कोई है। चुनाँचे मुहब्बत का हाथ बच्चे के सर पर रखें, बच्चे को बोसा दें और बोसा देने के बाद आप पहले से या तो कोई आईस्क्रीम या पीने की चीज़ या कोई मीठी चीज़ जो बच्चा पसन्द करता है, उसको फ़्रिज में ज़रूर करके रखें और फिर उठाकर बच्चे को दें, लो बेटा! यह मैंने आपके लिये रखा था, खा लीजिये।

जब ऐसे वक़्त में कि बच्चा भूखा-प्यासा स्कूल से आया है आप उसकी मरग़ूब (मन-पसन्द) चीज़ थोड़ी सी उसे खाने को देती हैं तो आप अपने बच्चे का दिल मोह लेती हैं। आप समझ ही नहीं सकतीं कि बच्चा उस वक़्त आपसे कितनी मुहब्बत करने लग जाता है। बच्चे ने आठ घन्टे स्कूल में लगाये, लेकिन आपने आठ मिनट लगाकर उस बच्चे की ऐसी तरबियत कर दी कि बच्चे के दिल में आपकी मुहब्बत बैठ गई। अच्छी बातें आ गईं, बुरी बातें उसके ज़ेहन से ख़त्म हो गईं। अब उस बच्चे ने जो दिन भी गुज़ारा था वह उसके लिये ख़ैर का दिन बन गया। बाक़ी वक़्त तो उसको आपकी नज़रों में गुज़ारना है।

इसलिये आपके चन्द बच्चे हों या दो बच्चे हों या एक बच्चा हो, जितने बच्चे भी हों, जब भी वे घर आयें बारी-बारी सबके साथ ऐसा करें। सब पर अलग-अलग तवज्जोह दें। यह न हो कि एक बच्चे को प्यार करें और बेटी को कहें कि जाकर ख़ुद चीज़ उठाकर खा लो। हरगिज़ नहीं! यह थोड़ी सी ड्यूटी है इसे अपना कर्तव्य और ज़िम्मेदारी समझें। इसे अपनी लाज़िमी ज़िम्मेदारियों में शामिल कर लें। यह माँ का फ़रीज़ा होता है।

बच्चे में अच्छी आ़दतें पैदा करने का हैरत-अंगेज़ नुस्ख़ा

बच्चा कई घन्टे बाहर गुज़ारकर आया अब आते ही उस बच्चे को इस मौक़े पर ऐसी मुहब्बत देनी है कि बच्चे के अन्दर अच्छी आ़दतें जम जायें और बुरी आ़दतें उससे दूर हो जायें।

इसलिये जब बच्चे स्कूल से आते हैं उस वक़्त की यह चन्द मिनट की ड्यूटी जिस औ़रत ने पक्की अदा कर दी उसके बच्चे सारी ज़िन्दगी नेक बनेंगे, अदब वाले बनेंगे और माँ के साथ मुहब्बत करने वाले बनेंगे। बच्चे कभी नहीं भूल सकते कि जब हम स्कूल से आते थे अम्मी हमें इतना प्यार देती थी।

जब आप बूढ़ी हो जायेंगी बच्चे जवान हो जायेंगे तो फिर आपकी खुशी का ख़्याल करेंगे, जितना आपने उनका ख़्याल रखा। लिहाज़ा यूँ समझिये कि आज मैंने आपको एक तोहफ़ा दे दिया। आप इस पर अ़मल कर लीजिये और फिर उसके अ़सरात बच्चों में खुद देखेंगी। आपके दिल से दुआ़यें निकलेंगी कि रब्बे करीम बच्चों की अच्छी तरबियत फ़रमा दे।

बच्चों को प्यार व मुहब्बत देना नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक सुन्नत है

हुज़ूरे अकरम नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ रखते हैं। इमाम हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु तशरीफ़ लाये, यानी नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नवासे, फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बड़े बेटे। बच्चे थे, नबी की ख़िदमत में आये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनका बोसा लिया, प्यार किया। जब आपने प्यार किया तो उस वक़्त एक सहाबी बैठे थे अक़रा बिन

हाबित तमीमी, यह बनू तमीम के आदमी थे। वह देखकर हैरान हो गये। कहने लगेः ऐ अल्लाह के नबी! मेरे तो दस बच्चे हैं और मैंने कभी किसी को इस तरह से प्यार नहीं किया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

من لا يرحم لا يُرحم

जो आदमी रहम नहीं करता अल्लाह उस पर रहम नहीं फ़रमाते।

एक दूसरे मौक़े पर यह हुआ कि एक देहाती ने ऐसा ही देखा। कहने लगा ऐ अल्लाह के नबी! मैं तो बच्चों को ऐसे प्यार नहीं करता जैसे आप करते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः अगर तेरे दिल से अल्लाह ने रहमत को निकाल दिया और तुझे उससे मेहरूम कर दिया है तो कोई क्या करे। तो मालूम हुआ कि बच्चों से प्यार करना इनसानी फ़ितरत है, इसलिये बच्चों को प्यार दिया करें।

अपने बच्चे से मुहब्बत पर अल्लाह का इनाम

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास एक बार एक औ़रत आई। उसके दो बेटे थे। उनको हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने तीन खजूरें खाने को दीं। माँ ने क्या किया कि एक खजूर एक बेटे को दे दी दूसरी खजूर दूसरे बेटे को दे दी और अपनी खजूर खुद खाने की बजाये हाथ में पकड़ ली।

जब दोनों बच्चों ने अपनी-अपनी खजूरें खा लीं तो फिर तीसरी खजूर को ललचाई नज़रों से देखने लगे। माँ ने उस खजूर के दो टुकड़े कर लिये, आधा टुकड़ा एक को दे दिया और आधा टुकड़ा दूसरे को दे दिया। बच्चों ने उसको भी खा लिया और खुश हो गये।

हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बड़ी हैरान हुईं। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये तो आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने यह पूरा वाक़िआ़ आपको सुनाया कि माँ

की मुहब्बत देखिये, उसने ख़ुद नहीं खाया अपना हिस्सा भी बच्चों में तक़सीम कर दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह ने उस औ़रत पर जन्नत को वाजिब कर दिया। सुब्हानल्लाह!

तो माँ जब बच्चों को इस तरह मुहब्बत देती है, उसके बदले अल्लाह उस माँ को जन्नत अ़ता फ़रमा देते हैं। यह तो जन्नत के सौदे हैं। इसलिये चाहिये कि माँ अपने बच्चों के साथ मुहब्बत का मामला रखे।

याद रखिये हदीस पाक में आता है कि अल्लाह तआ़ला नर्मी पर वे रहमतें नाज़िल फ़रमा देते हैं जो सख़्ती पर नहीं नाज़िल फ़रमाया करते। इसलिये बच्चे की तरबियत अच्छी करते हुए इन बातों का ख़्याल रखिये।

बच्चे के दिल में बचपन से अल्लाह की तौहीद की शमा रोशन करें

एक और बड़ा अहम नुक्ता यह है कि बच्चे के दिल में बचपन से ही ईमान को मज़बूत कीजिये। तौहीद का तसव्वुर मज़बूत कर दीजिये। बच्चे के दिल में अल्लाह पर भरोसा करना पैदा कर दीजिये। यह माँ के इख़्तियार में होता है। वह ऐसी तरबियत करे कि बच्चे के दिल में डर भी अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त का हो, उम्मीदें हों तो अल्लाह से हों, मुहब्बत हो तो अल्लाह से हो, तौहीद उसके ज़ेहन में रच-बस जाये और वह इनसान वह बच्चा अल्लाह से अत्यंत मुहब्बत करने वाला बन जाये।

हमारे पहले वक़्त की अच्छी मायें इन बातों का बहुत ज़्यादा ख़्याल रखती थीं।

ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की माँ की तरबियत

भारत में एक बुजुर्ग गुज़रे हैं जो मुग़ल बादशाहों के पीर कहलाते हैं ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अ़लैहि। कुतुब-मीनार के पास ही उनकी क़ब्र है जहाँ यह लेटे हुए आराम फ़रमा रहे हैं। उनके बारे में आता है कि उनका नाम तो था कुतबुद्दीन लेकिन उनके साथ काकी का लफ़्ज़ इस्तेमाल करते हैं। काकी हिन्दी का लफ़्ज़ है, काकी हिन्दी में रोटी को कहते हैं।

यह लफ़्ज़ उनके नाम के साथ कैसे लगा? यह भी दिलचस्प वाक़िआ है। जब उनकी पैदाईश हुई ज़रा समझ-बूझ वाले हो गये, माँ-बाप बैठकर सोचने लगे कि हम बच्चे की किस तरह अच्छी तरबियत करें, ताकि हमारा बच्चा अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करने वाला बन जाये। दोनों आपस में सोच-विचार करते रहे लेकिन वे जिस बात पर बहस करते और सोचते थे उसको उसी वक़्त अ़मल में ले आया करते थे। आज की औ़रतों का यह हाल है कि जब तक उनकी शादी नहीं होती तो बच्चों की तरबियत के बारें में उनके प्लान हुआ करते हैं, और जब उनकी शादी होती है और उनके पाँच बच्चे होते हैं तो उनके पास एक प्लान भी बच्चों की तरबियत का नहीं होता। उनका दिमाग़ काम करना बन्द कर देता है। वे तो ऐसी नहीं थीं, वे तो बच्चों की अच्छी तरबियत करने वाली थीं।

लिहाज़ा माँ-बाप बैठे विचार कर रहे थे। बीवी कहने लगी कि मेरे ज़ेहन में एक बात है, मैं कल से उस पर अ़मल करूँगी जिसकी वजह से मेरा बेटा अल्लाह से मुहब्बत करने वाला बन जायेगा। शौहर ने कहा बहुत अच्छा। चुनाँचे जब अगले दिन बेटा मदरसे में गया तो पीछे माँ ने उसकी रोटी बना दी और नेमत-ख़ाने के अन्दर कहीं छुपा दी।

जब बच्चा आया कहने लगा अम्मी मुझे भूख लगी है। मुझे रोटी दें। तो माँ ने कहा बेटा रोटी हमें अल्लाह तआ़ला देते हैं तुम्हें भी अल्लाह तआ़ला देंगे, आप अल्लाह तआ़ला से माँग लीजिये।

बेटे ने पूछा अम्मी मैं कैसे माँगू? फ़रमाया बेटा मुसल्ला बिछाओ और उस पर बैठकर अपने दोनों हाथ उठाओ और अपने अल्लाह से दुआ़ माँगो। चुनाँचे बच्चे ने मुसल्ला बिछाया दोनों हाथ उठाये और दुआ़ माँगने लगाः ऐ अल्लाह! मैं अभी मदरसे से आया हूँ थका हुआ हूँ और मुझे भूख लगी हुई है और मुझे प्यास भी लगी हुई है, या अल्लाह मुझे रोटी दे दीजिये, पानी भी दे दीजिये। ऐ अल्लाह जल्दी दे दीजिये।

यह दुआ़ माँगने के बाद बेटे ने पूछा कि अम्मी अब मैं क्या करूँ? माँ ने कहा कि बेटे अल्लाह ने तेरा रिज़्क़ भेज दया होगा तू कमरे के अन्दर तलाश कर तुझे मिल जायेगा। चुनाँचे बच्चा मुसल्ले से उठकर अन्दर कमरे में आया, इधर-उधर देखा, माँ ने कुछ मार्गदर्शन किया। चुनाँचे जब उसने नेमत-ख़ाना खोलकर देखा उसमें गर्म-गर्म खाना पका हुआ रखा था।

वह बड़ा ख़ुश हो गया। फिर खाना खाते हुए पूछने लगा अम्मी अल्लाह तआ़ला रोज़ देते हैं? माँ ने कहा हाँ बेटे रोज़ अल्लाह तआ़ला ही देते हैं। अब यह रोज़ की आ़दत बन गई। बच्चा मदरसे से आता और आकर मुसल्ले पर बैठकर दुआ़ माँगता, माँ ने खाना तैयार रखा होता, वह खाना बच्चे को मिल जाता। बच्चा खाना खा लेता।

जब कई दिन गुज़र गये, माँ ने महसूस करना शुरू कर दिया कि बच्चा अल्लाह तआ़ला के मुताल्लिक़ ज़्यादा सवाल पूछने लगा। अम्मी सारी मख़्लूक़ को अल्लाह तआ़ला खाना देते हैं? अम्मी अल्लाह तआ़ला कितने अच्छे हैं। अम्मी अल्लाह तआ़ला हर रोज़ खाना देते हैं। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त से मुहब्बत ख़ूब बैठने लग गई। माँ भी बड़ी ख़ुश थी कि बच्चे की तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार

की शिक्षा) अच्छी हो रही है और यह सिलसिला कई महीने ऐसे ही चलता रहा। आख़िरकार एक दिन ऐसा आया कि माँ को किसी प्रोग्राम में रिश्तेदारों के घर जाना पड़ा। बेचारी वक़्त का ख़्याल न रख सकी।

जब उसे याद आया, वक़्त तो बच्चे के वापस आने का हो चुका था वह घबराई कि मेरा बेटा स्कूल से वापस घर आ गया होगा, अगर उसको खाना न मिला तो मेरी तो सारी मेहनत ज़ाया हो जायेगी। अब आँखों में आँसू आ गये। बुर्क़ा पहना, क़दम तेज़ी से उठा रही है और आँखों से आँसू टप-टप गिर रहे हैं। अल्लाह से फ़रियादें करती जा रही है: मेरे मौला मैंने छोटी सी तरकीब बनाई थी कि मेरे बेटे के दिल में तेरी मुहब्बत बैठ जाये, अल्लाह मुझसे ग़लती हुई मैं वक़्त का ख़्याल न रख सकी। खाना पकाकर नहीं रख आई। अल्लाह मेरे बेटे का यक़ीन न टूटे। अल्लाह मेरी मेहनत ज़ाया न कर देना।

रोती हुई माँ आख़िरकार जब घर पहुँची तो क्या देखती है कि बच्चा बिस्तर पर आराम की नींद सोया हुआ है। माँ ने ग़नीमत समझा और जल्दी से किचन में जाकर खाना बना दिया और फिर उसे कमरे में छुपा दिया। फिर अपने बेटे के पास आई। आकर उसके रुख़्सार का बोसा लिया। बच्चा जाग गया। माँ ने सीने से लगा लिया, मेरे बेटे तुम्हें आये हुए देर हो गई। तुम्हें बहुत भूख लगी होगी? बहुत प्यास लगी होगी? बेटे उठो अल्लाह से रिज़्क़ माँग लो।

बेटा खुशी-खुशी उठकर बैठ गया। अम्मी! मुझे भूख नहीं लगी, प्यास भी नहीं लगी। माँ ने पूछा बेटा क्यों? बेटा कहने लगा अम्मी मैं जब मदरसे से घर आया था मैंने मुसल्ला बिछाया और हाथ उठाकर अल्लाह से दुआ माँगी, या अल्लाह मैं भूखा हूँ और प्यासा हूँ मुझे खाना दे दीजिये। ऐ अल्लाह! आज तो अम्मी भी घर पर नहीं हैं। मैंने दुआ माँगकर कमरे में जाकर देखा, अम्मी मुझे कमरे में एक रोटी पड़ी हुई मिली। मैंने उसे खा लिया लेकिन अम्मी जो मज़ा मुझे उस रोटी में आया वह मज़ा मुझे पहले कभी भी नहीं आया।

माँ ने बच्चे को फिर सीने से लगाया अल्लाह का शुक्र अदा किया कि या अल्लाह तूने मेरी लाज रख ली। इसलिये उनका नाम काकी पड़ गया। ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अ़लैहि।

यह बच्चा बड़ा होकर इतना बड़ा शैख़ बना कि वक़्त के बड़े-बड़े मुग़ल बादशाह उनके मुरीद बने। लोग लाखों की तायदाद में उससे बैअ़त हुए और उसके हाथों पर तौबा की। सुब्हानल्लाह! जब बच्चे की माँ यूँ तरबियत करती है तो फिर अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त भी उस बच्चे को रोशनी का मीनार बना दिया करते हैं।

तो आप भी अपने बच्चों को बचपन से ही औलिया-अल्लाह वाली सिफ़तें सिखायें ताकि बच्चे बचपन से ही उन सिफ़तों को अपने अन्दर पैदा कर लें।

अपनी औलाद को तीन चीज़ें सिखाओ

हदीस पाक में आता है कि अपने बच्चों को तीन चीज़ें सिखाओ।

१. अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की मुहब्बत सिखाओ।

२. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुहब्बत सिखाओ।

३. अहले बैत (नबी पाक के घर वालों) की मुहब्बत सिखाओ। कुरआन की मुहब्बत सिखाओ।

अब इनकी मुहब्बत सिखाना माँ के बस में है। इसका तरीक़ा यह है कि अल्लाह की मुहब्बत से मुताल्लिक़ (संबन्धित) वाक़िआ़त सुनायें। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की निस्बत से मुताल्लिक़ वाक़िआ़त सुनायें। कुरआन पाक की मुहब्बत से मुताल्लिक़ वाक़िआ़त सुनायें। 'क़ससुल् कुरआन' किताब में अच्छे-अच्छे वाक़िआ़त हैं।

जब बच्चों को कुछ वाक़िआ़त सुनाने हैं तो बच्चों को सोने से पहले कुरआन के मुताल्लिक़ वाक़िआ़त सुनायें। ताकि बच्चे जब बड़े होकर कुरआन पढ़ेंगे, वे वाक़िआ़त पहले से उनके दिलों में होंगे। तो

बच्चों को अच्छी-अच्छी बातें सुनाईये। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के हालात सुनाईये, औलिया-ए-किराम के हालात सुनाईये ताकि बच्चों के अन्दर नेकी का शौक़ पैदा हो और बच्चे नेक बनकर ज़िन्दगी गुज़ारने का इरादा कर लें।

बच्चों को ताना मत दें

एक बात और भी ज़ेहन में रखिये अपने बच्चों को कभी भी ताना न दें। बच्चे कभी कोई ग़लती भी कर बैठें या कोई क़सूर कर बैठें तो बच्चे को उसके गुनाह और ग़लती का ताना देना वह भी लोगों के सामने, यह तो ज़हर में बुझे तीर की तरह है।

एक बात बुज़ुर्गों ने बताई कि बच्चा सात साल तक माँ-बाप का गुलाम होता है। सात से लेकर चौदह साल तक माँ-बाप का मुशीर होता है, यानी उनकी बात भी मान लेता है, कभी-कभी अपने मश्विरे भी दे देता है।

चौदह साल के बाद फिर वह या तो माँ-बाप का दोस्त है या फिर माँ-बाप का दुश्मन होता है। इसलिये ये बच्चे थोड़े अ़रसे के लिये आपके पास गुलाम की हैसियत से हैं। उनको जो कहेंगी वे मानेंगे। लेकिन और बड़े हो गये तो अपने मश्विरे भी देने शुरू कर देंगे। और जब तेरह साल से ऊपर आ गये, अब उनसे ज़्यादा उम्मीद मत रखिये। पहले आपने अच्छी तरबियत कर दी तो यह आपके गुलाम और फ़रमाँबरदार बने रहेंगे, आपके ख़िदमतगार हैं, आपकी ख़ुशी में उनकी ख़ुशी और आपकी नाराज़गी में उनकी नाराज़गी है। लेकिन अगर आपने अच्छी तरबियत नहीं की तो फिर १४ साल के बाद बच्चे की तरबियत करना मुश्किल हो जाता है।

यह तो इसी तरह है कि सख़्त लोहा किसी के सामने रख दो और उसको कहो कि इसको किसी ख़ास शक्ल में ढाल दीजिये यह सख़्त लोहा ढालना फिर बड़ा मुश्किल हो जाता है। इसलिये बचपन से

ही तरबियत अच्छी कीजिये।

बच्चे पर तनक़ीद मत कीजिये

कई बार मायें कहती हैं कि बच्चा बाप की बात नहीं मानता। वजह यह होती है कि तरबियत अच्छी नहीं होती। बच्चे को डाँटा ही जाता है, सिर्फ़ तनक़ीद ही की जाती है। बच्चा जब जवान हो जाता है फिर वह किसी की डाँट नहीं सुनता। अब उसकी अपनी सोच काम करना शुरू कर देती है।

इसलिये याद रखना बाज़ बच्चे बड़े होकर अपने बाप से ऐसी नफ़रत करते हैं जैसे कोई पाप से नफ़रत किया करता है। इसकी बुनियाद यह है कि उसकी अच्छी तरबियत नहीं की जाती। इसलिये बच्चों की अच्छी तरबियत कीजिये।

बच्चों से बात मनवाईये हुक्म न दीजिये

एक और नुक्ता भी ज़ेहन में रखिये। बच्चों से बात मनवाने का गुर ढूँढ़ें और खुल्लम-खुल्ला बच्चों को हुक्म न दिया करें कि मैं हुक्म दे रही हूँ तुम ऐसे करो। अगर बच्चे ने न किया तो वह आपकी वजह से गुनाहगार बनेगा।

हमारे बुज़ुर्गों का तरीक़ा था कि वे बच्चों को बात भी कहते थे मगर प्यार के अन्दाज़ में। बेटा! अगर तुम ऐसा कर दो तो मुझे बड़ी खुशी होगी। बेटा! अगर आप ऐसा कर दो तो मैं बड़ी दुआयें दूँगी। जब आप इस तरह से बात करेंगी, अगर बच्चे ने बात मान ली वाक़ई उसको दुआयें मिल जायेंगी और न भी मानी तो कम से कम वह गुनाह का मुर्तकिब (करने वाला) तो नहीं होगा। उस पर न मानने की वजह से नहूसत तो नहीं पड़ेगी।

बचपन की ला-उबाली उम्र है। उसको भी पूरी तरह पता नहीं कि बात न मानने की क्या नहूसतें होती हैं। इसलिये बच्चों को इन

नहूसतों से बचाने के लिये कभी डायरेक्ट हुक्म न कीजिये मश्विरे के तौर पर बात किया करें। मेरे बेटे! अगर आप गिलास भर लाओ तो कितना अच्छा है, गिलास पानी का लाकर दोगे तो कितनी दुआयें मिलेंगी। मुझे खुशी होगी। बेटे यह बहुत अच्छा काम होता है।

तो मश्विरे के अन्दाज़ में बच्चे को काम कहें ताकि बच्चा उसको करे तो उसको अज्र मिल जाये। और अगर खुदा न करे वह बात भी न माने तो न मानने की नाफ़रमानी का दाग़ उसके दिल पर न लगने पाये। माँ तो बड़ी रहीम व करीम होती है, कभी भी बच्चे के दिल की अंधेरी को पसन्द नहीं करती। जो माँ अपने बेटे के जूते की नोक को भी चमका कर रख देती है अगर ब्रश नहीं मिलता तो अपने दुपट्टे से साफ़ कर देती है, वह अपने बेटे के दिल की अंधेरी को कैसे पसन्द कर सकती है। मगर उसे पता नहीं होता कि उसको तरबियत कैसी करनी है। इसलिये इस बात का ख़ास ख़्याल रखिये।

बच्चों के दिल में दुश्मनी का बीज मत बोईये

एक और बहुत अहम चीज़ है कि बच्चों की उम्र ऐसी होती है कि उन्होंने आस-पास के माहौल को देखकर उससे सीखना होता है। तालीम होती है बच्चे की फ़ितरत में सीखने का माद्दा होता है। इसलिये आप देखेंगी कि बच्चा जब भी किसी चीज़ को हाथ में पकड़ता है तो थोड़ी देर हाथ में लेता है, किस लिये? इसलिये कि वह हाथ में लेकर देखता है कि यह चीज़ सख़्त है या नर्म है। जब हाथ लगाकर उसको पता चल गया कि यह नर्म है या सख़्त है, उसके बाद वह बच्चा उसको मुँह में डालने की कोशिश करता है।

इसकी वजह क्या होती है? यह कि वह उसका ज़ायक़ा चखने की कोशिश करता है। तो उस नर्म या सख़्त को देखकर और ज़ायक़े को देखकर वह हर चीज़ को पहचानना चाहता है कि यह चीज़ कैसी है। यह अल्लाह ने फ़ितरी तौर पर बच्चे के अन्दर एक माद्दा रख दिया

है। इसलिये बच्चा शीशे की चीज़ उठाता है, पहले उसे हाथ लगाता है फिर उसे मुँह में लेजाता है। जब मुँह में लेजाकर उसके ज़ायके का उसको पता चल गया तो अब उसे फेंकेगा जिससे वह चीज़ टूट जायेगी।

आप ज़ेहन में रखें कि जब भी कोई चीज़ बच्चे की पहुँच में होगी बच्चा पहले हाथ लगायेगा फिर उसको मुँह में डालेगा। फिर उसे ज़मीन पर फेंक कर देखेगा। अब शीशे की टूटने वाली चीज़ों को बचाना यह माँ की ज़िम्मेदारी है। बच्चे ने तोड़ दिया तो उसकी पिटाई न करें, यह बच्चे का फ़ितरी अ़मल था जो बच्चे ने किया। क़सूर माँ का था और मार बच्चे को पड़ रही होती है। यह तो शीशे की चीज़ों को तोड़ देता है, बच्चे को तो तोड़नी है, बच्चे को क्या पता यह टूट गई या नहीं टूटी। उसने तो यह देखा कि उसकी आवाज़ कैसे आती है। छनाके की आवाज़ आई, बच्चा ख़ुश हो गया। उसमें से ऐसी आवाज़ आती है उसका तो ज़ेहन इतना ही काम कर रहा होता है।

बच्चों के सवालों का जवाब देने से मत घबराईये

जब बच्चे ज़रा और बड़े होते हैं तो वे चीज़ों को नहीं तोड़ते, फिर वे माँ-बाप से सवाल पूछना शुरू कर देते हैं। कई बच्चे ज़्यादा सवाल पूछते हैं। जो बच्चे ज़्यादा सवाल पूछें इसका मतलब होता है कि वे बच्चे ज़्यादा ज़हीन बच्चे होते हैं। सवाल का जवाब देने से मत घबराया करें, बच्चे को मुत्मईन करने की कोशिश करें। कई बार बच्चा माँ के जवाब से मुत्मईन नहीं होता, माँ के जवाब पर कोई और सवाल कर देता है, माँ धमका देती है, क्या हर वक़्त तुम सवाल पूछते रहते हो, चुप करो। ख़बरदार जो बोले।

अगर आपने धमकाकर चुप करवा दिया तो बच्चा चुप तो हो जायेगा मगर उसके ज़ेहन से सवाल तो नहीं निकलेगा। वह तन्हाई में बैठकर सोचता रहेगा। आपने शैतान को मौक़ा दे दिया कि वह उस

सवाल को बहाना बनायेगा, कहेगा मेरी अम्मी को कुछ नहीं पता। मेरी अम्मी को न दीन का पता है न दुनिया का पता है। वह माँ के ख़िलाफ़ बैठकर सोचेगा। आपने डाँट पिलायी उसका असर बच्चे के दिल पर हुआ, वह तन्हाई में जाकर माँ के ख़िलाफ़ सोचना शुरू कर देगा। और अगर बाप ने ऐसा किया और बापों की तो आ़दत ही ऐसी होती है, एक आध बात का जवाब देते हैं और अगर दूसरी बात पूछ ली तो कहता है बड़ा फ़लॉसफ़र बनता है, चल दफ़ा हो जा।

अगर ऐसी बात कर दी तो उसने बच्चे के दिल में अपनी दुश्मनी का बीज बो दिया। माँ-बाप को चाहिये कि ऐसे बीज न बोया करें। अगर बीज बायेंगे कल उनको काटने पड़ेंगे। ये काँटेदार दरख़्त जब उनके अन्दर पैदा होंगे तो कल माँ-बाप के साथ उनका रवैया भी ऐसा ही होगा। इसलिये चाहिये कि बच्चे जितने मर्ज़ी सवाल पूछें संयम से काम लेकर बच्चे को मुख़्तसर जवाब बताती रहें यहाँ तक कि बच्चे मुत्मईन हो जायें।

यह बच्चे का एक मिज़ाज है, फ़ितरत ने उसके अन्दर ऐसी तलब रख दी होती है कि वह हर चीज़ के बारे में पूछता है, इसलिये इसको एक फ़ितरत का अ़मल समझते हुए बच्चे को बातों का आराम से जवाब दें और अगर कोई बात आप महसूस करें कि बच्चा मुत्मईन नहीं हुआ, तो अपने मियाँ से उस पर विचार-विमर्श करें, किसी आ़लिम से उसका जवाब मालूम करायें और जब उसका सही जवाब मिल जाये फिर अपने बच्चे को बैठकर बतायें। बेटे! आपने मुझसे सवाल पूछा था उस वक़्त तो मैं उसका जवाब न दे सकी, उसका असल में यह जवाब है।

जब आप बच्चे को मुत्मईन कर देंगी तो बच्चा समझेगा कि जो मेरी अम्मी कहती है बस मुझे उस बात को मान लेना चाहिये। इस तरह बच्चे अपने माँ-बाप के फ़रमाँबरदार हो जाते हैं। उनके ज़ेहन में यह बात बैठती है कि माँ जो कहती है वह सोची समझी बात होती है,

और मेरा काम तो उस पर अ़मल करना होता है।

कई बार ऐसा भी होता है कि कुछ बच्चे कुदरती तौर पर कुन्द-ज़ेहन (मंदबुद्धि) होते हैं। कम-ज़ेहन से क्या मुराद है? मतलब यह है कुछ तो होते ही तेज़ दिमाग़ के हैं और कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जिनकी ज़ेहनी-सलाहियतें खुलने में देर लगती है। शुरू में उनके ऊपर मंदबुद्धिता का ग़लबा होता है, वे कम-ज़ेहन होते हैं। ऐसे बच्चे को समझाया जाये। वे समझते नहीं। बस ला-उबाली सी उम्र खेलनी की।

बच्चा अगर मंदबुद्धिता का इज़्हार करे तो उससे घबरायें नहीं, कोई बात नहीं थोड़ा सा बड़ा होकर बच्चे की ज़ेहनी सलाहियतें खुल सकती हैं।

आइंस्टाईन वैज्ञानिक कैसे बना?

चुनाँचे विज्ञान की एक किताब में लिखा है कि आइंस्टाईन जो दुनिया का इतना बड़ा वैज्ञानिक बना। जब यह छोटा बच्चा था, स्कूल जाता था, उसको गिनती भी पूरी नहीं आती थी। यहाँ तक कि जब यह कंडेक्टर को पैसे देता और वह इसे बाक़ी पैसे वापस देता तो यह अक्सर उससे कहता तुमने मुझे पूरे पैसे वापस नहीं किये, और जब वह उसे हिसाब समझाता तो पैसे पूरे होते। कई बार ऐसा हुआ।

एक बार बस के कंडेक्टर ने उसे कह दियाः तू कैसे ज़िन्दगी गुज़ारेगा, तुझे तो हिसाब भी नहीं आता। बस उसके दिल में यह बात बैठ गई कि मुझे हिसाब पढ़ना है। चुनाँचे उसने हिसाब पर मेहनत करना शुरू कर दी। Physice पर मेहनत करनी शुरू कर दी और Theory of realitivity का तसव्वुर पेश किया, और आज विज्ञान की दुनिया में लोग उसका ऐसा एहतिराम करते हैं जैसे दीन की दुनिया में पैग़म्बरों का एहतिराम किया जाता है।

अगरचे मिसाल एक काफ़िर बच्चे की है मगर सोचने में हमारे लिये एक अच्छी मिसाल है कि बच्चे शुरू में कई दफ़ा कुन्द-ज़ेहन

(मंदबुद्धि के) होते हैं मगर यह मतलब नहीं कि ये सारी ज़िन्दगी ऐसे ही कम-ज़ेहन के रहेंगे। और अगर बच्चे को आप समझती हैं कि तेज़ ज़ेहन का है तो शुरू से ही उसकी तालीम का ख़ास इन्तिज़ाम करें।

याद रखें खुसूसी इन्तिज़ाम (Special Education) के ज़रिये बच्चों को अच्छी तालीम दी जा सकती है। हमने दुनिया में देखा कि लोग अपने नाबीना (अंधे) बच्चों को ऐसी तालीम देते हैं कि वे अख़बार पढ़ लेते हैं। लोग अपने नाबीना (अंधे) बच्चों को बड़े-बड़े आ़लिम और हाफ़िज़ और क़ारी बना लेते हैं। अपने बच्चों को तालीम हर हाल में दीजिये। खुदा न करे अगर बच्चा किसी तरह अपंग है तो बच्चे को नज़र-अन्दाज़ न करें, आपके ऊपर फ़र्ज़ है कि उस बच्चे को इल्म सिखायें।

अगर उसको इल्म आ गया तो अब उसके लिये ज़िन्दगी की आसानियाँ हो जायेंगी। हमने बड़े अपंगों और जिस्मानी एतिबार से माज़ूर लोगों को देखा कि वे बड़े-बड़े कारोबार को आसानी से चलाते हैं। Wheel chair पर बैठे होते हैं मगर उनके सामने लाखों करोड़ों के फ़ैसले हो रहे होते हैं। और वे नौजवान जिनकी तालीम उनके पास है, अपंग होने के बावजूद इतने बेहतरीन ताजिर बनते हैं, इतने बेहतरीन इनसान बनते हैं, इतने बेहतरीन आ़लिम बन जाते हैं। इसलिये बच्चा किसी भी हालत में हो, बच्चे से ना-उम्मीद नहीं होना चाहिये। अलबत्ता मेहनत ज़रा ज़्यादा करनी पड़ती है, मगर तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) नाम इसी का है कि माँ औलाद की तरबियत अच्छी करे। माँ ने बच्चे की तरबियत अच्छी कर दी, उसके बदले उसको जन्नत मिलेगी। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का साथ और नज़दीकी नसीब होगी। इसलिये इसको एक ज़िम्मेदारी समझकर पूरा कीजिये। नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी बच्चों को समझाया करते थे।

बच्चों को बुरे दोस्तों से बचाईये

एक बात और ज़ेहन में रखिये कि बच्चों को बुरे दोस्तों से बचाने का एहतिमाम करें। याद रखना बच्चे अपने दोस्तों से इतनी गन्दी बातें सीखते हैं जिनका तसव्वुर माँ-बाप भी नहीं कर सकते। इसलिये माँ-बाप को चाहिये कि बच्चे के दोस्तों पर नज़र रखें। अपने स्कूल में क्लास के अन्दर किनके पास उठता-बैठता है, इसका भी टीचर से ज़रा पता करते रहें। और टीचर को कहें कि बच्चे पर वह भी नज़र रखे।

बच्चे के दोस्त अगर अच्छे होंगे तो बच्चे की ज़िन्दगी की कश्ती किनारे लग जायेगी और अगर दोस्त बुरे हुए तो वे बच्चे की कश्ती को डुबोकर रख देंगे। दोस्त ही बनाते हैं और दोस्त ही बिगाड़ते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमा दिया कि "इनसान तो अपने दोस्त के दीन पर होता है"।

इसलिये इस बात का ख़ास ख़्याल रखना। बच्चे ज़रा बड़े हुए, बेटी बड़ी हो गई, अब सोचें कि वह किन लड़कियों के साथ उठना-बैठना रखती है, वे नमाज़ी हैं या नहीं। नेक घरों की हैं या नहीं। पर्दे का ख़्याल रखने वाली हैं या नहीं। बड़े गुनाहों की मुर्तकिब (करने वाली) होने वाली हैं तो कल को आपकी बेटी भी उन्हीं जैसी बन जायेगी। इसलिये उनपर ख़ास निगाह रखना यह माँ-बाप की ज़िम्मेदारी होती है। औलाद को बुरे दोस्तों से बचाईये। इसलिये पहले वक़्त में बड़े अपने बच्चों को नसीहतें करते थे कि किसको दोस्त बनाना चाहिये और किसको दोस्त नहीं बनाना चाहिये।

इमाम जाफ़रे सादिक़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि का फ़रमान

इमाम जाफ़रे सादिक़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद इमाम बाक़र रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने पाँच नसीहतें कीं कि बेटा

पाँच लोगों से दोस्ती न करना बल्कि अगर वे कहीं रास्ते में चल रहे हों तो उनके साथ मिलकर भी न चलना। वे इतने ख़तरनाक होते हैं। मैंने पूछा कौन अब्बू? तो उन्होंने फ़रमायाः

१. झूठे से दोस्ती न करना। मैंने पूछा क्यों? वह फ़रमाने लगे इसलिये कि वह दूर को क़रीब दिखायेगा और क़रीब को दूर दिखायेगा, और तुम्हें धोखे में रखेगा। मैंने कहा अच्छा।

२. दूसरा कौनसा? फ़रमाने लगेः तुम किसी बख़ील (कन्जूस) से दोस्ती न करना। कन्जूस मक्खी चूस से दोस्ती न करना। बख़ील से दोस्ती न करना। मैंने कहा क्यों? फ़रमाने लगे कि वह तुम्हें उस वक़्त छोड़ देगा जब तुम्हें उसकी बहुत ज़रूरत होगी, वह धोखा दे जायेगा। इसलिये उससे भी दोस्ती न करना।

३. मैंने पूछा तीसरा कौनसा? फ़रमाने लगे फ़ाजिर फ़ासिक़ से, यानी जो अल्लाह के हुक्मों के तोड़ने वाला हो, उससे भी कभी दोस्ती न करना। मैंने पूछा किस लिये? फ़रमाया इसलिये कि वह तुम्हें एक रोटी के बदले में बेच देगा, बल्कि एक रोटी से भी कम के बदले में बेच देगा। मैंने पूछा अब्बू एक रोटी के बदले में बेचने की बात तो समझ में आती है, एक रोटी से कम में कैसे बेचेगा? फ़रमाया बेटे वह एक रोटी की उम्मीद पर तुम्हारा सौदा कर देगा और तुम्हें भाव का पता भी नहीं चलने देगा।

यानी फ़ासिक़ (बुरे कामों में लिप्त) बन्दे का क्या एतिबार है, जो खुदा के साथ वफ़ादार नहीं वह बन्दों का वफ़ादार कैसे हो सकता है।

४. बेवक़ूफ़ से दोस्ती न करना। मैंने पूछा किस लिये? फ़रमाया इसलिये कि वह तुम्हें नफ़ा पहुँचाना चाहेगा और तुम्हें नुक़सान पहुँचा देगा।

५. मैंने पूछा पाँचवाँ कौनसा? फ़रमाया क़ता-रहमी करने वाले यानी रिश्ते-नाते तोड़ने वाले बेवफ़ा इनसान के साथ दोस्ती न करना, क्योंकि बेवफ़ा आख़िरकार बेवफ़ा होता है। तो पहले वक़्त में माँ-बाप

अपने बच्चों को नसीहतें किया करते थे।

बच्चों को मारना कोई समाधान नहीं

बच्चों को धमका कर आप बेशक डाँट लीजिये। आप ऐसा चेहरा बना लीजिये कि आप जैसे बड़े गुस्से में हों, लेकिन बच्चों को मारने से बचें। मारने से गुरेज़ करें, बच्चों को मारना कोई हल (समाधान) नहीं होता, बल्कि मेरी तो यह सोच है कि जो इनसान बच्चे को मारता है वह एक तरह से मान लेता है कि मैं बच्चे को समझाने में शिकस्त खा गया। मैं बच्चे को समझाने में नाकाम हो गया।

गोया मारना इस बात को तस्लीम करना है कि मैं बच्चे को समझाने में नाकाम हो गया। जब कोई बच्चे को समझाने में नाकाम हो जाता है तब वह बच्चे पर हाथ उठाता है। हाथ उठाने से बच्चे नहीं समझा करते, इसलिये बच्चों को मारने की बजाये समझाने और डाँटने की हद तक रहें। हाँ अगर कभी कोई उसूली ग़लती कर ले, बद्तमीज़ी कर दे, कोई बड़ा मामला कर ले, अब उसके लिये सज़ा ज़रूरी होती है। लेकिन जहाँ तक हो सके समझा कर रास्ते पर लाने की कोशिश कीजिये।

बच्चों की लाइब्रेरी

अप आपने घर के अन्दर बच्चों की किताबों की लाइब्ररी ज़रूर बनायें, ताकि बच्चों को पढ़ने के लिये किताबें मिल जायें। हमने देखा कि बच्चे बेकार के खेलों में लगने की बजाये वे किताबें पढ़ते हैं जो बच्चों की हों, कहानियों की हों, अच्छे नतीजे वाली हों, बच्चे उनको पढ़ते हैं और खुश रहते हैं।

बच्चों का टाईम-टेबल बनाना

माँ-बाप बच्चों का टाईम-टेबल बना दें कि इस वक़्त सोना है इस वक़्त नहाना है इस वक़्त खाना खाना है। इस वक़्त पढ़ना है, और

इस वक़्त खेलना है। खेलने के वक़्त उसको ज़बरदस्ती खेलने भेजें।

बच्चों को हमें कोई लूला-लंगड़ा नहीं बनाना होता, बच्चों को अपंग नहीं बनाना होता, खेलने के वक़्त बच्चा खेले, पढ़ने के वक़्त बच्चा पढ़े, खाने के वक़्त खाये और सोने के वक़्त सोये। इसलिये बच्चे की अच्छी तरबियत यही है कि अच्छी सेहत हो, इसलिये कि जब सेहत अच्छी होगी तो फिर दिमाग़ भी अच्छा होगा। एक अच्छा दिमाग़ हमेशा एक अच्छे बदन में हुआ करता है। यह माँ की तरबियत है जिसके असरात बच्चों पर होते हैं।

रिश्तों के लिये मेयारी चुनाव

जब बच्चे बड़े हो जायें और जवानी की उम्र को पहुँच जायें, शादी का वक़्त होने लगे तो अब बच्चों के लिये रिश्ते ढूँढ़ें। एक नुक्ते की बात याद रख लेना कि बच्चे की पसन्द का भी ख़्याल रखें मगर मुख्य चीज़ यह सामने रखें कि बेटे के लिये कोई लड़की ढूँढ़नी है तो वह लड़की ढूँढ़ें जिसके दिल में ख़ौफ़े-ख़ुदा हो। और बेटी के लिये दामाद तलाश करना है तो वह ढूँढ़ें जिसके दिल में ख़ौफ़े-ख़ुदा हो।

यह ख़ौफ़े-ख़ुदा का लफ़्ज़ याद रखना, यह ख़ौफ़े-ख़ुदा ऐसी चीज़ है अगर यह बहू के दिल में होगा तो यह आपके बेटे को भी सारी ज़िन्दगी ख़ुश रखेगी। आपकी भी ख़िदमत करेगी। अगर आपके दामाद में ख़ौफ़े-ख़ुदा होगा तो वह आपकी बेटी को भी ख़ुश रखेगा आपके भी हुक़ूक़ पूरे करेगा।

जब दिल में ख़ौफ़े-ख़ुदा (अल्लाह का डर) नहीं होता तो फिर झगड़ों की ज़िन्दगी शुरू हो जाती है। इसलिये जहाँ आप बाक़ी तमाम चीज़ें देखें एक नुक्ते की बात इस आजिज़ ने आपको बयान कर दी, वह यह है कि जब भी कोई रिश्ता देखें, यह ज़रूर देखें कि उसके दिल में ख़ौफ़े-ख़ुदा है या नहीं। ख़ौफ़े-ख़ुदा अगर होगा तो वह आपकी ज़िन्दगी में आपके घर में एक फ़र्द (अच्छे सदस्य) का इज़ाफ़ा हो

जायेगा, सारे ग़म दूर हो जायेंगे, और वह ख़ुद-ब-ख़ुद सबके हुक़ूक़ का ख़्याल रखने वाला होगा।

इस ख़ौफ़े-ख़ुदा को अ़रबी ज़बान के अन्दर "तक़्वा" कहते है। तक़्वा इतना अहम है कि कुरआन मजीद में हर चन्द आयतों के बाद तक़्वा इख़्तियार करने का हुक्म दिया गया है। ख़ास तौर पर सूरः निसा को पढ़कर देख लीजिये हर चन्द आयतों के बाद 'वत्तक़ुल्लाह, वत्तक़ुल्लाह, वत्तक़ुल्लाह' (यानी अल्लाह से डरो) है। यह जो बार-बार वत्तक़ुल्लाह कहा गया, अल्लाह तआ़ला जानते थे कि तक़्वे के बग़ैर मियाँ-बीवी के मामलात में सन्तुलन नहीं रखा जा सकता। कमी-ज़्यादती का ख़तरा है। इसलिये बार-बार तक़्वा, तक़्वा, तक़्वा की तलक़ीन की गई। आपको भी एक लफ़्ज़ याद रखना चाहिये जिसको ख़ौफ़े-ख़ुदा कहते हैं।

जब बच्चों के लिये कोई रिश्ता ढूँढ़ना हो, जहाँ बाक़ी बातें देखें एक ख़ास चीज़ पर नज़र रखें कि उसके दिल में ख़ौफ़े-ख़ुदा (अल्लाह का डर) हो। अगर ख़ौफ़े-ख़ुदा हुआ तो फिर वह आपके घर का एक अच्छा फ़र्द (सदस्य) बनकर रहेगा। अगर लड़की है तो अच्छी फ़र्द बनकर रहेगी और आपकी ज़िन्दगी में ख़ुशियाँ आयेंगी। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम इसी मेयार को सामने रखते थे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का अपनी बहू को चुनने के लिये मेयार

मशहूर वाक़िआ़ है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु रात को जा रहे थे, पहरा देते हुए। जब सुबह की अज़ान का वक़्त हुआ, एक घर में से आवाज़ें आ रही थीं। आपने क़रीब होकर सुना तो एक बुढ़िया अपनी जवान बेटी से बात कर रही थी कि बेटी क्या बकरी ने दूध दे दिया? उसने कहा हाँ अम्मी दे दिया। पूछा कि बकरी ने कितना दूध

दिया? उसने कहा थोड़ा दिया है। बुढ़िया कहने लगी दूध लेने वाले आयेंगे, अगर दूध कम पड़ गया तो वे नहीं लेंगे, इसलिये कुछ पानी डाल दो। यह दूध पूरा नज़र आयेगा। बेटी ने कहा अम्मी मैं ऐसा हरगिज़ नहीं करूँगी। बुढ़िया ने कहा कौनसा तुम्हें अमीरुल्-मोमिनीन हज़रत उमर देख रहे हैं? तू पानी डाल दे। बेटी ने फिर यही जवाब दिया अम्मी! अगर उमर बिन ख़त्ताब नहीं देख रहे तो उमर बिन ख़त्ताब का परवर्दिगार तो देख रहा है। मैं तो पानी नहीं डालूँगी।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यह बात सुनी और घर आ गये। जब दिन का वक़्त हुआ आपने उस बुढ़िया को बुलवाया और उस लड़की को भी बुलवाया। जब आपने उनसे बात पूछी तो पता चला कि ये आपस में यूँ बातें कर रही थीं। पता चला वह लड़की अभी कुंवारी थी, शादी नहीं हुई थी।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उस बुढ़िया से कहा मैं अपने बेटे के लिये इस लड़की का रिश्ता माँगता हूँ। चुनाँचे आपने अपने बेटे के साथ उस लड़की का रिश्ता कर दिया।

देखिये हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपने बेटे के लिये ऐसी लड़की का रिश्ता पसन्द करते हैं। यह वह लड़की थी जिसको अल्लाह ने एक बेटी अ़ता की और वह बेटी थी जिसके पेट से हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल्-अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि पैदा हुए। तो यह लड़की जिसमें ख़ौफ़े-ख़ुदा (अल्लाह का डर) था, यह उमर बिन अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि की नानी बनीं। इससे मालूम हुआ कि जब दिल में ख़ौफ़े-ख़ुदा होता है तो अल्लाह तआ़ला आने वाली नसलों से औलिया-अल्लाह को पैदा कर देते हैं। इसलिये चाहिये कि बच्चे की तरबियत के बारे में अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त से भी दुआ़यें माँगें और उनकी तरबियत का ख़ास ख़्याल रखें। उनको नमूना बनकर दिखायें।

बच्चे की तरबियत का रुला देने वाला वाक़िआ

एक बच्चा स्कूल में पढ़ता था। यह सच्चा वाक़िआ है। उसको इस्लामियात के टीचर ने नज़्म सिखाई।

वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला
मुरादें ग़रीबों की बरलाने वाला

वह बच्चा जब इस नज़्म को पढ़ता तो इस तरह पढ़ताः

वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाले
मुरादें ग़रीबों की बरलाने वाले

उस्ताद ने कई बार कहा कि शायर ने 'वाला' लिखा है मगर वह इसी तरह पढ़ता। उस्ताद ने कहा अच्छा अब वह इस ग़लती को ठीक कर लेगा। लेकिन बच्चे ने जब सालाना फ़ंकशन के ऊपर वह नअ़त सुनाई। तो बच्चे ने फिर 'वाले' पढ़ा।

डिप्टी कमिश्नर आया हुआ था, उसने अपने सदारती ख़ुतबे में कहा कि आजकल उस्ताद बच्चों का ख़्याल नहीं करते, यह देखो इस्लामियात के टीचर ने बच्चे को नअ़त या नज़्म पढ़ाई और बच्चे ने 'वाला' नहीं 'वाले' कहा। उस्ताद को पता नहीं शायर ने क्या लिखा और लड़का क्या पढ़ रहा है।

चुनाँचे उस्ताद की पूरे मजमे के अन्दर बेइज़्ज़ती हुई। उसको नीचा देखना पड़ा, हालाँकि उसने तो निशानदेही कर दी थी। उसने कहा इस बच्चे ने मेरी बात नहीं मानी और मुझे सबके सामने रुस्वा कर दिया।

चुनाँचे साल मुकम्मल हुआ, अगले साल की क्लासों में बच्चे चले गये। अल्लाह की अ़जीब शान देखिये कि उस बच्चे की क्लास के शुरू के दिन थे। एक दिन उनका गणित का टीचर नहीं आया था, एक पीरियड Reces से पहले था। Half time से पहले था। एक

पीरियड Half time के बाद था। चुनाँचे हैडमास्टर ने देखा Staff Room में इस्लामिक स्टडीज़ के टीचर फ़ारिग़ हैं। उनका पीरियड ख़ाली था। उन्होंने उनको कहा आप फ़लाँ क्लास में चले जायें। आज उनके टीचर नहीं आये। आज तो दाख़िलों का पहला दिन है। उनके पास किताबें भी नहीं हैं। आप उनसे प्यार व मुहब्बत की बातें करते रहें। बच्चों का वक़्त गुज़र जायेगा ये शोर नहीं करेंगे।

चुनाँचे इस्लामियत के टीचर आ गये वह कहने लगे कि भाई मैं कुछ बातें आपको सुनाऊँगा। फिर आप से छोटे-छोटे सवालात पूछूँगा। आप जवाब दे देना, हमारा वक़्त अच्छा गुज़र जायेगा। लड़के तैयार हो गये। पहले उस्ताद ने काफ़ी बातें सुनाईं। जब थक गये तो उन्होंने छोटे-छोटे सवालात शुरू कर दिये। किसी से कुछ पूछा किसी से कुछ पूछा। जब उस लड़के की बारी आई उस्ताद ने पूछा यह बताओ हमारे पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम का क्या नाम है। यह लड़का खड़ा हो गया। उसका नाम अहमद था। उसने कोई जवाब नहीं दिया। उस्ताद ने पूछा बताओ पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम का क्या नाम है? यह फिर चुप रहा।

उस्ताद ने दिल में सोचा इसने पहले भी सब के सामने मेरी बेइज़्ज़ती करवा दी थी अब फिर पूरी क्लास के अन्दर मैं पूछ रहा हूँ जवाब नहीं देता, मुझे लगता है यह लड़का बड़ा ज़िद्दी क़िस्म का लड़का है। चुनाँचे उस्ताद ने डंडा हाथ में लिया, क़रीब आ गया, कहने लगा तुम्हें हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नाम आता है? लड़के ने सर हिलाकर कहा जी हाँ। पूछा फिर बताते क्यों नहीं? लड़का चुप हो गया। उस्ताद ने कहा मैं तुम्हारी पिटाई करूँगा, तुम नाम क्यों नहीं बताते? लड़का ख़ामोश है। सारी क्लास के लड़के हैरान हैं यह तो इतना नेक और दीनी इल्म रखने वाला है, यह क्यों नहीं बता रहा।

उस्ताद को गुस्सा आया बार-बार पूछने पर भी बच्चे ने न बताया। उस्ताद ने उसको दो चार डंडे लगाये, थप्पड़ लगाये, बच्चे को

कभी मार नहीं पड़ी थी, पहली बार क्लास में पिटाई हुई तो बच्चा रोने लग गया। आँसू आने लगे।

अभी मार पड़ ही रही थी कि इतने में Half time की घन्टी बज गई। चुनाँचे उस्ताद कहने लगे अच्छा मैं अगले पीरियड में आ रहा हूँ और देखता हूँ कि तुम कैसे नाम नहीं बताते। मैं तुम्हारी ज़िद को तोड़कर दिखाऊँगा।

उस्ताद तो यह कहकर चले गये, बच्चे भी उठ गये, लेकिन कुछ बच्चे ऐसे थे जो उसके दोस्त थे। वे उसके क़रीब बैठ गये और वे ग़मज़दा नज़र आ रहे थे। इस बच्चे को तो कभी मार नहीं पड़ी थी। यह क्लास में प्रथम आने वाला बच्चा था। आज मार पड़ी बच्चा बिलक-बिलक कर रो रहा था। मगर किसी से कुछ नहीं कह रहा था।

कुछ देर के बाद यह अहमद उठा और बाहर गया Wash basin के अन्दर जाकर अपने चेहरे को धोया, अब Fresh up हो गया और आकर क्लास के अन्दर बैठ गया। Half time के बाद यह Fresh up अपनी कुर्सी पर बैठा था। सारी क्लास बैठ गई। जब दोबारा पीरियड लगा, उस्ताद दोबारा आये, अपना डंडा लहराते हुए उन्होंने कहा अहमद खड़े हो जाओ। अहमद खड़ा हो गया। उन्होंने पूछा बताओ हमारे पैग़म्बर का नाम क्या है? अहमद ने कहा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम। उस्ताद ख़ुश हो गये। कहने लगे तुमने पहले क्यों नहीं बताया? लड़का फिर ख़ामोश है। फिर पूछा कि बताओ पहले क्यों नहीं बता रहे थे? लड़का फिर ख़ामोश है।

अब उस्ताद समझ गये कि इसके अन्दर ज़रूर कोई राज़ है। उस्ताद क़रीब आये और क़रीब आकर उन्होंने बच्चे के सर पर शफ़क़त का हाथ रखा। उसको अपने सीने से लगाया, रुख़्सार का बोसा लिया। तुम मेरे शागिर्द हो, मेरे बेटे के जैसे हो। मैंने तुम्हें कहा था:

वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला
मुरादें ग़रीबों की बरलाने वाला

तुमने वहाँ भी "वाले" पढ़ा था और अब भी तुमने नाम नहीं बताया। आख़िर वजह क्या है? जब बच्चे को प्यार मिला, उस्ताद ने प्यार से बोसा लिया। बच्चे ने फिर बिलक-बिलक कर रोना शुरू कर दिया। उस्ताद ने तसल्ली दी उसको प्यार दिया। बेटे रोओ नहीं, वजह बताओ क्या है?

जब बच्चे की ज़रा तबीयत ठीक हुई वह कहने लगा कि असल बात यह है कि मेरे अब्बू दुनिया से गुज़र चुके हैं। उनको नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बहुत मुहब्बत थी। वह मुझे नसीहत किया करते थे कि बेटा तुम कभी भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नाम बेअदबी से नहीं लेना। इसलिये मैंने "वाला" की बजाये "वाले" कहा-

वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाले
मुरादें ग़रीबों की बरलाने वाले

फिर उस्ताद ने पूछा नाम क्यों नहीं बताया? कहने लगा मेरे अब्बू मुझे कहा करते थे कि बेटा नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नाम कभी भी बेवुज़ू नहीं लेना। मेरा उस वक़्त वुज़ू नहीं था। आपकी मार मैंने खा ली। आप मेरी हड्डियाँ भी तोड़ देते, मैं मार तो खा लेता लेकिन नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नाम बेवुज़ू नहीं लेता। अब मैं Half time के अन्दर वुज़ू करके आया हूँ। आपने पूछा मैंने अपने महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नाम बता दिया।

सोचिये तो सही एक मासूम बच्चा अपने बाप की बात की इतनी लाज रखता है। बाप मर गया बेटा सज़ायें बरदाश्त कर रहा है। थप्पड़ खा रहा है। डंडे खा रहा है, मगर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

का नाम बेवुज़ू लेने पर तैयार नहीं होता। यह माँ-बाप की तरबियत होती है। अच्छी तरबियत करेंगे तो बच्चे बचपन से वली बन जायेंगे और अगर तरबियत अच्छी न करेंगे तो बड़े होकर हर दिल की परेशानी बन जायेंगे।

आज कितने माँ-बाप हैं जो औलादों की अच्छी तरबियत न करने की वजह से आज छुप-छुपकर तन्हाईयों में रोते हैं। किसी को बता भी नहीं सकते। किसी के सामने दिल भी नहीं खोल सकते। वे जानते हैं कि उनको कितना दुख पहुँच रहा होता है।

अल्लाह से दुआ है कि अल्लाह तआ़ला हमारे दिलों को नेक बना दे और आने वाली नसलों को हिदायत नसीब फ़रमा दे। हमारे बच्चों की अच्छी तरबियत फ़रमा दे। जो कोशिश हमारे बस में है, हम वह कोशिश करें और फिर उन बच्चों के लिये दुआ माँगे। पंजाबी के शे'र हैं। मुम्किन है आप समझ तो न सकें मगर इस मौक़े पर पढ़ने को जी चाह रहा है। कहने वाले ने कहा है-

माली दी काम पानी देना
तै भर भर मश्काँ पावे
तै मालिक दा काम फल फूल लाना
लावे या न लावे

कि माली का काम तो यह होता है कि वह मश्कें पानी की भर-भर कर पोधे या दरख़्तों में डाल रहा होता है, और दरख़्त पर फल लगाना या न लगाना यह तो मालिक की मर्ज़ी होती है।

तो यह छोटा-सा बच्चा पौधे की तरह है। तरबियत का पानी और भर-भर कर मश्कें डालिये और फिर अल्लाह तआ़ला से दुआ कीजिये। ऐ अल्लाह! मैंने दौड़-दौड़कर मश्कें भरीं, पौधे को पानी दिया, मगर मौला फल लगाना तो तेरे इख़्तियार में है। तू लाये या न लाये। ऐ

अल्लाह! उसको फल लगा देना। अख़्लाक़ के फल लगा देना। अच्छी आ़दतों के फल लगा देना ताकि मेरे बच्चे समाज के अन्दर नेक इनसान बनकर ज़िन्दगी गुज़ारें।

अल्लाह तआ़ला हमारी औलादों की अच्छी तरबियत फ़रमा दे। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ○

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इस्लाम में औ़रत का मक़ाम

بسم الله الرحمن الرحيم ٥

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الّذين اصطفى اما بعد!

فَاَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْاُنْثٰى وَهُوَمُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَاكَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ٥ (سورة النحل) وقال الله تعالىٰ فى مقام اخر: وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ٥ وقال الله تعالىٰ فى مقام اخر: وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ.

سبحٰن ربك رب العزة عما يصفون ٥ وسلام على المرسلين ٥ والحمد لله رب العالمين ٥ اللّٰهم صل علىٰ سيّدنا محمد وعلىٰ ال سيدنا محمد وبارك وسلم.

क़ुरआन पाक में से जो मुबारक आयतें मैंने आपके सामने तिलावत की हैं, इनका मज़मून औ़रतों से मुताल्लिक़ या दाम्पत्य ज़िन्दगी से मुताल्लिक़ है। आज चूँकि औ़रतों ही से ख़िताब है तो औ़रतों ही से मुताल्लिक़ चन्द बातें अ़र्ज़ करना मक़सूद है।

इस्लाम से पहले औ़रत का मक़ाम

दीने इस्लाम वह दीन है कि जिसने औ़रत को उसके खोये हुए हुक़ूक़ वापस दिलाये। दुनिया की तारीख़ पर नज़र दौड़ाई जाये तो यह बात खुलकर सामने आती है कि इस्लाम से पहले दुनिया के विभिन्न

समाजों में औरत के हुक़ूक़ को पामाल किया जाता था। औरत को उसका जायज़ मक़ाम भी नहीं दिया जाता था।

फ़्राँस में औरत के बारे में तसव्वुर

मिसाल के तौर पर फ़्राँस के अन्दर यह तसव्वुर था कि औरत के अन्दर आधी रूह होती है, पूरे इनसान की रूह नहीं होती। इसलिये यह समाज में बुराई की वजह और बुनियाद बनती है।

चीन में औरत के बारे में तसव्वुर

चीन में औरत के बारे में यह तसव्वुर था कि औरत के अन्दर शैतानी रूह होती है इसलिये पूरे समाज में फ़साद (ख़राबी और बिगाड़) की बुनियाद यही बनती है।

जापान में औरत के बारे में तसव्वुर

ईसाईयत ने रहबानियत (दुनिया से और सामाजिक ज़िन्दगी से बिल्कुल कट जाने) को गढ़ लिया था। उनके उलेमा यह कहते थे कि दाम्पत्य ज़िन्दगी बसर करना अल्लाह की मारिफ़त (पहचान) हासिल करने में रुकावट है। चुनाँचे उनकी तालीम थी कि मर्द और औरत तन्हा ज़िन्दगी गुज़ारें शादी न करें और दुनियावी मामलात से बिल्कुल अलग-थलग रहें। अगर ऐसा करेंगे तो अल्लाह तआला की मारिफ़त नसीब होगी। दाम्पत्य ज़िन्दगी को इस रास्ते की रुकावट समझते थे।

हिन्दू-इज़्म में औरत के साथ बदतर सुलूक

हिन्दु-इज़्म में अगर किसी जवान औरत का शौहर मर जाता तो उसको बदबख़्त (मन्हूस) समझा जाता था यहाँ तक कि उसके शौहर की लाश को जलाया जाता तो वह औरत ज़िन्दा उसके अन्दर छलाँग लगाकर मर जाया करती थी, सती हो जाया करती थी। और अगर ऐसा न करती तो उसे समाज में इज़्ज़त व सम्मान के साथ रहने की

इजाज़त नहीं हुआ करती थीं।

अ़रब के इलाके में औ़रत के हुक़ूक़ की पामाली

खुद अ़रब के इलाक़ों में इस्लाम से पहले औ़रत के हुक़ूक़ को इस क़द्र पामाल (बरबाद और ज़ाया) किया जा चुका था कि लोग अपने घर में बेटी का पैदा होना बरदाश्त नहीं कर सकते थे। लिहाज़ा मासूम बच्चियों को ज़िन्दा दफ़न कर दिया जाता था।

इस हद तक औ़रत के हुक़ूक़ छीन लिये गये थे कि अगर कोई आदमी मर जाता था तो जिस तरह उसकी जायदाद उसके बड़े बेटे की विरासत में आती तो उसकी बीवियाँ भी उसके बड़े बेटे की बीवियों के तौर पर मुन्तक़िल हो जाती थीं। गोया उसका बड़ा बेटा अपनी माँओं को अपनी बीवियाँ बना लेता था।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आ़मद और खुशी का पैग़ाम

यह उस वक़्त समाजी ज़िन्दगी की हालत थी। जब अल्लाह के प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुनिया में तशरीफ़ लाये, और आपने आकर वाज़ेह किया कि ऐ लोगो! औ़रत अगर बेटी है तो यह तुम्हारी इ़ज़्ज़त है, अगर यह बहन है तो तुम्हारी आबरू है, अगर यह बीवी है तो तुम्हारी ज़िन्दगी की साथी है, अगर माँ है तो तुम्हारे लिये इसके क़दमों में जन्नत है।

और यह भी फ़रमा दिया कि जिस आदमी की दो बेटियाँ हों और वह उनकी अच्छी तरबियत (पालन-पोषण और उनकी तालीम का फ़र्ज़ अदा) करे, उनको तालीम दिलवाये यहाँ तक कि उनका फ़र्ज़ अदा करे तो यह जन्नत में मेरे साथ ऐसे होगा जैसे हाथ की दो उंगलियाँ एक दूसरे के साथ होती हैं। तो गोया बेटी के पैदा होने पर जन्नत का दरवाज़ा खुलने की खुशख़बरी दी गई।

औ़रत और विलायत

और साथ ही यह भी वतला दिया कि जो कोई भी नेक अ़मल करे, मर्द हो या औ़रत और वह ईमान वाला हो, हम उसको ज़रूर-ज़रूर पाकीज़ा और बेहतरीन ज़िन्दगी अ़ता फ़रमायेंगे। तो जिस तरह मर्द नेकी और इबादत करके अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त के वली बन सकते हैं, औ़रतें भी इसी तरह नेकी और इबादत के ज़रिये विलायत के अनवारात हासिल कर सकती हैं। अल्लाह तआ़ला ने उनके लिये भी विलायत के दरवाज़े को खुला रखा है।

चुनाँचे दीने इस्लाम ने औ़रत को एक वक़ार अ़ता किया है, जो दुनिया आज तक औ़रत को नहीं दे सकी। ऐसा वक़ार कि उसको घर के अन्दर इ़ज़्ज़त की नज़र से देखा जाये और समाज के अन्दर एक इ़ज़्ज़त व सम्मान की हैसियत दी जाये।

इस्लाम की दुश्मन क़ौमों का प्रोपैगन्डा

आज नया दौर है नई तालीम। इस्लाम की दुश्मन क़ौमों ने एक ऐसा प्रोपैगन्डा शुरू कर दिया है कि जिसकी वजह से वे मुसलमान औ़रतों को यह यक़ीन दिलाने की कोशिश करते हैं कि इस्लाम ने उन पर बहुत ज़्यादा पाबन्दियाँ लगा दी हैं। हालाँकि बात हरगिज़ ऐसी नहीं है, बल्कि हमारे समाज की कई पढ़ी लिखी औ़रतें, बटियाँ वे भी ग़लत-फ़हमी का शिकार हो जाती हैं और यह समझती हैं कि शायद हमें हमारे जायज़ हुक़ूक़ नहीं दिये गये।

इस्लाम में पर्दे का हुक्म

देखिये सबसे पहली बात तो यह है कि इस्लाम ने औ़रत को पर्दे का हुक्म दिया है जबकि ग़ैर-मुस्लिम समाज में औ़रत बेपर्दा फिरा करती है। तो अब यह सोचिये कि इसका फ़ायदा जहाँ मर्दों को है वहाँ औ़रतों को भी है, कि हमारी दाम्पत्य ज़िन्दगी पुरसुकून होती है।

ख़ुशियों की ज़िन्दगी हम गुज़ारते हैं।

स्वीडन में बेपर्दगी के दो नुक़सानदेह असरात

दुनिया का एक मुल्क है जिसका नाम स्वीडन है। बरतानिया के बिल्कुल क़रीब, यह इतना अमीर मुल्क है कि हमारे मुल्कों में ख़सारे का बजट पेश होता है जबकि इस मुल्क में नफ़े का बजट है। हम यह सोचते हैं कि पैसा आयेगा कहाँ से, और वे सोचते हैं कि पैसा लगायें कहाँ पर।

इतने अमीर कि अगर पूरे मुल्क के मर्द, औरत, बच्चे, बूढ़े काम करना छोड़ दें, सिर्फ़ खायें-पियें ऐश व अ़य्याशी करते रहें तो क़ौम छह साल तक अपने पड़े हुए ख़ज़ाने को खा सकती है। इस क़द्र अमीर है कि अगर कोई आदमी नौकरी नहीं ढूँढ़ पाता तो सिर्फ़ हुकूमत (सरकार) को इत्तिला दे दे, उसको घर बैठे हुए बीस हज़ार रुपये हर महीने मिल जाया करेंगे। हुकूमत उसको मकान लेकर देती है। बीमार होने से लेकर उसके मरने तक उसकी बीमारी पर लाख रुपये लगें या करोड़ रुपये लगें, हुकूमत की ज़िम्मेदारी है कि वह उसका इलाज करवाये।

उनके रोटी कपड़े और मकान का मसला तो हल हो गया। बाक़ी रह गई इनसान की ख़्वाहिशें, वे इस मुल्क में इस हद तक पूरी होती हैं कि उसको सैक्स फ़्री देश (Sex Free Country) कहा जाता है। वहाँ जानवरों की तरह मर्द औरत एक साथ जहाँ चाहें जब चाहें मिलें उनपर कोई पाबन्दी नहीं।

अब सोचने की बात यह है कि जिनको रोटी, कपड़े, मकान की फ़िक्र नहीं, जिनकी ख़्वाहिशें मर्ज़ी के मुताबिक़ पूरी होती हों उनके तो पीछे कोई ग़म नहीं होना चाहिये था, मगर दो बातें बहुत अ़जीब हैं। सबसे पहली बात यह है कि इस समाज में तलाक़ की मात्रा सत्तर फ़ीसदी से अधिक है। गोया सौ में से सत्तर से ज़्यादा घरों में तलाक़

हो जाती है। और दूसरी बात यह कि इस समाज में ख़ुदकुशी करने वालों का अनुपात पूरी दुनिया से ज़्यादा है। जितने लोग वहाँ ख़ुदकुशी करते हैं पूरी दुनिया में किसी मुल्क में नहीं करते।

अब जब रोटी, कपड़े, मकान का मसला हल हो गया तो उसके बाद ख़ुदकुशी करने का क्या मतलब? मक़सद यह कि दिलों में सुकून नहीं मिलता। घरों में तलाक़ें हो जाती हैं। इस बेहयाई, बेपर्दगी की वजह से सुकून नहीं मिलता। मर्द भी बेहतर से बेहतरीन की तलाश में और औ़रत भी ख़ूब से ख़ूबतर की तलाश में। चुनाँचे सुकून की ज़िन्दगी किसी को भी नसीब नहीं होती।

जिस माहौल में सत्तर फ़ीसद से ज़्यादा औ़रतों को तलाक़ हो जाये वहाँ किसी को ख़ुश होगी? चुनाँचे आज वह डिप्रेशन (Depression) की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

पर्दे की पाबन्दी के अच्छे असरात

इस्लामी शरीअ़त ने जो पर्दे की पाबन्दी का हुक्म दिया है इसका फ़ायदा भी हमें है। अगरचे हमारे पास खाने की चीज़ों की कमी है, अगरचे हमारे पास लिबास और मकान की कमी है मगर इसके बावजूद हमारे समाज में देखें तो सौ में से दशमलव सात (Point seven Percent) भी ऐसे लोग नज़र नहीं आते जो तलाक़ वाले हों।

यह सुखी ज़िन्दगी हम क्यों गुज़ार रहे हैं? यह मियाँ-बीवी ख़ुशियों भरी ज़िन्दगी क्यों गुज़ारते हैं? इसलिये कि इस्लाम में जो बुनियादी अहकाम बताये गये हैं, आज इस गये गुज़रे माहौल में भी कुछ न कुछ इस पर्दे की पाबन्दी फिर भी बाक़ी है। तो इसका फ़ायदा हमें ख़ुद मिल रहा है।

अमेरिका में बेपर्दा औ़रत की दुर्दशा

औ़रतें कहती हैं कि ग़ैर-मुस्लिम समाजों में पर्दा नहीं तो उनको

आज़ादी मिल गई। मैंने अमेरिका में एक मिल में देखा, वहाँ पर सामान उठाकर एक जगह पहुँचाना था। तो मैंने देखा कि बोरियों में सामान था। जिस तरह कुली बोरी कमर पर रखकर चलते हैं, मैंने देखा कि वहाँ पाँच चार लड़के थे वे भी बोरियाँ कमर पर रखकर लेजा रहे थे और दो लड़कियाँ थीं उन्होंने भी कमर पर अपनी-अपनी बोरी उठाई हुई थी, और वे भी चल रही थीं। मैंने उस फ़ैक्ट्री के मैनेजर से कहा कि यह क्या बद्तमीज़ी है कि आपने लड़कियों को काम दे दिया। वह कहने लगा, जी अगर यह काम नहीं करेंगी तो फिर खायेंगी कहाँ से।

अब आप सोचिये कि औरत को कैसी आज़ादी मिली कि अब वह बोरियाँ कमर पर उठाकर कुलियों की तरह मिल में काम कर रही है। यह आज़ादी होती है?

देखिये! NLC के बड़े-बड़े ट्रेलर जो कराची से पेशावर तक चलते हैं। उसके साईज़ के बड़े-बड़े ट्रेलर अमेरिका में लड़कियाँ चलाती हैं। जिस तरह ड्राईवर को रास्ते में किसी जगह रात हो गई तो चाय पी ली, सो गये बिना बिस्तर के, बिल्कुल यही चारपाई बिस्तर के साथ उनका मामला होता है।

यह औरत को इज़्ज़त तो न मिली बल्कि औरत को उलटा मुसीबत में डाल दिया गया।

घर की मलिका......औरत!!

इस्लाम मज़हब की मेहरबानी देखिये कि इस्लाम ने औरत पर रोज़ी का कमाना कभी भी फ़र्ज़ नहीं किया। बेटी है तो बाप का फ़र्ज़ है कि वह बेटी को रोटी कमाकर खिलाये। अगर बहन है तो भाई का फ़र्ज़ है कि कमाकर लाये और बहन की रोटी का इन्तिज़ाम करे। अगर बीवी है तो शौहर का फ़र्ज़ है कि वह कमाकर लाये और बीवी को घर बैठे हुए खाना पहुँचाये। अगर माँ है तो औलाद की ज़िम्मेदारी है कि वह कमाये और अपनी माँ को लाकर खिलाये।

गोया इस्लामी शरीअ़त ने औ़रत को पूरी ज़िन्दगी रोज़ी कमाने का बोझ अ़ता नहीं किया। उसके सर पर यह बोझ नहीं रखा कि तुमको कमाना है और फिर खाना है, बल्कि उसके क़रीबी मर्दों की ज़िम्मेदारी लगाई कि तुमको कमाना है और इस औ़रत को घर में लाकर देना है। यह घर की मलिका (रानी) बनकर रहेगी, बच्चों की तरबियत करेगी और घर के अन्दरूनी ज़िन्दगी के तमाम मामलात को संभालेगी। अब बताईये कि किस समाज और किस मज़हब व सभ्यता ने औ़रत को ज़्यादा आसानी की ज़िन्दगी दी?

इस्लाम में औ़रत के साथ इतनी नर्मी क्यों?

अगर आप ग़ौर करें तो आपको यह बात बहुत वाज़ेह (स्पष्ट) नज़र आयेगी कि औ़रत के बारे में इस्लाम ने बहुत ढील दी है। कई मामलात में उनके साथ नर्मी का मामला बरता है। किस लिये? इसलिये कि मर्द को अल्लाह तआ़ला ने ताक़त दी, मर्द को अल्लाह तआ़ला ने मेहनत करने की कुव्वत अ़ता की। औ़रत को उसके मुक़ाबले में जिस्मानी एतिबार से अल्लाह ने कमज़ोर जिस्म वाला बनाया। मर्द की ज़िम्मेदारी भी इस तरह से हैं जिस तरह से उसे सख़्त-जान बनाया। लिहाज़ा आप ग़ौर करें तो औ़रत के साथ बहुत नर्मी की गई। जबकि प्रोपैगन्डा यह किया जाता है कि इस्लाम धर्म में तो औ़रत पर पाबन्दियाँ बहुत हैं। अल्लाह के बन्दे! सोचने की बात है।

पाकिस्तान में अ़जीब प्रोपैगन्डा

एक प्रोपैगन्डा हमारे मुल्क में हो रहा है। कहते हैं कि जी औ़रत की 'दियत' आधी होती है और औ़रत की गवाही आधी होती है। यह ऐसा सवाल है कि कालिजों में लड़कियाँ एक दूसरे से पूछती हैं। यूनिवर्सिटी में पूछती हैं। स्कूलों में एक दूसरे से पूछती हैं। अगर आप ग़ौर करें सोचें तो यह मामला बहुत आसानी से समझ में आने वाला

है। मैं इस पर थोड़ी सी रोशनी डाल देता हूँ। चूँकि यह मसला सामने आ गया है।

देखिये! दियत क्या होती है? मैं आपको समझा देता हूँ कि आदमी किसी को क़त्ल करता है इरादे के साथ या बग़ैर इरादे के। अगर इरादे के साथ करे तो उसे "क़त्ले अ़मद्" (यानी जान-बूझकर क़त्ल करना) कहते हैं। अगर बग़ैर इरादे से कोई आदमी किसी के किसी अ़मल से क़त्ल हो जाये तो उसे "क़त्ले ख़ता" (यानी ग़लती से क़त्ल हो जाना) कहते हैं। 'क़त्ले अ़मद' हो तो उसका क़िसास अदा करना पड़ता है और अगर क़त्ले ख़ता हो तो उसकी दियत देनी पड़ती है।

मतलब यह कि अगर शौहर मर गया, ग़लती से किसी ने मार दिया तो उसकी बीवी को उसकी दियत मिलेगी और बीवी मारी गई तो शौहर को उसकी दियत मिलेगी।

दियत के बारे में शरीअ़त का हुक्म

अब शरीअ़त का हुक्म यह है कि अगर शौहर मरेगा तो बीवी को पूरी दियत अदा की जायेगी और अगर बीवी मर गई तो शौहर को उसका आधा अदा किया जायेगा।

दियत के बारे में औ़रतों की ग़लत-फ़हमी

इस सूरत में रोना तो मर्दों को चाहिये था कि देखो जी हमारे साथ नाइन्साफ़ी है। हम मरें तो औ़रत को पूरा हिस्सा मिलेगा, औ़रत मरी तो हमें पूरा हिस्सा नहीं मिलेगा, आधा हिस्सा मिलेगा। मर्दों को तो क्या रोना था उलटा ग़लत-फ़हमी औ़रतों में डाल दी गई। ओ जी! औ़रत की दियत आधी होती है। औ अल्लाह की बन्दी! औ़रत की दियत आधी होती है। तो पैसा मिल किसको रहा है? वह तो शौहर को मिल रहा है। रोना तो शौहर को चाहिये था उसको शोर मचाना चाहिये था कि मुझे आधे पैसे क्यों मिले। जब मर्द मरा और औ़रत की लेने

की बारी आई तो उसको पूरे पैसे मिल रहे हैं। जहाँ मर्द का मामला था उसकी कमज़ोरी का ख़्याल करते हुए कि उसका नुक़सान ज़्यादा हुआ है, उसके सर का साया चला गया इसलिये उसे मर्द से दोगुना दे दिया जाये तो औ़रत के साथ तो उलटा उसकी हमदर्दी (Favour) की गई।

औ़रत की गवाही 'आधी' होने में हिक्मत

इसी तरह देखिये! गवाही के मामले में कहते हैं कि औ़रत की गवाही आधी है। हाँ जी आधी है। आपने देखा होगा लोग अपनी आँखों के सामने क़त्ल होते देखते हैं गवाह नहीं बनते। किस लिये? वे कहते हैं कि जी कौन मुसीबत में पड़े, कौन चक्कर लगाये अ़दालतों के? और फिर क़ातिलों के साथ दुश्मनी कौन ले? और देखने में आया है कि लोग तो अ़दालतों के अन्दर भी गवाहों को क़त्ल कर दिया करते हैं। उनकी जान, माल, इ़ज़्ज़त व आबरू हर चीज़ ख़तरे में होती है। गोया गवाही देना एक बोझ है इसलिये कई लोग इस बोझ को अदा करने से कतराते हैं और देखने के बावजूद ख़ामोश हो जाते हैं, किसी को कुछ नहीं कहते।

जहाँ मर्द को गवाही देनी होती थी तो हुक्म दिया कि तुम्हारी गवाही पूरी होगी तुम्हारे सर पर पूरा बोझ रखा जायेगा। औ़रत को गवाही देनी थी तो फ़रमाया हम पूरा बोझ तुम्हारे ऊपर नहीं रखते। तुम दो औ़रतें आधा-आधा बोझ मिलकर उठा लो ताकि अगर कोई तुम्हारे साथ दुश्मनी करेगा तो एक ख़ानदान के साथ नहीं बल्कि दो ख़ानदानों के साथ दुश्मनी ले रहा होगा। तुम्हारे ऊपर जो बोझ आयेगा वह आधा बोझ होगा। उलटा औ़रत के साथ तो नर्मी कर दी गई। वरना अगर औ़रत को कह दिया जाता कि नहीं, आपको पूरी गवाही देनी है तो फिर यह रोती फिरती कि जी मेरे साथ कितनी ज़्यादती की, इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी मेरे सर पर डाल दी, बोझ उठाने का वक़्त

आया तो कहा कि अब दो ख़ानदान मिलकर यह बोझ उठा लें ताकि औ़रत को ज़्यादा सुरक्षा मिल सके। उसकी जान, माल, इ़ज़्ज़त, आबरू की ज़्यादा हिफ़ाज़त हो सके।

अगर इन दो मसाईल पर ग़ौर करें तो उलटा औ़रत के साथ अल्लाह तआ़ला ने नर्मी का मामला किया है। इसी तरह और मसाईल के साथ भी।

बहुत अच्छा सवाल

एक बार नबी अ़लैहिस्लातु वस्सलाम की ख़िदमत में एक औ़रत आई और आकर अ़र्ज़ करने लगी: ऐ अल्लाह के नबी! मर्द तो नेकियों में हमसे बहुत आगे बढ़ गये। पूछा, कैसे? कहने लगीं कि जी ये आपके साथ जिहाद में शरीक होते हैं, सारी रात जाग कर दुश्मन की सरहद पर पहरा देते हैं, और हम घरों के अन्दर उनके बच्चों की परवरिश करती रहती हैं, उनको खाना पका कर खिलाती हैं, उनकी तरबियत का ख़्याल रखती हैं, उनके जान व माल की हिफ़ाज़त करती हैं, इ़ज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त करती हैं।

हम जिहाद में इस तरह रातों को पहरा भी नहीं देतीं। इस तरह हम आकर क़िताल (जंग) भी नहीं करतीं जिस तरह मर्द करते हैं। ये तो नेकियों में हमसे आगे बढ़ गये, और ये मस्जिद में जाकर जमाअ़त के साथ नमाज़ें पढ़ते हैं, हम घरों में ही पढ़ लेती हैं। हम जमाअ़त के सवाब से भी मेहरूम हो गईं।

जब उन्होंने यह सवाल पूछा तो अल्लाह के प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सवाल पूछने वाली ने बहुत अच्छा सवाल पूछा।

बहुत अच्छा जवाब

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो औ़रत अपने घर में अपने बच्चों की वजह से रात को जागती है तो

अल्लाह तआ़ला उसे मुजाहिद (अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले) के बराबर अज्र अ़ता फ़रमा देते हैं, जो सारी रात जाग कर दुश्मन की सरहद पर पहरा देता हैं।

गोया औ़रत को घर के नर्म बिस्तर पर बैठे हुए अल्लाह तआ़ला ने जिहाद का सवाब अ़ता फ़रमा दिया। और फ़रमाया कि जो औ़रत अपने घर में नमाज़ पढ़ लेती है अल्लाह तआ़ला उसे उस मर्द के बराबर अज्र अ़ता फ़रमाते हैं जो मस्जिद में जाकर जमाअ़त के साथ तकबीरे-ऊला की नमाज़ पढ़ता है। तो औ़रत के साथ अल्लाह तआ़ला ने नर्मी का मामला फ़रमाया।

औ़रत की ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ दर्जे

मैं आपको दर्जा-ब-दर्जा औ़रत की ज़िन्दगी के हालात बता देता हूँ जो विभिन्न दर्जों में होते हैं। उनमें औ़रत के अज्र व सवाब के बारे में बता देता हूँ ताकि यह वाज़ेह हो जाये कि इस्लाम ने औ़रत के साथ किस क़द्र नर्मी का मामला किया।

लड़की की पैदाईश

शरीअ़त का यह हुक्म है कि अगर घर में बेटी पैदा होती है तो अल्लाह तआ़ला ने गोया रहमत का दरवाज़ा खोल दिया। अगर दो बेटियाँ हो गईं तो बाप के लिये ये रहमत बन गईं। कि उनका बाप जन्नत में अल्लाह के प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इतना क़रीब होगा जैसे हाथ की दो उंगलियाँ एक दूसरे के क़रीब होती हैं। यह हदीस पाक का मफ़्हूम है।

कुंवारी लड़की की वफ़ात

हदीस पाक का मफ़्हूम है कि जब कोई औ़रत कुंवारी मर जाती है। अभी शादी नहीं हुई थी। माँ-बाप के घर में रहती थी, फ़ौत हो गई तो यह जब क़ियामत के दिन खड़ी की जायेगी तो अल्लाह तआ़ला

उसको शहीदों की क़तार में खड़ा करेंगे। शहीदों की क़तार में खड़ी की जायेगी। वह किस लिये? इसलिये कि यह कुंवारी थी, माँ-बाप के घर में रही, उसने अपनी इज़्ज़त व इफ़्फ़त (पाकदामनी) की हिफ़ाज़त की। अभी शौहर का घर नहीं देखा, वह ऐश व आराम नहीं देखे जो शौहर के साथ मिलकर इनसान को नसीब होते हैं।

चूँकि मेहरूम रही इस वजह से अल्लाह तआ़ला ने उसपर मेहरबानी कर दी कि यह अगर कुंवारेपन में मर जायेगी तो उसको "आख़िरत की शहीद" का दर्जा दिया जायेगा। दुनिया में तो शहीद न कहेंगे मगर क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला शहीदों की क़तारों मे उसको खड़ा कर देंगे।

देखा! कितनी मेहरबानी और इनायत व रियायत की गई औ़रत के साथ।

शादीशुदा औ़रत के अज्र में इज़ाफ़ा

फिर इससे आगे क़दम बढ़ाईये कि अगर बच्ची की शादी हो गई और अब यह अपने शौहर की फ़रमाँबरदारी करती है और साथ ही अल्लाह तआ़ला की इबादत भी करती है तो दीन के आ़लिमों ने मसला लिखा है कि कुंवारी औ़रत एक नमाज़ पढ़ेगी तो एक नमाज़ का सवाब मिलेगा, शादीशुदा होने के बाद नमाज़ पढ़ेगी तो इक्कीस नमाज़ों का सवाब मिलेगा।

किस लिये? इसलिये कि अब उस पर दो ख़िदमतें ज़रूरी हो गईं- एक शौहर की ख़िदमत और दूसरी अल्लाह तआ़ला की इबादत। तो दो बोझ पड़ गये। जब शौहर की ख़िदमत करते हुए अल्लाह की इबादत करेगी तो अल्लाह तआ़ला उसके अज्र व सवाब को बढ़ा देते हैं।

देखा, नमाज़ एक पढ़ी और सवाब इक्कीस नमाज़ों का पा गई। अल्लाह तआ़ला ने यूँ उसके साथ नर्मी और मेहरबानी फ़रमा दी।

अल्लाह तआला की सिफ़ारिश

दाम्पत्य ज़िन्दगी में अल्लाह तआला ने कुरआन पाक में मर्दों से औरतों के बारे में सिफ़ारिश की है, फ़रमायाः

وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ

तुम्हें औरतों के साथ अच्छे तरीक़े से ज़िन्दगी गुज़ारनी है।

देखिये! आज किसी की सिफ़ारिश उसकी बहन करती है। किसी की सिफ़ारिश उसकी माँ करती है। किसी की सिफ़ारिश उसकी ख़ाला करती है। किसी की सिफ़ारिश उसकी फूफी करती है। किसी सिफ़ारिश उसके दूसरे रिश्तेदार और परिजन करते हैं लेकिन औरतों की सिफ़ारिश अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त अपने कुरआन में फ़रमा रहे हैं। फ़रमाया ऐ मर्दो! तुम्हें औरतों के साथ अच्छे अख़्लाक़ और अच्छे अन्दाज़ के साथ ज़िन्दगी बसर करनी है।

हमल ठहरने पर गुनाहों की बख़्शिश

अब अगर औरत अपने शौहर के साथ अच्छे अन्दाज़ में ज़िन्दगी बसर कर रही है और उसके बाद इस औरत को उम्मीद लग गई। यह गर्भवति (Pregnant) हो गई तो हदीस पाक का मफ़्हूम है कि जिस लम्हे उसको हमल हुआ उस लम्हे अल्लाह तआला उस औरत के पिछले गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं।

किस लिये? इसलिये कि एक मुद्दत यह बिल्कुल बीमारी में गुज़ारेगी। बच्चे की पैदाईश का जो नौ महीने का वक़्त है, यह पूरा हमल (गर्भ) का ज़माना, यह औरत के लिये बीमारी ही का ज़माना हुआ करता है। तो अल्लाह तआला ने यह मेहरबानी फ़रमा दी कि जैसे ही उसके सर पर बोझ पड़ा उसी लम्हे अल्लाह ने उसकी ज़िन्दगी के पिछले गुनाहों को माफ़ कर दिया।

गर्भ के दौरान कराहने पर अज्र

अब अगर यह अपने बच्चे को पेट में लिये हुए फिर रही है और घर का कामकाज भी कर रही है और थकन की वजह से उसकी ज़बान से कराहने की आवाज़ निकलती है जैसे "हूँ-हूँ" की आवाज़ निकलती है तो हदीस में आता है कि उसकी ज़बान से तो "हूँ-हूँ" की आवाज़ निकलेगी लेकिन अल्लाह पाक फ़रिश्ते को फ़रमाते हैं कि मेरी यह बन्दी एक बड़ा बोझ अपने सर पर गोया उठाये हुए है और इस बोझ उठाने की ज़िम्मेदारी को यह पूरा कर रही है इसलिये तकलीफ़ से उसकी ज़बान से "हूँ-हूँ" की आवाज़ निकल रही है, उसकी इस आवाज़ की जगह "सुब्हानल्लाह" "अल्हम्दु लिल्लाह" "अल्लाहु-अकबर" कहने का सवाब उसके नामा-ए-आमाल में लिखा जाये।

ज़बान से तो "हूँ-हूँ" निकलेगा मगर नामा-ए-आमाल में "सुब्हानल्लाह" "अल्हम्दु लिल्लाह" कहने का अज्र लिखा जायेगा।

पैदाईश के दर्द पर अज्र व सवाब

फिर जब बच्चे की पैदाईश का वक़्त क़रीब हुआ तो पैदाईश के दर्द महसूस हो रहे हैं, वे दर्द ऐसे होते हैं कि दर्द उठा फिर ठहर गया, फिर उठा फिर ठहर गया।

हदीस पाक में आता है कि हर बार जब भी औ़रत को दर्द महसूस होता है तो अल्लाह तआ़ला उसको एक अ़रबी नस्ल के गुलाम को आज़ाद करने का सवाब अ़ता फ़रमाते हैं। हर दर्द पर एक अ़रबी नस्ल का गुलाम आज़ाद करने का सवाब उसके नामा-ए-आमाल में लिखा जाता है, जबकि दूसरी हदीस में आता है कि जिसने किसी एक गुलाम को आज़ाद किया तो अल्लाह तआ़ला उसको जहन्नम से बरी फ़रमा देते हैं।

अब देखिये कि औ़रत के साथ नर्मी का मामला किया गया कि हर-हर दर्द उठने पर एक अ़रबी नस्ल के गुलाम को आज़ाद करने का

सवाब लिखा गया।

ज़चगी के दौरान मरने वाली औ़रत शहीद है

अगर बच्चे की पैदाईश के दौरान यह औ़रत मर गई तो हदीस पाक में आया है कि यह औ़रत शहीद मरी। क़ियामत के दिन उसको शहीदों की क़तार में खड़ा किया जायेगा।

बच्चे की पैदाईश पर गुनाहों की बख़्शिश

अगर बच्चा सही पैदा हो गया, ज़च्चा बच्चा ख़ैरियत से हैं तो अब हदीस पाक का मफ़्हूम है कि अल्लाह तआ़ला एक फ़रिश्ते को हुक्म देते हैं जो औ़रत को आकर कहता है:

"ऐ माँ! अब तू फ़ारिग़ हो चुकी है तुझे गुनाहों से पाक कर दिया गया, जैसे तू उस दिन पाक थी जब तू अपनी माँ के पेट से पैदा हुई थी"।

देखा! अगर उसने अपने बच्चे की ख़ातिर यह तकलीफ़ उठाई, बच्चे को जन्म दिया तो अल्लाह तआ़ला ने इसका कितना बड़ा अज्र दिया कि उसके पिछले गुनाहों को इस तरह धो दिया गया कि जिस तरह वह अपने माँ के पेट से पैदा हुई थी, और उस दिन मासूम थी। अल्लाहु अकबर।

बच्चे को पहला लफ़्ज़ "अल्लाह" सिखाने पर अज्र

अब अगर यह अपने बच्चे की अच्छी तरबियत करती है, उसको अल्लाह-अल्लाह का लफ़्ज़ सिखाती है तो हदीस पाक का मफ़्हूम है कि जो बच्चा अपनी ज़िन्दगी में सबसे पहले अपनी ज़बान से "अल्लाह" लफ़्ज़ निकालता है तो अल्लाह तआ़ला माँ-बाप के पिछले गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं।

अब यह कितना आसान काम है कि जब बच्चे को उठाया तो अल्लाह-अल्लाह का लफ़्ज़ कहा। आज हमारी बहू बेटियाँ बच्चे के

सामने मम्मी का लफ़्ज़ कहेंगी, पापा का लफ़्ज़ कहेंगी और कोई ज़्यादा मॉडर्न होगी तो कहेगी। Twinkle, Twinkle Little Star.

इस मसले का पता नहीं कि अगर हम बच्चे को, बेटा हो या बेटी, उसके सामने अल्लाह-अल्लाह का लफ़्ज़ पढ़ा करेंगे, कहा करेंगे और उस बच्चे ने सबसे पहले अपनी ज़बान से अल्लाह का लफ़्ज़ बोला तो अल्लाह तआ़ला हमारे पिछले गुनाहों को माफ़ कर देंगे।

बच्चे को नाज़िरा क़ुरआन पढ़ाने की फ़ज़ीलत

अगर उस औ़रत ने बच्चे को कुरआन पढ़ाने के लिये भेजा यहाँ तक कि वह बच्चा कुरआन पाक नाज़िरा (देखकर) पढ़ गया तो जिस लम्हे वह नाज़िरा कुरआन पाक मुकम्मल करेगा अल्लाह तआ़ला उसके माँ-बाप के गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे।

बच्चे को क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ कराने की फ़ज़ीलत

अगर बेटा या बेटी को क़ुरआन पाक को हिफ़्ज़ करने के लिये डाला और वह हाफ़िज़ बन गया या वह बेटी हाफ़िज़ा बन गई तो हदीस पाक का मफ़्हूम है कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसके माँ-बाप को नूर का ऐसा ताज पहनायेंगे कि जिसकी रोशनी सूरज की रोशनी से भी ज़्यादा होगी। बल्कि सूरज किसी के घर में आ जाये तो उस घर में इतनी रोशनी नहीं होगी जितना उस नूर के बने हुए ताज में से रोशनी होगी।

लोग हैरान होंगे, पूछेंगे कि यह कौन हैं? उनको कहा जायेगा कि ये तो अम्बिया भी नहीं, शहीद लोग भी नहीं, बल्कि ये वे ख़ुशनसीब (भाग्यशाली) माँ-बाप हैं जिन्होंने अपने बेटे या बेटी को क़ुरआन पाक का हिफ़्ज़ कराया था। आज अल्लाह तआ़ला ने नूर के बने हुए ताज उनके सरों पर रख दिये हैं। देखा! क़दम-क़दम पर अज्र व सवाब मिल रहे हैं।

घरेलू कामकाज पर अज्र

यह औरत अपने घर के कामकाज करती है तो कामकाज करने पर भी अज्र व सवाब दिया जाता है। जैसे कौनसी औरत है जो घर के अन्दर सफ़ाई का काम नहीं करती, घर के अन्दर अपने कपड़े नहीं धोती या घर के अन्दर खाना नहीं पकाती। ये काम तो औरतें ही घर में करती हैं। इस पर भी औरत को सवाब अता किया जाता है।

एक हदीस पाक अर्ज़ कर रहा हूँ (और ज़िम्मेदारी से किताबों के हवाले पेश कर सकता हूँ) फ़रमाया गया कि जो औरत अपने शौहर के घर में कोई बे-तरतीब पड़ी हुई चीज़ उठाकर तरतीब के साथ रख देती है तो अल्लाह तआला एक नेकी अता फ़रमाते हैं, एक गुनाह माफ़ फ़रमाते हैं और जन्नत में एक दर्जा बुलन्द फ़रमा देते हैं। किचन की चीज़ों को ही ले लें तो मेरा ख़्याल है कि रोज़ाना पचास चीज़ों को तो तरतीब से रखती ही होंगी।

घरेलू कामकाज पर अज्र न मिलने की असल वजह

मगर नीयत करने का पता नहीं होता कि हमको किस नीयत से काम करना है। आज औरतें किस नीयत से घरों को साफ़ करती हैं? ओ जी! लोग क्या कहेंगे। ओ जी! लोग कहेंगे यह तो गन्दी ही रहती है। ओ जी! लोग कहेंगे कि यह तो बेवक़ूफ़ सी है। ओ जी! लोग कहेंगे कि इसको तो यह सलीक़ा ही नहीं है। जब औरत इस नीयत के साथ घर को साफ़-सुथरा रखेगी तो उसे ज़र्रा बराबर भी सवाब नहीं मिलेगा। इसलिये कि उसने तो लोगों को दिखाने के लिये किया।

नीयत ठीक करना, यह भी मुस्तक़िल मसला है, आज औरतों को नीयत का ठीक करना ही नहीं सिखाया जाता कि किस नीयत के साथ उन्हें सफ़ाई करनी है।

याद रखें कि नीयत ठीक होगी तो सवाब मिल जायेगा, नीयत ठीक नहीं होगी तो सवाब नहीं मिलेगा।

मिसाल

नीयत का ठीक करना चूँकि एक अहम मसला है इसलिये मैं इसको एक मिसाल से वाज़ेह (स्पष्ट) कर देता हूँ।

उलेमा ने लिखा है कि अगर कोई आदमी घर बनाये और अपनी बैठक के अन्दर खिड़की लगवाये, रोशनदान बनवाये मगर नीयत यह हो कि मुझे इसमें से हवा आयेगी और रोशनी आयेगी। अब उस आदमी को हवा और रोशनी तो मिलेगी मगर सवाब बिल्कुल नहीं मिलेगा।

मगर एक दूसरा आदमी अपनी बैठक बनवाता है और खिड़की या रोशनदान लगवाता है और नीयत करता है कि मुझे इसमें से अज़ान कमरे में सुनाई दिया करेगी तो उलेमा ने लिखा है कि उसको इस पर अज्र व सवाब भी मिलेगा। हवा और रोशनी उसको मुफ़्त में मिल जायेगी।

दूसरी मिसाल

एक और मिसाल समझें कि एक औरत घर में खाना बना रही है। अब खाना बनाते हुए उसको सालन में पानी डालना है। अब जितना उसने मुनासिब समझा पानी डाल दिया, घर के लोगों के लिये। अब उलेमा ने मसला लिखा है कि जितना पानी मुनासिब था घर के लोगों के लिये उतना पानी डालने के बाद अगर वह एक घूँट पानी और डाल देती है, इस नीयत के साथ कि शायद कोई मेहमान आ जाये, शायद हमें किसी पड़ोसन को खाना देना पड़ जाये। इस नीयत के साथ उसने एक घूँट पानी सालन में डाल दिया। कोई आये या न आये, उस औरत को मेहमान का खाना बनाने का सवाब अता कर दिया जायेगा।

बतायें! कौनसी औरत है जो यह सवाब नहीं ले सकती। यह सवाब सब ले सकती हैं मगर दीन का इल्म न होने की वजह से ये

औ़रतें सवाब से मेहरूम रह जाती हैं। इसी लिये तो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

طلب العلم فريضة على كل مسلم ومسلمة

इल्म का तलब करना हर मर्द और औ़रत पर फ़र्ज़ है।

तो गोया औ़रतों पर भी फ़र्ज़ है कि वे दीन का इल्म हासिल करें और ये बेचारियाँ दीन से इस क़द्र नावाक़िफ़ रह जाती हैं कि उनको गुस्ल के फ़राईज़ का भी सही पता नहीं होता। इतनी उम्र को पहुँच जाती हैं कि कई-कई बच्चों की माँ बन जाती हैं मगर उनको गुस्ल के फ़राईज़ का पता नहीं होता। मसाईल का पता नहीं होता। हालाँकि इतनी अहमियत दी गई है कि जिस तरह मर्दों पर इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है उसी तरह औ़रत पर भी फ़र्ज़ है।

घर की सफ़ाई किस नीयत से की जाये

घर की सफ़ाई औ़रत किस लिये करती है? इसलिये करती है कि जी लोग क्या कहेंगे। ओ जी! लोग कहेंगे बेवकूफ़ सी है, लोग कहेंगे जी इसको ज़रा अ़क्ल नहीं है। नहीं! अल्लाह की बन्दी! इसलिये सफ़ाई न कर, बल्कि नीयत यह कर ले कि अल्लाह तआ़ला ने ही इरशाद फ़रमाया है किः

الله يحب التوابين ويحب المتطهرين

बेशक अल्लाह तआ़ला तौबा करने वालों से मुहब्बत करता है और साफ़-सुथरा रहने वालों से भी मुहब्बत करता है।

यह आयत क़ुरआन पाक की है, क्या मतलब? तौबा करने से दिल की सफ़ाई होती है, वैसे साफ़-सुथरा रहने से बाहर की सफ़ाई हुई है तो गोया जो आदमी बाहर की सफ़ाई करेगा उससे भी अल्लाह राज़ी, जो दिल की सफ़ाई करेगा उससे भी अल्लाह राज़ी। अब क़ुरआन पाक कहता है कि जो साफ़-सुथरा रहेगा अल्लाह तआ़ला उससे राज़ी होंगे। तो औ़रतों को चाहिये कि घर में झाड़ू दे रही हैं,

सफ़ाई कर रही हैं तो नीयत यह कर लें कि अल्लाह तआ़ला पाकीज़गी और सफ़ाई को पसन्द फ़रमाते हैं। शरीअ़त का हुक्म है कि सफ़ाई आधा ईमान है।

तो आप दिल में नीयत यह कर लिया करें कि इसलिये घर की सफ़ाई कर रही हूँ कि नबी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि पाकीज़गी आधा ईमान है। और पाकीज़ा और साफ़ रहने वालों से अल्लाह तआ़ला मुहब्बत करते हैं।

अब आप घर को चमकाये रखें, नगीना बनाकर रखें, घर के फ़र्नीचर को चमकायें, बरतनों को चमकायें, कपड़ों को धो-धोकर रखें। आपको हर-हर काम पर अज्र व सवाब मिलता चला जायेगा। क्योंकि आपकी नीयत ठीक हो गई है कि आपने अल्लाह की रिज़ा के लिये सब कुछ किया।

कहने का मतलब यह था कि छोटे-छोटे मसाईल का पता न होने की वजह से बड़े-बड़े अज्र व सवाब से मेहरूम रह जाती हैं। अब बताईये कि जिस औ़रत को इस मसले का इल्म होगा कि मैंने घर की पड़ी हुई किसी भी बे-तरतीब चीज़ को उठाकर तरतीब के साथ रख दिया तो मुझे एक नेकी मिलेगी, मेरा एक गुनाह माफ़ होगा, जन्नत में मेरा एक दर्जा बुलन्द होगा तो ये नेकियाँ सब औ़रतें कमा सकती हैं।

शादी के बाद माँ-बाप से मिलने की फ़ज़ीलत

मैं आपको एक बात और बताता हूँ। वह कौनसी बेटी होगी जिसकी शादी हो और वह वापस अपने माँ-बाप को मिलने न आये। सभी बेटियाँ आती हैं, सभी बच्चियाँ आती हैं। मगर नीयत क्या होती है? जी बस मैं अम्मी से मिलने जा रही हूँ। अल्लाह अल्लाह ख़ैर सल्ला। यह नीयत नहीं होती कि इस अ़मल से अल्लाह राज़ी होंगे।

हदीस पाक में आता है कि जिस बच्ची की शादी हो जाये और वह अपने माँ-बाप की ज़ियारत की नीयत कर ले कि मैं अपने

माँ-बाप से मिलने जा रही हूँ और शौहर से इजाज़त लेकर जाये और दिल में यह हो कि इस अमल से अल्लाह राज़ी होंगे तो अल्लाह तआला हर क़दम पर उसको सौ नेकियाँ अता फ़रमा देते हैं, सौ गुनाह माफ़ कर देते हैं और जन्नत में सौ दर्जे बुलन्द कर देते हैं।

अब बताईये! एक औरत, एक बेटी जो अपने माँ-बाप की ज़ियारत के लिये इस नीयत से आ रही है कि इस अमल से अल्लाह राज़ी होंगे। हदीस का मफ़्हूम है कि हर क़दम उठाने पर उसे सौ नेकियाँ मिलेंगी, सौ गुनाह माफ़ होंगे और जन्नत में सौ दर्जे बुलन्द कर दिये जायेंगे।

हदीस पाक में आता है कि अगर यह माँ-बाप के पास आई और उनके चेहरे पर उसने अक़ीदत की नज़र डाली। मुहब्बत की नज़र डाली, जो माँ-बाप को नसीब होती है तो अल्लाह तआला हर नज़र डालने पर उसको एक हज या उमरे का सवाब अता फ़रमायेंगे। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा ऐ अल्लाह के नबी! जो आदमी अपने माँ-बाप को बार-बार मुहब्बत और अक़ीदत की नज़र से देखे। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जिनती बार देखेंगे उतनी बार हज या उमरे का सवाब अता किया जायेगा। ये बातें हमें मालूम नहीं होतीं इसलिये हम इनके अज्र व सवाब से मेहरूम रह जाते हैं।

औरतों से ख़िताब करने का बुनियादी मक़सद

ये औरतों की जो महफ़िलें आयोजित की जाती हैं इनका बुनियादी मक़सद यही होता है कि औरतें आयें, ऐसी बातें सुनें और उनको अपनी ज़िन्दगी में लागू करें। यक़ीनी बात है कि अगर औरतें इन मसाईल को समझकर, सुनकर अपनी ज़िन्दगी में लागू कर लें तो वे मर्दों से भी नेकी में आगे बढ़ सकती हैं। वे तो घर बैठे बिठाये जन्नत कमा सकती हैं। तो ऐसी महफ़िलों में आना इसी लिये अहम हुआ

करता है।

चुनाँचे आईन्दा ऐसी महफ़िल हो तो आप सबसे गुज़ारिश है कि जहाँ आप खुद तशरीफ़ लायें ऐसी महफ़िलों में, अपने साथ आठ-दस और औ़रतों को भी लेकर आयें। क्योंकि जितनी औ़रतें बातें सुनेंगी उतना सवाब आपको मिलेगा।

वही बात पचास औ़रतें भी सुन सकती हैं और वही बात पाँच सौ औ़रतें भी सुन सकती हैं। मगर पाँच सौ सुनेंगी तो उसका फ़ायदा ज़्यादा होगा। समाज में ज़्यादा नेकी फैलेगी। और जिसने दावत दी लोगों को, इस प्रोग्राम की तरफ़ मुतवज्जह किया, नेकी की बातों के लिये, कोई भी करने वाला हो तो इससे उसको वैसे ही नेकी मिलेगी।

नेकी की प्रेरणा देने की फ़ज़ीलत

देखिये! मैं आपको एक मसला समझा दूँ कि जो आदमी किसी दूसरे को नेकी की बात कहता है और दूसरा उसके कहने की वजह से नेकी कर लेता है तो करने वाले को भी सवाब मिलता है कहने वाले को भी सवाब मिलता है।

अब मसला सुनो! हदीस पाक का मफ़्हूम है कि क़ियामत के दिन एक आदमी खड़ा किया जायेगा और उसका आमाल-नामा उसे दिया जायेगा। जब वह अपना आमाल नामा देखेगा तो उस नामा-ए-आमाल में कई हज़ार साल की नमाज़ों का सवाब, कई हज़ार साल के रोज़ों का सवाब और कई हज़ार हज और उमरे करने का सवाब लिखा हुआ होगा।

वह कोई सीधा-सादा आदमी होगा, कोई मेरे जैसा होता तो चुप लगा जाता। मगर वह कोई भला आदमी होगा। सच्चा बन्दा होगा। अल्लाह तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ करेगा। ऐ अल्लाह! मेरी तो उम्र ही सौ साल से थोड़ी थी, मैं अगर पूरे साल रोज़े रखता तो भी मेरे रोज़े सौ साल से थोड़े होते, यह तो हज़ार सालों के रोज़े लिखे हुए हैं।

मैं हर साल हज करता तो भी मेरे हज सौ से थोड़े होते, यह तो हज़ारों सालों के हज लिखे हुए हैं। इसी तरह हर दिन में जितनी चाहे नमाज़ें पढ़ता वे सौ साल से थोड़ी नमाज़ें होतीं, मगर यहाँ तो हज़ारों सालों की नमाज़ें लिखी हुई हैं।

ऐ अल्लाह! यह नामा-ए-आमाल मेरा नहीं है। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे, ऐ मेरे बन्दे! आमाल-नामा तो यह तेरा ही है और तूने एक या दो हज ही किये थे मगर जब लोगों में बैठता था तो लोगों को हज की तर्ग़ीब (प्रेरणा और शौक़ दिला) देता था, अच्छे अन्दाज़ से उनको हज करने का शौक़ दिलाता था। जितने लोग हज करते रहे हम उनका सवाब तेरे नामा-ए-आमाल में भी लिखते रहे।

आपने तो सौ साल से थोड़े रोज़े रखे मगर औरों को आप इस तरफ़ तवज्जोह दिलाते थे लिहाज़ा जितने लोगों ने रोज़े रखे हमने उनका सवाब आपके नामा-ए-आमाल में भी लिख दिया।

यह कितनी सआ़दत की बात है कि इनसान की अपनी ज़िन्दगी तो सौ साल से थोड़ी थी लेकिन जब वह फ़ौत हुआ (मर गया) तो क़ियामत के दिन उसके नामा-ए-आमाल में हज़ारों सालों के हज, हज़ारों सालों की नमाज़ें और हज़ारों कुरआन पाक पढ़ने की तिलावत लिखी जायेगी।

इसलिये हर मर्द और औ़रत को चाहिये कि वह समाज में दूसरों के साथ नेकी की गुफ़्तगू करे ताकि नेकी समाज और माहौल में फैले।

जो औ़रतें आज बयान में आई हैं बेशक दिलों में यह इरादा कर लें कि आईन्दा फिर कभी ऐसी महफ़िल हुई तो हम अपनी बहनों को, क़रीबी रिश्तेदार औ़रतों को, अपनी सहेलियों को, पड़ोसियों को सबको लेकर आयेंगी। एक-एक औ़रत अगर दस-दस औ़रतों को भी दावत देकर ले आये तो इतनी हो जायें कि यह मकान छोटा हो जायेगा।

सबका सवाब उसको मिलेगा जो उनको लेकर आयेगी। देखो यह सब कुछ नीयत पर निर्भर होता है।

मैं बुनियादी बात यह कर रहा था कि औरत को अगर पता हो कि मुझे किस काम के करते वक़्त क्या नीयत करनी है तो वह बड़ी-बड़ी नेकियाँ कमा सकती है। लेकिन पता नहीं होता।

बच्चों की सही तरबियत न होने की बुनियादी वजह

आज औरतें मायें तो बन जाती हैं मगर उनको पता नहीं होता कि बेटे को तरबियत कैसी देनी है। माँ बन गई मगर बेटे को तरबियत कैसे देनी है इसका बिल्कुल पता नहीं होता। उसने ख़ुद तरबियत ही नहीं पाई होती अपने बेटे को क्या तरबियत देगी। आज यही एक बुनियादी वजह है कि हमारे माहौल और समाज में बच्चों की सही तरबियत (पालन-पोषण और अख़्लाक़ व आदात की तालीम) नहीं होती। एक वक़्त था कि जब मायें बच्चों की अच्छी तरबियत के लिये हर वक़्त कोशिश करती थीं।

सोचने की बात

आज है कोई माँ जो कहे कि मैं बच्चे का यक़ीन अल्लाह के साथ बनाती हूँ? है कोई माँ जो कहे कि मैं सुबह व शाम खाना खिलाते हुए अपने बच्चे को तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा) देती हूँ कि हर हाल में सच बोलना है। इन चीज़ों की तरफ़ तवज्जोह नहीं होती। ज़रा सी बाप नसीहत कर दे तो माँ फ़ौरन कहती है कि बड़ा होगा तो ठीक हो जायेगा। तरबियत न होने की वजह से ही आज औलाद जब बड़ी होती है तो वह अपने माँ-बाप से यूँ नफ़रत करते हैं जैसे कि पाप से नफ़रत की जाती है। माँ अपने मक़ाम को भूल गई।

एक वक़्त था कि जब औरतें सुबह की नमाज़ पढ़ा करती थीं तो बच्चों को अपनी गोद में लेकर कोई सूरः यासीन पढ़ रही होती थी, कोई सूरः वाक़िआ पढ़ रही होती थी, और उस वक़्त बच्चे के दिल में

अनवारात उतर रहे होते थे। आज वे मायें कहाँ गईं जो सुबह के वक़्त बच्चे को गोद में लेकर कुरआन पढ़ा करती थीं।

आज तो सूरज निकल जाता है, बच्चा भी सोया हुआ है और माँ भी सोई हुई होती है। शाम का वक़्त होता है बच्चे को माँ ने गोद में डाला, उधर सीने से लगाकर दूध पिला रही होती है साथ ही बैठी ड्रामा देख रही होती है।

ऐ माँ! जब तू ड्रामे में ग़ैर-मेहरम मर्दों को देखेगी, संगीत और गाने सुनेगी और ग़लत काम करेगी और ऐसी हालत में बेटे को दूध पिलायेगी तो बता तेरा बेटा जुनैद बग़दादी (मशहूर बुज़ुर्ग) कैसे बनेगा। बता कि तेरा बेटा अ़ब्दुल-क़ादिर जीलानी (ग़ौसे आज़म) कैसे बनेगा?

यही वजह है कि औलाद के अन्दर नेकी के वे असरात जो माँ-बाप से मुन्तक़िल होने चाहियें, वे मुन्तक़िल नहीं होते। अल्लाह करे कभी कोई दूसरी महफ़िल ऐसी हो कि जिसमें तरबियत के उनवान (विषय) पर कि औ़रतें अपने बच्चों को तरबियत कैसे दें? इसको कुरआन व हदीस की रोशनी में ज़रा तफ़सील के साथ अ़र्ज़ कर दूँ।

एक सहाबिया का कुरआन पाक से लगाव

तो मैं बात कर रहा था कि जिस तरह मर्द इबादत करके अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त का ताल्लुक़ हासिल कर सकता है इसी तरह औ़रत भी अगर इबादत करे तो अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त का ताल्लुक़ और मारिफ़त हासिल कर सकती है।

एक सहाबिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने तन्दूर पर रोटी पकाई और उसे सिर पर रखा और चलते हुए कहने लगी। ले बहन! मेरे तो तीन पारे भी मुकम्मल हो गये और मेरी रोटियाँ भी पक गईं। तब पता चला कि ये औ़रतें जितनी देर रोटी पकाने के इन्तिज़ार में बैठी रहती थीं उनकी ज़बान पर कुरआन जारी रहता था। यहाँ तक कि इस दौरान में तीन-तीन पारे कुरआन पाक की तिलावत कर लिया करती थीं।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का ज़ौक़े-इबादत

एक वक़्त था कि जब सारा दिन औरतें घर के काम-काज में मसरूफ़ रहती थीं और जब रात आती थी तो मुसल्ले के ऊपर रात गुज़ार दिया करती थीं।

सैयदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में आता है कि सर्दियों की लम्बी रात थी, इशा की नमाज़ पढ़कर दो रकअ़त नफ़्लि नमाज़ की नीयत बाँध ली। तबीयत में ऐसा सुरूर था, ऐसा मज़ा था, कुरआन पाक पढ़ने में ऐसी हलावत (मिठास) नसीब हुई कि पढ़ती रहीं, पढ़ती रहीं, पढ़ती रहीं, यहाँ तक कि जब सलाम फैरा तो देखा कि अब तो सुबह होने को है। तो रोने बैठ गईं और यह दुआ़ करने लगीं कि ऐ अल्लाह! तेरी रातें भी कितनी छोटी हो गईं कि मैंने दो रकअ़त की नीयत बाँधी और तेरी रात ख़त्म हो गई।

एक वे औरतें थीं जिनको रातों के छोटे होने का शिकवा हुआ करता था, एक आज हमारी मायें बहनें हैं जिनमें क़िस्मत वालियों को ही पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ नसीब होती है।

आज की औरतें क्या दुआ़यें करवाती हैं

हाँ यह तो कहती हैं कि हज़रत कोई दुआ़ कर दें कि मेरा शौहर मेरी बात मान ले। हज़रत! दुआ़ कर दें शौहर मेरी बात नहीं सुनता। हज़रत! दुआ़ करें शौहर देर से घर में आता है। हज़रत! दुआ़ करें शौहर घर की तरफ़ तवज्जोह नहीं करता। हज़रत! दुआ़ करें शौहर को बीवी के हुकूक़ का पता ही नहीं। हज़रत दुआ़ करें मैं बहुत दुखी हूँ। मैंने दर-दर के धक्के खाये हैं, मुझे कोई दुनिया में ऐसा नहीं मिला जो मेरा दुख बाँटने वाला हो।

अल्लाह की बन्दी! ये बातें तो कर रही हो लेकिन यह बताओ कि जिस अल्लाह ने तुम्हारे शौहर के दिल में तुम्हारी मुहब्बत को डालना

था क्या आप उसके सामने सज्दे में जाती हैं या नहीं जातीं। कभी कहती हैं जी रिज़्क़ के लिये दुआ़ करें। जी हमारा हाथ तंग है, दुआ़ करो कोशिश तो बहुत करते हैं, मगर क्या कोशिश करते हैं, आज शौहर जाता है काम पर और बीवी घर में मज़े से बैठी ग़ीबत (किसी की चुग़ली) कर रही होती है।

चाश्त की नमाज़ और रिज़्क़ में बरकत

एक वक़्त था कि जब शौहर तिजारत के लिये घर से निकला करते थे और उनकी बीवियाँ मुसल्ले पर बैठकर चाश्त की नमाज़ें पढ़ा करती थीं। उनकी बीवियाँ अपने दामन फैलाकर अल्लाह से दुआ़यें माँगती थीं: ऐ अल्लाह! मेरा मियाँ इस वक़्त रिज़्क़े हलाल के लिये मेहनत करने के लिये घर से निकल पड़ा है। उसके रिज़्क़ में बरकत अ़ता फ़रमा। उसकी सेहत में बरकत अ़ता फ़रमा। उसके काम में बरकत अ़ता फ़रमा।

औ़रत रो-रोकर दुआ़ माँग रही होती थी अल्लाह तआ़ला मर्द के काम में बरकत दे रहे होते थे।

कहाँ गईं वे औ़रतें जो घर में बैठकर अपने शौहरों की तिजारत में बरकत के लिये यूँ दुआ़ करती थीं। इस तरफ़ हमारी तवज्जोह नहीं होती। कभी गिले कर रही है, कभी शिकवे कर रही है। साहिब दुआ़ करें, हमारे रिज़्क़ में बरकत नहीं है।

तक़्वा और बरकतों के दरवाज़े

अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने हमें इन तमाम बातों की वज़ाहत फ़रमा दी है आपने प्यारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रिये। हम अगर इन तालीमात को समझकर इनके मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करें तो अल्लाह तआ़ला की रहमतें और बरकतें उतरेंगी। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

यह मैं कहानी और क़िस्से की किताब से बयान नहीं कर रहा जो अब मैं बात करूँगा। फ़रमायाः

وَلَوْاَنَّ اَهْلَ الْقُرٰى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ

अगर यह बस्ती (देशों) वाले ईमान लाते और तक़्वा (अल्लाह का डर और परहेज़गारी) इख़्तियार करते हैं तो हम आसमान और ज़मीन से बरकतों के दरवाज़े खोल देते हैं।

अल्लाह तआ़ला तो अपनी सच्ची किताब में यह वायदे फ़रमा रहे हैं कि अगर ये ईमान लाते और तक़्वा को इख़्तियार करते तो हम आसमान से और ज़मीन से बरकतों के दरवाज़े खोल देते। और हम कहते हैं कि बरकत नहीं। किस लिये? इसलिये कि हमारी ज़िन्दगी में तक़्वा नहीं होता। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त हमें अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ ज़िन्दगी को गुज़ारने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे।

आज वक़्त है इस वक़्त को ग़नीमत समझते हुए कुछ कोशिश कर लें ताकि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त राज़ी हो जायें, वरना यह मोहलत हमसे छिन गई और हमारी मौत का वक़्त आ गया तो आगे जाकर मुश्किलें बढ़ती ही जायेंगीः

अब तो घबरा के यह कहते हैं कि मर जायेंगे
मर के भी चैन नहीं पाया तो किधर जायेंगे

अनमोल ख़ज़ाना

ऐ बहन! किसी ने क्या प्यारी बात कही, जितना तुझे दुनिया में रहना है उतना तू दुनिया के लिये कोशिश कर ले और जितना तुझे आख़िरत में रहना है उतना आख़िरत के लिये कोशिश कर ले। कितनी अ़जीब बात है ऐ बहन! तुझे जिस घर में सौ पचास साल मुश्किल से रहना है उस घर को चमका के रखती है। तू इस घर की सफ़ाई पर दो-दो घंटे ख़र्च कर देती है। तू इस घर के सजाने के लिये सारा दिन चिन्तित रहती है।

और जिस घर में तुझे हमेशा-हमेशा जाकर रहना है तुझे उस घर के बनाने की फ़ुरसत नहीं मिलती। क्या ऐसी औ़रतें हैं जो बतायें कि हम तो रोज़ाना बैठकर एक घंटा अल्लाह का ज़िक्र करती हैं, हम तो रोज़ाना दस पारे क़ुरआन पाक के पढ़ती हैं।

सब ग़मों का इलाज

अगर हम दीन की तालीम हासिल करके उसके मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारें तो यही हमारे सब ग़मों का इलाज है। जब तक अल्लाह के दर पर हम नहीं आयेंगे हमारी ये परेशानियाँ नहीं छूटेंगी। हदीस पाक में आता है:

من جعل الهموم همًّا واحداهم اخرته كفاه الله همّ دنيا

जिसने अपनी तमाम परेशानियों को एक परेशानी बना लिया, कौनसी? आख़िरत की परेशानी, अल्लाह तआ़ला दुनिया की परेशानियों को उससे दूर कर देंगे।

इसलिये अल्लाह वालों को देखें कि उनके दिलों में कोई ग़म और ख़ौफ़ नहीं होता। अल्लाह तआ़ला की वे नेक बन्दियाँ जो नेकी, तक़वा और परहेज़गारी पर ज़िन्दगी गुज़ारती हैं, अल्लाह तआ़ला उनको भी ऐसी पुरसुकून ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाते हैं।

अल्लाह तआ़ला हम सबको नेकी पर ज़िन्दगी गुज़ारने की और इस दुनिया में भी कामयाबी की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे, क़ाबिले रश्क ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे, और जो-जो जिस-जिस की परेशानियाँ हैं अल्लाह तआ़ला हमारी उन सब परेशानियों को दूर फ़रमा दे। हमारे दिलों में नेकी का शौक़ पैदा फ़रमा दे ताकि हम नेकी पर ज़िन्दगी गुज़ार कर दुनिया में भी सुकून पायें और अल्लाह को भी राज़ी कर लें।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जन्नत के नज़ारे

بسم الله الرحمن الرحيم ٥ الحمد لله وكفى وسلام على عباده الّذين اصطفى اما بعد!

اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ٥ اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ (سورة التوبة) وقال الله تعالى فى مقام اخر: اَللّٰهُ يَدْعُوْآاِلٰى دَارِالسَّلَامِ (سورة يونس) وقال الله تعالى فى مقام اخر: وَسَارِعُوْآاِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ (سورة الحديد)

سبحن ربك رب العزة عما يصفون ٥ وسلام على المرسلين٥ والحمد لله رب العالمين ٥ اللّهم صل على سيّدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم.

नेकियों का सीज़न

रमज़ान मुबारक का महीना अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की रहमतों का ख़ज़ाना है। इसकी बरकतों का अन्दाज़ा इससे लगायें कि इसकी पहली रात में अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त जन्नत के सब दरवाज़ों को खोल देते हैं। जन्नत को खुशियों की धूनी दी जाती है। जन्नत को ज़्यादा ख़ूबसूरत बनाया और सजाया जाता है और इस महीने में मोमिनों की जन्नत में अलाटमेंट (तक़सीम) की जाती है। (यानी जन्नत को उनके नाम किया जाता है)।

इसकी मिसाल इस तरह समझ लीजिए कि मुल्क के अन्दर रोज़ाना कहीं न कहीं दरख़्त लगाये जा रहे होते हैं, मगर एक मौसम ऐसा आता है जिसमें शजर-कारी (पेड़ लगाने का काम) की जाती है। जब पेड़ लगाने का मौसम हो तो हुकूमत हर शहर के अन्दर छोटे-छोटे केन्द्र बना देती है। जहाँ लोगों को पौधे दिये जाते हैं ताकि हज़ारों नहीं लाखों की तायदाद में लगाये जा सकें।

इसी तरह जन्नत तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हर रोज़ अलाट करते (यानी अपने नेक बन्दों के नाम करते) हैं, उस बन्दे को जो गुनाहों से तौबा करके तायब हो जाता है। मगर रमज़ान मुबारक का महीना यह जन्नत की अलाटमेंट (आवंटन) का खुसूसी महीना है चुनाँचे इसी लिए जन्नत के दरवाजों को खोलते हैं और उसे सजाया जाता है।

असली वतन

दुनिया हमारे लिए वतने-इक़ामत (अस्थाई तौर पर रहने की जगह) है। जन्नत हमारा असली वतन है। जैसे यहाँ से एक आदमी दक्षिण अफ़्रीक़ा चला जाए और वहीं कारोबार कर ले, मगर घर बीवी-बच्चे यहाँ हों तो दक्षिण अफ़्रीक़ा रहने की वजह से उसका वतने-इक़मात बन गया। कि वहाँ कारोबार है जाना पड़ता है रहना पड़ता है। मगर आख़िरकार लौटकर वह अपने घर ही आता है। इस घर की जगह को वतने-असली कहते हैं।

हमारा असली वतन जन्नत है, हम जन्नत के रहने वाले थे, अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने हमें अपनी बन्दगी के लिए दुनिया में भेजा और जब हम दुनिया से लौटकर जायेंगे तो हमें अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त जन्नत में रहने की जगह अ़ता फ़रमायेंगे।

इसी लिए हदीस पाक में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि रमज़ान मुबारक के दौरान यह दुआ़ कसरत से माँगा करो:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलुकल्-जन्न-त व अऊज़ु बि-क मिनन्नारि

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से जन्नत को तलब करता हूँ और मैं आप से आग से पनाह माँगता हूँ।

जहन्नम से पनाह माँगने का हुक्म दिया। जन्नत को हासिल करना यह हमारी ज़रूरतों में से एक बड़ी ज़रूरत है। यहाँ बहुत सी बार लोगों में एक ग़लत-फ़हमी आ जाती है। वे किताबों में औलिया-अल्लाह (अल्लाह के वलियों और नेक बन्दों) के वाक़िआत पढ़ते हैं कि राबिया बसरी चली थी एक हाथ में पानी लेकर और दूसरे हाथ में आग लेकर कि आग से मैं जन्नत को जलाऊँगी और पानी से मैं जहन्नम को बुझाऊँगी ताकि लोग जन्नत और जहन्नम की वजह से इबादत न करें, अल्लाह की मुहब्बत में इबादत करें।

यह राबिया बसरी का ग़लबा-ए-हाल का वाक़िआ है। (यानी उस वक़्त वह दुनिया के एतिबार से अपने होश में नहीं थीं)।

हज़रत मुजद्दिद् अल्फ़े-सानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का फ़रमान

हज़रत मुजद्दिद् अल्फ़े-सानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि अगर राबिया बसरी भेद से वाक़िफ़ होतीं तो वह ऐसा काम न करतीं। इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ख़ुद जन्नत की तरफ़ बुला रहे हैं:

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلَامِ (سورة يونس: ٢٥)

यानी अल्लाह जन्नत की तरफ़ बुलाता है।

और जिसकी तरफ़ अल्लाह बुलाएँ उसकी तरफ़ जाना अल्लाह तआ़ला की ऐन मन्शा होती है। तो इसलिए ऐसे अल्लाह वालों का अल्लाह की मुहब्बत के ग़लबे में ये बातें कर देना यह मुहब्बत की

वजह से होता है। जैसा कि इब्ने बारिद रहमतुल्लाहि अ़लैहि एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, मौत के वक़्त में जन्नत के मनाज़िर (दृश्य) देखे। किताबों में लिखा है कि उन्होंने जन्नत से रुख़ फेर लिया और एक शे'र पढ़ाः

ان كان منزلتی فی الحب عندكم

ماقدرأيتُ فقد ضيعتُ ايامی

तर्जुमाः ऐ अल्लाह आप से मुहब्बत करने के बावजूद मेरा मक़ाम आपके यहाँ यही है जो मैंने देखा है तो मैंने ज़िन्दगी ज़ाया कर दी।

मक़सद क्या है? कि अल्लाह की मुहब्बत का इतना ग़लबा था कि वह तो अल्लाह का दीदार चाहते थे।

जन्नत की तलब

हज़रत ममशाद दैनूरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि एक बुज़ुर्ग हैं। मौत के वक़्त किसी ने उनको दुआ़ दी कि अल्लाह आपको जन्नत की नेमतें अ़ता फ़रमाये।

किताबों में लिखा है कि उन्होंने जवाब दिया कि बीस साल से जन्नत पूरी आराईश के साथ (यानी सज-धजकर) मेरे सामने पेश होती रही, मैंने अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की तरफ़ से निगाह हटा कर एक लम्हे के लिए भी जन्नत की तरफ़ नहीं देखा। तुम मेरे लिए क्या जन्नत की दुआ़यें करोगे।

तो इस क़िस्म के जो अल्लाह वालों के वाक़िआ़त हैं वे मुहब्बत के ग़लबे में हैं। लेकिन जन्नत को तलब करना यह मोमिन का काम है। यह मोमिन की तमन्ना होनी चाहिए।

किस लिए? नीयत यह न हो कि जन्नत के अन्दर खाने पीने की चीज़ें होंगी, रहने की जगह होगी, नेमतें होंगी। नहीं! नीयत यह हो कि जन्नत वह जगह है जहाँ मोमिनों को अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त का दीदार नसीब होगा। हम अगर वहाँ पहुँच जायेंगे तो हम आ़जिज़ मिस्कीनों को

भी अल्लाह का दीदार नसीब हो जायेगा। तो इसलिए हर मोमिन को दिल में जन्नत की तमन्ना का रखना यह नेकी का काम है।

जन्नत और जहन्नम का मकान

अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने हर इनसान के लिए एक मकान जन्नत में बनाया है और एक मकान जहन्नम में बनाया है। अगर वह नेक आदमी है तो मौत के वक़्त उसको पहले जहन्नम का मकान दिखाते हैं कि ऐ मेरे बन्दे! अगर तू बुराईयाँ करता तो तेरा यह ठिकाना होता। अब चूँकि तूने नेकी पर ज़िन्दगी गुज़ारी, लिहाज़ा तेरा ठिकाना जन्नत में है।

जब उसको जन्नत का ठिकाना दिखाते हैं तो उसको इतनी ख़ुशी होती है कि वह मौत की तकलीफ़ भी भूल जाता है।

और अगर वह बन्दा गुनाहगार हो तो उसको अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के फ़रिश्ते जन्नत का मकान दिखाते हैं और उससे कहा जाता है कि अगर तू नेकी करता तो तेरा मकान अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने यह तैयार किया था। चूँकि तूने बुराईयाँ कीं, गुनाह किये, तौबा भी न की और अब तेरी मौत कुफ़्र पर आ रही है, शिर्क पर आ रही है, मुनाफ़क़त पर आ रही है, इसलिए तुझे जहन्नम में डालेंगे। तो उसके दिल में हसरत बढ़ जायेगी। काश! मैं भी ईमान क़बूल कर लेता, नेक होता, मुझे भी जन्नत मिल जाती। अब मैं जन्नत से मेहरूम हो गया। उसके दिल मैं हसरत होगी।

फिर उसे जहन्नम का मकान दिखायेंगे कि अब तुझे यहाँ भेजेंगे तो उसे ख़ौफ़ होगा, उसी ख़ौफ़ और हसरत की तकलीफ़ में जब उसे मौत की तकलीफ़ पहुँचेगी तो उसकी तकलीफ़ें कई गुना ज़्यादा होंगी। और उसकी रूह को क़ब्ज़ कर लिया जायेगा।

जन्नत के आठ दरवाज़े हैं और जहन्नम के सात

अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने कुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाया कि जहन्नम के सात दरवाज़े हैं (देखिये सूरः हिज्र आयतः४४) लेकिन हदीस पाक में बताया गया कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं।

अब उलेमा ने एक नुक्ता लिखा, नुक्ता यह लिखा कि जिस तरफ़ से ज़्यादा लोगों को आना हो उस तरफ़ के रास्ते को बड़ा बना जाता है। आपने देखा होगा कि घर का एक मैन गेट (मुख्य द्वार) होता है और एक छोटा सा गेट पीछे की तरफ़ औरतें अपने लिए बना लेती हैं। जहाँ से ज़्यादा लोगों को आना होता है वहाँ ज़्यादा आदमियों के आने की गुन्जाईश बनाई जाती है। और जहाँ से थोड़ों को आना होता है वहाँ थोड़ी जगह बनाई जाती है।

तो उलेमा ने नुक्ता लिखा कि अल्लाह तआ़ला ने जहन्नम के सात दरवाज़े बनाये, जन्नत के आठ दरवाज़े बनाये। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की मन्शा यह है कि मेरे ज़्यादा बन्दे जन्नत में चले जायें। तो जिस परवर्दिगार ने पहले ही जन्नत का दरवाज़ा बड़ा और ज़्यादा कर दिया तो अल्लाह तआ़ला की चाहत यह है कि मेरे बन्दे नेकी करें। ये जहन्नम में जाने की बजाय जन्नत में ज़्यादा जाने वाले बन जायें।

जन्नत क्या है?

जन्नत क्या है? आज की इस महफ़िल में चन्द बातें आप से कही जायेंगी। जन्नत अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की बनाई हुई एक जगह है जिसके बारे में आता है:

ما لا عين رأت ولا اذن سمعت ولا خطر على قلب بشر

तर्जुमाः वह ऐसी जगह है जिसे किसी आँख ने देखा नहीं, किसी कान ने उसके बारे में सुना नहीं, किसी इनसान के दिल पर उसका

ख़्याल तक नहीं गुज़रा।

तो गोया जन्नत हमारे ख़्वाब व ख़्याल से भी ज़्यादा हसीन और ख़ूबसूरत जगह है। यह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के नेक बन्दों के रहने की जगह है। अल्लाह का अ़र्श जन्नत की छत होगी, और अ़र्श के बिल्कुल नीचे यह जन्नत होगी। मगर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त फ़रमाते हैं:

وَالسَّمَآءَ بِنَآءً (سورة بقرة:٢٢)

और आसमान को जब हमने बनाया (तो उसको विस्तार बख़्शा यह हर वक़्त फैल रहा है)।

तो उलेमा ने मसला लिखा कि जिस तरह आसमान हर वक़्त फैल रहा है उसी तरह जन्नत भी हर वक़्त फैल रही है। जैसे कमान से तीर निकलने के बाद तेज़ी के साथ सफ़र करता है, उससे ज़्यादा तेज़ी के साथ जन्नत फैलती चली जा रही है। और यह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की रहमत दम-ब-दम उसके बन्दों पर बढ़ रही है।

यह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की मेहरबानी है। यह उसका करम है कि उसने इनाम वाली जगह को हर वक़्त और ज़्यादा फैलने और बड़ा होने का हुक्म अ़ता फ़रमा दिया। तो जन्नत हर लम्हे बढ़ रही है ताकि अल्लाह के नेक बन्दे वहाँ जायें।

जन्नत वालों का सम्मान

जो जन्नती होंगे क़ियामत के दिन उनको अल्लाह तआ़ला प्रोटोकोल अ़ता फ़रमायेंगे। दुनिया के अन्दर स्वागत किया जाता है, प्रोटोकोल दिया जाता है, प्रोटोकोल का क्या मतलब है कि जब किसी को घर बुलाना हो तो उसको अपना ड्राईवर सवारी भेजकर बुलवा लेते हैं। एक तो वैसे ही उनको बता देते कि आप घर आईये। लेकिन इज़्ज़त बढ़ाना इसमें होता है कि मेहमान बहुत सम्मानीय हो तो अपना आदमी भेज देते हैं कि जाओ उनको घर लेकर आओ।

अल्लाह तआ़ला भी जन्नतियों को प्रोटोकोल अ़ता फ़रमायेंगे।

फ़रिश्तों को भेजेंगे और उनसे कहेंगे कि मेरे बन्दों को मेरे पास ले आओ। तो जन्नतियों को जमाअ़त के साथ लेकर जायेंगे। क़ुरआन पाक में फ़रमायाः

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا...... (سورة المومن:٧٣)

यानी जन्नती लोग क़ियामत के दिन जन्नत की तरफ़ चलेंगे जमाअ़त बनकर।

और जब वे जमाअ़त बनकर चलेंगे और जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचेंगे तो फ़रिश्ते उनसे कहेंगेः

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خَالِدِيْنَ ٥ (سورة المومن:٧٣)

तुम्हारे ऊपर सलामती हो। ख़ुश रहो और हमेशा के लिये इस जन्नत में दाख़िल हो जाओ।

यानी उनको फिर सलाम भी पेश किया जायेगा।

وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ (سورة رعد:٢٣)

हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास दाख़िल होंगे और उनको कहेंगे "सलामुन् अ़लैकुम्" (तुम पर सलामती हो)। सलाम के मायने सलामती है। और अगर समझना चाहें तो एक इसका मतलब शाबाश है। यानी फ़रिश्ते यूँ कहेंगेः "तुम पर सलामती हो, तुम्हें शाबाश हो, तुम जीते रहो"। जैसे आदमी किसी को ख़ुश होकर कहता है ना, तो फ़रिश्ते यूँ ख़ुश होकर कहेंगे, ओ जीते रहो, तुम्हें शाबास हो, तुम पर सलामती हो।

بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ

तुमने दुनिया के अन्दर रहते हुए सब्र किया, गुनाहों से अपने नफ़्स को बचा लिया, देखो तुम्हें कितना अच्छा ठिकाना अल्लाह ने अ़ता फ़रमाया।

तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त उस दिन जन्नतियों को बहुत इक्राम (सम्मान और इज़्ज़त) अ़ता फ़रमायेंगे। और हदीस पाक में आता है

कि जब भी जन्नती जन्नत में दाख़िल होंगे, तो जब फ़रिश्ते उनको सलाम कर लेंगे और वे अपने घर की तरफ़ जायेंगे तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हर-हर जन्नती मर्द और औ़रत को सलाम फ़रमायेंगे।

अब यह कितना ऐज़ाज़ (सम्मान) है कि हर जन्नती मर्द और हर जन्नती औ़रत को अल्लाह तआ़ला सलाम कहेंगे। यह ऐसा ही है जैसा कि किसी के घर में आप जायें तो घर की कोई औ़रत दरवाज़े पर आपका स्वागत करती है, और आपको सलाम करती है तो यह घर वालों ने सलाम किया, यह इक्राम हुआ करता है। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त भी जन्नत में जन्नतियों को सलाम फ़रमायेंगे।

जन्नतियों की सफ़ें

हदीस पाक में आया है कि क़ियामत के दिन जन्नतियों की एक सौ बीस सफ़ें होंगी जिनमें से अस्सी सफ़ें मेरी उम्मत की होंगी और चालीस सफ़ें बाक़ी तमाम नबियों की उम्मतों की होंगी। सुब्हानल्लाह! देखिए अल्लाह तआ़ला के महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को क्या इज़्ज़त मिली, कि सारे नबियों की उम्मतें मिलकर जो बनीं वे चालीस सफ़ें और अल्लाह तआ़ला के महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्मत की जो सफ़ें बनीं वे अस्सी होंगी। यानी उनसे दोगुना होंगी। बल्कि यूँ कहें कि जो जायदाद होती है, जो वारिस होते हैं उनमें से बेटी को आधा हिस्सा मिलता है और बेटे को दोगुना हिस्सा मिलता है। तो जन्नत आदम अ़लैहिस्सलाम की मीरास थी। जब तक़सीम हुई तो अल्लाह ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तो मर्द वाला हिस्सा अ़ता फ़रमाया और बाक़ी तमाम अंबिया-ए-किराम को मिलकर औ़रतों वाला हिस्सा अ़ता फ़रमाया।

तो एक सौ बीस सफ़ों में से अस्सी सफ़ें उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की होंगी।

अल्लाह के महबूब

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दुआ़

चुनाँचे एक रिवायत में आता है कि नबी अ़लैहिस्सलाम तीन दिन सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से अलग रहे सिर्फ़ कमरे में हुजरे में अपने आप बन्द रहे और नमाज़ों के लिए तशरीफ़ लाते। फिर बग़ैर सलाम-कलाम किये ख़ामोशी से वापस तशरीफ़ ले जाते। फिर नमाज़ के लिए आते तो वापस चले जाते। आपने तन्हाई इख़्तियार कर ली तीन दिन के लिए। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम बड़े हैरान हुए।

तीसरे दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से आकर मिले तो उन्होंने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! आपने तीन दिन क्यों तन्हाई इख़्तियार फ़रमाई? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया! मैं अल्लाह तआ़ला से दुआ़यें माँग रहा था। और तीन दिन मैं अल्लाह के सामने रोता रहा और अपने रब से माँगता रहा। मेरे रब ने मुझसे वायदा फ़रमा लिया कि वह मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार बन्दों को बग़ैर हिसाब किताब के जन्नत अ़ता फ़रमायेंगे। और उनमें से हर-हर बन्दा अपने साथ सत्तर हज़ार आदमियों को जन्नत में लेकर जा सकेगा।

अब सत्तर हज़ार तो बग़ैर हिसाब जाने वाले, और हर एक अपने साथ सत्तर हज़ार को लेकर जाएगा, तो माशा-अल्लाह अरबों में यह इनसान बन जायेंगे। और अरबों की तायदाद में लोग होंगे उम्मते मुहम्मदिया के जो बग़ैर हिसाब किताब के जन्नत में जायेंगे।

मिसाल के तौर पर इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़र्ज़ करो उनमें से एक हैं। उनके साथ सत्तर हज़ार की उनको इजाज़त होगी। कि आप अपने साथ और भी लोगों को लेकर जायें। तो इसलिए हमारे जो बड़े अकाबिर (बुज़ुर्ग हज़रात) गुज़रे हैं अगर हम

उनके साथ रूहानी तौर पर जुड़े हुए रहेंगे तो वे जब बे-हिसाब किताब जायेंगे और उनको अल्लाह तआ़ला बन्दों में से चुनने का इख़्तियार अ़ता करेंगे कि अपने साथ सत्तर हज़ार को लेकर जाओ तो सुब्हानल्लाह मुम्किन है कि हम पर भी किसी बुज़ुर्ग की नज़र पड़ जाए। और क़ियामत के दिन हमें बिना हिसाब-किताब जन्नत में जाने की इजाज़त मिल जाए।

जन्नत वालों का सम्मान

जब घर में मेहमान आते हैं तो उनके सामने फ़ौरन स्वीट डिश या कोई पीने की चीज़ वग़ैरह रख देते हैं, या मेवा रख देते हैं कि जैसे ही आकर बैठें तो कुछ खा लें। इसी तरह जन्नती जैसे ही जन्नत में दाख़िल होंगे, अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की तरफ़ से एक रोटी उनको दी जाएगी। बाज़ रिवायात में मछली या उसके कबाब भी आए हैं। तो ये चीज़ें रख दी जायेंगी, और जन्नती जब उसको खायेंगे तो दुनिया के तमाम खानों और फलों के जितने मज़े थे, उनको उस एक रोटी में मिल जायेंगे। उस रोटी को खाकर उनको कितनी देर तक नींद सी महसूस होगी। यानी जैंसे एक इनसान किसी चीज़ को खाकर एक नशा सा महसूस करता है। उनको खाने का नशा सा महसूस होगा।

देखो यह जन्नत का स्वागत है कि एक-एक लुक़्मे में सारी दुनिया की नेमतों का मज़ा उनको मिल जाएगा।

जन्नत के मकान की तामीर

जन्नत में हर एक का अपना-अपना मकान होगा। कैसे मकान होंगे? यह मकान हर इनसान अपनी इबादत के ज़रिये खुद बनाता है।

हदीस पाक में आता है कि जन्नत में फ़रिश्ते हैं जो जन्नती इनसान का मकान बनाते हैं। जो इनसान बैठा ज़िक्र कर रहा होता है, तो उधर जन्नती फ़रिश्ते उसका मकान बना रहे होते हैं। जब यह

ज़िक्र करना ख़त्म कर देता है यानी नेक अ़मल करना ख़त्म कर देता है तो फ़रिश्ते मकान बनाना रोक देते हैं।

दूसरे फ़रिश्ते पूछते हैं कि तुमने मकान का काम बन्द क्यों कर दिया? तो जवाब देते हैं कि हमारे पास ईंट गारा ख़त्म हो गया। यानी जितनी देर हम इबादत करते हैं उतनी देर हमारा मकान बनता है।

अब औ़रतें दिल में यह बात सोच लें कि जितना वक़्त वे मुसल्ले पर लगायेंगी, तिलावत में लगायेंगी, नमाज़ों में लगायेंगी, तस्बीहात पढ़ने में लगायेंगी, अपने दिल में अल्लाह को याद करने में लगायेंगी, उतनी देर जन्नत में उनका मकान बनता रहेगा। यहाँ तक कि एक बार अगर कोई बन्दा सुब्हानल्लाह कह देता है तो अल्लाह तआ़ला उस सुब्हानल्लाह कहने के बदले में एक दरख़्त जन्नत में लगवा देते हैं। इतना बड़ा दरख़्त होगा कि अ़रबी नस्ल का घोड़ा सत्तर साल अगर उसके नीचे दौड़े तो उसका साया ख़त्म न हो। तो इतने बड़े-बड़े दरख़्त लगेंगे इतना बड़ा ऐरिया होगा। जैसे दुनिया के अन्दर छोटे छोटे मकान होते हैं, एक होते हैं फ़ील्ड हाऊस (Field House) दस ऐकड़ के अन्दर एक घर, चारों तरफ़ बाग़ होते हैं। तो जन्नत के अन्दर ऐसे ही अल्लाह तआ़ला (Field House) अ़ता फ़रमायेंगे। कि घर होगा महल की मानिन्द और उसके गिर्द दरख़्तों के बाग़ लगे होंगे।

जन्नत के मकान के बारे में हदीसों में आता है कि कुछ लोगों के मकान सोने और चाँदी की ईंटों से बने होंगे। जैसे दुनिया में टाईलें लगा देते हैं घर में, तो कितनी ख़ूबसूरत लगती हैं। आजकल जिस घर में जाओ एक से बढ़कर एक टाईल का काम हुआ होता है। कई जगहों पर मार्बल लगा देते हैं, उसकी अपनी ख़ूबसूरती होती है। कई जगहों पर चिप्स लगा देते हैं उसकी अपनी ख़ूबसूरती होती है। तो जन्नत के जो मकान बनेंगे उन मकानों की ईंटें सोने और चाँदी की बनी हुई होंगी, और जो गारा इस्तेमाल किया जाएगा वह मुश्क का होगा।

यह मुश्क की ख़ुशबू ऐसी होती है कि अगर आदमी उसको हाथ पर लगा ले तो पूरे दिन उसके हाथ से ख़ुशबू आती रहती है। आप सोचिए कि जिस मकान के गारे में से मुश्क की ख़ुशबू आएगी वह मकान कैसा महकता हुआ होगा।

बाज़ जन्नती होंगे जिनको अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त सुर्ख़ याक़ूत का महल अ़ता फ़रमायेंगे। सोने चाँदी की ईंटें नहीं होंगी, सुर्ख़ याक़ूत का महल होगा। और बाज़ ऐसे लोग होंगे जिनको हीरे का मकान अ़ता फ़रमायेंगे जो बेजोड़ होगा, कहीं जोड़ नहीं होगा, पूरे का पूरा मकान हीरे का होगा।

जब हीरे के मकान होंगे, याक़ूत के मकान होंगे, तो सोचिए कि उनकी ख़ूबसूरती फिर कैसी होगी। फिर उस मकान के अन्दर गुलशन होंगे, बाग़ होंगे, फल होंगे, फूल होंगे, सब्ज़ा होगा इस क़द्र ख़ूबसूरत परिन्दे होंगे कि इनसान को अपने घर के अन्दर बैठे हुए ऐसा मज़ा आएगा कि वह ख़ुशियाँ मनाएगा।

जन्नत के फल

जन्नत के जो दरख़्त होंगे उनके बारे में आता है कि जब इनसान के दिल में ख़्याल आएगा कि मैं फ़लाँ पेड़ का फल खाऊँ, तो उस पेड़ की शाख़ (टहनी) उसके क़रीब हो जाएगी और फल उसके मुँह के पास आ जाएगा, और जन्नत के दरख़्त का फल लेटा हुआ बन्दा भी हासिल कर सकेगा। बैठा हुआ भी हासिल करेगा, खड़ा हुआ भी हासिल करेगा। अल्लाह तआ़ला क़ुरआन पाक में फ़रमाते हैं कि बन्दा जिस हाल में भी होगा वह फल उसे वहाँ ही मिल जाएगा।

दुनिया के दरख़्तों के फल तोड़ने के लिए तो जाना पड़ता है। दरख़्त पर चढ़ना पड़ता है या नीचे से कोई चीज़ लेकर मारना पड़ता है। लेकिन जन्नत के दरख़्त के फल जहाँ इनसान होगा वहीं बैठे-बैठे उसे मिल जायेंगे। और फिर दरख़्त भी अ़जीब होंगे, अल्लाह तआ़ला

फ़रमाते हैं:

فِيهِمَا مِن كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ

हर मेवा जो होगा या फल होगा उसके जोड़े होंगे।

فِيهَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ۝ فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيٰنِ ۝ فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتَانِ ۝

वहाँ हर तरह के फल होंगे। नहरें भी जारी होंगी। चश्मे भी जारी होंगे।

कहीं फ़रमायाः वह दोनों बाग़ बहुत ज़्यादा शाख़ों वाले होंगे। कहीं फ़रमायाः उन दोनों बाग़ों का फल बहुत नज़दीक होगा। कहीं फ़रमायाः वे दोनों बाग़ गहरे सब्ज़ होंगे। और आख़िर में फ़रमायाः तुम अपने रब की कौन-कौनसी नेमतों को झुठलाओगे। (तफ़सील के लिये देखिये सूरः रहमान)

जन्नत का संगीत

जन्नत के बाग़ात के बारे में इतनी तफ़सील बताई गई कि वह कितनी ख़ूबसूरत जगह होगी। बाज़ रिवायात में आता है कि हर दरख़्त के ऊपर फलों के साथ घुंघरूओं की जैसी कुछ चीज़ें लगी हुई होंगी। जब जन्नत में हवा चलेगी तो दरख़्तों की टहनियाँ हिलेंगी, और वे घुंघरू बजेंगे, और उनमें से इतनी ख़ूबसूरत आवाज़ पैदा होगी जैसे संगीत की होती है। जिसको सुनकर इनसान तमन्ना करेगा कि मैं इस आवाज़ को सुनता रहूँ। जन्नती बाग़ के दरख़्तों को अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने ऐसा बना दिया कि वे फल भी देंगे और उनमें से ऐसी आवाज़ें निकलेंगी कि इनसान उन आवाज़ों को सुनकर उन पर मस्त होगा। फिर हर घर के अन्दर, अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त उसको ऐसा ख़ूबसूरत बनायेंगे।

जन्नती घर की चमक

हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि जन्नत का घर

आसमान के सितारों से भी ज़्यादा चमकदार होगा। जैसे लोग कहते हैं चमकता हुआ हीरा, हीरे की चमक भी थोड़ी होती है, सितारे की चमक ज़्यादा होती है तो सितारे के साथ तश्बीह (मिसाल) दी कि जन्नती बन्दे का मकान आसमान के सितारों से भी ज़्यादा चमकदार होगा, और उसमें एक ख़ास बात होगी वह यह कि हर दिन उसका डिज़ाईन बदला करेगा।

अगर एक घर में ही रहें तो कुछ समय के बाद एक ही जगह फ़र्नीचर, चीज़ं देखकर उकताहट हो जाती है।

जन्नती घर की सैटिंग

कई औरतों को देखा है कि वे साल दो साल के बाद घर की सैटिंग बदलती रहती हैं। कभी फ़र्नीचर बदल दिया, कभी सैटिंग बदल दी, कभी कुछ बदल दिया, कि जिद्दत के अन्दर "कुल्लु जदीदुन् लज़ीजुन्" (हर नई चीज़ में लज़्ज़त होती है) तो जन्नती मकान के अन्दर अल्लाह तआला ने यह ख़ूबी रख दी कि उस मकान का डिज़ाईन रोज़ बदला करेगा। हर सुबह जन्नती जैसा चाहेंगे उनके मकान का डिज़ाईन वैसा ही बन जाया करेगा।

औरतें चाहती हैं कि यहाँ फूल हों, यहाँ फ़लाँ चीज़ हो, यहाँ फ़लाँ चीज़ हो। तो जैसे ये चाहेंगी जन्नत के मकान का डिज़ाईन रोज़ बदलेगा। ख़ूबसूरती रोज़ बेहतर होगी। जैसे उनके दिल की तमन्ना होगी वैसे ही अल्लाह तआला उस मकान की ख़ूबसूरती को बना दिया करेंगे।

सोचिए कि वह कैसी जगह होगी कि हमारे ज़ेहन में तसव्वुर होगा कि ऐसा मकान हो और फिर वह मकान वैसा बन जायेगा। आज तो औरतें जिस मकान में रहती हैं ये बेचारियाँ उसकी सफ़ाई पर दो घण्टे रोज़ लगा देती हैं। कभी खिड़कियों के शीशे साफ़ हो रहे हैं, कभी फ़र्नीचर साफ़ किया जा रहा है, कभी कारपेट साफ़ हो रहा है। मगर

सब कुछ करके भी वही घर रोज़ है। सारी ज़िन्दगी उसी घर में गुज़ारनी है। अच्छा बन गया तो भी और अगर कोई चीज़ अच्छी न बनी तो भी गुज़ारा करना है कि बन चुका, मगर जन्नत का मकान तो कुछ और ही होगा, कि जिसका डिज़ाईन अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त बन्दे की ख़्वाहिश के मुताबिक़ रोज़ बदल दिया करेंगे। सोचिए कि उस घर में रहने में कितना मज़ा आएगा।

जन्नती घर के अन्दर स्वीमिंग पूल

दुनिया के अन्दर जैसे अनेक घरों के अन्दर Swimming pool (नहाने के तालाब) होते हैं, और लोग पसन्द करते हैं कि कभी कभी Swimming pool में नहाना भी पड़ता है, जन्नत के हर घर में भी Swimming pool होगा। चुनाँचे हदीस पाक में आता है कि एक नहर है जिसका नाम नहरे-रहमत है। वह तमाम जन्नतों में से गुज़रेगी। यानी हर-हर जन्नती के घर के क़रीब से बहती हुई आएगी। उसकी शाख़ें इतनी होंगी कि हर मकान के अन्दर Swimming pool होगा जिसके अन्दर अगर वे नहाना चाहें तो उसमें नहाने की सहूलियत मौजूद होगी।

जन्नतों के नाम या उनकी क़िस्में

अल्लाह तआ़ला ने कई जन्नतें बनाई हैं एक का नाम दारुल्-जलाल है, एक का नाम दारुस्सलाम है, एक का नाम जन्नतुल्-मअ्वा है, एक का नाम जन्नतुल्-ख़ुल्द है, एक का नाम जन्नतुन्-नईम है, एक का नाम जन्नतुल्-क़रार है, एक का नाम जन्नतुल्-फ़िरदौस है।

यह जन्नतुल्-फ़िरदौस वह जन्नत है जिसमें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त मकान अ़ता फ़रमायेंगे। और एक का नाम है जन्नते-अ़द्न है। हदीस पाक में आता है कि

जन्नतुल्-फ़िरदौस तक जितनी जन्नतें थीं उनको तो अल्लाह ने फ़रिश्तों के हाथों से बनवाया मगर जन्नते-अ़द्न को अल्लाह ने खुद बनाया। यह वह जन्नत होगी कि जहाँ पर जन्नतियों को अल्लाह का दीदार नसीब होगा।

अल्लाह तआ़ला को क्योंकि अपने बन्दों को जलवा अ़ता फ़रमाना था जैसे महमान को कोई बुलाए उसके लिए घर की सैटिंग (Setting) खुद करता है।

जन्नतुल्-अ़द्न

इसी तरह अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त को अपने महबूब बन्दों को चूँकि अपना दीदार करवाना था इसलिए जन्नतुल्-अ़द्न को अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने खुद बनाया।

हदीसों में आता है कि इस जन्नत का गारा यानी सिमेंट जो है वह मुश्क का होगा, उसका घास ज़ाफ़रान का होगा और उसके जो पत्थर होंगे वे मोतियों के होंगे, और उसकी मिट्टी अ़ंबर की होगी। अब सोचिए कि जन्नते-अ़दन कैसी होगी? जिसको अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने सजाया। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त फ़रमाते हैं:

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

(سورة الم سجدة:١٧)

यानी कोई जी नहीं जानता कि उनकी आँखों की ठंडक के लिए अल्लाह ने क्या-क्या तैयार कर रखा है। यह बदला है जो वे नेक आमाल करते थे।

अब मकान के अन्दर हर घर के अन्दर फ़र्नीचर होता है, और औ़रतें फ़र्नीचर भी अपनी पसन्द का लाती हैं, अच्छे से अच्छा फ़र्नीचर लाती हैं। जन्नत के मकानों के अन्दर भी फ़र्नीचर होंगे, अल्लाह तआ़ला मसन्दें बना देंगे। मिम्बर होंगे बैठने के लिए कुर्सियाँ होंगी,

बैठने के लिए गाव-तकिये लगे होंगे। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ مُّتَّكِئِيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَO (سورة واقعة:١٥)

ऐसे तख़्त होंगे कि जिन पर सोने का काम किया हुआ होगा। अब सोचिए जो तख़्त सोने का बना हुआ हो, जिस पर सोने का काम किया गया हो, यह कितना अच्छा फ़र्नीचर होगा, और उसके अन्दर फिर लोग एक दूसरे के आमने सामने महफ़लें सजा कर बैठेंगे। ख़ादिम (ख़िदमतगार) होंगे, नौकर चाकर होंगे:

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَO (سورة دهر:١٩)

उनके गिर्द फिरेंगे कि कोई हुक्म हो तो हमें बता दीजिए।

ये जन्नती ख़ादिम हैं, उनका नाम ग़िलमान है। कुरआन मजीद में फ़रमाया कि:

لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا (سورة دهر:١٩)

जैसे चमकते हुए मोती होते हैं इस तरह वे ख़ादिम ख़ूबसूरत होंगे, कि घर के अन्दर बिखरे हुए मोतियों की तरह ख़ूबसूरत होंगे।

हदीस पाक में आता है, एक सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जब यह आयत पढ़ी तो उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के महबूब! जन्नती ख़ादिमों के बारे में अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि वे बिखरे हुए मोतियों की तरह ख़ूबसूरत होंगे, तो फिर जन्नत के वारिस जो जन्नती लोग बनेंगे उनके हुस्न व जमाल (ख़ूबसूरती और रूप-रंग) का क्या आ़लम होगा।

उन ख़ादिमों के पास फिर ख़िदमत के लिए बरतन होंगे, और इनसान के सामने वे खाने पीने के लिए दस्तरख़्वान लगाएँगे। चुनाँचे कुरआन मजीद में दस्तरख़्वान लगाने की तरतीब भी बता दी गई।

जन्नती बरतनों की ख़ूबसूरती

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं:

بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ. (سورة واقعة:١٨)

उनके पास बरतन होंगे। अबारीक़ कहते हैं वह बरतन जिसमें पकड़ने के लिए हल्क़ा (पकड़ने का दायरा) भी बना हुआ और टूँटी भी हो, मगर वह बिजली की तरह चमकने वाला हो। ऐसे बरतनों को अगर क़लई करवा दें तो वे कितने चमकते हैं। इसी तरह जो जन्नती बरतन होंगे, वे बिजली की तरह चमकने वाले होंगे। यानी वे चमकते हुए होंगे और यूँ समझ लीजिए उनमें पकड़ने के लिए हैंडल भी बने हुए होंगे और कुछ "अकवाब" होंगे। अकवाब कहते हैं उन बरतनों को जिनमें पकड़ने के लिए जगह नहीं होती, जैसे प्याले में हैंडल वग़ैरह नहीं बना होता, लेकिन कप के अन्दर हाथ से पकड़ने की जगह बनी होती है, तो इसलिए दो तरह के बरतनों का ज़िक्र किया गया।

जन्नती दस्तरख़्वान की हुस्ने तरतीब

اَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ (سورة واقعة)

और फिर ऐसे बरतन होंगे, जाम होंगे जिनके अन्दर मश्रूबात (पेयजल यानी पीने की चीज़ें) होंगे।

لَا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ○ (سورة واقعة)

वह ऐसी शराब होगी जिसे "शराबे तहूरा" कहते हैं। कि पियेंगे मगर उसकी वजह से नशा नहीं होगा। तो वे दस्तरख़्वान के ऊपर आकर पहले बरतन रखेंगे, बरतन रखने के बाद फिर दूसरा काम क्या होगा:

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ○

फिर उनके आगे मेवे रख दिये जाएँगे। जब मेवे रख दिये गये तो तीसरा काम क्या होगा:

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ○ (سورة واقعة)

फिर उनके पास परिन्दों का भुना हुआ गोश्त आ जाएगा।

तो गोया हमें दस्तरख़्वान की जन्नती तरतीब बता दी गई कि

औ़रतें भी घरों में इसी तरह दस्तरख़्वान लगाया करें कि पहले दस्तरख़्वान बिछा दिया फिर उसके ऊपर बरतन रख दिये फिर बरतनों के बाद मश्रूबात (पीने की चीज़ें पानी वग़ैरह) रख दिये, मश्रूबात के बाद मेवे रख दिये और मेवे के बाद पका हुआ भुना हुआ खाना रख दिया तो यह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने जन्नत के दस्तरख़्वान की तरतीब जो क़ुरआन में बताई, अगर आप इस पर अ़मल करेंगी तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की तरफ़ से आपको अज्र मिलेगा। और जब अभी से इस तरह दस्तरख़्वान लगवाने की Practice (अभ्यास) कर लेंगी तो अल्लाह तआ़ला आख़िरत में आपको उससे मेहरूम नहीं फ़रमाएँगे।

फिर जब जन्नती खाना खाने बैठेंगे:

يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا

हदीस पाक में आता है कि खाना इतना होगा कि हर बन्दा खा सकेगा मगर शौक़ की वजह से मुहब्बत की वजह से, एक दूसरे के साथ दिल्लगी की वजह से, एक दूसरे से छीन कर खाएँगे। यानी एक बरतन के अन्दर खाना पड़ा हुआ होगा अब कई औ़रतें बैठी हैं तो एक पहले हाथ डालेगी कि मैं पहले उठा लूँ। दूसरी हाथ डालेगी कि मैं उठा लूँ। वे Enjoy (लुत्फ़ हासिल) करने के लिए गोया उसमें से खाना निकालने में पहल करेंगी।

हालाँकि खाना इतना होगा कि वह खाना सब खा सकती हैं, मगर अल्लाह की तरफ़ से उनको Enjoy करने का मौक़ा दिया जायेगा, इसलिए वे खाना खाते हुए चीज़ों को लेते हुए कोई कहेगी कि मैं अनार लेती हूँ। कोई कहेगी कि मैं आम लेती हूँ।

ये जितने फल होंगे दुनिया के फलों के हम-शक्ल होंगे मगर उनकी लज़्ज़तें बहुत ही आला दर्जे की और अ़जीब होंगी। और इससे भी ताज्जुब की बात यह कि हर-हर फल की लज़्ज़त दूसरे से अलग होगी, हर फल जब जन्नती खायेगा तो उसको हर फल का इतना मज़ा

आयेगा, यहाँ तक कि हर-हर लुक़्मे पर जन्नती को बहुत मज़ा आएगा और उसके लिए ये खाने जो होंगे लुत्फ़ लेने का सबब बन जायेंगे। लेकिन जितना भी खाएँगे, मज़े की बात यह है कि खाने के बाद मुश्क की डकार आएगी और ख़ुशबू फैल जाएगी। और वह खाना हज़्म हो जाएगा। फिर दोबारा भूख होगी फिर जन्नती खाना शुरू कर देगा।

जन्नत में मेहमान-नवाज़ी

अब जन्नती जन्नत में अपने घर में दूसरों की मेहमान- नवाज़ी भी करेगा, चुनाँचे कुछ औरतें जन्नत में ऐसी भी होंगी, वे तमन्ना करेंगी कि हम तो बीबी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की दावत करेंगी। चुनाँचे ख़ातूने जन्नत उनके घर में दावत के लिए तशरीफ़ लायेंगी। कुछ कहेंगी कि हम तो सैयदा आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा जो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रफ़ीक़ा-ए-हयात (जीवन साथी) थीं उनकी दावत करेंगी। सैयदा आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा उनकी दावत पर आयेंगी।

कुछ औ़रतें बीबी मरियम अ़लैहस्सलाम की दावत करेंगी। कुछ औ़रतें बीबी आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा की दावत करेंगी। तो यह जन्नत के अन्दर जो सम्मानीय औ़रतें होंगी, उनकी दावतें होंगी, नेक औ़रतें जो दुनिया में एक दूसरे की दोस्त रही होंगी और नेकी पर एक दूसरे को बढ़ाती रही होंगी वे भी एक दूसरी की दावतें करेंगी।

अब सोचिए कि दावत का कितना मज़ा आएगा कि जिसमें वक़्त की कोई पाबन्दी नहीं और ज़रूरियात की कोई कमी नहीं। चाहत के मुताबिक़ हर चीज़ मौजूद है।

जब जन्नती औ़रत नीयत करेगी कि मुझे फ़लाँ की दावत करनी है तो उसको कोई तैयारी ख़ुद नहीं करनी पड़ेगी। दुनिया में तो दावत देकर औ़रतें दिल के अन्दर अफ़सोस करती हैं कि दावत दे बैठी मगर अब पूरा दिन हमें काम करना पड़ेगा, किचन के अन्दर हमें खड़ा होना

पड़ेगा, मगर जन्नत की दावत कुछ और होगी, जन्नती औ़रत दावत तो देगी मगर इन्तिज़ाम नहीं करना पड़ेगा।

घर की सैटिंग ख़्वाहिश के मुताबिक़

हदीस पाक में आता है कि यह अपने घर के लाऊँज को या अपने घर के बाग़ीचे को जैसा तसव्वुर करेंगी कि सैटिंग ऐसी होनी चाहिए उसकी सैटिंग वैसे ही हो जाएगी। फिर एक बादल आयेगा और उस बादल के अन्दर दस्तरख़्वान लगा दिया जाएगा। फिर उस बादल के अन्दर से उसके ऊपर बरतन रख दिए जायेंगे। फिर उसके ऊपर मश्रूबात (पीने की चीज़ें) होंगे, जो ग़िलमान (जन्नत के ख़ादिम) लगाकर रख देंगे। फिर उसके ऊपर मेवे रखे जायेंगे। फिर उसमें भुने परिन्दों के गोश्त रख दिए जायेंगे। और उसके बाद सब औ़रतें उसमें बैठकर खाना खाएँगी।

वे औ़रतें एक दूसरे के साथ तज़किरे करेंगी, दुनिया में हम यूँ प्रोग्रामों में जाया करती थीं। दुनिया में यूँ रमज़ान मुबारक की रातों को जागा करती थीं और यूँ सलातुत्तस्बीह पढ़ा करती थीं। यूँ क़ुरआन पाक पढ़ा करती थीं। एक दूसरे के साथ दुनिया के तज़करे करके ख़ुश होंगी। उन वक़्तों को याद करेंगी और कहेंगी कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने हम पर कितना एहसान किया कि हमारे अ़मलों को क़बूल करके अल्लाह तआ़ला ने हमें ऐसी जगह अ़ता फ़रमा दी। तो जन्नत की जो दावतें होंगी उनका अपना ही कुछ रंग होगा। जन्नत के अन्दर जो लिबास मिलेगा, उसकी अपनी तरतीब होगी। घरों के अन्दर तो औ़रतों ने अलमारी बनाई होती है, और उस अलमारी के अन्दर अ़पने सारे कपड़े रख दिये हैं। कई बार कपड़े ज़्यादा और अलमारी छोटी लेकिन सब कपड़े ठूँस देती हैं, मगर जन्नत में मामला ऐसा नहीं होगा।

जन्नत के लिबास

हदीस पाक में आता है कि एक दरख़्त होगा अनार का और हर-हर अनार उनके लिए उनके कपड़े रखने के लिए अलमारी बन जाएगी। तो यह उस अनार को खोलेंगी और अनार के अन्दर से उनको जोड़े मिल जायेंगे। सुब्हानल्लाह! अल्लाह की तरफ़ से वह दरख़्त लगेगा, दरख़्त के ऊपर अनार के फल होंगे। हर-हर अनार के अन्दर उनके लिए ख़ूबसूरत जोड़े होंगे।

आज तो कपड़े धुलवाने पड़ते हैं और उनको स्त्री (प्रेस) करवा कर रखना पड़ता है, और तब जाकर ये किसी मुनासिब मौक़े पर किसी कपड़े को पहन लेती हैं। मगर जन्नत में तो हर दिन उनको नये कपड़े मिलेंगे, धोने और स्त्री करने की तो बात ही नहीं। और वे तैयार किस फ़ैक्ट्री में होंगे? अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी के मुताबिक़ अनार की इस फ़ैक्ट्री के अन्दर तैयार होंगे। हर एक जोड़ा दूसरे से अलग और भिन्न होगा, और उसकी ख़ूबसूरती की इन्तिहा नहीं होगी।

हदीस पाक में फ़रमाया कि जन्नती औ़रत के लिबास में सत्तर हज़ार रंग झलकेंगे। अब दुनिया में औ़रतें जो कपड़े पहन लेती हैं इन बेचारियों को मैचिंग का बड़ा शौक़ होता है। कपड़ों में ज़्यादा से ज़्यादा पाँच सात रंग इकट्ठे कर लेती हैं वरना तो दो-चार रंगों से मैचिंग हो जाती है।

फिर उन सत्तर हज़ार रंगों में से भी उसकी ख़ूबसूरती ज़ाहिर हो रही होगी। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त जन्नती औ़रत को ऐसे ख़ूबसूरत कपड़े अ़ता फ़रमायेंगे। जन्नती मर्द को अल्लाह तआ़ला रेशम के कपड़े अ़ता फ़रमायेंगे। और जन्नती मर्द को अल्लाह तआ़ला सोने के कंगन पहनायेंगे।

आज जब नौजवानों को बताया जाता है कि क़ुरआन मजीद में है कि मर्दों को कंगन पहनायेंगे तो ये बेचारे परेशान होकर पूछते हैं "मर्दों

को सोने के कंगन पहनायेंगे" और अपनी हालत यह होती है कि राडो की घड़ी पहनकर अपना हाथ हिला-हिलाकर लोगों को दिखाते फिरते हैं।

ओ मियाँ! अगर तुम्हें दुनिया में राडो की घड़ी अच्छी लगती है, तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की तरफ़ से बने हुए जिनको कंगन दिये जायेंगे, तुम्हारी राडो की घड़ी तो उसका मुक़ाबला कर ही नहीं सकती। अल्लाह पाक ऐसे ख़ूबसूरत कंगन अ़ता फ़रमायेंगे।

जन्नती औ़रत का रोज़ाना सत्तर जोड़े बदलना

औ़रतें दुनिया में धुले कपड़े पहनती थीं मगर आख़िरत के अन्दर नये कपड़े पहनेंगी। आ़म तौर पर औ़रतों की तमन्ना होती है कि पार्टी में, मुलाक़ात में हर बार नया जोड़ा पहन कर जायें। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने उनकी तमन्ना को दुनिया में नहीं बल्कि आख़िरत में पूरा फ़रमा दिया।

जब भी ये कपड़े पहनेंगी नये होंगे। फिर चाहेंगी तो फिर पोशाक बदल लेंगी। एक दिन में अगर सत्तर बार भी लिबास बदलना चाहेंगी तो अल्लाह तआ़ला उनको सत्तर नये जोड़े अ़ता फ़रमा देंगे। अब घर में रहते हुए तो दिन में एक ही बार कपड़े बदल सकते हैं। बहुत ही कोई शाहाना ज़िन्दगी हो तो सुबह शाम कपड़े बदल लेंगी। इससे ज़्यादा का तसव्वुर नहीं। मगर जन्नत के अन्दर सुब्हानल्लाह! रोज़ाना सत्तर बार भी अगर बदलेगी तो उसको नये रेशमी कपड़े मिल जायेंगे। हर-हर लिबास में से सत्तर हज़ार रंग झलकते होंगे।

जन्नती औ़रतों की सवारियाँ

फिर दुनिया के अन्दर लोगों के पास सवारियाँ होती हैं, उनके पास Toyota कार और किसी के पास GMC जितनी बड़ी और क़ीमती गाड़ी हो तो औ़रतों को बड़ी ख़ुशी होती है। अल्लाह

रब्बुल्-इज़्ज़त ने उनके लिए जन्नत में सवारियों का इन्तिज़ाम किया हुआ होगा।

हदीस पाक में आता है कि मर्दों के लिए अल्लाह ने जन्नत में अब्लक़ घोड़े बनाये हुए होंगे। अब्लक़ ऐसे हीरे को कहते हैं जिसमें सफ़ेदी हो, थोड़ी सी उसमें एक काली लकीर हो। जब सफ़ेदी हो और हल्की सी काली लकीर हो तो बड़ी ख़ूबसूरत लगती है। तो इस रंग के उनके घोड़े होंगे जो उनको अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त सवारी के लिए अ़ता फ़रमायेंगे।

मगर औ़रतों के लिए अल्लाह तआ़ला ने नजीब ऊँटनियाँ बनाई होंगी। ऊँटनियों के ऊपर कजावे सजे होंगे जो सोने के बने हुए होंगे और उन कजावों के ऊपर गद्दे लगे हुए होंगे और उन गद्दों के ऊपर ये आराम से बैठेंगी।

घोड़े पर सवारी भी ज़रा सख़्ती का काम है। अल्लाह पाक ने मर्दों के लिए यह मामला कर दिया लेकिन औ़रतों को अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने और ज़्यादा आरामदेह और नर्म जगह अ़ता फ़रमा दी, चुनाँचे ऊँटनियाँ होंगी, ऊँटनियों पर कजावे होंगे, और कजावे के अन्दर औ़रतें होंगी। यूँ समझिये कि दुल्हन की तरह सजकर उसमें बैठेंगी।

मगर इसमें एक बात और है। हदीस पाक में फ़रमाया गया कि जब ये ऊँटनियाँ आवाज़ निकालेंगी या घोड़े हिनहिनायेंगे तो उनकी हिनहिनाहट आ़म दुनिया की तरह नहीं होगी, बल्कि उनके हिनहिनाने से इतनी ख़ूबसूरत Musical Sound (संगीत की आवाज़) निकलेगी कि ये चाहेंगी कि ये बार-बार हिनहिनाएँ और हम इनकी आवाज़ को बार-बार सुनती रहें।

दुनिया में हमने देखा कि औ़रतों ने घर के अन्दर टेपरिकार्डर रखे हुए होते हैं अपने कामकाज में मसरूफ़ होती हैं, कभी किसी का बयान सुन लिया, कभी कुरआन पाक की तिलावत सुन ली, कभी किसी की नअ़त सुन ली। उनको कामकाज के दौरान कुछ न कुछ सुनने को मिल

जाये तो फिर ये बड़ी खुश रहती हैं। यह और बात है कि यह हर एक की सुनना चाहती हैं सिवाए शौहर के, उसको यह सुनना नहीं चाहती हैं और बाक़ी सारी दुनिया की सुनना चाहती हैं, लेकिन उनको सुनने का शौक़ होता है।

जन्नती औ़रतों के सम्मान में हूरों का कु़रआन पढ़ना

जन्नत में अल्लाह तआ़ला ने औ़रतों के लिए टेपरिकार्डर का इन्तिज़ाम कर दिया। हदीस पाक में आता है: जितनी हूरें होंगी सैकड़ों की तायदाद में, लाईन से खड़ी होंगी। जन्नती औ़रत जब अपने महल की सैर करेगी तो यह जहाँ-जहाँ से गुज़रेगी जन्नती हूरें कु़रआन पाक की तिलावत कर रही होंगी। यह जो अपने ख़ाविन्द (पति) के साथ बैठी हुई बातें कर रही है, अपने बच्चों के साथ बैठी बातें कर रही है और दूर वे जन्नती हूरें सफ़ बाँधकर खड़ी हैं और अल्लाह के कु़रआन की तिलावत कर रही हैं। यानी यह टेपरिकार्डर अल्लाह ने उनके घर के अन्दर चला दिया जन्नत के अन्दर।

अ़ल्लमा क़ुर्तबी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने यह बात लिखी है कि जन्नत के अन्दर इनसानों को अ़स्र का वक़्त जैसे होता है, न बहुत रोशनी होती है जैसे दोपहर को होती है, न रात जैसी अंधेरी होती हैं, दरमियान का वक़्त अच्छा लगता है। तो यह वक़्त जन्नत के अन्दर होगा। लेकिन जन्नतियों को वक़्त का एहसास कैसे हो सकेगा, ज़ेहन में कभी-कभी यह ख़्याल आता है।

जन्नत की छत

हदीस पाक में यह फ़रमा दिया कि जन्नत के अन्दर चूँकि जन्नत की छत अल्लाह तआ़ला का अ़र्श है और अल्लाह तआ़ला के अ़र्श के परदे दिन के वक़्त उठा लिए जायेंगे और रात के वक़्त गिरा दिये जायेंगे, और जब फ़रिश्ते परदे हटाएँगे और परदे गिरायेंगे इससे जन्नतियों को दिन और रात के होने का अन्दाज़ा हो जाएगा।

अल्लाह तआ़ला का दीदार

कुछ वक़्त ऐसे आयेंगे कि जन्नत में दरख़्तों में से अचानक 'अल्लाहु अकबर' 'अल्लाहु अकबर' की आवाज़ें निकलनी शुरू हो जायेंगी और जन्नती फ़रिश्ते भी 'अल्लाहु अकबर' कहना शुरू कर देंगे।

हदीस पाक में आता है कि जैसे ही अल्लाहु अकबर की आवाज़ें निकलेंगी तो जन्नती लोग समझ लेंगे कि इस वक़्त हम दुनिया में नमाज़ पढ़ा करते थे। गोया हर दिन में पाँच बार जन्नत के दरख़्तों में से उनको अल्लाहु अकबर की आवाज़ सुनाकर आज़ान की अवाज़ याद दिलायी जाएगी।

फिर जुमा के दिन का उनको इस तरह से पता चलेगा कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हर जुमा के दिन दरख़्तों को अपना दीदार अ़ता फ़रमायेंगे, तो जिस दिन को अल्लाह का दीदार नसीब होगा जन्नती समझ लेंगे कि यह जुमा का दिन है। गोया एक हफ़्ता गुज़र गया और जन्नती लोग जुमा के इन्तिज़ार में रहेंगे।

अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तोहफ़ों की बारिश

महीने के ख़त्म होने का पता उनको इस तरह चलेगा कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की तरफ़ से उनको तोहफ़ों के पैकिट (Gift Pack) मिलेंगे। जैसे ईद होती है तो दोस्त दोस्तों को ईद के ऊपर तोहफ़े भेजते हैं। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त भी हर महीने के अंत पर अपने बन्दों को तोहफ़े भेजेंगे।

बात भी समझ में आती है कि दुनिया में कोई आदमी किसी का नौकर हो, ख़िदमत करता हो तो महीने के आख़िर में उसका मालिक उसको तन्ख़्वाह देता है। तो जैसे दुनिया का मालिक महीने के बाद तन्ख़्वाह देता है अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की जिन्होंने बन्दगी की और

अब उन्होंने रिटायर्मेन्ट की ज़िन्दगी गुज़ारनी शुरू कर दी और उनको जन्नत में अल्लाह ने ऐश व आराम दिया, रिटायर्मेन्ट में भी तो ऑफ़िस वाले कुछ भेज देते हैं, तो अल्लाह तआ़ला हर महीने अपने जन्नती बन्दों को तोहफ़े भेजेंगे। ये तोहफ़े पैक किये हुए होंगे। हर बन्दे के दिल में यह Craze रहेगा कि देखें मुझे अल्लाह की तरफ़ से कौनसा तोहफ़ा मिलता है।

शौहर अपना तोहफ़ा खोलेगा, देखकर खुश होगा। बीवी अपना तोहफ़ा देखकर ख़ुश होगी। बच्चे अपना तोहफ़ा देखकर ख़ुश होंगे। हर एक को इन्तिज़ार होगा कि महीने के बाद अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्ते फिर तोहफ़े लेकर आयेंगे।

सोचिए तो सही किसी दोस्त की तरफ़ से पैक किया हुआ (Packing Gift) आ जाये तो कितनी ख़ुशी होती है। जब परवर्दिगारे आ़लम की तरफ़ से तोहफ़े मिलेंगे तो ये कितने ख़ूबसूरत होंगे और उनको देखकर और वसूल करके इनसान को कितना मज़ा आएगा।

जन्नतियों की ईद

ईद का पता जन्नतियों को इस तरह चलेगा कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त साल में ईद के मौक़ों पर जन्नतियों को दावत के लिए बुलाएँगे। जन्नतियों को दावत का पैग़ाम पहुँचायेंगे तो जन्नती समझ जायेंगे कि हमारी ईद का वक़्त आ गया।

दुनिया में तो ईद हम ऐसे मनाते हैं कि ज़्यादा से ज़्यादा चन्द स्वीट डिश बना लीं या कुछ और खाने बना लिये, लेकिन आख़िरत के अन्दर जन्नत में हर ईद के दिन अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को खुद दावत खिलायेंगे।

अब सोचिए कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त दावत करने वाले होंगे और जन्नती खाने वाले होंगे। फिर उस दावत का क्या मज़ा होगा। हम तो

इसको अपने दिमाग़ से सोच भी नहीं सकते। तो वक़्त का जन्नतियों को ऐसे पता चलेगा।

जन्नती मर्दों-औरतों का वक़ार व हुस्न

अब आईये ज़रा इससे अहम चीज़ की तरफ़ जिसका औरतों को हर वक़्त बड़ा ख़्याल रहता है। उसको कहते हैं, हुस्न व जमाल। ये औरतें हुस्न व जमाल की शैदाई हैं। ख़ूबसूरत मकान देखें वे इन्हें पसन्द, ख़ूबसूरत लिबास देखें वे इन्हें पसन्द, कोई भी ख़ूबसूरत चीज़ देखें इनका दिल चाहता है कि हम इसे हासिल कर लें। अपने बारे में उनके दिल में तमन्ना होती है कि मैं ऐसी हसीन व ख़ूबसूरत बन जाऊँ। उनके दिल की यह तड़प होती है। और अल्लाह तआ़ला ने उनको हुस्न व जमाल (ख़ूबसूरती) अ़ता भी किया। इसलिए कुरआन पाक में फ़रमायाः

وَلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ

यानी अगरचे तुम्हें उनका हुस्न बड़ा हैरान कर दे।

तो हुस्न के लफ़्ज़ की निस्बत कुरआन ने औरतों की तरफ़ की। दो लफ़्ज़ याद रखना एक लफ़्ज़ हुस्न है और एक लफ़्ज़ वक़ार है। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने हुस्न औरत को अ़ता किया और वक़ार मर्दों को अ़ता किया। तो मर्दों की शख़्सियत के अन्दर वक़ार होता है और औरतों की शख़्सियत के अन्दर हुस्न होता है। और दोनों की अपनी-अपनी कशिश होती है।

औरत को हुस्न में क्यों आगे बढ़ा दिया यह एक नुक्ता तालिब-इल्म के ज़ेहन में पैदा होता है। इसका जवाब मुफ़स्सिरीन (कुरआन के व्याख्याकारों) ने यह लिखा कि अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को खनकती मिट्टी से बनाया, लिहाज़ा आदम अ़लैहिस्सलाम मिट्टी से बने लेकिन अम्माँ हव्वा को अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने आदम अ़लैहिस्सलाम की पसली से निकाला। यह

डायरेक्ट मिट्टी से नहीं बनी बल्कि यह आदम अलैहिस्सलाम की पसली से बनाई गई।

यूँ समझिये कि यह साफ़ किया हुआ मटैरियल (Refined Material) था जो अल्लाह ने निकाल दिया। तो चूँकि रिफ़ाईन्डमेन्ट के बाद बनीं इसलिए अल्लाह ने उनमें नज़ाकत और हुस्न व जमाल को रख दिया, लेकिन मर्दों में अल्लाह ने वक़ार को रखा और औरतों में अल्लाह ने हुस्न व जमाल (ख़ूबसूरती) को रखा।

जन्नती औरतों की सुन्दरता

जन्नत के अन्दर औरतों को हुस्न व जमाल (सुन्दरता) कैसा अता होगा? अक्सर औरतों के ज़ेहन में ये सवालात होते हैं मगर वे किसी से पूछ नहीं सकतीं।

सुनिए! अल्लाह तआला ने एक बात बता दी कि जन्नती ख़ादिमायें (सेविकायें) कैसी होंगी, और उसके बाद जन्नती औरतों के हुस्न का कुछ और इन्तिज़ाम कर दिया। अभी यह बात आपको अच्छी तरह समझ में आ जाएगी।

जन्नती जो ख़ादिमाएँ होंगी उनके हुस्न को बड़ी तफ़सील से अल्लाह ने बता दिया लेकिन जन्नती औरत के हुस्न के तज़किरे इतने ज़्यादा नहीं किये। इसमें भी राज़ है। इसमें भी अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की तरफ़ से एक बात है।

जो परवर्दिगार यह चाहता है कि तुम अपनी औरतों के तज़किरे दूसरों के सामने न करो वह खुद कहाँ पसन्द करेगा कि जन्नती औरतों के तज़किरे वह कुरआन में सब के सामने खोलता फिरे। लिहाज़ा उन्होंने ख़ादिमाओं के हुस्न के तज़किरे तो कर दिए कि जन्नती हूरें ऐसी होंगी।

आज लोगों को धोखा लग गया, वे समझते हैं कि जन्नत में शायद हूरें ही होंगी। हालाँकि ये हूरें तो वहाँ की नौकरानियाँ होंगी,

ख़ादिमाएँ होंगी, ख़ादिमाओं में और घर की मालकिन के अन्दर फ़र्क़ तो होता है।

अब एक महल है जिसके अन्दर एक रानी ज़िन्दगी गुज़ार रही है। तो रानी तो वह होती है कि सारी क़ौम में से हुस्न की जो नमूना होती है। उसको रानी बनाया जाता है और उस रानी की वजह से जो महल के अन्दर है किसी बदसूरत लड़की को नहीं रखा जाता है। बल्कि लड़कियों में से चुन-चुनकर ख़ूबसूरत लड़कियों को महल में रखा जाता है। कि ये महल की ख़ादिमाएँ बनेंगी। तो महल की ख़ादिमाएँ भी ख़ूबसूरत होती हैं मगर रानी का हुस्न तो सबसे ज़्यादा होता है।

बिल्कुल इसी तरह जन्नत में हूरें ख़ादिमाएँ हैं अल्लाह तआ़ला ने उनके हुस्न के तज़किरे बहुत फ़रमा दिये और यह कहा कि इससे तुम अन्दाज़ा कर लो कि जन्नती औ़रत का हुस्न कितना होगा।

हूर क्या है?

हूर का लफ़्ज़ी मतलब क्या है? लफ़्ज़ी मतलब यह है कि जिसकी आँख की सफ़ेदी ज़्यादा सफ़ेद हो और सियाही ज़्यादा सियाह हो। उलेमा ने लिखा है कि जिस्म के कुछ हिस्से ऐसे हैं कि जो सफ़ेद अच्छे लगते हैं और कुछ हिस्से ऐसे हैं कि सियाह अच्छे लगते हैं।

मिसाल के तौर पर सिर के बाल जितने काले होंगे उतने ज़्यादा अच्छे लगेंगे। पलकें जितनी ज़्यादा काली होंगी उतनी ज़्यादा अच्छी लेगेंगी। आँखों के अन्दर सुर्मा जितना ज़्यादा काला होगा उतना ज़्यादा अच्छा लगेगा। जिस्म जितना ज़्यादा गोरा होगा ख़ूबसूरत होगा, उतना ज़्यादा अच्छा लगेगा। तो हूर उसको कहते हैं कि जिसके जिस्म की जो सफ़ेद जगहें होती हैं वे बहुत ज़्यादा सफ़ेद हों और जो काली जगहें अच्छी लगती हैं वे ज़्यादा काली हों, उसको हूर कहते हैं।

गोया अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने नाम ही ऐसा रख दिया कि नाम से ही हुस्न व जमाल (सुन्दरता) का अन्दाज़ा हो जाता है। लेकिन

अल्लाह तआ़ला ने कुरआन पाक में फ़रमायाः

كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُO (سورة رحمن: ٥٨)

कि ये हूरें ऐसी होंगी जैसे याकूत और मर्जान (क़ीमती मोती) होते हैं।

उलेमा ने लिखा है कि याकूत की तरह साफ़-सुथरी होंगी और मर्जान की तरह सफ़ेद होंगी। कहीं फ़रमायाः

فِيْهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌO (سورة رحمن: ٧٠)

उनमें ख़ूबसूरत और ख़ूबसीरत औ़रतें होंगी।

और जन्नती औ़रतों के बारे में फ़रमायाः 'क़ासिरातुत्तर्फ़" निगाहें हटाने वालियाँ ग़ैर से।

जन्नत की हूरों के बारे में फ़रमायाः

كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ O (سورة صافات: ٤٩)

वे तो इस क़िस्म की होंगी जैसे अण्डों के अन्दर महफ़ूज़ होती हैं।

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّO (سورة رحمن: ٧٤)

वे बाकिरा (कुंवारी) होंगी। उनसे पहले न उनको किसी इनसान ने छुआ होगा और न किसी जिन्न ने।

चुनाँचे हदीस पाक का मफ़्हूम है कि जन्नती मर्द को अल्लाह तआ़ला हुस्ने यूसुफ़ (यानी हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम जैसा हुस्न) अ़ता फ़रमायेंगे। लह्ने-दाऊदी (यानी हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम जैसी आवाज़) अ़ता फ़रमायेंगे और ख़ुल्क़े-मुहम्मदी (यानी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जैसे अख़्लाक़ और आ़दात) अ़ता फ़रमा देंगे।

जन्नती मर्द को अल्लाह तआ़ला ये नेमतें अ़ता फ़रमायेंगे। रह गई बात उन जन्नती हूरों की, एक उनकी इनचार्ज होगी जिसको हूरे-ऐन कहते हैं। बड़ी-बड़ी ख़ूबसूरत आँखों वाली हूर। तो जन्नती ख़ादिमाएँ होंगी। उन ख़ादिमाओं के ऊपर जैसे सुपरवाईज़र की सत्तर और हूरें

होंगी। तो यह सुपरवाईज़र होंगी, मगर यह हूरे-ऐन जो हैं ये सब मिलकर फिर जन्नती औ़रतों की ख़िदमत करेंगी, जन्नती औ़रतों को अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ऐसा हुस्न अ़ता फ़रमायेंगे।

जन्नती औ़रतों का सम्मान

जन्नती औ़रतों के सम्मान के बारे में फ़रमाया कि उनके कानों में एक हज़ार बालियाँ होंगी। उनके सर पर सोने के ताज होंगे। अब सोने का ताज कहना आसान है। लेकिन अल्लाह ने जो बनाया होगा तो कितना ख़ूबसूरत होगा। यह ताज हूरों को नहीं मिलेगा, यह सिर्फ़ जन्नती औ़रत के सर पर रखा जाएगा।

मालूम हुआ कि उसका घर महल की मानिन्द होगा और जन्नती औ़रत को रानी और शहज़ादी बनाकर रखा जाएगा। रानी के सर पर ताज हुआ करता है और फिर उसके बैठने के लिए एक तख़्त बनाया जाएगा जो सोने का होगा।

जन्नती मर्द की उम्र 32 साल होगी और जन्नती औ़रत की उम्र 18 साल होगी। चूँकि 18 साल की उम्र में लड़की की जवानी भर पूर होती है, और ये औ़रतें बाकिरा (कुंवारी) होंगी, कुंवारी रहेंगी, अपने शौहर से मेलजोल करेंगी लेकिन इसके बावजूद कुंवारियाँ रहेंगी, यानी कुंवारी लड़की के जिस्म की बनावट और होती है, बच्चे होने के बाद जिस्म की बनावट और हो जाती है, इसलिए बता दिया गया कि वहाँ पर उनको जिस्म की जो ख़ूबसूरती मिलेगी तो वह ख़ूबसूरती कभी ख़त्म नहीं होगी।

उनको यह डर नहीं रहेगा कि अब मैं खाना खाऊँगी तो मोटी हो जाऊँगी, बेचारियाँ डाईटिंग करती फिरती हैं, सोचती हैं कि छरेरी रहने में हमें कोई मश्विरा दे दे ताकि और छरेरे बदन की हो जायें। तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमा दिया कि ये कुंवारियाँ ही रहेंगी ऐसी ख़ूबसूरत होंगी यहाँ तक कि सारी ज़िन्दगी उनका हुस्न व जमाल

बढ़ेगा।

जन्नती औ़रतों की विशेषताएँ

अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने फ़रमायाः ये अपने शौहरों की शैदाई (दीवानी) होंगी। जन्नती लोग जितने भी होंगे अल्लाह तआ़ला उनके दिलों से रन्जिशों को निकाल देंगे। गिले को निकाल देंगे, कीने को निकाल देंगे। एक दूसरे के साथ मुहब्बतें ही मुहब्बतें होंगी और एक दूसरे के साथ बैठेंगी।

चुनाँचे जन्नती औ़रतों के बारे में फ़रमा दिया गया कि ये अपने शौहरों से इश्क़ करने वाली होंगी।

दुनिया के अन्दर तो ये शौहरों से बेवफ़ाई भी कर जाती हैं। दुनिया में तो सिर्फ़ नाराज़गियों के साथ अपने वक़्त को गुज़ारने के लिए रहती हैं मगर तबीयत नहीं मिलती, जन्नत का मामला और होगा। फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला मियाँ-बीवी में ऐसी मुहब्बत पैदा कर देंगे कि ये औ़रतें अपने शौहर की शैदाई होंगी, इश्क़ करने वाली होंगी। न उनको हैज़ (माहवारी) होगा, न गर्भ होगा, न निफ़ास (बच्चे की पैदाईश के बाद आने वाला ख़ून) होगा। इस क़िस्म की कोई चीज़ नहीं होगी बल्कि सीने बे-केना होंगे और अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त उनको वहाँ पर रानी की तरह की ज़िन्दगी अ़ता फ़रमायेंगे।

जो उनके दिल की ख़्वाहिश और तमन्ना होगी, अल्लाह तआ़ला उनकी ख़्वाहिश और तमन्ना को पूरी कर देंगे। दुनिया के अन्दर औ़रतों ने अपने बैडरूम के अन्दर एक मेज़ सजाई हुई होती है जिसके अन्दर अपनी आराईश (सजने संवरने) के लिए, सिंगार के लिए उन्होंने कुछ चीज़ें, प्रफ़्यूम (इत्र) रखे होते हैं। और पता नहीं क्या-क्या पालिशें रखी होती हैं, क्या-क्या पॉवडर रखे होते हैं, क्रीमें रखी होती हैं। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त जन्नत में उनको वर्जित फ़रमा देंगे।

जन्नत में हुस्न का बाज़ार

जन्नत में एक जगह है जिसमें अल्लाह तआ़ला हुस्न का बाज़ार लगायेंगे। सोचिए और ज़रा ग़ौर कीजिए कि दुनिया के अन्दर ब्यूटी पार्लर होते हैं। ब्यूटी पार्लर में दुल्हन को सजाया जाता है। वहाँ औ़रतें होती हैं जिनको सजाने की महारत होती है। वे लड़की को ऐसी ख़ूबसूरत दुल्हन बना देती हैं कि इनसान उनकी महारत को देखकर हैरान होता है।

तो दुनिया के अन्दर जैसे ब्यूटी पार्लर होते हैं, अल्लाह तआ़ला ने जन्नत में भी ब्यूटी पार्लर बनाए होंगे। यह गोया बाज़ारे हुस्न होगा जन्नती औ़रत वहाँ जाएगी और वहाँ जाकर जैसा चाहेगी उसकी अपनी शख़्सियत वैसी ही बन जाएगी।

तो अब देखिए! बात समझ में आई कि जन्नती औ़रतों के हुस्न को अल्लाह ने इसलिए क़ुरआन में ज़्यादा खोल कर बयान नहीं किया। उनको तो अल्लाह को ऐसा बना देना है जैसा कि ख़ुद चाहेंगी। हूरों को तो अल्लाह ने हुस्न दे दिया लेकिन उनको हुस्न वह मिलना था जो उनको पसन्द हो, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमा दियाः

وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِيْ اَنْفُسُكُمْ

तुम्हें वह मिलेगा जो तुम्हारा दिल चाहेगा।

औ़रतों को देखो ये जिस चीज़ को देखती हैं वह इन्हें पसन्द आ जाती है। बेचारी किसी का कपड़ा देखती हैं कहती हैं मैं इस जैसा लिबास बनाऊँगी। किसी को देखती हैं कि उसने ऐसा मेकअप किया हुआ है सोचती हैं मैं भी ऐसा ही मेकअप करूँगी। किसी को देखती हैं उसने ऐसे ज़ेवर पहने हुए हैं, सोचती हैं मैं अपने शौहर से कहूँगी कि वह ऐसे ज़ेवर बनवाकर दे। सोचती हैं फ़लाँ की ऐसी घड़ी है, मैं भी ऐसी घड़ी पहनूँगी। फ़लाँ ने ऐसे मैचिंग की हुई है मैं भी ऐसी ही मैचिंग करूँगी। तो औ़रतों की यह फ़ितरत है, ये किसी ख़ूबसूरत चीज़

को देखती हैं तो अपनाने की कोशिश करती हैं। चूँकि दुनिया में यह उनकी चाहत रहती है, अल्लाह तआ़ला ने इसलिए जन्नत में उसको अपनी मर्ज़ी का हुस्न देने की बजाय उनकी मर्ज़ी पर बात छोड़ दी।

मन-चाही ज़िन्दगी

जन्नत में अल्लाह तआ़ला ने ब्यूटी पार्लर बना दिये वहाँ जाकर इन्हें अल्लाह तआ़ला ऐसा बनने का मौक़ा देंगे जैसा ये ख़ुद चाहती हैं। चुनाँचे ये वहाँ जायेंगी, उनका दिल चाहेगा ऐसा मेरी आँख का सुर्मा हो, वह ऐसा हो जाएगा। ऐसी मेरी पलकें हों, पलकें वैसी हो जाएँगी। ऐसे मेरे बाल हों, वे ऐसे हो जाएँगे। ऐसी मैं पोशाक पहनूँ वह वैसे हो जाएगी। मेरे नाख़ून ऐसे ख़ूबसूरत लगें वे ऐसे बन जाएँगे। ये दिल में सोचती चली जाएँगी और उनकी वह चीज़ वैसी बनती चली जाएगी।

अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त जन्नती औ़रत को उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ हुस्न अ़ता फ़रमायेंगे। अब सोचिए यह कितना बड़ा सम्मान और इ़ज़्ज़त है अल्लाह की तरफ़ से कि हर बन्दे को उसकी अपनी मर्ज़ी का हुस्न मिलेगा। यहाँ तक कि यह दूसरी औ़रतों को भी देखेगी, दूसरी जन्नती औ़रतों को, अगर किसी और जन्नती औ़रत की कोई चीज़ पसन्द आ गई तो यह तमन्ना करेगी तो इसकी अपनी चीज़ वैसे ही बन जाएगी।

चूँकि जन्नती औ़रत के हुस्न की कोई इन्तिहा (हद और सीमा) नहीं थी इसलिए अल्लाह ने क़ुरआन में इसका ज़िक्र करने की बजाय मोटी बात कर दी, कि उनको हम वह अ़ता करेंगे जो उनका जी चाहेगा।

जन्नत वालों की सत्तर साल तक हैरानगी

अल्लाह तआ़ला जन्नत में औ़रतों के दिल की तमन्नाओं को पूरा फ़रमायेंगे। एक बात अलबत्ता और है वह यह कि जब जन्नती लोग

जन्नत में जायेंगे तो पहली नज़र जो मख़्लूक़ पर डालेंगे, हूरों को देखेंगे, ग़िलमान को देखेंगे, तो उनके हुस्न से ये इतने प्रभावित होंगे कि ये सत्तर साल तक उनके हुस्न व जमाल को हैरान होकर देखते खड़े रह जायेंगे। यानी उनको पता भी नहीं चलेगा कि इतना वक़्त गुज़र गया।

जैसे बहुत ही ख़ूबसूरत चीज़ को बन्दा देखे तो थोड़ी देर हैरान होकर देखता रहता है। तो ये जन्नती मख़्लूक़ के हुस्न को देखेंगे तो सत्तर साल तक टकटकी बाँधकर उसको देखते रहेंगे। इतना उनका हुस्न व जमाल (सुन्दरता) होगा।

नूर की बारिश

जब जन्नतियों को अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त अपना दीदार अ़ता फ़रमायेंगे। उस दीदार की तफ़सील अभी आपको बतायी जायेगी। जब दीदार होगा तो हदीस पाक में आता है, नूर की बारिश होगी। अब नूर की बारिश की वजह से जन्नतियों के चेहरों पर नूर की ऐसी चमक आ जाएगी और उनके चेहरे इतने ख़ूबसूरत हो जायेंगे कि जब जन्नती लोग लौटकर अपने घरों में वापस आयेंगे तो उनका हुस्न इतना बढ़ चुका होगा कि जन्नती हूर और ग़िलमान सत्तर साल तक टकटकी बाँधकर उनके हुस्न को देखते रह जायेंगे। नौकर, नौकर होते हैं। घर के मालिक घर के मालिक हुआ करते हैं।

अगर हूर व ग़िलमान इतने ख़ूबसूरत हैं तो सोचिए घर के मालिक कितने ख़ूबसूरत होंगे। इसलिए जब जायेंगे तो ये सत्तर साल हूर व ग़िलमान को टकटकी बाँधकर देखेंगे, लेकिन जब अल्लाह का दीदार नसीब होगा तो दीदार के बाद जन्नतियों का अपना हुस्न ऐसा बढ़ जाएगा कि ये हूर व ग़िलमान टकटकी बाँधकर अपने आक़ाओं के हुस्न व जमाल (सुन्दरता) को देखते रह जाएँगे।

जन्नत में उलेमा की ज़रूरत

अल्लाह के दीदार के बारे में उलेमा ने लिखा है कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त जन्नतियों को फ़रमायेंगे कि ऐ जन्नतियो! तुम्हें किसी चीज़ की कमी है? जन्नती कहेंगे ऐ अल्लाह! हर चीज़ हमारे पास मौजूद है। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे तुम अपने आ़लिमों से जाकर पूछो। हदीस पाक में आता है कि लोगों को जिस तरह दुनिया में उलेमा की ज़रूरत है उसी तरह उनको जन्नत में भी उलेमा-ए-किराम की ज़रूरत पड़ेगी।

ज़रा उलेमा की इज़्ज़त और बड़ाई को पहचानिये। दुनिया में भी हम इनके मोहताज और जन्नत में भी इनके मोहताज होंगे।

जब अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि अपने उलेमा से जाकर पूछो तो जन्नती लोग अपने-अपने उलेमाओं के पास जायेंगे और पूछेंगे कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि तुम्हें किसी और चीज़ की ज़रूरत है? हमारे पास तो हर चीज़ है, किसी चीज़ की कमी ही नहीं। उलेमा बतायेंगे भाई! जो चीज़ भी मौजूद है वह अपनी जगह, मगर एक चीज़ जिसका अल्लाह ने वायदा किया था कि मैं तुम्हें अपना दीदार करवाऊँगा, हमें अभी तक अल्लाह तआ़ला का दीदार नहीं हुआ। यह चीज़ बाक़ी है।

तब जन्नतियों को पता चलेगा, वे सब कहेंगे: या अल्लाह! हमें जन्नत की सब नेमतों के मज़े आ गए। अब हमें आपका दीदार करना है। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे: अच्छा मेरे बन्दो! मैं तुम्हें जन्नते-अ़द्न में अपना दीदार कराऊँगा। चुनाँचे उनको वक़्त दिया जाएगा। ये सब जन्नती बाज़ार में जायेंगे और वहाँ जाकर फंकशन (इस पार्टी) के लिए तैयारियाँ करेंगे। औ़रतें जैसी चाहेंगी उनकी वैसी शख़्सियतें बन जायेंगी। अच्छे लिबास पहन लेंगी। ये अपनी मन-मर्ज़ी के हुस्न व जमाल के साथ तैयार हो जायेंगी। उसके बाद उनको जन्नत की तरफ़

बुलाया जाएगा।

सबसे पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अपनी उम्मत को लेकर निकलेंगे। फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी उम्मत को लेकर निकलेंगे। फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम। ये सब के सब मिलकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महल की तरफ़ आयेंगे। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने उम्मतियों को लेकर निकलेंगे और ये सब जन्नती जन्नते-अद्न की तरफ़ चलेंगे। उनके इर्द-गिर्द फ़रिश्ते होंगे जिनके लिए इज़्ज़त की ख़ातिर ख़ादिमों की तरह होंगे और सब के सब जन्नते-अद्न में पहुँचेंगे।

नूर के मिंबर

हदीस पाक में आता है, अल्लाह तआला ने अम्बिया-ए- किराम के लिए नूर के मिंबर बनाए हुए होंगे। अम्बिया नूर के मिंबरों पर बैठ जायेंगे। सिद्दीक़ीन के लिए नूर के तख़्त बनाए होंगे। सिद्दीक़ीन उस तख़्त के ऊपर बैठ जायेंगे। शहीद हज़रात के लिए अल्लाह ने नूर की कुर्सियाँ बनाई हुई होंगी। वे नूर की कुर्सियों पर बैठ जायेंगे। मगर नेक लोग 'सालिहीन' के लिए अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने मुश्क के गद्दे बनाये हुए होंगे वे उन गद्दों पर बैठ जायेंगे।

जब सब उस जगह आ जायेंगे सबसे पहले अल्लाह तआला उनके लिए खाने की दावत फ़रमायेंगे। दस्तरख़्वान लगेगा सबके सामने खाने आयेंगे।

जन्नती खाने

हदीस पाक में है कि सबसे कम दर्जे वाला जो जन्नती होगा उसके सामने भी सत्तर हज़ार प्लेटों के अन्दर खाना रखा जाएगा। अब मालूम नहीं उनके क्या ज़ायक़े होंगे। हर खाने का ज़ायक़ा अलग

होगा। हर मशरूब (पीने की चीज़) का ज़ायक़ा अलग होगा। जब सबसे कम दर्जे वाले जन्नती के सामने सत्तर हज़ार प्लेटें लगेंगी तो सोचिए दूसरे जन्नतियों के सामने कितना कुछ होगा। यह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इक्राम (सम्मान) होगा। हर लुक़्मे का मज़ा अलग (भिन्न) होगा।

जब ये सब लोग खाना खा चुकेंगे तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे: मेरे बन्दो! तुम मेरे पास आये हो, अब मैं तुम्हें अपनी पोशाक और जोड़ा पहनाता हूँ। जो मेरी मुहब्बत की पोशाक है। तुमने दुनिया में मुझे खुश कर दिया, आज मैं तुम्हें खुश करूँगा।

चुनाँचे अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से फ़रमायेंगे कि यह बनी हुई पोशाक मेरे बन्दों को पहना दो। वहाँ पर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक पोशाक होगी, अल्लाह ने बनाई होगी, उसकी ख़ूबसूरती का तो हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते। वे फ़रिश्ते उस पोशाक को उन लोगों को पहना देंगे।

जन्नती प्रफ़्यूम

पोशाक पहनाने की तक़रीब (मजलिस) पूरी हो जाएगी उसके बाद एक हवा चलेगी जिसका नाम 'मुबश्शिरा' होगा और उस हवा से जन्नतियों के लिबास के अन्दर खुशबू आ जाएगी। इसको यूँ समझें जैसे प्रफ़्यूम (इत्र) की शीशी होती है। आप उसको पम्प करती हैं तो उसके ज़र्रात आपके कपड़ों पर आकर लगते हैं। तो कपड़ों में खुशबू आ जाती है। यह तो थोड़ी सी प्रफ़्यूम थी जो आपके जिस्म पर लगी, अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक हवा चलेगी वह प्रफ़्यूम की हवा होगी और उसकी खुशबू जन्नतियों के तमाम कपड़ों में रच-बस जाएगी।

ऐसी खुशबू उनको लगा देंगे कि महफ़िल खुशबू में भर जायेगी। लोग इन्तिज़ार में बैठे होंगे, देखिए अब आगे क्या होता है। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे ऐ मेरे बन्दे दाऊद! मेरे बन्दों को मेरा कलाम सुना

दो। चुनाँचे दाऊद अ़लैहिस्सलाम सुनायेंगे:

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ o فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ o يَلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ ......

(سورة دخان)

बेशक ख़ुदा से डरने वाले अमन (चैन) की जगह में होंगे। यानी बाग़ों में और नहरों में। और वे लिबास पहनेंगे बारीक और मोटे रेशम का, आमने-सामने बैठे होंगे।

जब वह जन्नत के बारे में यह मन्ज़र खींचेंगे तो जन्नती लोग वज्द (बेख़ुदी) में आ जायेंगे कि यह वाक़िआ हम क़ुरआन में पढ़ा करते थे कि ऐसी महफ़िल होगी और आज अल्लाह ने हमें ऐसी महफ़िल अ़ता फ़रमा दी। उस परवर्दिगार की महफ़िल होगी, जन्नती उसमें होंगे, यह उनके लिए कितना बड़ा सम्मान और गौरव की बात होगी।

हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम और तिलावते क़ुरआन

हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम की तिलावत पर जन्नती दो सौ साल तक वज्द (बेख़ुदी) की कैफ़ियत में रहेंगे। जब ज़रा ठीक होंगे फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे मेरे वन्दो! तुमने इससे बेहतर आवाज़ भी सुनी है? वे कहेंगे, ऐ अल्लाह! हमने इससे बेहतर आवाज़ नहीं सुनी। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे: मैं तुम्हें सुनवाता हूँ। फिर अल्लाह तआ़ला नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को फ़रमायेंगे ऐ मेरे महबूब! इन बन्दों को सूरः तॉहा और सूरः यासीन पढ़कर सुना दीजिए।

अल्लाह तआ़ला और नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़बानी तिलावते क़ुरआन

हदीस पाक में है कि अल्लाह तआ़ला नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम से भी सत्तर गुना ज़्यादा

बेहतरीन आवाज़ अ़ता फ़रमायेंगे और अल्लाह के महबूब बहुत ही ख़ूबसूरत आवाज़ के साथ अल्लाह का कुरआन पढ़ेंगे। पाँच सौ साल जन्नतियों के ऊपर वज्द की कैफ़ियत रहेगी।

फिर जब कुछ ठीक होंगे तो अल्लाह तआ़ला पूछेंगे: ऐ मेरे बन्दो! तुमने इससे पहले इससे भी ज़्यादा कभी अच्छी आवाज़ सुनी? वे कहेंगे ऐ अल्लाह! कभी नहीं सुनी। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे मैं तुम्हें सुनाता हूँ। चुनाँचे अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त सूरः रहमान की ख़ुद तिलावत फ़रमायेंगे। सुब्हानल्लाह!

परवर्दिगार पढ़ने वाले होंगे और सूरः रहमान की तिलावत पढ़ रहे होंगे, और जन्नती सुन रहे होंगे। कितना मज़ा आएगा।

जब अल्लाह तआ़ला जन्नतियों को तिलावत सुनायेंगे तो जन्नत में एक हवा चलेगी जिससे जन्नत के दरवाज़े खिड़कियाँ बजेंगे। दरख़्तों में से आवाज़ें आयेंगी। ऐसी अ़जीब आवाज़ें, धुनें होंगी, सुर होंगे कि जन्नती धुनों और सुरों की वजह से अ़जीब नशे के से आ़लम में होंगे। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला उनको इस क़द्र लज़्ज़तें अ़ता फ़रमायेंगे। आख़िरकार इस कैफ़ियत से लुत्फ़ उठाने वाले हो चुके होंगे।

फिर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त अपने हिजाब (पर्दे) को अपने ऊपर से, जो अपनी सिफ़ात का हिजाब है, पर्दे हैं, उनको हटा देंगे। और अपने चेहरे का दीदार अ़ता फ़रमायेंगे। वह दीदार कैसे होगा, बे-जेहत होगा, बे-कैफ़ियत होगा, बे-शुब्हा होगा, बे-मिसाल होगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे मेरे बन्दो! तुम रातों को मेरी याद में जागते थे, तुम दिनों को मेरी मुहब्बत में नेक अ़मल में लगे रहते थे, तुम्हें लोग बुराई की तरफ़ बुलाते थे, मगर तुम मेरी मुहब्बत की वजह से बुराई से बचते थे।

तुम्हारी निगाहें झुकी रहती थीं, तुम अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों को क़ाबू में रखते थे, तुम किसी की तरफ़ आँख उठाकर नहीं देखते थे,

तुम्हारे दिल में मेरे दीदार का शौक़ था, मेरी मुलाक़ात की तमन्ना थी, तुमने बुरे दोस्तों को छोड़ दिया, बुरे कामों को छोड़ दिया, तुमने बुराईयों से अपने आपको बचा लिया, तुम मेरी मुहब्बत में ज़िन्दगी गुज़ारते थे।

मेरे बन्दो! तुमने मेरे हुस्न व जमाल को देखना पसन्द किया, आज मैं तुम्हें अपना दीदार अ़ता फ़रमाता हूँ। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला जन्नतियों को अपना दीदार अ़ता फ़रमायेंगे। यह दीदार ऐसा होगा कि जन्नत में नूर की बारिश होगी और वह बारिश जन्नतियों के कपड़ों और चेहरों पर पहुँचेगी।

इसकी मिसाल यूँ समझिये कि जैसे आँधी आती है तो बाहर जितने लोग होते हैं उनके चेहरों पर मिट्टी की तह आ जाती है। इसी तरह यह नूर की आँधी होगी जन्नतियों के चेहरों पर नूर की एक तह आ जाएगी और उनका हुस्न इतना बढ़ जाएगा कि अब वे कई साल तक अल्लाह तआ़ला के हुस्न की लज़्ज़त को लेंगे। मज़े लेंगे और आख़िरकार वापस लौटेंगे।

उनका हुस्न इतना बढ़ चुका होगा कि अब जन्नती मख़्लूक़ सत्तर साल तक टकटकी बाँधकर उनके हुस्न को देखती रह जाएगी। अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से फिर जन्नतियों को हुक्म होगा, मेरे बन्दो! यह तुम्हें मेरा पहली बार दीदार हुआ। अब वक़्फ़े-वक़्फ़े से (यानी थोड़े-थोड़े समय के अंतराल से) होता रहेगा। कुछ जन्नतियों को जुमा के दिन होगा। कुछ लोगों को साल के बाद होगा। कुछ ऐसे लोग होंगे जिनको रोज़ाना होगा।

जन्नत में जो इज़्ज़त होगी एक दूसरे की या सम्मान होगा या रुतबा होगा वह अल्लाह तआ़ला के दीदार की वजह से बनेगा। किसको कितनी बार दीदार होता है। जिसको जितनी ज़्यादा बार दीदार नसीब होगा वह जन्नत में उतना ही इज़्ज़त वाला इनसान होगा। अल्लाह की तरफ़ से यह दीदार कैसा होगा। सुब्हानल्लाह!

अन्धे शख़्स का इनाम

हदीस पाक में आता है कि वह अन्धा जिसको अल्लाह ने अन्धा पैदा किया और उसने सब्र, शुक्र और हिफ़ाज़त की ज़िन्दगी गुज़ारी, यह अन्धा जब जन्नत में जाएगा तो अल्लाह तआला उसको यह इज़्ज़त अ़ता फ़रमायेंगे कि यह टकटकी बाँधकर अल्लाह का दीदार करेगा। कभी भी अल्लाह का दीदार उसकी नज़र से ओझल नहीं होगा।

यह क्यों होगा? अल्लाह फ़रमायेंगे कि यह मेरा वह बन्दा है जिसने दुनिया में कभी किसी ग़ैर को मुहब्बत की नज़र से नहीं देखा इसलिए अब यह हर वक़्त मेरा ही दीदार करता रहेगा। तो गोया दीदार का पैमाना यह होगा कि जो ग़ैर-मेहरम को मुहब्बत की नज़र से देखता होगा वह अल्लाह के दीदार से मेहरूम होगा।

इसलिए सोच लीजिए कि दुनिया में जब किसी मर्द ने ग़ैर-औ़रत के हुस्न की तरफ़ मुहब्बत की नज़र डाली, या औ़रत ने किसी ग़ैर-मर्द की तरफ़ नज़र डाली। हर-हर नज़र के बदले यह अल्लाह के दीदार से मेहरूम कर दी जाएगी।

सोचिए कितनी बड़ी मेहरूमी है, आज औ़रतें बन-संवर कर निकलती हैं, बाज़ारों में बेपर्दा निकलती हैं।

बनाव-सिंगार की नुमाईश का अन्जाम

हदीस पाक में आता है कि जो औ़रत इसलिए बनती और संवरती है कि उसको ग़ैर-मेहरम मर्द देखकर ख़ुश हों। चाहे उसका कज़िन (चचाज़ाद, मामूँज़ाद, तायाज़ाद, फूफीज़ाद, ख़ालाज़ाद भाई या और कोई) हो। चाहे उसका पड़ोसी हो। चाहे कोई अजनबी हो। हदीस पाक का मफ़्हूम है कि जो औ़रत इसलिए बनती-संवरती है कि उसके ऊपर कोई ग़ैर-मेहरम मर्द मुहब्बत की नज़र डाले, अल्लाह तआ़ला

उस बनने और संवरने की वजह से फ़ैसला कर लेते हैं कि मैं क़ियामत के दिन इस औरत को मुहब्बत की नज़र से नहीं देखूँगा। इसलिए कि ये चाहती हैं कि ग़ैर-मर्द देखें। ऐसी औरत को मैं नहीं देखूँगा।

अब सोचिए कि कितना बड़ा नुक़सान है कि जो जवान लड़कियाँ अपने आपको बना-संवार कर जाती हैं कि ग़ैर-मर्द देखेंगे गोया ये अल्लाह की मुहब्बत भरी नज़रों से मेहरूम हो जाएँगी। इसलिए जो पर्दे का एहतिमाम करती हैं, हिजाब पहनती हैं, ये नेक बच्चियाँ हैं, ये अच्छी बच्चियाँ हैं, ख़ुशनसीब हैं। ये अपने को ग़ैर-मेहरम से बचाती हैं। इसके बदले क़ियामत के दिन अल्लाह उनको मुहब्बत की नज़र से देखेंगे।

अब फ़ैसला आपके इख़्तियार में है कि दुनिया के मर्दों की कमीनी निगाहें आप अपने जिस्म पर डलवाना चाहती हैं या अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की पाक नज़रें डलवाना चाहती हैं।

दुनिया की ये लज़्ज़तें थोड़े वक़्त की हैं। हमेशा-हमेशा की लज़्ज़तें आख़िरत की हैं। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हमें अपने दीदार से मेहरूम न फ़रमाए और अपनी मुहब्बत की नज़रों से हमें मेहरूम न फ़रमाए।

वह कितना बदनसीब इनसान है जिसके बारे में अल्लाह फ़ैसला कर ले कि मैं उसकी तरफ़ मुहब्बत की नज़र से नहीं देखूँगा। क़ुरआन पाक में फ़रमायाः

وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ

अल्लाह उनकी तरफ़ मुहब्बत की नज़र से नहीं देखेगा।

जब अल्लाह ही मुहब्बत की नज़र से नहीं देखेगा तो सोचिए फिर इनसान ने क्या कमाया और क्या ज़िन्दगी गुज़ारी। इसलिए हमें चाहिए कि हम दुनिया में पर्दे का ख़्याल रखें। मर्द औरतों की तरफ़ निगाहों से परहेज़ करें। औरतें मर्दों की तरफ़ निगाहों से परहेज़ करें। औरतें

बने-संवरें अपने शौहरों के लिए जो शरीअ़त ने इजाज़त दी है, या फिर अपने दिल में यह तमन्ना रखें कि मैं चाहती हूँ कि क़ियामत के दिन मेरा मालिक मुझे मुहब्बत की नज़र से देख ले।

इसलिए चाहे पर्दा करने वाली बच्चियों से दूसरी उनकी हम-उम्र बच्चियाँ मज़ाक़ करें और कहें कि तुम तो पर्दे में यूँ नज़र आती हो, तुम पर्दे में यूँ लगती हो। उनके साथ मज़ाक़ करें, ये अपने दिल को बता दें कि यह भला मज़ाक़ करती रहें मगर मैं चाहती हूँ कि मैं ग़ैर-मेहरम से अपने आपको बचाऊँ ताकि क़ियामत के दिन अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त मुहब्बत की नज़र से मुझे देखें। यही मेरी कामयाबी होगी और यही मेरी ज़िन्दगी का मक़सद है जिसके लिए मैंने अपने आपको पर्दे में रखा।

क़ियामत के दिन जिस पर अल्लाह की मुहब्बत की नज़र पड़ गई वह खुशनसीब औ़रत है। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त हमें ऐसा बनने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे और कुरआन मजीद में जिस तरह जन्नत के तज़किरे किये अल्लाह तआ़ला अपनी यह पसन्दीदा जगह हमें भी अ़ता फ़रमा दे। आमीन।

घर की मलिका

सोचने की बात है कि औ़रतें दुनिया के अन्दर घर वाली कहलाती हैं। इसलिए कि उनका अक्सर वक़्त घर में गुज़रता है। घर के सजाने-संवारने और उसकी ख़ूबसूरती का यही ख़्याल रखती हैं। घर इन्हीं की तरफ़ मन्सूब होता है। इसलिए मर्द से पूछते हैं कि घर वाली का क्या हाल है। वह कहता है मेरी घर वाली ऐसा करना चाहती है। तो औ़रतें घर वाली कहलाती हैं इसलिए जब शादी होती है तो औ़रत की बड़ी तमन्ना होती है कि मुझे अपना घर मिल जाए और जिसका कोई घर न हो कोई दर न हो वह धक्के खाती फिरती है, परेशान होती है कि काश! मुझे छत मिल जाती, मैं अपना सर छुपा लेती।

ऐ बहन! अगर दुनिया में तुझे घर की इतनी ज़रूरत है तो सोच आख़िरत में तो तुझे घर की ज़रूरत ज़्यादा है। अगर अल्लाह ने जन्नत में तेरे घर की अलाटमेन्ट (आवंटन) न की तो फिर क्या बनेगा? जहन्नम के घर में जाकर क्या हाल होगा? इसलिए आज वक़्त है जन्नत के घर की अलाटमेन्ट करवाने का, और वह अलाटमेन्ट (आवंटन) कैसे होती है? कौनसा गुनाह आप करती हैं। जो-जो गुनाह करती हैं उन गुनाहों से सच्ची तौबा करें।

जब आप गुनाहों से सच्ची तौबा कर लेंगी अल्लाह तआ़ला पिछले गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे, आईन्दा नेक कामों वाली ज़िन्दगी अ़ता फ़रमा देंगे।

तो आज की इस महफ़िल में अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कर लीजिए और अपने रब के सामने यह दुआ़ कीजिए कि ऐ अल्लाह! हमें जन्नत में घर अ़ता फ़रमा दे। जन्नत में अलाटमेन्ट (आवंटन) रमज़ान मुबारक के महीने में हो रही है। अल्लाह ने जन्नत के दरवाज़ों को खोल दिया है इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः तुम यह दुआ़ माँगोः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलुकल्-जन्न-त व अऊ़ज़ु बि-क मिनन्नारि

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से जन्नत को तलब करती हूँ और मैं आग से आपकी पनाह माँगती हूँ।

अब रमज़ान के जो दिन बाक़ी हैं, ख़ास तौर पर यह दुआ़ माँगें कि ऐ अल्लाह! जन्नत में घर अ़ता फ़रमा देना। यह औ़रत की बड़ी तमन्ना होती है। इसी पर बात को मुकम्मल करता हूँ। रब्बे करीम हमें गुनाहों से महफ़ूज़ फ़रमा दे और हमें जन्नत की नेमतें अ़ता फ़रमा दे। आमीन।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

जहन्नम के दहकते अंगारे

بسم الله الرحمن الرحيم ٥ الحمد لله و كفى و سلام على عباده الذين اصطفى اما بعد!

اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا٥ (سورة الكهف)

سبحن ربك رب العزة عما يصفون٥ وسلام على المرسلين٥ والحمد لله رب العالمين ٥ اللّٰهم صل على سيّدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم.

आख़िरत के दो मकान

अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने हर इनसान के लिए आख़िरत के दो मकान तैयार किये हैं। एक जन्नत में दूसरा जहन्नम में। अगर नेक आमाल करेगा ईमान के साथ दुनिया से जाएगा, अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त उसे जन्नत का मकान अ़ता फ़रमायेंगे। और अगर यह दुनिया के अन्दर ईमान से मेहरूम रहा या ईमान तो लाया मगर ग़फ़लत की वजह से गुनाहों में पड़ा रहा, घिरा रहा और वग़ैर तौबा के मर गया तो उन लोगों को जहन्नम का मकान दिया जाएगा।

जहन्नम वह जगह है जिसे अल्लाह तआ़ला ने मुज्रिम और ना-फ़रमानों की सज़ा के लिए बनाया। जन्नत वह जगह है जिसको अल्लाह ने अपने प्यारों के इनाम के तौर पर बनाया। अब यह हमारी ज़िन्दगी की तरतीब है कि हम जन्नत के रास्ते पर जा रहे हैं या

जहन्नम के रास्ते पर जा रहे हैं।

हम कहाँ जा रहे हैं?

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते थे: ऐ दोस्त! तेरा उठने वाला हर क़दम या तुझे जन्नत के क़रीब कर रहा है या तुझे जहन्नम के क़रीब कर रहा है। अगर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के हुक्मों को मानने के लिए क़दम उठ रहा है तो जन्नत के क़रीब, और अगर गुनाहों के लिए क़दम उठ रहा है तो जहन्नम के क़रीब। तो हमारी ज़िन्दगी की तरतीब से पता चल सकता है कि हम किस रास्ते पर चल रहे हैं। दो रास्ते बहुत वाज़ेह (स्पष्ट) हैं- एक रास्ते पर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत वाली ज़िन्दगी को अपनाना पड़ता है। पर्दे के साथ ज़िन्दगी गुज़ारनी होती है। पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारनी होती है। सच्ची ज़िन्दगी गुज़ारनी होती है। अच्छे अख़्लाक़ वाली ज़िन्दगी गुज़ारनी होती है। ऐसे लोग जन्नत के रास्ते पर चल रहे हैं।

और दूसरी ज़िन्दगी बेपर्दगी की ज़िन्दगी, बेहयाई की ज़िन्दगी, टी० वी० गाना बजाना, इनमें मसरूफ़ियत की ज़िन्दगी, इधर-उधर के ताल्लुक़ात जोड़ना, आख़िरत की तरफ़ से बिल्कुल ग़ाफ़िल रहना, दुनिया में अपनी ख़्वाहिशों, शहवतों (कामवासनाओं) को पूरा करने के लिए मस्त रहना, यह जहन्नमियों की ज़िन्दगी है।

दो मकानों में से बेहतरीन चयन

अब फ़ैसला हमको करना है कि हमारी मन्ज़िल कौनसी होनी चाहिए। अगर किसी औ़रत से पूछा जाए कि दो मकान हैं और जो मकान ख़रीदने के लिए आप ज़ोर दे रही हैं तो बताओ उन दोनों में से कौनसे मकान में आप जायेंगी।

एक मकान में गुलशन हैं, बाग़ात हैं, फल-फूल हैं, नौकर- चाकर हैं, महल जैसे हीरे-मौती का मकान बना हुआ है, ख़ुशबूएँ होंगी, नहरें

होंगी, माँ-बाप, शौहर बच्चे, बहन भाई सबको तुम्हें साथ लेजाने का इख़्तियार होगा। नबियों का दीदार होगा, अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त का दीदार होगा, तुम्हारी हर ख़्वाहिश वहाँ पूरी होगी। मगर उसकी क़ीमत यह है कि तुम अपनी ज़िन्दगी में कोई गुनाह न करो।

और दूसरा मकान वह है जो अंधेरी कोठरी होगी, जिन्न भूत से ज़्यादा डरावने फ़रिश्ते होंगे, तन्हाई होगी, न शौहर पास, न बच्चे पास, न माँ-बाप पास, भूख होगी, प्यास होगी, पसीना होगा, बिजली के कड़कने की आवाज़ें होंगी। तुम्हारा रंग काला होगा, आँखें नीली होंगी, बदबूदार लिबास पहनोगी, और आग के अन्दर घूमती रहोगी।

अब दोनों मकानों में से तुम्हें कौनसा मकान चाहिए? इस दूसरे मकान के बारे में शर्त यह है कि तुम अपनी ख़्वाहिशों को दुनिया में पूरी कर लो, जी भर के अपनी हसरतें मिटा लो। लेकिन यह तीस पचास साल की बात है। फिर तुम्हें उस मकान में हमेशा-हमेशा रहना पड़ेगा। तो कोई भी अक़्लमन्द औरत उस जहन्नम के मकान में जाना पसन्द नहीं करेगी। यही चाहेगी कि मैं तो जन्नत में जाऊँगी, मैं तो दुनिया में अपने बच्चों के बग़ैर रह नहीं सकती, शौहर से जुदाई का सोच नहीं सकती, माँ-बाप से दूर होने के बारे में ख़्याल ज़ेहन में नहीं ला सकती। मैं जहन्नम के मकान में हरगिज़ नहीं जाना चाहती कि मैं इन सब नेमतों से महरूम हो जाऊँगी।

मालूम हुआ कि इनसान का दिल यह चाहता है कि मुझे रब्बे रहमान के क़रीब जन्नत का मकान मिल जाए। और हमेशा-हमेशा मैं अपनी चाहतों को वहाँ जाकर पूरी कर लूँ।

ज़िन्दगी की बेहतरीन तरतीब

ज़िन्दगी में हमें आख़िरत को सामने रखकर अपनी ज़िन्दगी की तरतीब बनानी है। जहन्नम के अज़ाब को बरदाश्त करने का हौसला हममें से किसी आदमी को भी नहीं है। हम तो इतने नाज़ और आराम

के पले हुए बन्दे हैं कि धूप की गर्मी बरदाश्त नहीं होती, हमसे जहन्नम की गर्मी कहाँ बरदाश्त होगी।

हम गर्मी के मौसम में बाहर से घर में आयें तो हमें जब तक बर्फ़ का ठंडा पानी न मिले या कोई और पीने की ठंडी चीज़ न मिले तो उस वक़्त तक सादा पानी पीने को जी नहीं चाहता। जहन्नम के अन्दर तो और भी गर्म मश्रूबात (पीने की चीज़ें) पिलाए जाएँगे। हम तो दो आदमियों के सामने ज़िल्लत और रुस्वाई बरदाश्त नहीं कर सकते, क़ियामत के दिन सब इनसानों के सामने ज़िल्लत व रुस्वाई कैसे बरदाश्त करेंगे।

सच्ची बात तो यही है कि हमें अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त से जन्नत को तलब करना चाहिए और जहन्नम से अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की पनाह माँगनी चाहिए। यही दुआ़ है जो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सिखलाईः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलुकल्-जन्न-त व अऊ़ज़ु बि-क मिनन्नारि

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से जन्नत को तलब करती हूँ और आप से मैं जहन्नम की आग से पनाह माँगती हूँ।

जब आप यह दुआ़ कसरत से माँगेगी तो फिर आपको अपनी ज़िन्दगी की तरतीब को देखना होगा। इसलिए हमने एक काग़ज़ पर उन गुनाहों की फ़ेहरिस्त बना दी है जो कबीरा (बड़े) गुनाह इनसान करता है। आप सब तन्हाई में बैठकर इस फ़ेहरिस्त को अपने सामने रखें और सोचें कि मैं कौनसे गुनाह करती हूँ कौनसे गुनाह नहीं करती। जो नहीं करती उस पर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त का शुक्र अदा करें और जो गुनाह कर बैठती हैं उन पर निशान लगाकर उनसे तौबा करें।

जब आप सब गुनाहों से बाक़ायदा तौबा कर लेंगी तो आपकी अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के साथ सुलह हो जाएगी। परवर्दिगारे आ़लम आपके पिछले सारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे और आईन्दा आपके आमाल का अज्र बढ़ा देंगे।

यह रास्ता है अल्लाह की रिज़ा वाला रास्ता, जिस तरह तन्हाईयों में छुप-छुपकर इनसान गुनाह करता है, उसको चाहिए कि उसी तरह तन्हाईयों में बैठकर अपने गुनाहों को याद करे और छुप-छुपकर अल्लाह के सामने रोये, माफ़ियाँ माँगे कि ऐ परवर्दिगार! मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दीजिए।

लिहाज़ा फ़ेहरिस्त को सिर्फ़ एक काग़ज़ न समझना बल्कि यूँ समझना कि हमें एक तफ़सील बताई गई है, कि किस तरह हम जन्नत में जा सकती हैं और किस तरह जहन्नम से पनाह हासिल कर सकती हैं। (फ़ेहरिस्त इसी बाब के आख़िर में मौजूद है)।

अल्लाह तआ़ला की निकटता कैसे हासिल हो?

जब तक इनसान गुनाहों को न छोड़े उस वक़्त तक उसको अल्लाह की निकटता हासिल नहीं हो सकती। ज़ेहन में रख लेना, दिल के कानों से सुन लेना, अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त पाक हैं और गुनाहों की गंदगी होती है। जिस इनसान के बदन पर गुनाहों की गंदगी लगी हुई होगी यह नापाक इनसान अल्लाह के साथ ताल्लुक़ नहीं जोड़ सकता। उस पाक ज़ात के साथ जुड़ने के लिए इनसान को गंदगी और नापाकी से पाक होना पड़ता है। लिहाज़ा गुनाहों से माफ़ी माँगनी निहायत ज़रूरी है।

यूँ सोचिए कि अगर सत्रह कबीरा (बड़े) गुनाह लिखे गये तो हम अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त से सत्रह क़दम दूर खड़े हैं। अगर हम सत्रह गुनाह करते हैं। अगर उनमें से हमने कुछ गुनाह छोड़ दिये तो हम उनने ही क़रीब हो गये। जिसने पन्द्रह गुनाह छोड़ दिये वह पन्द्रह

क़दम क़रीब हो गया, जिसने सत्रह गुनाह छोड़ दिये वह अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त के साथ मिल गया।

तो इस काग़ज़ के आईने में हम अपनी हैसियत देख सकते हैं कि हम अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त से कितने दूर हैं या कितने क़रीब हैं। खुशनसीब हैं वे औरतें जो अपनी ज़िन्दगी को सब गुनाहों से बचायें और सच्ची माफ़ी माँग कर अपने रब को मनायें। रमज़ान मुबारक के चन्द दिन बाक़ी हैं, वैसे भी यह अ़श्रा (दशक) मग़फ़िरत का अ़श्रा है इसमें अपने गुनाहों को माफ़ करवा लीजिए।

हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ पर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आमीन

एक बार हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने बद्दुआ़ की- बरबाद हो जाए वह शख़्स जिसने रमज़ान का महीना पाया और उसने अपनी मग़फ़िरत न करवाई। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस दुआ़ पर आमीन फ़रमा दी।

अब हमारे लिए यह बड़ी अहम बात हो गई। आप खुद सोचें, किसी माँ के नालायक़ बेटे को अगर कोई बद्दुआ़ दे तो माँ उसको बुरा समझती है, मेरे बेटे को बद्दुआ़ क्यों दे रहा है, लेकिन नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तो माँ-बाप से ज़्यादा उम्मत पर शफ़ीक़ (मेहरबान) हैं। जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने जब दुआ़ की तो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आमीन की मुहर लगा दी।

यह कैसे हो सकता है कि माँ के सामने किसी बच्चे को बद्बख़्त कहा जाए और माँ आमीन कह दे। यह तो कभी नहीं हो सकता। अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आमीन क्यों कही? मालूम हुआ कि रमज़ान में इतनी आ़सानी से बख़्शिश हो जाती है कि जो ज़रा भी अपनी नीयत बना ले और तौबा के ऊपर आमादा हो

जाए, अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त की रहमत बहाने ढूढ़ती है, और इनसान की बख़्शिश कर दी जाती है। और बख़्शिश से मेहरूम वही रहता है जो हक़ीक़त में मेहरूम होता है।

इसलिए नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बद्दुआ़ भी लग गई। तो फिर हमारा क्या बनेगा। इसलिए इन चन्द दिनों के अन्दर अपने रब से गुनाहों को बख़्शवा लीजिए।

याद रखना जिनकी बख़्शिश हो गई उनके लिए तो रमज़ान के अगले दिन ईद होगी और जिनकी बख़्शिश न हुई उनके लिए रमज़ान के अगले दिन वईद (सज़ा की धमकी और डाँट) होगी, उसके लिए बुरा फ़ैसला हो जाएगा। जहन्नमियों के अन्दर उसको शामिल कर दिया जाएगा।

इसलिए रमज़ान मुबारक हमारे लिए फ़ैसले का महीना है हमें चाहिए कि हम गुनाहों से अपने आपको बचायें और अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त को मनाने की कोशिश करें।

मुज्रिमों का अन्जाम

दोज़ख़ को अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने अपने नाफ़रमानों के लिए बनाया। हदीसों में इसकी बड़ी तफ़सीलात हैं। चुनाँचे एक हदीस का मफ़्हूम है कि क़ियामत के दिन जब अल्लाह तआ़ला दोज़ख़ को बुलायेंगे तो उसकी लगामें होंगी, उन्नीस फ़रिश्तों ने उसको पकड़ा हुआ होगा। और हर लगाम के लिए सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मददगार होंगे। उन्होंने पकड़ा होगा।

लिहाज़ा उन्नीस लगामें हुईं हर लगाम का इंचार्ज एक फ़रिश्ता है और हर फ़रिश्ते के नीचे सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हैं। तो उन्नीस को सत्तर हज़ार से गुणा कीजिए इतने फ़रिश्तों ने दोज़ख़ को पकड़ा हुआ होगा। और जिस तरह अड़ियल घोड़ा अपने आपको छुड़ाने की कोशिश करता है उसी तरह दोज़ख़ जब मुज्रिमों को देखेगी तो अपने आपको

छुड़ाने की कोशिश करेगी। गुस्से में आयेगी, और जब सामने आएगी हदीस पाक में आता है कि यह साँस लेगी और उसका साँस ऐसा होगा कि धुआँ उठेगा, शोले उठेंगे और वे शोले मुज्रिमों के सरों पर आकर गिरेंगे। उसके अन्दर उबाल आएगा।

फिर यह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के सामने सज्दा करेगी और आख़िरकार अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के सामने अ़र्ज़ करेगी: सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने मुझे नाफ़रमानों से बदला लेने के लिए पैदा किया।

फिर कहेगी ऐ अल्लाह! आज तेरे मुज्रिम मेरे सामने हैं, मुझे आपने पैदा ही इसलिए किया था, ज़रा मुझे इजाज़त तो दीजिए कि मैं इन मुज्रिमों से निबट लूँ। उसके बाद एक शोर बर्पा होगा और ऐसी आवाज़ें आयेंगी कि जैसे उसके शोले उठ रहे हैं:

اِنَّهَا تَرْمِیْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ، كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ (سورة المرسلات)

बड़े-बड़े उसके शोले होंगे, जैसे बड़े-बड़े मेहल होते हैं। इतने बड़े-बड़े शोले उठकर जहन्नमियों के ऊपर गिरेंगे।

रिवायत में आता है कि उस वक़्त कोई नबी और रसूल ऐसा नहीं होगा जो अल्लाह के ख़ौफ़ से काँप नहीं रहा होगा, और उसको यह डर होगा कि मालूम नहीं ये शोले कहीं मेरे सर पर आकर न गिर जायें।

जब नेक लोगों का यह हाल होगा तो फिर हम जैसे गुनाहगारों का क्या हाल होगा। दिल दहल जायेंगे आँखों के आगे अन्धेरा आ जाएगा। इनसानों के दिल हलक़ तक आ जायेंगे। उस वक़्त कोई अपना नहीं होगा, सब रिश्तेदारियाँ ख़त्म हो जायेंगी। क़ुरआन ने फ़ैसला कर दिया:

اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ○ (سورة الزخرف)

सिवाये नेक लोगों के सब लोग एक दूसरे के दुश्मन बन जायेंगे।

चुनाँचे जहन्नम के कारिन्दों को अल्लाह तआ़ला बुलायेंगे: ऐ मेरे

जहन्नम के अन्दर काम पर मामूर फ़रिश्तो! बाहर निकलो। तो जहन्नम के अन्दर जो फ़रिश्ते होंगे, जो नाफ़रमानों को सज़ायें देंगे, वे जहन्नम के अन्दर से बाहर निकलेंगे। हदीस पाक में आता है कि हर कारिन्दे के हाथ में ज़न्जीरें होंगी, कोड़े होंगे और काला लिबास होगा।

ये तीन चीज़ें लेकर वे आयेंगे और नाफ़रमानों की गर्दनों के अन्दर तौक़ डाल देंगे। उनकी नाक के अन्दर ज़न्जीरें डाल देंगे। उनको पेशानी के बालों से पकड़ कर खींचेंगे और बाज़ नाफ़रमानों को टाँगों से पकड़ कर घसीटेंगे और उनको धक्के मारेंगे। कुरआन ने फ़ैसला कर दिया:

يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا (سورة الطور)

अब इस आयत का मफ़्हूम देखिए अलफ़ाज़ ही ऐसे हैं, यूँ लगता है जैसे कोई धक्के देकर लेजा रहा है। तो मुज्रिम को तो वैसे भी लेकर जा सकते हैं लेकिन जब किसी की तौहीन करनी होती है, जब किसी को ज़लील करना होता है तो इनसान धक्के मार-मारकर ले जाता है। अल्लाह तआ़ला मुज्रिमों को ज़लील व रुस्वा करेंगे। धक्के मार-मारकर उनको जहन्नम में लेकर जायेंगे। फ़रिश्ते आख़िरकार उनको जहन्नम में सर के बल गिरायेंगे।

जहन्नम की गहराई

जहन्नम इतनी गहरी होगी, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया! एक बार आवाज़ आई, सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पूछा! ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! यह कैसी आवाज़ है? फ़रमाया कोई आवाज़ आई है। इतने में जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने आकर बताया ऐ अल्लाह के नबी! आज से सत्तर साल पहले जहन्नम के सिरे यानी किनारे से एक पत्थर नीचे गिरा था, सत्तर साल के बाद वह तह में पहुँचा है। इतनी गहराई है जहन्नम की।

आप कुँए का तसव्वुर ज़ेहन में रखिए कि अगर पचास फुट के कुँए में नीचे इनसान जाए तो कैसा महसूस करता है। जहाँ सत्तर साल की गहराई में नीचे जाना पड़ेगा और वहाँ पर इनसान को जलाया जाएगा। जहन्नम के मुख़्तलिफ़ (अलग-अलग) हिस्से अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने बनाए हैं। फ़रमाया:

لَهَاسَبْعَةُ اَبْوَابٌ (سورة الحجر)

उसके सात दरवाज़े हैं।

फिर हर दरवाज़े के लिए एक गिरोह है जिसको उसमें से गिराया जाएगा। चुनाँचे बाज़ ने कहा सात तबक़ हैं, सात हिस्से है, सात Stories हैं जहन्नम की। सबसे ऊपर वाली को 'जहन्नम' कहते हैं जिसमें गुनाहगार मोमिन जायेंगे। फिर दूसरी को 'लुबा' कहते हैं, उसमें यहूद जायेंगे। फिर तीसरे के अन्दर ईसाई जायेंगे, चौथे को 'सईर' कहते हैं उसमें 'साबिईन' (सितारों को पूजने वाले) जायेंगे। पाँचवे को 'सक़र' कहते हैं उसमें 'मजूसी' (आग को पूजने वाले) जो आतिश-परस्त होते हैं वे जायेंगे। छटे का नाम 'जहीम' है, उसमें मुश्रिकीन जायेंगे। और सातवें का नाम 'हाविया' है, जिसमें मुनाफ़िक़ लोग होंगे।

क़ुरआन ने फ़ैसला कर दिया:

اِنَّ الْمُنَافِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ (سورة النساء)

मुनाफ़िक़ सबसे नीचे के हिस्से में होंगे।

जब ये लोग जहन्नम में धकेल दिये जायेंगे। जहन्नम के ऊपर इतना सख़्त गुस्सा सवार होगा कि उसकी एक लपट आएगी:

مَاتَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِO (سورة الذاريات)

यह जहन्नम जिस चीज़ पर गुज़रेगी तोड़-फोड़ देगी।

आख़िरकार जहन्नमी जहन्नम के अन्दर होंगे वहाँ सख़्त भूख होगी, खाने के लिए माँगेंगे, उनको अल्लाह तआ़ला ज़क़्क़ूम का पौदा

खाने के लिये दिया जायेगा। क़ुरआन मजीद में है:

اِنَّ شَجَرَةَ الزَّقُّوْمِ o طَعَامُ الْاَثِيْمِ o كَالْمُهْلِ يَغْلِىْ فِى الْبُطُوْنِ o كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ o (سورة الدخان)

उनको ज़क़्क़ूम का पौदा खाने के लिए दिया जाएगा। काँटे होते हैं इतना कडवा कि ज़बान से लगाया नहीं जा सकता, इनसान उसको खायेगा, न निगलते बनेगी न उगलते बनेगी। चुनाँचे पानी माँगेगा क़ुरआन मजीद में फ़रमाया कि जब वह पानी माँगेगा तो कहा जायेगा:

سُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَ هُمْ (سورة محمد)

तुम गर्म पानी पियो। वह जब गर्म पानी पियेंगे उनकी अन्तडियाँ गलकर पख़ाने के रास्ते बाहर निकल जायेंगी।

दूसरी जगह फ़रमाया:

وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ o يَتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ (سورة ابراهيم)

उनको ऐसा पानी पिलाया जाएगा कि वे पानी नहीं पी पायेंगे। घूँट-घूँट पियेंगे और वह घूँट भी उनके अन्दर उतर नहीं पाएगा।

وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ (سورة الكهف)

और पीने के लिए जब पानी माँगेंगे तो ऐसा पानी पीने के लिए दिया जाएगा जैसे पिघलता हुआ ताँबा होता है।

يَشْوِى الْوُجُوْهَ

वह गर्म इतना होगा कि जब पानी पीने लगेंगे उसकी गर्मी की वजह से चेहरे की खाल उतर जाएगी।

सोचिए तो सही कि वह कितना गर्म होगा। फ़रमाया:

وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا o (سورة المزمل)

और गले में फंस जाने वाला खाना है और दर्दनाक अज़ाब है। फिर उनको एक जगह फ़रमाया:

وَلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ (سورة الحاقة)

उनको पीने के लिए ग़िस्लीन दिया जाएगा।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि जहन्नमी आदमियों के जिस्म से जो ख़ून और पीप निकलेगी उसको प्यालों में जमा करके वह जहन्नमियों को पीने के लिए दी जाएगी। दुनिया में इनसान किसी ज़ख़्म से पीप निकाले कितनी बदबू आती है, बरदाश्त नहीं हो सकती। अब यह पीप जो पीनी पड़ेगी तो फिर क्या हाल होगा। लेकिन प्यास इतनी होगी कि पिये बग़ैर कोई चारा नहीं होगा।

इस क़िस्म की सज़ायें इनसान को जहन्नम के अन्दर दी जायेंगी। चुनाँचे हमें जहन्नम से बचने के लिए अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के सामने सच्ची तौबा करनी चाहिए।

कौन-कौनसी औ़रतें जहन्नम में जायेंगी

एक हदीस पाक हाफ़िज़ शम्सुद्दीन ज़हबी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने अपनी किताब 'अल्-कबाइर' में नक़ल फ़रमाई है। जिसमें पता चलता है कि कौन-कौनसी औ़रतें जहन्नम में जायेंगी। ज़रा तवज्जोह से बात सुनिएगा और उन गुनाहों से बचिएगा। ताकि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त जहन्नम से महफ़ूज़ फ़रमा दें।

एक बार हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु और सयैदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा दोनों ने इरादा किया कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत के लिए जायें। चुनाँचे अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए।

जब आकर देखा कि नबी पाक की आँखों से आँसू जारी हैं, रो-रोकर आँखें सुर्ख़ हो चुकी हैं। दोनों बड़े हैरान हो गये। दोनों ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! आप क्यों रो रहे हैं? किस चीज़ ने आपको ग़मगीन कर दिया? किस चीज़ ने आपको रुला दिया, कि आपकी आँखें सुर्ख़ हो चुकी हैं रो-रोकर।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मेरी प्यारी बेटी

फ़ातिमा! मैं इस वक़्त बैठा था। मुझे याद आ गया जब मैं मेराज पर गया था तो मैंने अपनी उम्मत की कुछ औ़रतों को जहन्नम में अ़ज़ाब होते हुए देखा था। मुझे ख़्याल आ गया और इस वजह से मेरी आँखों में आँसू आ गये। पूछा मेरे माँ-बाप आप पर कुरबान हों, बता तो दीजिए कि वे कौन-कौनसी औ़रतें हैं। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने पहली औ़रत को जहन्नम में देखा वह अपने बालों के ज़रिए से जहन्नम में लटकी हुई थी। आग के अन्दर जैसे मुर्ग़ को सलाख़ के अन्दर पिरो कर भूनने के लिये लटका देते हैं। उस औ़रत को सर के बालों के ज़रिए लटका दिया गया था। तो यह लटकी हुई थी और उसका दिमाग़ हन्डिया की तरह उबल रहा था। और उसका जिस्म जल रहा था।

अब ज़रा सोचने की बात है कि अगर किसी औ़रत को बालों से पकड़ कर खींचा जाए उसको ऐसा लगेगा कि जैसे बालों से खोपड़ी की चमड़ी उधड़ जाएगी। इतनी तकलीफ़ होती है ज़रा से बाल खींचने से। जब औ़रत बालों के बल लटका दी जाएगी फिर उसका क्या हाल होगा। और फिर उसको इतनी गर्मी महसूस होगी कि उसका दिमाग़ हन्डिया की तरह उबल रहा होगा।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह वह औ़रत होगी जो दुनिया के अन्दर पर्दे का ख़्याल नहीं करती होगा। उसको बन-संवर कर बाहर निकलने का शौक़ होता होगा। अच्छे-अच्छे फ़ैशन वाले कपड़े पहनकर यह अजनबी ग़ैर-मेहरमों को दिखाती होगी। अपने तौर पर यह अपने हुस्न की ज़कात निकालती होगी। लेकिन पता उसको कियामत के दिन चलेगा कि मैंने कितना बड़ा गुनाह किया। इसलिए यह वह औ़रत है जो दुनिया में पर्दे का ख़्याल नहीं रखती थी।

एक बात ज़ेहन में रख लीजिए। एक चीज़ 'सतर' (छुपाने की जगह) होती है। एक चीज़ पर्दा होता है। औ़रत के लिए चेहरे, हाथों और पाँव के अ़लावा बाक़ी मारा जिस्म सतर में शामिल है। इसलिए

नमाज़ की हालत में इस सबको छुपाना औ़रत के लिए ज़रूरी होता है। अगर औ़रत के चेहरे, हाथों की हथेलियाँ और पाँव के अ़लावा जिस्म का कोई भी हिस्सा नमाज़ के अन्दर थोड़ी देर खुला रह गया तो उस औ़रत की नमाज़ हरगिज़ क़बूल नहीं होगी। कई औ़रतों को देखा है कि नमाज़ें भी पढ़ती हैं मगर उनकी क़मीस के बाज़ू आधे होते हैं। और बाज़ू नंगे नमाज़ हरगिज़ नहीं होती। कई शलवारें पहनती हैं टख़्नों से ऊँची कर लेती हैं, यह नया फ़ैशन निकल आया। नमाज़ बिल्कुल नहीं होती। कई इतना बारीक दुपट्टा पहनती हैं कि बाल साफ़ नज़र आ रहे होते हैं। उनकी नमाज़ नहीं होती।

तो सतर का क्या मतलब है? सतर का मतलब यह है कि नमाज़ के अन्दर अपने आपको इस तरह मोटे कपड़े में छुपा लेना कि चेहरे, हाथों और पाँव के सिवा जिस्म का कोई भी हिस्सा नज़र न आ सके। यह इनसान का सतर है और इसको छुपाना नमाज़ में ज़रूरी है।

सतर के अ़लावा एक पर्दा होता है। पर्दा औ़रत के जिस्म के तमाम हिस्सों का ग़ैर-मेहरमों से ज़रूरी है। इसलिए फ़रमायाः

فَسْئَلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ (سورة الاحزاب)

ऐ सहाबा! जब तुम नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बीवियों से कोई चीज़ माँगना चाहो तो तुम पर्दे के पीछे से माँगो।

तो गोया मेहरम अजनबी से पूरे जिस्म को पर्दे में रखना यह पर्दा कहलाता है। यह हिजाब कहलाता है। तो सतर होता है नमाज़ में, और हिजाब होता है ग़ैर-मेहरमों से। तो ग़ैर-मेहरमों से अपने आपको छुपाना चाहिए।

औ़रतें जब घर में रहें तो अपने भाईयों के सामने, अपने बेटों के सामने, अपने चेहरे, हाथ पाँव को खोल सकती हैं। लेकिन जब बाहर निकलना हो ग़ैर-मेहरमों और अजनबियों के अन्दर से गुज़रना हो तो फिर सर से लेकर पाँव तक अपने जिस्म को छुपाना ज़रूरी है। अगर न छुपाया तो फिर उसको इस पर सज़ा मिलेगी।

बेपर्दा औ़रत का अन्जाम

हदीस पाक में आता है कि बेपर्दा औ़रत जब घर से बाहर निकलती है तो उस वक़्त से अल्लाह के फ़रिश्ते उस पर लानत करना शुरू कर देते हैं। जब तक लौटकर घर वापस नहीं आ जाती अल्लाह के फ़रिश्ते उस पर लानत करते रहते हैं। फिर औ़रतें कहती हैं- घर में सुकून नहीं, शौहर तवज्जोह नहीं देता, औलाद बात नहीं मानती, कारोबार अच्छा नहीं। ओ खुदा की बन्दी! जब तुझ पर अल्लाह के फ़रिश्तों की हर वक़्त लानत रहती है तो तेरी ज़िन्दगी में बरकतें कहाँ आयेंगी।

यह इसी लानत का नतीजा होता है कि घरों में परेशानियाँ होती हैं, दिल को सुकून नहीं होता। बीमारी पीछा नहीं छोड़ती, हर तरफ़ से ज़िल्लत और रुस्वाई होती है। यह अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त के हुक्म को तोड़ने का नतीजा है।

लिहाज़ा खुशनसीब (भाग्यशाली) हैं वे औ़रतें जो पर्दे का एहतिमाम (पाबन्दी और ख़्याल) करती हैं। ये दुनिया में पर्दे का एहतिमाम करेंगी अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त क़ियामत के दिन उनके क़सूरों पर रहमत के पर्दे की चादर डाल देंगे। उस दिन पता चलेगा कि कितना बड़ा अज्र इसका मिला।

लिहाज़ा जो औ़रत नंगे सर बाज़ार में फिरती है, बाल लोग देखते हैं। चेहरा देखते हैं। कई एक तो सीना खोलकर चलती हैं और आजकल तो बहुत ही बेपर्दगी बढ़ती जा रही है। ऐसी तमाम बेपर्दा औ़रतों के लिए फ़रमाया कि जहन्नम के अन्दर उनको बालों के ज़रिये से लटका दिया जाएगा।

अब ज़रा तसव्वुर तो करें कि किसी औ़रत के बालों को अगर हाथों में पकड़ कर लटका दिया जाए तो वह तो आधा मिनट भी नहीं लटक सकती। उसको लगेगा कि मेरे बाल सारे के सारे खोपड़ी से

उखड़ जायेंगे। मेरी चमड़ी उधड़ जाएगी। तो अगर जहन्नम के अन्दर हमेशा-हमेशा बालों के ज़रिए लटकना पड़ा आग में जलना पड़ा और दिमाग़ को ऐसा उबाल देंगे, इसलिए कि उनके दिमाग़ में फ़साद था। उनके दिमाग़ का क़सूर था, यह इस बेपर्दगी को कुछ समझती ही नहीं थीं। इसलिए अल्लाह तआ़ला दिमाग़ को इतना गर्म करेंगे कि दिमाग़ उनका खोल रहा होगा।

तो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह वह औ़रत है जो पर्दे का ख़्याल नहीं करती थी। आजकल की बच्चियाँ अपने कज़िनों (रिश्ते के भाईयों) से तो पर्दे की कुछ परवाह ही नहीं करतीं, उनको तो समझती हैं कि ये तो भाई हैं। हरगिज़ ऐसी बात नहीं! अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त का फ़रमान है। जहाँ तक मेहरम हैं वह भाई की बात है। बाक़ी चचाज़ाद, फूफीज़ाद, मामूँज़ाद ये सब के सब ना-मेहरम हैं, इनसे अपने आपको पर्दे में रखना चाहिए।

कई बार ऐसा होता है कि ऐसे घर में रहती हैं कि शौहर भी है, इकट्ठा ख़ानदान (Joint Family) है। देवर वग़ैरह भी हैं। वह तो ग़ैर-मेहरम होते हैं। ऐसी औ़रतों को चाहिए कि वे अपने चेहरे के ऊपर दुपट्टे को इस तरह रखा करें जिस तरह घूँघट होता है। और अपने देवरों से अगर बात करनी भी पड़ जाए तो इस तरह निगाहें नीची करके सर झुका कर पर्दा आगे हो उनसे बात करें।

आप मिसाल सोच लीजिए। जब इनसान किसी से नाराज़ होता है तो वह अगर उससे बात भी करता है तो उसकी तरफ़ देखता भी नहीं, उसको अपना चेहरा भी नहीं देखने देता। बस बात कर लेता है।

जैसे किसी से नाराज़गी हो और इनसान का उसके साथ जैसा बर्ताव होता है वैसा ही औ़रत को चाहिए कि अल्लाह तआ़ला ने इसे ग़ैर-मेहरम कहा। इसलिए उसका इससे अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की वजह से यह मामला है। यह अपने चेहरे के ऊपर इस तरह दुपट्टा कर ले कि वह घूँघट की तरह ज़रा बढ़ा रहे। इसी तरह घर के काम करती

रहे तो दूसरा मर्द उसके चेहरे की तरफ़ नहीं देख सकेगा।

मर्दों को चाहिए कि वे भी ऐसी औ़रतों के चेहरों को न देखें और औ़रतों को चाहिए कि वे भी मर्दों के सामने अपने चेहरे को मत खोलें। घूँघट से चेहरे को ज़रा पर्दे में रखने की कोशिश करें और फिर अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त से दुआ़यें माँगें कि ऐ परवर्दिगार! हमारे क़ुसूरों को माफ़ फ़रमा दे। लेकिन ये वे ग़ैर-मेहरम हैं जो घर के अन्दर होते हैं। जो घर के बाहर हैं उनसे तो सौ फ़ीसद (100%) पर्दे में रहना चाहिए। यहाँ तक कि एक मिली मीटर जिस्म को भी न देख सकें। औ़रत का यह अच्छा पर्दा है कि इनसान दूसरों से बिल्कुल पर्दे में रहे वरना क़ियामत के दिन यह सज़ा मिलेगी।

जहन्नम में जाने के चार कारण

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक हदीस पाक में इरशाद फ़रमाया कि औ़रतें चार वजह से जहन्नम में ज़्यादा जायेंगी- एक बात यह फ़रमाई कि उनमें अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त के हुक्म मानने का जज़्बा कम होता है। उनको कहो यह अल्लाह का हुक्म है, तो यह सुनकर उन पर इतना असर कोई नहीं होता, मामूली बात समझती हैं, अच्छा कर लेंगी।

इसी तरह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इताअ़त का जज़्बा कम होता है। उनको बतायें कि ऐसा करना सुन्नत है, ये उसको मामूली समझ लेती हैं। सुन्नत की पैरवी का जज़्बा इतना ज़्यादा नहीं होता।

फ़रमाया तीसरी बात यह है कि उनके अन्दर शौहर की इताअ़त (फ़रमाँबरदारी) का जज़्बा कम होता है। आ़म तौर पर ये शौहर को अपनी बात मनवाने की कोशिश करती हैं। अपने रंग में ढालने की कोशिश करती हैं। कहती हैं कि शौहर हमारे हाथ में आ जाए। हमारी हर बात मानने लग जाए। ये मानने की बजाए मनवाने की कोशिशें

ज़्यादा करती हैं। इसी वजह से ये शौहरों से बद्तमीज़ी भी कर जाती हैं और इस वजह से जहन्नम की हक़दार हो जाती हैं।

ना-मेहरमों से ताल्लुक़ात रखने वाली औरतों का इब्रतनाक अन्जाम

चौथी बात नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह फ़रमाई कि उनमें बन-ठनकर बाहर निकलने का शौक़ बहुत ज़्यादा होता है। तो तीन शौक़ कम हैं। अल्लाह की फ़रमाँबरदारी, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की फ़रमाँबरदारी, शौहर की फ़रमाँबरदारी, मगर एक शौक़ बहुत ज़्यादा होता है और उसको कहते हैं बन-ठनकर, संवर कर बाहर निकलना।

लिहाज़ा बन-संवर कर अगर बाहर निकलेंगी तो यह उनके जहन्नम में जाने का सबब बन जाएगा। तो पहली औ़रत को जो अ़ज़ाब हुआ वह अपने बालों के ज़रिये जहन्नम में लटकी हुई थी। यह बेपर्दगी का जुर्म करने वाली औ़रत थी।

अब अपनी ज़िन्दगियों को आप खुद देखिए कि आप कहाँ-कहाँ बेपर्दगी का गुनाह करती हैं। इससे तौबा कर लीजिए। और आईन्दा पर्दे का लिहाज़ ख़्याल कीजिए ताकि अल्लाह तआ़ला जहन्नम में जाने से महफ़ूज़ फ़रमा दें।

ज़बान चालाने वाली औ़रत का अन्जाम

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया मैंने दूसरी औ़रत को देखा जिसको जहन्नम में अ़ज़ाब हो रहा था। वह अपनी ज़बान के बल लटकी हुई थी। अब ज़रा सोचने की बात है, किसी की ज़बान को थोड़ा सा खींचें तो कितनी तकलीफ़ होती है। अगर उसके जिस्म का पूरा वज़न ज़बान के ऊपर आए और ज़बान के अन्दर एक सुराख़ करके ज़न्जीर डाल दें और औ़रत को उस पर लटका दें तो वह

कितनी तकलीफ़ में होगी।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह ज़बान के बल लटकने वाली औ़रत वह थी जो ज़बान-दराज़ (ज़बान चलाने वाली) थी। मुँह-फट थी। शौहर से बद्‌तमीज़ी करने वाली थी। ऐसी बातें करती थी कभी माँ का दिल दुखी कर देती, कभी बहन का दिल दुखी कर देती, कभी बच्चों को कौसना शुरू कर देती। यह ज़बान से दूसरों के दिलों पर ज़ख़्म लगाती थी। दूसरों को तकलीफ़ पहुँचाती थी और वाक़ई हमने बाज़ औ़रतों के बारे में सुना, खुद कहती हैं कि मैंने ऐसी बात कही कि फ़लाँ तो सड़ती रही, जलती रही होगी। मैंने तो उसे जलाने के लिए ऐसा किया।

जो औ़रतें यूँ सोचती हैं कि मैंने उसे जलाने के लिए यह किया उनको क्या जलायेंगी ये तो खुद इन जुमलों की वजह से जहन्नम की आग में जलेंगी।

तो ज़बान की बेएहतियाती करने वाली औ़रत को अल्लाह के महबूब ने देखा कि अपनी ज़बान के बल जहन्नम में लटकी हुई है और उसके ऊपर आग का अ़ज़ाब हो रहा है। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः मैंने तीसरी औ़रत को देखा कि वह जहन्नम के अन्दर पिस्तानों (छातियों) के बल लटकी हुई थी। उसके दोनों पिस्तानों में सुराख़ करके ज़न्जीर डाल दी गई थी और उसका पूरा वज़न उनके ऊपर था और वह लटक रही थी।

ज़रा तसव्वुर करके सोचिए अगर कभी ऐसा हो जाए तो इनसान को कितनी तकलीफ़ हो। यह कौन औ़रत होगी? नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिसके ग़ैर-मेहरम मर्दों के साथ ताल्लुक़ात होंगे। यह उनसे बातें करती होगी। यह उनसे इश्क़ करती होगी। यह उनसे बुराई के काम करती होगी। ऐसी ज़िनाकार औ़रत को अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त पिस्तानों (छातियों) के बल लटका देंगे।

आजकल बेहयाई का दौर-दौरा है। टी. वी. ने केबिल ने आज

जवान बच्चियों को हया से मेहरूम कर रखा है। और रिसालों और मैगज़ीनों वग़ैरह ने ऊपर से और इस पर ज़हर फैला दिया है। लिहाज़ा बच्चियाँ अपनी जवानी की उम्र को पहुँचती हैं कि उनको गुनाह करने के ऐसे तरीक़े बताए जाते हैं। फ़िल्मों और ड्रामों के ज़रिये ऐसी रोमानी कहानियाँ सुनाई जाती हैं और अ़जीब बात तो यह है कि माँ-बाप अपने घर में केबिल का कनेक्शन खुद लगवाते हैं, चैनल का कनेक्शन खुद लगवाते हैं। जवान बेटियाँ भी देखती हैं और बाज़ घरों में तो माँ-बाप के कमरों में टी. वी. अलग होता है और बेटियों के कमरों में टी. वी. अलग होता है। और बेटियाँ अपनी मर्ज़ी की कैसिटें खुद मंगवा कर वीडियो देखती हैं।

जब ये स्क्रीन के ऊपर गुनाहों की कहानियाँ सुनेंगी, आख़िर इनसान हैं, जवान हैं, उनके अपने अन्दर भी यही जज़्बे पैदा होंगे। फिर ये छुप-छुपकर गुनाह करेंगी। माँ-बाप की नाक के नीचे दिया जलायेंगी। किसी को पता भी नहीं चलने देंगी। मगर अपनी इज़्ज़त ख़राब कर बैठेंगी। अपनी इज़्ज़त को दाग़दार कर बैठेंगी। अगर ऐसा हुआ तो माँ-बाप भी इस गुनाह में बराबर के शरीक होंगे कि उन्होंने उनका ख़्याल न रखा। और अगर माँ-बाप ने ख़्याल रखा मगर उसने खुद करतूत ऐसे किये तो फिर ये खुद ज़िम्मेदार होंगी मगर इसको किस तरह लटकाया जाएगा हदीस पाक में फ़रमाया गया कि पिस्तानों के अन्दर सुराख़ करके ज़न्जीर डाली जाएगी और उसको उसके अन्दर से लटका दिया जाएगा। आग उसके जिस्म को जला रही होगी।

यहीं पर बस नहीं बल्कि आगे भी बताया। बात तो अ़जीब सी है लेकिन समझाने के लिए बतानी पड़ेगी।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया मैंने ज़िना करने वाली औ़रत को देखा कि उसके सर के ऊपर उस मर्द की शर्मगाह है जिससे उसने ज़िना किया और उसमें से पीप निकल रही है और वह पीप उस औ़रत के मुँह में जा रही है और वह पीप को पी रही है।

सोचिए तो सही एक आग में जलने का अ़ज़ाब और दूसरा इतनी बदबूदार चीज़ पीने का अ़ज़ाब! नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया उस औ़रत की शर्मगाह से ऐसी गन्दी हवा निकलेगी कि जहन्नमी भी उसको सूँघ कर उस पर गुस्सा करेंगे यानी किसी महफ़िल के अन्दर किसी इनसान के पेट से बदबू ख़ारिज हो और वह बहुत गन्दी हो तो महफ़िल के सारे लोग उसको बहुत बुरा जानते हैं।

जहन्नम के अन्दर ज़िनाकार मर्दों और औ़रतों की शर्मगाहों से ऐसी गन्दी हवा निकलेगी कि सारे जहन्नमी उसकी वजह से मुँह बनायेंगे और कहेंगे यह कौन कमीना है जिसकी वजह से इतनी बदबू हमें सूँघनी पड़ी। तो यह ज़िना अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की नज़र में इतना बुरा काम है। इस तरह से उस औ़रत को अ़ज़ाब दिया जाएगा।

तहारत (पाकी) का ख़्याल

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः मैंने चौथी औ़रत को देखा कि उसके पाँव सीने पर बन्धे हुए हैं, हाथ सर के साथ बन्धे हुए हैं। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा गया कि ऐ अल्लाह के नबी! यह चौथी कौनसी औ़रत थी? नबी करीम ने फ़रमाया यह पाकी-नापाकी का ख़्याल नहीं रखती थी। इसको हैज़ (माहवारी) से पाक होने के लिए जितनी एहतियात करनी चाहिए थी हरगिज़ नहीं करती थी।

आ़म तौर पर देखा गया है कि अगर मग़रिब के बाद भी औ़रतें हैज़ (माहवारी) से पाक हो जाएँ तो सोच लेती हैं कि अच्छा सुबह नहा कर नमाज़ शुरू कर देंगी। इशा चली गई परवाह नहीं करतीं। सहाबियात रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्-न के बारे में आता है कि वे इतना ख़्याल करती थीं कि रात को उठकर चिराग़ जलाकर अपने कपड़ों को देखती थीं कि ऐसा तो नहीं कि आधी रात को मैं पाक हो गई हूँ और मेरे ऊपर इशा की नमाज़ पढ़नी लाज़िम हो। और अगर मैं फ़ज्र में

नहाऊँगी तो मेरी तो नमाज़ क़ज़ा हो जाएगी।

वे आधी रात को चिराग़ जला-जलाकर कपड़े देखती थीं और अगर पाक हो जाती थीं तो उसी वक़्त गुस्ल करके इशा की नमाज़ अदा किया करती थीं। आज तो औ़रतें इसकी एहतियात और परवाह नहीं करतीं। इस तरह फ़र्ज़ नमाज़ें क़ज़ा हो जाती हैं। इसी तरह शादीशुदा औ़रतें नापाकी के गुस्ल के करने में देर कर देती हैं। फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई दूसरी नमाज़ें क़ज़ा हो गयीं। यह जो पाकी-नापाकी का इतना ख़्याल नहीं करतीं, नापाकी के गुस्ल में देर कर देती हैं। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया उस औ़रत को यह अ़ज़ाब होगा कि उसके पाँव सीने पर बाँध दिये जायेंगे, हाथ सर पर बाँध दिये जायेंगे और फ़रमाया यह वह औ़रत थी जो फ़र्ज़ नमाज़ में ताख़ीर (देरी) कर देती थी और यह तो अक्सर औ़रतों को देखा गया है कि उधर अज़ान सुनती हैं तो फ़ौरन नमाज़ पढ़ने की बजाए सोचती हैं, यह काम कर लूँ फिर पढ़ लूँगी। और काम करते-करते ऐसा वक़्त आ जाता है कि कभी तो नमाज़ क़ज़ा हो जाती है और कभी क़ज़ा से दस-पन्द्रह मिनट पहले भाग रही होती हैं कि मुझे तो नमाज़ पढ़नी थी। मैंने नमाज़ नहीं पढ़ी, नमाज़ को वक़्त-बे-वक़्त पढ़ना और पाकी-नापाकी का ख़्याल न करना इसकी वजह से उस औ़रत को अ़ज़ाब होगा।

आजकल तो रात को देर से सोने की ऐसी मन्हूस आ़दत पड़ती चली जा रही है कि औ़रतें इशा के बाद देर तक बच्चों के साथ, शौहर के साथ, घर के कामकाज में लगी रहती है। रात को गर्मियों में नमाज़ भी क़ज़ा हो जाती है। पता ही नहीं चलता, आँख खुलती है, सुबह होती है, सूरज निकला हुआ होता है।

तो जो औ़रत अपनी नमाज़ों का ख़्याल नहीं रखेगी, पाकी-नापाकी का ख़्याल नहीं रखेगी, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया उसको जहन्नम में इस तरह अ़ज़ाब दिया जाएगा।

ग़ीबत, चुग़लख़ोरी, झूठ पर अ़ज़ाब

फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया पाँचवीं औ़रत को मैंने देखा कि जिसका चेहरा सुअर की तरह बन गया था और उसका जिस्म गधे की तरह था। थी तो वह औ़रत ही मगर उसके जिस्म की खाल जो थी वह ऐसी बन गई थी जैसे गधे का जिस्म होता है। और चेहरा ऐसा बन गया था जैसा सुअर का चेहरा है। गोया शक्ल बिगाड़ दी गई और इस तरह उसको अ़ज़ाब हो रहा था।

फ़रमाया यह वह औ़रत होगी जो झूठ बोलती थी। ग़ीबत करती होगी। चुग़लख़ोरी करती होगी। अब सोचिए तो सही कि ये आ़दतें तो अक्सर देखी जाती हैं चुग़लख़ोरी तो ऐसी चीज़ है कि बीवी चाहती है कि सास की चुग़लियाँ करके शौहर को अपनी तरफ़ करे। सास चाहती है कि वह बहू की चुग़लियाँ करके अपने बेटे को अपने क़ाबू में रखे।

अब यह सास और बहू की ठंडी जंग चल रही होती है। कई घरों में तो गर्म जंग भी चल रही होती है। अब एक दूसरे की चुग़लियाँ खाने से दोनों अपनी आख़िरत ख़राब कर रही होती हैं। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त ने चुग़लख़ोर के लिए ऐसा अ़ज़ाब दिया कि उनका चेहरा बिगाड़ दिया जाएगा। चूँकि चुग़ली खाने वाला बात को बढ़ा-चढ़ाकर बयान करता है। अगर वही बात भी करे, ऐसे अन्दाज़ में करता है कि दूसरे के दिल में फ़र्क़ आए। उस बन्दे से गुस्सा आए। उस बन्दे के बारे में चूँकि यह बात बदल कर करती हैं इसलिए अ़ज़ाब भी अल्लाह ने यह दिया कि उनकी शक्लों को जहन्नम में बिगाड़ दिया जाएगा। चेहरा सुअर की तरह बना देंगे और बाक़ी जिस्म गधे की तरह बना देंगे।

ये ग़ीबत करने वाली, झूठ बोलने वाली और चुग़लख़ोरी करने वाली औ़रतें होंगी।

ग़ीबत और चुग़लख़ोरी में फ़र्क़

ग़ीबत और चुग़लख़ोरी में थोड़ा सा फ़र्क़ है। ग़ीबत कहते हैं अगर कोई आदमी किसी की तारीफ़ करे तो उसे उसकी तारीफ़ अच्छी न लगे। यह उसकी बुराई की बात कर दे। किसी की पीठ पीछे किसी की बुराई करना इसको ग़ीबत कहते हैं। लेकिन चुग़लख़ोरी में बात तो वही होती है मगर साथ में यह भी नीयत होती है कि यह आदमी उससे दूर हो जाए।

ग़ीबत में यह नीयत होती है कि यह आदमी उसे बुरा समझने लग जाये। तो ग़ीबत और चुग़लख़ोरी में यह फ़र्क़ है। ग़ीबत इसलिए की जाती है कि बन्दा उसे बुरा समझे और चुग़लख़ोरी इसलिए की जाती है कि बन्दा दिल से उससे नफ़रत करने लग जाए और उससे कट जाए। तो ताल्लुक़ तोड़ने की नीयत होती है। इसी को लगाई-बुझाई कहते हैं। इससे रिश्तेदारियाँ टूटती हैं। लोग एक दूसरे से जुदा होते हैं।

इसलिए चुग़लख़ोर इनसान अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त को हरगिज़ पसन्द नहीं। जहन्नम में ऐसी औ़रतों को वह अ़ज़ाब दिया जाएगा। यह बात याद रखिये कि ये सब गुनाह सिर्फ़ औ़रतों ही में नहीं होते मर्दों में भी होते हैं। अगर कोई मर्द भी ऐसा गुनाह करेगा तो उसको भी ऐसी ही सज़ा मिलेगी जैसी औ़रतों को मिल रही है। लेकिन हदीस पाक में औ़रतों के बारे में बात बताई गई, अब उनके जो-जो गुनाह मर्द कर रहे होंगे वे भी इसी के तेहत आ जायेंगे और उनको भी इसी तरह की सज़ायें दी जायेंगी।

हसद और दोज़ख़ का अ़ज़ाब

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया छठी औ़रत को मैंने देखा कि उसकी शक्ल कुत्ते जैसी थी और वह आवाज़ ऐसे निकालती जैसे कुत्ता भौंक रहा होता है। और आग उसके मुँह में से दाख़िल होती थी और उसके पाख़ाने की जगह से बाहर निकल रही थी। इसी

तरह मैंने उसे देखा कि फ़रिश्ते उसे गुर्ज़ (एक हथियार जो ऊपर से मोटा और गोल होता है और नीचे से पतला होता है) मार रहे हैं। पूछा ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! इसने ऐसा कौनसा क़सूर किया? फ़रमाया उसके अन्दर हसद (दूसरे से जलना) बहुत ज़्यादा था। वह दूसरों से हसद करती थी।

आजकल औ़रतों में हसद की बीमारी बहुत ज़्यादा है। मर्दों में भी है मगर औ़रतों में दो हाथ और ज़्यादा है। ये दूसरों के माल दौलत पर हसद करती हैं। अह्ल व अ़याल (बाल-बच्चों) पर हसद करती हैं। हुस्न व जमाल (ख़ूबसूरती) पर हसद करती हैं। ख़ूबियों व कमाल पर हसद करती हैं। दूसरों का अच्छा उनसे देखा नहीं जा सकता। अन्दर ही अन्दर जलती रहती हैं।

किसी को कोई नेमत मिले इनके दिल पर बोझ होता है, ये हसद की बात है। यह हसद इनसान की नेकियों को ऐसे खा जाता है जैसे आग सूखी लकड़ी को खा जाती है।

तो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि आप इन छह चीज़ों पर अच्छी तरह ग़ौर कर लें और फिर देखें कि कौनसे गुनाह मैं करती हूँ। ऐसा तो नहीं कि मैं जहन्नम में सर के बल लटकी हूँगी, ज़बान के बल लटकी हूँगी, छातियों के बल लटकी हूँगी, जहन्नम के अन्दर हाथ-पाँव बंधे हुए होंगे और गुर्ज़ (एक हथियार जो ऊपर से मोटा और गोल होता है और नीचे से पतला होता है) लग रहे होंगे। मेरी शक्ल सुअर की बनी हुई होगी या मेरी शक्ल कुत्ते की बनी होगी।

हम इन गुनाहों को बैठकर सोचें और फिर अल्लाह तआ़ला से माफ़ी माँगें। आज वक़्त है सुलह करने का, हम माफ़ी माँगेंगे परवर्दिगार हमें माफ़ फ़रमा देंगे। और अगर आज माफ़ी न माँगी तो फिर क़ियामत के दिन जितना चाहेंगे रोयेंगे अल्लाह तआ़ला हमारी तरफ़ ध्यान ही नहीं देंगे, तवज्जोह ही नहीं करेंगे। बात ही नहीं करेंगे।

ईमान की हिफ़ाज़त सबसे ज़रूरी

अपनी हिफ़ाज़त और अपने ईमान की हिफ़ाज़त बहुत ज़रूरी है। औरतों को देखा है कि ये बहुत सी बार कुफ़्र के कलिमात बोल जाती हैं और आ़लिमों से सीखती भी नहीं, किताबों में पढ़ती भी नहीं। दीन का शौक़ इतना नहीं कि उनको सीखें और अपने ईमान की हिफ़ाज़त करें।

अगर ईमान की हिफ़ाज़त ही का उनको शौक़ हो जाए, आमाल का शौक़ हो जाए तो फिर क्या ही ख़ूब बात है। इसलिए ऐसे कलिमात कह जाती हैं कि जिसकी वजह से बहुत सी बार ईमान ही छीन लिया जाता है। अगर ईमान छिन गया फिर तो हमेशा-हमेशा जहन्नम में ही रहना पड़ेगा।

सच्ची तौबा कीजिए

इसलिए हमें चाहिए कि हम सच्ची तौबा करके नये सिरे से मुसलमान बन जायें और अपने रब की नेमतों को सामने रखें। अब सोचिए कि एक जन्नत में जाने वाले लोग हैं जिनके रहने-सहने की बातें आपके सामने बयान हो चुकीं। (१) एक जहन्नम में सज़ा पाने वाले हैं। कुरआन फ़रमा रहा है:

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ٥ (سورة مريم)

जन्नती लोगों को अल्लाह तआ़ला सवारियों पर बैठाकर जन्नत में ले जायेंगे।

और जहन्नमियों के बारे में फ़रमाया:

وَنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ٥ (سورة مريم)

जहन्नमियों को प्यासा हाँक कर जैसे जानवरों को लेजाया जाता है

(१) जन्नत में जाने वालों का बयान और उनकी सिफ़तों का बयान मौलाना जुल्-फ़क़ार फ़क़ीर की तक़रीर "जन्नत के नज़ारे" में है। जिसको पढ़ा जा सकता है। मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

उनको इस तरह हाँक कर जहन्नम में डाला जाएगा।

जन्नतियों के बारे में फ़रमायाः

وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا (سورة دهر)

उनका परवर्दिगार उनको शराबे-तहूर पिलाएगा।

और फ़रमाएगाः

اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۝ (سورة دهر)

यह बदला है जो तुमने नेक आमाल किये।

और जहन्नमियों के बारे में फ़रमायाः

وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ، بِئْسَ الشَّرَابُ

(سورة الكهف)

यानी अगर वे पानी माँगेंगे तो उनको खोलता हुआ पानी पीने को दिया जायेगा जो उनके चेहरों को झुलसा देगा।

इतना बुरा मश्रूब (पीने की चीज़) पीने के लिए दिया जाएगा तो ज़िन्दगियों में कितना फ़र्क़ होगा।

अब हम फ़ैसला कर लें कि हम किस तरह जाना चाहते हैं। जो ईमान से ख़ाली जायेंगे वे क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला से बात करने की कोशिश करेंगे।

जहन्नमी हज़ारों साल रोयेंगे

रिवायत में आता है कि जहन्नमी हज़ारों साल रोयेंगे यहाँ तक कि एक-दूसरे के सामने क़तार बना कर बैठेंगे और जिस तरह कुत्ते भौंकते हैं उस तरह भौंकना शुरू कर देंगे।

कई हज़ार साल तक रोने की वजह से उनकी आवाज़ें कुत्तों की भौंकनों की सी बन जायेंगी। अल्लाह तआ़ला फिर भी उन पर रहम नहीं फ़रमायेंगे बल्कि कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन और मुनाफ़िक़ीन के बारे में फ़रमाया कि ये अल्लाह तआ़ला से कहेंगे कि ऐ अल्लाह! हमें यहाँ से

निकाल दीजिए मगर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त उनको चन्द बार जवाब देंगे। जहन्नमी लोग पाँच बार अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त से फ़रियाद करेंगे। सुनिये ज़रा क़ुरआनी आयतें सुन लीजिए कि उनकी क्या हम-कलामी होगी। जहन्नमी कहेंगे:

رَبَّنَـــا أَمَتَّـنَـا اثْـنَتَيْـنِ وَاَحْيَيْتَـنَـا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ○ (سورة المومن)

ऐ अल्लाह! हमें दो बार ज़िन्दगी मिली मौत मिल गई। ऐ अल्लाह हमने अपने क़ुसूरों का एतिराफ़ (इक़रार) कर लिया। ऐ अल्लाह! क्या कोई बाहर निकलने का रास्ता है?

अल्लाह तआला फ़रमायेंगे:

ذَالِـكُمْ بِاَنَّهٗ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ ، كَفَرْتُمْ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا،فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ○ (سورة المومن)

जब तुम्हें एक अल्लाह की तरफ़ बुलाया जाता था तो तुम शिर्क करते थे, तुम इसका इनकार करते थे। और जब शिर्क किया जाता था तो मान लेते थे। आज तो हुक्म अल्लाह बड़ी शान वाले का है।

फिर कुछ अ़र्से के बाद दोबारा हम-कलामी करेंगे कहेंगे:

رَبَّنَـآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ○ (سورة الم سجدة)

ऐ अल्लाह! हमने देख लिया सुन लिया। ऐ अल्लाह! हमें वापस दुनिया में भेज दीजिए अब हम नेक काम करेंगे।

अल्लाह तआला फ़रमायेंगे:

فَذُوْقُـوْا بِـمَـا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَآ اِنَّا نَسِيْـنٰـكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ○ (سورة الم سجدة)

चुनाँचे तुम आज के दिन को भूल गये थे, हमने तुम्हें भुला दिया, अब चखो यह दर्दनाक अ़ज़ाब।

अब तीसरी बार कई हज़ार साल के बाद हम-कलामी करेंगे।

कहेंगे:

رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ (سورة ابراهيم)

ऐ परवर्दिगार! हमें निकाल दीजिए हम दुनिया में जायेंगे तो आपके रसूलों की दावत को क़बूल करके उनकी पैरवी करेंगे।

फ़रमाया जाएगा:

اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَالَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۝ (سورة ابراهيم)

क्या हमने तुम्हें पहले यह नहीं बता दिया था? तुम क़समें खाते थे कि ये नेमतें हमसे कभी ख़त्म नहीं होंगी।

फिर कई हज़ार साल के बाद चौथी बार यह बात करेंगे और कहेंगे:

رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِىْ كُنَّا نَعْمَلُ (سورة فاطر)

ऐ अल्लाह! आम हमको निकाल दीजिए। हम अच्छे काम करेंगे, ऐसे नहीं जैसे पहले किया करते थे।

अल्लाह तआला की तरफ़ से इरशाद होगा:

اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ (سورة فاطر)

क्या हमने तुम्हें ज़िन्दगी नहीं दी थी? और तुम्हें नसीहत नहीं की थी कि तुम मान लो और तुम्हारे पास हमारे अम्बिया (पैग़म्बर) डराने वाले भी आए थे। मगर तुमने तो कान ही न धरे।

आख़िरकार कई हज़ार साल के बाद पाँचवीं बार फिर फ़रियाद करेंगे और बड़े अजीब अलफ़ाज़ में कहेंगे:

رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ۝ (سورة المومنون)

ऐ अल्लाह! हमें इसमें से निकाल दीजिए। ऐ अल्लाह! अगर हम लौटकर फिर बुरे काम करेंगे तो वाक़ई हम ज़ालिम होंगे।

अल्लाह तआला जवाब में फ़रमायेंगे:

قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ۝ (سورة المومنون)

पड़े रहो धुतकारे हुए उसी में, मैं तुमसे कलाम नहीं करना

चाहता।

जैसे गुस्से में कोई कहता है कि मैं तुम्हारी शक्ल नहीं देखना चाहता Shut up मुझसे बात न करो। अल्लाह तआला इसी तरह फ़रमायेंगे: पड़े रहो फिटकारे हुए उसी में। ख़बरदार! मुझसे बात न करो। लिहाज़ा इसके बाद अल्लाह तआला उनसे कभी भी कलाम नहीं करेंगे।

अल्लाह तआला फिर इस फ़रीक़ के बारे में फ़रमाते हैं:

اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِىْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْلَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ۝ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِىْ (سورة المومنون)

मेरे बन्दों का एक ऐसा गिरोह था जिन्होंने कहा कि हम अपने रब पर ईमान ले आए। तुमने उनके साथ मज़ाक़ (ठट्ठा) बनाया। उनसे मज़ाक़ करते थे। यहाँ तक कि तुम मेरे ज़िक्र को भूल गये।

आज जो बच्चियाँ पर्दा करना शुरू कर देती हैं, दूसरी उन पर ठट्ठे करती हैं। मज़ाक़ उड़ाती हैं। अल्लाह फ़रमायेंगे:

كُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ۝ اِنِّىْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ۝

(سورة المومنون)

तुम उनका मज़ाक़ उड़ाते थे। आज उनके सब्र का मैंने उनको बदला दिया और वे हैं जो आज निजात पाने वाले हैं। कामयाबियाँ पाने वाले हैं।

लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम जन्नत को अल्लाह से तलब करें, जहन्नम से माफ़ी माँगें। अल्लाह तआला क़ुरआन पाक में फ़रमाते हैं:

اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِى النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِىْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ (سورة حم السجدة)

ज़रा बताओ तो सही जिसको आग के अन्दर डाल दिया जाए वह बेहतर है या वह जिसको क़ियामत के दिन अल्लाह तआला अमन अता फ़रमायेंगे?

तो सच्ची बात तो यह है कि जिसको क़ियामत के दिन अमन

मिल गया, मग़फ़िरत मिल गई वही खुशनसीब है। अल्लाह तआ़ला हमें जन्नत की नेमतें अ़ता फ़रमा दे। आमीन।

जन्नत में जाने वाली औ़रत का सम्मान

एक बात ज़ेहन में रखना। अगर आप अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त से जन्नत का मकान माँगेगी तो आपको फ़क़त मकान ही नहीं मिलेगा, उस मकान में आपको सब नेमतें मिल जायेंगी।

जो भी जन्नती औ़रत होगी वह शफ़ाअ़त करेगी। उसका गुनाहगार शौहर भी जन्नत में जायेगा। वह बैटे-बेटियों के बारे में भी सिफ़ारिश करेगी। बेटे-बेटियाँ भी जन्नत में जायेंगे। माँ-बाप के बारे में शफ़ाअ़त करेगी, गुनाहगार माँ-बाप भी जन्नत में जायेंगे। वह किसी और रिश्तेदार के बारे में शफ़ाअ़त करेगी। वह भी जन्नत में जायेगा।

तो सिर्फ़ जन्नत का मकान ही नहीं मिलेगा। जन्नत में आप अपनों के साथ मिलकर रहेंगी।

जहन्नम में तन्हाई की ज़िन्दगी, जन्नत में अपने सब रिश्तेदारों के साथ ज़िन्दगी। सोचिए! औ़रत को महल-नुमा मकान मिलें, बाग़ात हों, सब नेमतें हों और फिर माँ-बाप, बहन भाई, बच्चे, शौहर सब पास हों तो फिर ज़िन्दगी का क्या मज़ा होता है। यह ज़िन्दगी मिलेगी अगर हमने जन्नत में अल्लाह तआ़ला से अपने लिए मकान माँगा। इसी लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि यह दुआ़ माँगोः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ (الحديث)

अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलुकल्-जन्न-त व अऊ़ज़ु बि-क मिनन्नारि

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से जन्नत को तलब करता / करती हूँ और मैं आप से जहन्नम की आग से पनाह माँगता / माँगती हूँ।

हमें चाहिए कि हम अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त से जन्नत को तलब

करें। औरत तो वैसे ही घर वाली होती है, दुनिया में अगर उसका घर न हो तो यह अपने आपको बेसहारा (असहाय) जानती है। अगर उसका जन्नत में घर न हुआ तो फिर क़ियामत के दिन कहाँ धक्के खाती फिरेगी और कहाँ यह सज़ा बरदाश्त करती फिरेगी।

जहन्नमी मर्द व औरतों के अज़ाब की हल्की सी झलक

हदीस पाक का मफ़्हूम है। जहन्नम के अन्दर जो औरतें और मर्द होंगे। उनके ऊपर बादल आयेंगे, नीचे से फ़रिश्ते गुर्ज़ मार रहे होंगे। बादलों में से बिजली के कड़कने की आवाज़ें आयेंगी। आज ज़रा तसव्वुर करके देखिए अगर कभी आसमान पर बादल हों और बिजली ज़्यादा कड़क रही हो तो औरतों के दिल पर ख़ौफ़ आ जाता है। बच्चों पर ख़ौफ़ आ जाता है। बादलों के गरजने की आवाज़ से।

तो जहन्नम में भी ऐसा होगा कि फ़रिश्ते गुर्ज़ (एक हथियार जो ऊपर से मोटा और गोल होता है और नीचे से पतला होता है) मार रहे होंगे, उनके दाँत लम्बे-लम्बे होंठों से बाहर निकले होंगे। उनके नाख़ून बड़े-बड़े होंगे और उनके नथनों से आग की लपटें निकल रही होंगी और उनकी आँखें सुर्ख़ होंगी जिससे वे गुस्से से देख रहे होंगे। अव्वल तो इतनी डरावनी शक्ल सामने आ जाए तो औरत का पित्ता पानी हो जाए। अब जहन्नम में ऐसे फ़रिश्तों के हाथों में गुर्ज़ (एक हथियार जो ऊपर से मोटा और गोल होता है और नीचे से पतला होता है) होंगे और वे गुर्ज़ से पिटाई कर रहे होंगे।

एक वक़्त में यह कई होंगे और यह बालों के बल, ज़बान के बल और छातियों के बल लटकी हुई होंगी। ऊपर से बादल आयेंगे और बादलों में से बिजली के गरजने की आवाज़ें आयेंगी। जब बादल गरजेंगे तो फिर सोचिए दिल का क्या हाल होगा। जहन्नम में उसको

इस क़द्र अ़ज़ाब मिलेगा यहाँ तक कि एक ऐसा मौक़ा आएगा कि ये पानी माँगेगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे मैं इन बादलों को बरसा दूँ? ये कहेंगे ज़रूर बरसा दीजिए।

अल्लाह तआ़ला बादलों को हुक्म देंगे मगर उनमें से पानी के बजाये बिच्छू गिरेंगे और जहन्नमियों के जिस्म से लिपट जायेंगे और उनको काटेंगे उनकी तकलीफ़ और ज़्यादा बढ़ जाएगी। एक तरफ़ तो जहन्नम की यह हालत है।

जन्नत में क्या होगा?

जन्नत में इनसान अपने ऐश व आराम में होगा, सुकून में होगा। अल्लाह की महफ़िलें मिलेंगी अल्लाह का दीदार मिलेगा। नबियों का दीदार मिलेगा। नेक लोगों का साथ होगा। खाने होंगे, फल होंगे, खुशबूयें होंगी और यह वह ज़िन्दगी है जो कभी से वापस नहीं ली जाएगी।

सच्ची बात यह है कि हम जन्नत के मोहताज हैं, जहन्नम से बचना हमारी ज़रूरत है। इसलिए हमें फ़ैसला कर लेना चाहिए। दुनिया की थोड़े दिन की ज़िन्दगी है। हम हर गुनाह से बचेंगे और हर नेकी का काम करेंगे। अपनी ज़िन्दगी के रुख़ को बदलेंगे हमने दुनिया में चन्द दिन बेपर्दगी की ज़िन्दगी गुज़ार भी दी, टी. वी. ड्रामे देख भी लिए। नाच गाने कर भी लिए और आख़िरकार जहन्नम में जा पहुँचे तो हमने कितना बुरा सौदा किया।

इसलिए इन तमाम गुनाहों से बचिये। नेकी की ज़िन्दगी को इख़्तियार कर लीजिए ताकि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन जन्नत अ़ता फ़रमा दें। जिस औ़रत को जन्नत का मकान मिल गया उसे सब खुशियाँ मिल गईं। इसी लिए बीबी आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने भी अल्लाह से जन्नत में मकान माँगा था। सुब्हानल्लाह!

हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा और उनकी नौकरानी का दीन पर मज़बूती से जमे रहने का

ईमान-अफ़रोज़ वाक़िआ

हदीस पाक का मफ़्हूम है कि फ़िरऔ़न के घर में एक 'मश्शाता' (प्रसाधिका) थी जिसको 'हेयर ड्रेसर' कहते हैं। जो बाल बनाती है। कंघी करती है। फ़िरऔ़न के घर की जो बच्चियाँ थीं वह उनके बाल संवारने के लिए रखी गई थी।

एक दिन फ़िरऔ़न की नौजवान बेटी नहाई और वह अपने बाल बनवा रही थी और गुदवा रही थी और वह 'मश्शाता' (बालों में कंघी करने वाली) उसके साथ बैठी हुई उसके बालों में कंघी कर रही थी। उसके हाथों से कंघी नीचे गिर गई। उसने कंघी उठाते हुए अल्लाह का नाम लिया कि मैं मूसा अ़लैहिस्सलाम के रब पर ईमान लाई।

जब ये अलफ़ाज़ उसकी जवान लड़की ने सुने जो फ़िरऔ़न की कमबख़्त बेटी थी। उसने कहा तू मेरे बाप को खुदा नहीं मानती? उसने कहा हरगिज़ नहीं। मैं तो मूसा अ़लैहिस्सलाम के रब को मानती हूँ।

चुनाँचे वह उसी वक़्त उठ गई। गुस्से में बाल भी न बनवाये। अपने बाप फ़िरऔ़न के पास पहुँची और जाकर कहने लगीः अब्बू हमारे घर में, हमारे महल में ऐसी औ़रतें हैं जो आपको खुदा नहीं मानतीं। हमारा दिया खाती हैं और हमारी ही मुख़ालिफ़ हैं, दुश्मन हैं।

फ़िरऔ़न को बड़ा ही गुस्सा आया। कहने लगा अच्छा मैं अभी उन्हें सीधा कर देता हूँ। फ़िरऔ़न ने ताज सर पर रखा, दरबार लगवा लिया। उस ख़ादिमा (नौकरानी) को बुला लिया और नौकरों से कहा कि इसे ज़मीन पर लिटा दो। उस बेचारी को ज़मीन पर लिटा दिया गया।

उसके दोनों हाथों और दोनों पाँव के अन्दर कील गाड़ कर ज़मीन के अन्दर धंसा दिये गये। गोया उसके हाथ और पाँव हिल नहीं सकते थे।

उस औरत से कहा गया कि तुम अपनी इस बात से वापस लौट आओ। वह कहने लगी हरगिज़ नहीं! मुझे ईमान का वह मज़ा मिल गया कि अब मैं वापस नहीं आ सकती। फ़िरऔन ने कहा मेरे पास तेरा इलाज है, मैं तेरा इलाज करता हूँ। कौनसा इलाज? उसने कहा इलाज यह है कि तेरी चन्द माह की दूध पीती बच्ची है, मैं उसे बुलवाता हूँ। चुनाँचे उसने क्या किया कि उस ख़ादिमा के सीने से कपड़े हटवा दिये और बच्ची को लाकर उसके सीने पर लिटा दिया।

मासूम बच्ची जब माँ के सीने पर लिपटी तो उसने माँ के पिस्तानों से दूध पीना शुरू कर दिया। अब सारा दरबार देख रहा है। मासूम बच्ची माँ के पिस्तान से लगी दूध पी रही है। फ़िरऔन कहने लगा मैं तेरी बच्ची को तेरे सीने पर ज़िबह करूँगा। यह तड़पेगी, इसका ख़ून तेरे सीने पर बहेगा वरना तू मेरी बात को मान ले। वह कहने लगी हरगिज़ नहीं! ईमान इतना क़ीमती है कि मैं यह कुरबानी दे दूँगी लेकिन खुद ईमान से नहीं हट सकती।

चुनाँचे फ़िरऔन ने क्या किया कि उसकी बेटी को क़त्ल करने का हुक्म दिया। ऐसे ज़ालिम थे। एक ने ख़न्जर मारा गर्दन के ऊपर और ज़िबह कर दिया। गर्दन को उसके जिस्म से जुदा कर दिया। नाज़ुक फूल सी बच्ची माँ के सीने पर तड़पने लगी। माँ के सीने पर ख़ून का फुव्वारा छूटा। सोचिए माँ पर क्या गुज़री होगी। आख़िरकार जब बच्ची ठंडी हो गई तो वह कहने लगा: बात मानती हो कि नहीं? उसने कहा कि नहीं मानती। कहने लगा अच्छा तुम्हारा और इलाज करता हूँ।

फ़िरऔन ने बड़े-बड़े बिच्छू पलवाए हुए थे। जिनसे वह दुश्मनों को सज़ायें देता था। उसने कहा इस औरत के नंगे बदन पर सब बिच्छू डाल दिये जायें। चुनाँचे बिच्छू डाल दिए गये। उसके जिस्म पर

हज़ारों बिच्छुओं ने डसा और काटने लगे। उस औरत को इतनी तकलीफ़ हुई कि मछली की तरह तड़पने लगी और इसी ज़हर की वजह से उस बेचारी की मौत आ गई। वह शहीद हो गयी।

जब फ़िरऔन ने देखा कि यह भी ठंडा हो चुकी। फ़िरऔन घर आया अपनी बीवी आसिया को कहने लगा कि आसिया! तुमने देखा मैंने ऐसी औरत का क्या हश्र किया जो मूसा अ़लैहिस्सलाम के खुदा पर ईमान लाई। मैंने उसको यूँ मरवाया उसकी बेटी को सीने पर ज़िबह करवाया।

बीबी आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा खुद भी ईमान ला चुकी थीं। बीबी आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा कहने लगी तू मर्दूद है, ज़ालिम है तूने एक मासूम बच्ची की जान ली और एक माँ की जान ली। मासूम बच्ची को ज़िबह किया। तू कितना बद्बख़्त इनसान है। फ़िरऔन को अपनी बीवी आसिया के हुस्न व जमाल (ख़ूबसूरती) की वजह से बड़ी मुहब्बत थी। बीबी आसिया को अल्लाह ने हूरों जैसा हुस्न व जमाल अ़ता किया था। फ़िरऔन ने पूरी क़ौम में से चुनकर जो उस वक़्त की विश्व सुन्दरी (Miss Universe) थी, उसके साथ निकाह किया था। तो बीबी आसिया इतनी ख़ूबसूरत थीं। उनके ऊपर यह जान छिड़कता था, इश्क़ करता था।

उनको भी पता था कि उसको उनसे कितना ताल्लुक़ है, लेकिन उनके दिल में उसके बारे में नफ़रत आ चुकी थी। वह कहने लगीं तू कितना बद्बख़्त है तूने मासूम बच्ची की जान ली। फ़िरऔन ने यह सुना तो कहने लगा: आसिया! क्या तू मुझे खुदा नहीं मानती? वह कहने लगीं तुझे हरगिज़ ख़ुदा नहीं मानती, मैं तो मूसा अ़लैहिस्सलाम के परवर्दिगार पर ईमान ला चुकी हूँ।

जब उसने यह सुना तो उसका दिमाग़ उबलने लगा। कहने लगा अच्छा फिर देख मैं तेरा क्या हश्र करता हूँ। वह कहने लगीं:

فاقض ما أنت قاض (سورة طه)

तू जो कर सकता है वह कर ले। मैं भी अब हरगिज़ पीछे नहीं हटूँगी।

फ़िरऔ़न वापस लौटकर दरबार में आया और दरबार में आकर उसने हुक्म दिया कि मेरी मलिका (रानी) को दरबार में लाया जाए। चुनाँचे उनको हथकड़ियाँ लगाकर दरबार में लाया गया। दरबार के लोग हैरान थे कि जिस औ़रत के हाथ का इशारा देखने के लिए सैकड़ों सेविकाएँ महल में होती थीं, जिसके इशारे को हर वक़्त पूरा कर दिया जाता था, आज वह मुल्ज़िमा बनकर दरबार में पेश हो रही है।

फ़िरऔ़न के हुक्म पर वह सामने लायी गयीं। जो दरबारी लोग थे वे इज़्ज़त की वजह से उनके चेहरे को देखते नहीं थे। आज यह सबके सामने मुल्ज़िमा बनकर खड़ी हैं। फ़िरऔ़न ने कहाः आसिया! तुम मेरी बीवी हो, मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ। इस मुहब्बत की लाज रख लो। तुम मुझ पर ईमान ले आओ।

वह कहने लगीं हरगिज़ नहीं! फ़िरऔ़न को और गुस्सा आया। कहने लगा मैं तुम्हें सबके सामने रुस्वा कर दूँगा। कहने लगीं जो तू चाहता है कर, मैं भी पीछे नहीं हटूँगी। फ़िरऔ़न को इतना गुस्सा आया, कहने लगा इसके जिस्म से पोशाक उतार दो, इसको सबके सामने नंगा कर दो।

अब सोचिए किसी मर्द को कह दिया जाए कि तुझे सबके सामने नंगा कर देंगे उसका जी चाहेगा कि ज़मीन फट जाए और मैं उसके अन्दर उतर जाऊँ। औ़रत तो फिर भी हया वाली होती है। हया की पुतली होती है। उसके अन्दर हया (शर्म) कूट-कूटकर भरी होती है।

अब औ़रत को कहा जा रहा है कि सारे दरबारियों के सामने तुझे बेलिबास (नंगा) कर देंगे। मगर एक तरफ़ ईमान था, ईमान की क़ीमत ज़्यादा होती है। बीबी आसिया ने कहाः मैं हरगिज़ पीछे नहीं हटूँगी। चुनाँचे उनके सर से कपड़े उतार लिए गये। जिस्म से कपड़े उतार लिए गये। बिल्कुल बेलिबास बर्हना हालत में यह खड़ी हैं। सारे दरबारियों

की नज़र उनके जिस्म पर पड़ रही है। फ़िरऔन ने कहा देख मैंने तुझे कैसा रुस्वा किया। अब भी तू नहीं मानती तो मैं तुझे ज़्यादा अज़ाब दूँगा।

वह कहने लगीं अब तो मैंने फ़ैसला कर लिया कि जो तू चाहता है कर ले, मैं भी अब पीछे नहीं हटूँगी।

फ़िरऔन ने कहा इसको भी चौमेख़ा कर दिया जाए। दोनों हाथों और दोनों पाँव के अन्दर कीलें गाड़ दी जायें और ज़मीन के ऊपर लिटा कर वे कीलें ज़मीन के अन्दर गाड़ दी जायें। फ़िरऔन ने कहा मगर इसको ऐसी तरह लिटाना कि इसकी आँखों के सामने मेरा महल रहे और इसको पता चले कि मैंने महल की ज़िन्दगी को ठोकर लगायी और यह नेमत मुझसे छिन गयी। चुनाँचे फ़िरऔन के कहने पर बीबी आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा को इस तरह लिटाया गया कि उनकी आँखों के सामने महल था। ताकि उनको यह एहसास रहे कि मुझे इस महल से निकाल दिया गया। मैं इस महल से मेहरूम हो गई और उनके हाथ-पाँव को कीलें लगा दी गयीं।

फ़िरऔन ने कहा कि क्या तू अब भी मानती है? अब भी मैं तुझे माफ़ करने के लिये तैयार हूँ। उन्होंने कहाः हरगिज़ नहीं! चुनाँचे फ़िरऔन ने लोगों को हुक्म दिया कि आओ और इसके जिस्म से ज़िन्दा हालत में खाल उतार दो। चुनाँचे लोग उस्तुरे और चाकू जो ख़ास और तेज़ किस्म के बने हुए थे, वे लेकर आये। बड़े बेरहम थे। उन्होंने ज़िन्दा हालत में बीबी आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा की खाल उतारनी शुरू कर दी।

अब ज़रा सोचिए तो सही कि ज़िन्दा हालत में! बेहोश भी नहीं किया गया। ऐसे में किसी की खाल उतारी जा रही हो तो जिस्म को कितनी तकलीफ़ होती है। बीबी आसिया नंगी हालत में लेटी हैं सामने महल है खाल उतर रही है लेकिन ईमान बड़ी क़ीमती चीज़ है। उनकी तवज्जोह अल्लाह की तरफ़ है।

जब जिस्म से खाल उतारी गयी, यह अ़जीब बात किताबों में लिखी है कि जिस्म से खाल उतार दी गयी लेकिन अभी उनकी जान में जान बाक़ी थी। अभी मौत नहीं आई थी। अगर जिस्म से खाल उतर जाए और हवा भी लगे तो जिस्म को तकलीफ़ होती है। यह भी तड़प रही थीं। सामने महल था।

फ़िरऔ़न ने कहा अब आख़िरी मौक़ा है, अब अगर तुम नहीं मानती तो मैं तुम्हारे ज़ख़्मों पर मिर्चें डाल दूँगा तो और ज़्यादा तकलीफ़ होगी। उन्होंने कहा हरगिज़ नहीं! मैं पीछे नहीं हटूँगी। चुनाँचे फ़िरऔ़न ने इशारा किया। उनके पूरे जिस्म पर जहाँ से खाल उतर चुकी थी मिर्चें छिड़क दी गईं। यह दर्द की वजह से मछली की तरह तड़पने लग गयीं।

उस वक़्त उनकी नज़र महल पर पड़ी कि यह वह महल है जहाँ से इसने मुझे निकाला। उन्होंने अपने रब से दुआ़ की। क़ुरआन ने उस दुआ़ को बयान फ़रमाया है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ (سورة التحريم)

ऐ अल्लाह! यह फ़िरऔ़न कमीना मुझे इस महल से निकाल चुका और कहता है कि तुम मेहरूम हो गईं। ऐ अल्लाह! मुझे महल नहीं चाहिए। ऐ अल्लाह! मुझे अपने पास जन्नत में घर अ़ता कर दीजिए।

सोचिए औ़रत घर अल्लाह से माँगती है। सबसे पहली चीज़ उसको घर चाहिए। वह घर माँगती है। सर छुपाने के लिए जगह मिल जाए। चुनाँचे बीबी आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने भी वह दुआ़ माँगी "ऐ अल्लाह! जन्नत में अपने पड़ोस में घर अ़ता कर दीजिए। और ऐ अल्लाह मुझे फ़िरऔ़न और इस ज़ालिम क़ौम से निजात अ़ता फ़रमाईय।"

चुनाँचे अल्लाह ने उनकी दुआ़ को क़बूल कर लिया और आख़िरकार उन्होंने तड़प-तड़प कर जान दे दी। अब ज़रा अगली बात सुन लीजिए। इन दोनों औ़रतों ने ईमान की ख़ातिर क़ुरबानी दी और

अल्लाह से जो माँगा उन्हें मिला, लेकिन अल्लाह ने उनकी उम्मीदों से बढ़कर दिया।

हदीस पाक में आता है कि अल्लाह तआ़ला ने इस ख़ादिमा (नौकरानी) की इतनी क़द्रदानी फ़रमाई कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब मेराज के लिए तशरीफ़ ले जाने लगे तो रास्ते में एक जगह पर उनको बहुत ख़ुशबू आई। पूछा जिब्राईल! यह ख़ुशबू कैसी है? जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! यहाँ उस ख़ादिमा की क़ब्र है जो फ़िरऔ़न के बाल बनाया करती थी और वह शहीद हो गई थी। उसकी क़ब्र से ऐसी ख़ुशबूएँ उठ रही हैं।

ऐ अल्लाह के नबी! आप भी महसूस कर रहे हैं? सोचिए तो सही जिसने अल्लाह के नाम पर जान दी उसके लिये अल्लाह ने क़ब्र को जन्नत का ऐसा बाग़ बनाया, क़ब्र से ख़ुशबूएँ उठ रही हैं, अल्लाह के महबूब ने वे ख़ुशबूएँ महसूस कर लीं।

दूसरी रिवायत में आता है कि जब हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया, उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने इज़्हार किया कि मेरी हालत अब बिगड़ती जा रही है। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया ख़दीजा! आप जन्नत में जाओगी तो वहाँ जाकर मेरी बीवियों को सलाम कह देना।

हज़रत ख़दीजा बड़ी हैरान हुईं। अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! दुनिया में तो मैं आपकी पहली बीवी हूँ आपकी जन्नत में कौनसी बीवियाँ हैं? नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ऐ ख़दीजा! अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने बीबी मरियम रज़ियल्लाहु अ़न्हा और बीबी आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा को जन्नत में मेरी बीवियाँ बना दिया। तुम जाओगी तो उनको मेरा सलाम कह देना।

अब अल्लाह की क़द्रदानी देखिए कि बीबी आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अल्लाह से घर माँगा था, तो अल्लाह कितना करीम है,

कितना मेहरबान है, उस बन्दी की क़ुरबानी को क़बूल कर लिया और घर वाला अपनी मर्ज़ी से बना दिया। बीबी आसिया! तूने कितना नफ़े का सौदा किया। फ़िरऔ़न की बीवी थी अल्लाह ने उस ज़ालिम से बचा लिया, उस बद्बख़्त से तुझे बचा लिया। और दोनों जहान के सरदार नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तुझे बीवी बना दिया।

तो औ़रत ने अल्लाह से घर माँगा, अल्लाह ने अपनी ख़ुशी से घर वाला भी अ़ता कर दिया। बिल्कुल इसी तरह आप भी अल्लाह तआ़ला से घर माँगें अल्लाह घर अ़ता फ़रमायेंगे। और इस दुआ़ की बरकत से अल्लाह आपके शौहर की भी बख़्शिश कर देंगे ताकि आपको अपना घर वाला भी मिल जाए। आपके बच्चों की भी बख़्शिश कर देंगे ताकि आप अपने बच्चों के साथ रहें। माँ-बाप की भी बख़्शिश कर देंगे। बहन-भाईयों की भी बख़्शिश कर देंगे।

जब इन सब की बख़्शिश हो जाएगी और आप जन्नत में अपने घर में होंगी तो सोचें कि आपको उस ज़िन्दगी का कितना मज़ा आएगा। फिर अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त का दीदार हुआ करेगा, अल्लाह की दावतें हुआ करेंगी। सुब्हानल्लाह!

अल्लाह तआ़ला हमें अपनी पसन्दीदा जगह जन्नत अ़ता फ़रमा दें। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

कबीरा गुनाहों की सूची

मुख़्तसर तौर पर हम हाफ़िज़ ज़हबी की किताब से कबीरा (बड़े-बड़े) गुनाहों की फ़ेहरिस्त (सूची) लिखते हैं:

१. शिर्क और शिर्क के अलावा वे अक़ीदे और आमाल जिन से कुफ़्र लाज़िम आता है। (कुफ़्र व शिर्क की कभी मग़फ़िरत न होगी। इसको अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम के अन्दर बिल्कुल स्पष्ट तौर पर बयान फ़रमाया है)।

२. किसी बेगुनाह जान को जान-बूझकर क़त्ल करना।

३. जादू करना।

४. फ़र्ज़ नमाज़ को छोड़ना या वक़्त से पहले पढ़ना।

५. ज़कात न देना।

६. बिना शरई छूट के रमज़ान शरीफ़ का कोई रोज़ा छोड़ना या रमज़ान का रोज़ा रखकर बिना किसी उज़्र और मजबूरी के तोड़ देना।

७. फ़र्ज़ होते हुए हज किये बग़ैर मर जाना।

८. माँ-बाप को तकलीफ़ देना और उन बातों में उनकी नाफ़रमानी करना जिनमें उनका हुक्म मानना वाजिब है।

९. रिश्तेदारों से रिश्ता और संबन्ध ख़त्म करना।

१०. ज़िना करना।

११. ग़ैर-फ़ितरी (यानी क़ुदरत के बनाये नियम के ख़िलाफ़) तरीक़े पर औरत से सोहबत (संभोग) करना या किसी मर्द या लड़के से बदफ़ेली करना।

१२. सूद का लेन-देन करना, या सूद का लिखने वाला या गवाह बनना।

१३. ज़ालिमाना तरीक़े पर किसी यतीम का माल खाना।

१४. अल्लाह पर या उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर झूठ बोलना।

१५. मैदाने जिहाद से भागना।

१६. जो 'इक़्तिदारे-आला' (किसी बड़े ओहदे) पर हो, उसका रईयत और अपने मातेहतों को धोखा देना और ख़ियानत करना।

१७. तकब्बुर करना।

१८. झूटी गवाही देना या किसी का हक़ मारा जा रहा हो तो जानते हुए गवाही न देना।

१६. शराब पीना या कोई नशे वाली चीज़ खाना पीना।

२०. जुआ खेलना।

२१. किसी पाकदामन औ़रत को तोहमत लगाना।

२२. माले-ग़नीमत में ख़ियानत करना।

२३. चोरी करना।

२४. डाका मारना।

२५. झूटी क़सम खाना।

२६. किसी भी तरह से ज़ुल्म करना (मार पीटकर हो या ज़ालिमाना तरीक़े पर माल लेने से हो या गाली-गलौज करने से हो)।

२७. टैंक्स वसूल करना

२८. हराम माल खाना पीना या पहनना, या ख़र्च करना।

२६. खुदकुशी (आत्महत्या) करना या अपना कोई जिस्मानी अंग काट देना।

३०. झूट बोलना।

३१. शरीअ़त के क़ानून के ख़िलाफ़ फ़ैसले करना।

३२. रिश्वत लेना।

३३. औ़रतों का मर्दों की या मर्दों का औ़रतों की मुशाबहत (शक्ल व सूरत और तौर-तरीक़ा) इख़्तियार करना (जिसमें दाढ़ी मूँडना भी शामिल है)।

३४. अपने अहल व अ़याल (बाल-बच्चों और घर वालों) में गन्दे और अश्लील काम या बेहयाई होते हुए दूर करने की फ़िक्र न करना।

३५. तीन तलाक़ दी हुई औ़रत के पुराने शौहर का हलाला करवाना और उसके लिए हलाला करके देना।

३६. बदन या कपड़ों में पेशाब लगने से एहतियात न करना।

३७. दिखावे के लिए आमाल करना।

३८. दुनिया कमाने के लिए दीन का इल्म हासिल करना और दीन की बात को छुपाना।

३९. ख़ियानत करना।

४०. किसी के साथ अच्छा सुलूक या कोई भलाई करके एहसान जिताना।

४१. तक़दीर को झुठलाना।

४२. लोगों के ख़ुफ़िया हालात की टोह लगाना, जासूसी करना और कन्सूई लेना।

४३. चुग़ली खाना।

४४. लानत बकना।

४५. धोखा देना और जो अ़हद किया हो उसको पूरा न करना।

४६. काहिन और मुनज्जिम (ग़ैब की ख़बरें बताने वाले) की तस्दीक़ (यानी उसकी बात का यक़ीन और पुष्टी) करना।

४७. शौहर की नाफ़रमानी करना।

४८. तस्वीर बनाना या घर में लटकाना।

४९. किसी की मौत पर नौहा करना, मुँह पीटना, कपड़े फाड़ना, सिर मुँडाना, हलाकत की दुआ़ करना।

५०. सरकशी करना, अल्लाह का बाग़ी होना, मुसलमानों को तकलीफ़ देना।

५१. मख़्लूक़ पर हाथ उठाना।

५२. पड़ोसी को तकलीफ़ देना।

५३. मुसलमानों को तकलीफ़ देना और उनको बुरा कहना।

५४. ख़ास कर अल्लाह के नेक बन्दों को तकलीफ़ देना।

५५. टख़्ने पर या इससे नीचे कोई कपड़ा पहना हुआ लटकाना।

५६. मर्द को रेशम और सोना पहनना।

५७. गुलाम का आक़ा से भाग जाना।

५८. अल्लाह के अ़लावा किसी और के लिए ज़िबह करना।

५६. जानते बूझते हुए अपने बाप को छोड़कर किसी दूसरे को बाप बना लेना। यानी यह दावा करना कि फ़लाँ मेरा बाप है हालाँकि वह उसका बाप नहीं।

६०. फ़साद के तौर पर लड़ाई झगड़ा करना।

६१. (ज़रूरत के वक़्त) बचा हुआ पानी दूसरों को न देना।

६२. नाप-तौल में कमी करना।

६३. अल्लाह की पकड़ से बेख़ौफ़ हो जाना।

६४. औलिया-अल्लाह (अल्लाह के नेक बन्दों) को तकलीफ़ देना।

६५. नमाज़ बा-जमाअ़त की पाबन्दी न करना।

६६. बग़ैर शरई उज़्र के जुमे की नमाज़ छोड़ देना।

६७. ऐसी वसीयत करना जिससे किसी वारिस को नुक़सान पहुँचाना मक़सूद हो।

६८. मक्र करना और धोखा देना।

६६. मुसलमानों के पोशीदा हालात की टोह लगाना और उनकी पोशीदा चीज़ों को ज़ाहिर करना।

७०. किसी सहाबी (नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथी) को गाली देना।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

गुनाहों से बचिये

अल्लाह का प्यारा बनिये

بسم الله الرحمن الرحيم ○ الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد!

اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً، وَسَآءَ سَبِيْلًا○ (سورة بنى اسرآئيل)

سبحن ربك رب العزة عما يصفون ○ وسلام على المرسلين○ والحمد لله رب العالمين ○ اللّٰهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم.

नौजवानों के जज़्बात व एहसासात

बच्चों की तर्बियत (पालन-पोषण और उनकी सही दीनी तालीम व रहनुमाई) के उनवान से बात-चीत हो रही थी। जब बच्चे नौजवान हो जाते हैं तो ये ज़िन्दगी के एक नये दौर में दाख़िल हो जाते हैं। इनकी अपनी सोचें होती हैं, एहसासात होते हैं। अपने जज़्बात होते हैं।

जिस तरह उनको खाना पीना, सोना, इसकी ज़रूरत महसूस होती है। इसी तरह उनको अपनी सैक्सी ज़रूरतों को पूरा करने की भी ज़रूरत महसूस होती है। शरीअ़त व सुन्नत ने इसका बेहतरीन हल (समाधान) यह बताया कि जब भी बच्ची के जोड़ का शौहर मिल जाए फ़ौरन उसकी शादी कर दी जाए।

हमारे बुज़ुर्गों ने इस बारे में इतनी एहतियात की हैं कि जैसे ही उन्हें पता चलता कि बच्ची घर में जवान हो गई तो एक से दूसरा महीना अपने घर में नहीं आने देते कि उसकी रुख़्सती करके फ़रीज़ा अदा कर देते थे। इसलिए कि किताबों में लिखा है कि जवान होने के बाद बेटी की अगर शादी न हुई तो वह जो गुनाह का काम भी करेगी, वह माँ-बाप के आमाल-नामे में भी लिखा जाएगा।

आज तो हालत ऐसी है कि दहेज़ की तैयारियों में और इधर-उधर की तैयारियों में इतनी देर लगा देते हैं कि एक बेटी की शादी कर रहे होते हैं और उससे नीचे की तीन बेटियाँ भी जवान हो रही होती हैं।

अब ऐसी सूरत में कि जब बच्चे जवान हो गये और उनको दस-पन्द्रह साल फिर माँ-बाप के घर रहना पड़ा तो इस दौरान तो फिर वही गुनाह से बचेगी जो या तो ग़बिय्या होगी या फिर अल्लाह की वलिय्या होगी। ग़बिय्या कहते हैं कि जिसका दिमाग़ काम न करता हो। पागल सी हो और वलिय्या कहते हैं कि जिसके सीने को अल्लाह ने विलायत के नूर से रोशन कर दिया हो। इन दोनों के दरमियान में जो कोई है उसका गुनाह से बचना बहुत मुश्किल है। इसलिए कि शैतान गुनाह की तरफ़ लाता है और इनसान का अपना नफ़्स गुनाह की तरफ़ खींचता है।

अ़स्मत व पाकदामनी की हिफ़ाज़त पर अज्र

कुछ लोग होते हैं जो इनसान की शक्ल में शैतान के नुमाईन्दे होते हैं। वे अपने क्लासफ़ेलो (सहपाठी) हों, अपने क़रीब के रिश्तेदार हों या अजनबी ग़ैर-मेहरम हों। वे भी गुनाह की तरफ़ दावत देते हैं। फिर रेडियो, टी. वी. गाना मौसीक़ी, वीडियो और इन्टरनेट के ऊपर चैटिंग, इसने जलती पर तेल का काम कर दिया। ऐसी सूरतेहाल में जब उस नौजवान बच्ची को हर तरफ़ गुनाहों की कशिश खींचती है तो फिर

उसकी सोचों में फ़र्क़ आना शुरू हो जाता है।

हया (शर्म) एक क़ुदरती और फ़ितरती चीज़ है जो अल्लाह ने औ़रत में रखी है। उसके लिए फिर हया और पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारना मुश्किल होता है। उसको अपने अन्दर एक जंग करनी पड़ती है। अब खुशनसीब बच्चियाँ उस जंग को समझती हैं कि हम जिहाद कर रही हैं। मर्द दुश्मन के सामने मैदाने-जंग में जाकर जिहाद करते हैं और बच्चियाँ अपने घरों में रहकर अपने नफ़्स के साथ जिहाद कर रही होती हैं। उनको इधर-उधर से गुनाह की दावतें मिलती हैं मगर वे समझती हैं कि अगर हमने अपनी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त कर ली तो अल्लाह की नज़र में हम विजयी होंगी। जिस तरह मुजाहिद अगर जंग में फ़तह पाए तो ग़ाज़ी (विजयी) बनता है। इसी तरह अगर बच्ची अपनी इज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त कर गई तो वह अल्लाह की नज़र में ग़ाज़िया (विजयी) होगी।

तो मर्दों का जिहाद मैदाने-जंग में है। औ़रत का जिहाद चौबीस घँटे अपने घर में रहते हुए अपने नफ़्स के साथ है। मर्द का जिहाद खुला होता है सबके सामने होता है, नौजवान बच्ची का जिहाद छुपा हुआ होता है। वह किसी को बता भी नहीं सकती, किसी के सामने अपने दिल के राज़ खोल भी नहीं सकती कि कहाँ-कहाँ से शैतान उस पर हमला करता है। नफ़्स उसको कहाँ-कहाँ जाल में फंसाने की कोशिश करता है। बस वह अपने रब के सामने फ़रियाद कर सकती है और अपने आपके साथ जिहाद कर सकती है ताकि वह उसमें कामयाब हो जाए।

बहनों के पल्ले बाँधने की बात

यह बात ज़ेहन में रखना, औ़रत की हर ग़लती माफ़ हो जाया करती है लेकिन किरदार (चरित्र) की ग़लती कभी माफ़ नहीं हुआ करती। इसलिए औ़रत की तरबियत (पालन-पोषण, सभ्यता और

शिष्टाचार की शिक्षा) में अगर कोई और कमी रह गयी कि ज़बान-दराज़ है, गुस्से की तेज़ है, ज़िद्दी है, कामचोर है, लापरवाह है, सुस्त है, इस क़िस्म की उसकी तमाम कमज़ोरियाँ बरदाश्त आसानी से कर ली जाती हैं, लेकिन उसके किरदार (चरित्र) की कमज़ोरियाँ बरदाश्त करने के लिए कोई तैयार नहीं होता। इसलिए जवान बच्चियों के लिए अपनी इज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त करना यह सबसे बड़ा काम है। अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने जहाँ क़ुरआन मजीद में चोरी का तज़किरा किया वहाँ फ़रमायाः

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْآ اَيْدِيَهُمَا (سورة المائدة)

चोरी करने वाले मर्द और चोरी करने वाली औरत, इन दोनों के हाथों को काट दिया जाए।

तो मर्द का तज़किरा पहले और औरत का तज़किरा बाद में, लेकिन जहाँ ज़िना का तज़किरा आया वहाँ अल्लाह तआला ने औरत का तज़किरा पहले कियाः

اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِىْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ (سورة النور)

ज़िना करने वाली औरत और ज़िना करने वाला मर्द, इन दोनों को सौ-सौ कोड़े मारे जायें। (अगर वे शादीशुदा न हों)।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि जब तक औरत खुद ढील न दे खुद मौक़ा मुहैया न करे मर्द कोशिश के बावजूद उसकी इज़्ज़त व नामूस पर हाथ नहीं डाल सकता।

चोरी करना मर्दानगी के ज़्यादा ख़िलाफ़ था इसलिए वहाँ पर मर्द का तज़किरा पहले किया। ज़िना करना हया के ख़िलाफ़ है और हया औरत में ज़्यादा होती है इसलिए यहाँ औरत का तज़किरा पहले किया।

इ़ज़्ज़त व अ़स्मत के रोशन चिराग़ की हिफ़ाज़त कैसे?

लिहाज़ा जवान बच्ची के लिए दुनिया में सब से बड़ा काम अपनी इ़ज़्ज़त की हिफ़ाज़त करना है। उसको यूँ महसूस होना चाहिए कि हर ग़ैर-आदमी मेरी तरफ़ लालच की नज़र रखता है। और मुझे अपने आपको खुद बचाना है। जिस तरह चिराग़ जल रहा हो तो हवा के झोंकों से उसे खुद बचाया जाता है, नहीं बचायेंगे तो कोई थपेड़ा आएगा चिराग़ गुल कर जाएगा।

इसी तरह बच्ची समझे कि मेरी इ़ज़्ज़त व अ़स्मत का चिराग़ जल रहा है। आँधियों से, हवाओं से उसे मुझे बचाना है। अगर मैंने ग़फ़लत की तो कोई थपेड़ा लगेगा और मेरी इ़ज़्ज़त का चिराग़ गुल हो जाएगा। यह औ़रत का दुनिया के अन्दर रहते हुए सबसे बड़ा काम होता है कि वह अपनी इ़ज़्ज़त व अ़स्मत की हिफ़ाज़त करे।

एक अन्धे की क़ीमती नसीहत

एक़ अन्धे के बारे में एक वाकिआ़ इस आ़जिज़ ने पहले भी सुनाया। कि रात का वक़्त था उसे पानी लाने की ज़रूरत पड़ी, कहीं दूर से, उसने पानी का घड़ा अपने सर पर रखा और लाते हुए उसने एक हाथ में चिराग़ जलाकर पकड़ा हुआ था। अब देखने वाले बड़े हैरान! कहने लगे आप तो नाबीना (अन्धे) हो आपको इस रोशनी से फ़ायदा तो कोई नहीं। आप तो अपने अन्दाज़े के मुताबिक़ रास्तों के ऊपर चलते हो। अब आपको तो रोशनी की ज़रूरत ही नहीं।

उसने कहा बिल्कुल ठीक है मुझे रोशनी की ज़रूरत नहीं, लेकिन रात का अन्धेरा है आँखों वाले जब अन्धेरे में चलते हैं तो उनको सही पता नहीं चलता, मैंने चिराग़ जलाकर इसलिए पकड़ लिया कि कहीं

कोई आँखों वाला मुझसे न टकराये और उसकी वजह से मेरा घड़ा न टूट जाए।

अन्धा कितना समझदार था कि उसने चिराग़ इसलिए पकड़ा था कि दूसरे लोग रास्ते को देखें और मुझसे मत टकरायें। इसलिए कि अगर टकरायेंगे तो नुक़सान तो मेरा होगा। जवान औरत को भी यही सोच रखनी चाहिये कि अगर मैं बेपर्दा बाहर निकली, अगर किसी ग़ैर-मेहरम ने देख लिया और उसकी नज़र में फ़तूर आ गया, अगर मैंने किसी के साथ तन्हाई में बातें कीं, अगर मैंने किसी के साथ टेलीफ़ोन पर बातें करना शुरू कर दीं और ज़रा सा भी किसी को मौक़ा दिया तो इज़्ज़त तो मेरी ख़राब होगी। दुनिया की भी बदनामी और अल्लाह के यहाँ की भी नाराज़गी, और मैं इस जिहाद में फिर नाकाम हो जाऊँगी। और अपने रब को क्या मुँह दिखाऊँगी। इसलिए उसको इन बातों का ख़्याल रखना चाहिए।

औरत का घर में रहते हुए सबसे बड़ा काम

अज़्वाजे-मुतह्हरात रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्-न (नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक बीवियों) के बारे में आया है कि इतनी एहतियात करती थीं कि जब कभी सेहन (आँगन) के अन्दर फ़ारिग़ बैठी होतीं, कोई तस्बीह वग़ैरह पढ़ रही होतीं तो खुले सेहन की तरफ़ चेहरा नहीं करती थीं बल्कि दीवार की तरफ़ चेहरा करके बैठती थीं कि मुम्किन है ग़लती से भी किसी की नज़र पड़ने की संभावना न हो।

अब सोचिए कि अपने घर में बैठी हुई औरत सेहन की तरफ़ चेहरा करके इसलिए नहीं बैठती कि मुम्किन है कि दरवाज़ा खुले या कोई और ऐसी सूरत बन जाए, ग़लती से भी किसी की नज़र न पड़े। तो वे बैठती भी थीं तो दीवार की तरफ़ अपना चेहरा करके बैठती थीं। ताकि किसी की नज़र पड़ने का सवाल ही पैदा न हो।

मालूम हुआ कि यह औरत की ज़िम्मेदारी होती है। उसका कर्तव्य

होता है। उसका दुनिया में रहते हुए सबसे बड़ा काम यह होता है कि वह अपनी इ़ज़्ज़त व अ़स्मत की हिफ़ाज़त करे। अगर उसकी इ़ज़्ज़त लुट गई तो उसका सब कुछ लुट गया। उसके पल्ले कुछ न बचा। इसलिए औ़रत को इस मामले में ज़रूरत से ज़्यादा मोहतात (चौकन्ना, एहतियात करने वाली) होने की ज़रूरत है।

एक मुसल्लमा हक़ीक़त की तरफ़ तवज्जोह

एक उसूल ज़ेहन में रख लें। अफ़सोस के साथ मुझे कहना पड़ रहा है कि मर्द हमेशा मौक़ा-परस्त (**Opportunist**) होते हैं। यह तयशुदा बात है। आज़माई हुई बात है आपको इसे आज़माने की ज़रूरत नहीं।

उसूल बना लें कि मर्द हमेशा मौक़ा-परस्त होते हैं औ़रत के मामले में मर्द अट्ठारह साल का जवान हो या अस्सी साल का बूढ़ा हो, सबकी हालत एक जैसी होती है। जब बेपर्दा औ़रत निकलती है तो एक ही वक़्त में उसको जवान बेटा भी लालच की नज़र से देख रहा होता है और उसका सफ़ेद बालों वाला बाप भी उस लड़की को लालच की नज़र से देख रहा होता है।

औ़रत, मर्द की एक कमज़ोरी है इसलिए नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे अपनी उम्मत के मर्दों पर सबसे ज़्यादा जिस चीज़ का ख़तरा है वह औ़रत का फ़ितना है। इसलिए यह औ़रत की ज़िम्मेदारी है कि वह अपने आपको बचाये। शरीअ़त ने मर्दों को भी कहा कि वे अपनी निगाहों का लिहाज़ करें ख़्याल रखें। औ़रत को भी कहा कि वे भी अपनी निगाहों का ख़्याला रखें।

आजकल की जवान बच्चियाँ समझती हैं कि नज़रों को नीचे करना तो मर्द का काम है, वे क्यों हमारी तरफ़ देखते हैं। और इस चीज़ को भूल जाती हैं कि उनमें भी नफ़्स है और उनके साथ भी शैतान है। उनकी नज़र भी अगर ग़ैर-मर्द पर पड़ेगी तो उनके लिये भी

फ़ितने में पड़ने का ख़तरा है। कुरआन मजीद में फ़रमायाः

اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ (سورة الاحزاب)

कि पर्दे में रहना बीबियो! यह उन मर्दों के दिलों के लिए भी पाकीज़गी के लिए अच्छा है और तुम्हारे दिलों की पाकीज़गी के लिए भी अच्छा है।

तो दिलों के भेद जानने वाले अल्लाह ने फ़ैसला फ़रमा दिया कि जब भी इनसान नज़र की कोताही करता है तो मर्द के अन्दर भी इससे गुनाह आता है और औ़रत के दिल में भी गुनाह के ख़्यालात आते हैं। लिहाज़ा किसी को राबिया बसरी बनने की ज़रूरत नहीं। कुरआन मजीद की तालीमात को क़बूल करने की ज़रूरत है और इस बात को मान लेना चाहिए कि औ़रत के लिए भी अपनी नज़र की हिफ़ाज़त करना ज़रूरी है, मर्द के लिए भी अपनी नज़र की हिफ़ाज़त करना ज़रूरी है।

इसलिये मर्द को भी मना किया गया और औ़रत को भी मना किया गया। तो जवान बच्ची के लिए दुनिया का सबसे बड़ा अहम काम और फ़र्ज़ उसका अपनी इ़ज़्ज़त व अ़स्मत की हिफ़ाज़त है।

एक असरदार मिसाल

मिसाल सुनिये। फ़र्ज़ करो कि आपके पास दस हज़ार डॉलर हैं और आप हज के लिए सफ़र कर रही हैं। तो क्या ख़्याल है आप अपने उस पैसे को किसी आ़म शापर के अन्दर डालकर सफ़र करती फिरेंगी? नहीं! आप उसे ताले (Lock) में रखेंगी। छुपाकर रखेंगी कि आप अगर हरम शरीफ़ जायें और पीछे कोई आपके कमरे में आ भी जाए सफ़ाई करने वाला तो वह भी आपकी इस रक़म को न देख सके।

जब आपको अपनी रक़म के रखने का इतना ख़्याल है कि उसे Locked key में यानी ताले के अन्दर रखने के बावजूद भी ऐसी

जगह छुपा के रखती हैं कि ढूँढ़ने वाला भी न ढूँढ़ पाए तो इज़्ज़त व अ़स्मत तो इससे भी बहुत ज़्यादा क़ीमती है। आप अपने आपको भी इसी तरह मर्दों से छुपाकर रखें कि अगर किसी की नीयत में फ़तूर भी हो तो उसका हाथ आप तक पहुँच न पाए।

इसलिए शरीअ़त ने हमें हया और पाकदामनी की तालीम दी। इस क़द्र पाकदामनी की तालीम दी कि शरीअ़त ने हुक्म दिया कि औ़रत अगर कंघी करे और उसके कुछ बाल टूट जायें तो उन टूटे हुए बालों को भी आ़म जगहों पर न डाले, मुम्किन है किसी ग़ैर-मर्द की नज़र पड़ जाए और यही बाल उसके लिए औ़रत की तरफ़ मैलान का सबब बन जायें।

तो जो शरीअ़त औ़रत के जिस्म से टूटे हुए बालों की भी बेपर्दगी को पसन्द नहीं करती वह ज़िन्दा औ़रत की बेपर्दगी कैसे पसन्द करेगी? जिस शरीअ़त ने यह हुक्म दिया कि औ़रत अगर मर जाए तो उसका जनाज़ा जब क़ब्र में उतारा जाने लगे तो सिर्फ़ क़रीब के लोग (यानी क़रीबी रिश्तेदार) उतारें। ग़ैर-मेहरम मर्द भी उसको हाथ लगाने से परहेज़ करे। तो फिर ज़िन्दगी में जीते-जागते शरीअ़त कैसे पसन्द करेगी कि यह औ़रत अपने आपको किसी ग़ैर के हवाले करे।

इसलिए यह एक बहुत अहम उनवान है और आजकल चूँकि नंगापन आ़म है। अश्लीलता आ़म है और हम एक ऐसे माहौल में रहते हैं कि जहाँ पर मुसलमान भी हैं, ग़ैर-मुस्लिम भी हैं, और ग़ैर-मुस्लिमों के नज़दीक चूँकि किसी को कोई अहमियत ही नहीं। इसलिए वे आधे नंगे जिस्मों के साथ चलते-फिरते हैं। तो मुसलमान बच्चियाँ भी धोखे में आ जाती हैं।

नज़र और दिल को पाक रखना इज़्ज़त की हिफ़ाज़त का ज़रिया

याद रखना मुसलमान हया (शर्म) वाला होता है। इसलिए

फ़रमायाः

الحياء شعبة من الايمان

हया (शर्म) ईमान का शुअ़बा (हिस्सा और क्षेत्र) है।

और एक जगह फ़रमायाः

اذا فاتك الحياء فافعل ما شئتَ

जब तुझसे हया रुख़्सत हो गयी फिर जो चाहे करता फिर।

तो हया एक नेमत है जो अल्लाह ने औ़रत के अन्दर कूट-कूटकर भरी होती है। यह फ़ितरत है औ़रत की कि वह हयादार होती है। जिस औ़रत से हया चली गयी वह यूँ समझ ले कि मुझसे अल्लाह की नेमत छिन गई। न उसके लिए दुनिया में इ़ज़्ज़त है और न उसके लिए आख़िरत में इ़ज़्ज़त है।

इसलिए अपनी निगाहों को पाक रखना अपने दिलों को साफ़ रखना अपने नामूस और इ़ज़्ज़त की हिफ़ाज़त करना यह हर औ़रत के फ़राईज़ में से सबसे बड़ा फ़रीज़ा होता है। जैसे आप गाड़ी चला रही हैं। तो गाड़ी आप इतनी एहतियात से चलाती हैं कि आपको पता होता है कि सामने से आने वाली गाड़ियाँ हो सकता है वे मुझे टक्कर मारें तो मुझे अपनी गाड़ी को बचाना है। इसी तरह आप यूँ समझिये कि हर गुज़रने वाला मर्द आपकी इ़ज़्ज़त व अ़स्मत के साथ टकरा सकता है। अपनी इ़ज़्ज़त की गाड़ी बचाना यह आपकी ज़िम्मेदारी है।

ड्राईवर कभी ग़ाफ़िल नहीं होता कि मैं तो चलता रहूँ दूसरों को चाहिए कि वे दुर्घटना से अपने आपको बचायें। नहीं! ख़ुद ड्राईवर अपने आपको बचाता है कि हादसे न होने पायें। इसी तरह जवान बच्ची को अपने आपको ख़ुद बचाना है कि कहीं कोई हादसा न होने पाये। शरीअ़त ने इसकी शुरूआ़त ही ऐसे कर दी।

ख़तरे की घन्टी

फ़रमाया कि मख़्लूत (मर्द औ़रत की मिली-जुली) महफ़िलों से

परहेज़ करो। ऐसी महफ़िलों से मना फ़रमा दिया। चुनाँचे औरत सिर्फ़ उन मर्दों के सामने आ सकती है जो मेहरम कहलाते हैं। जहाँ हया का रिश्ता है। जहाँ जिन्सी हवसनाकियाँ ख़त्म हो जाती हैं। उल्फ़तें, मुहब्बतें सच्ची होती हैं। जैसे बाप का रिश्ता, भाई का रिश्ता, बेटे का रिश्ता, ये मेहरम रिश्ते हैं। और जहाँ इससे एक क़दम आगे बढ़ा और निगाहों में लालच आ जाता है, हिर्स आ जाती है। हवस आ जाती है। शरीअ़त ने वहाँ पर्दे का हुक्म दे दिया।

इसलिए कई ग़ैर-मेहरम जो घरों में रहते हैं उनसे भी बचने का हुक्म दिया। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देवर के बारे में फ़रमाया कि 'देवर तो मौत है'। अब यह ऐसा ग़ैर-मेहरम होता है कि रहता भी क़रीब है और होता भी ग़ैर-मेहरम है, और औ़रत के लिए अपने आपको बचाकर रखना यह इन्तिहाई अहम होता है। इसका आसान तरीक़ा यह है कि ग़ैर-मेहरम से जहाँ तक हो सके बात ही न करें।

बच्चियाँ यह दस्तूर बना लें, उसूल बना लें कि उन्हें ग़ैर-मर्द से बात करने की ज़रूरत ही पेश न आए। मौक़ा ही न आए ग़ैर-मेहरम से बात करने का। वे इस क़दम से अपने आपको रोकें कि न तो ग़ैर-मेहरम को देखना है और न ग़ैर-मेहरम को अपना जिस्म देखने का मौक़ा देना है, और न उससे बात करनी है। इसलिए क़ि जब बात करने का मौक़ा मिलता है तो फिर शैतान को दरमियान में अपनी हरकत करने का मौक़ा मिल गया।

जहन्नमी फ़ोन

एक रिवायत में आता है कि जब भी कोई ग़ैर-मेहरम एक दूसरे से बात करते हैं तो शैतान उन दोनों के दिलों में एक दूसरे की तरफ़ रग़बत पैदा कर देता है। एक दूसरे की तरफ़ मैलान पैदा कर देता है। तो शैतान को दरमियान में बिचोलिया बनकर काम करने का मौक़ा

मिल जाता है। इसलिए ऐसा मौक़ा ही न आए कि कहीं ग़ैर-मेहरम को ख़त लिखना पड़े, टेलीफ़ोन पर बात करनी पड़े, या आमने सामने बात करनी पड़े। ऐसा मौक़ा ही नहीं आना चाहिए। इस मौक़े से जो बच्ची बच गई उसने अपनी इ़ज़्ज़त को बचा लिया।

आजकल इन मुल्कों में एक नई मुसीबत देखने में आ रही है कि बच्चियाँ अपने माँ-बाप की इजाज़त से अपने पास सेलफ़ोन रख लेती हैं। एक मुल्क से अभी यह आ़जिज़ होकर आया, वहाँ पर यह सुना कि 90% से ज़्यादा जवान बच्चियों के पास सेलफ़ोन होते हैं। स्कूलों में भी अपने बस्तों में रखे होते हैं।

अब सेलफ़ोन पर वे क्या करती हैं कि उनको कॉलें आ रही हैं अपने कज़िनों की, अपने क्लासफ़ेलों की, यह सेलफ़ोन नहीं हक़ीक़त में उस बच्ची के हाथ में Hill Phone है। उसको सेलफ़ोन नहीं कहना चाहिए Hill Phone कहना चाहिए। यह जहन्नम का फ़ोन है उसके हाथ में, और उसको जहन्नम से कॉलें आ रही हैं कि तुम जल्दी मेरे अन्दर आओ मैं तुम्हारे लिए तैयार बैठी हूँ।

याद रखना कि औ़रत की सबसे बड़ी ग़लती यह होती है कि वह ग़ैर-मेहरम को बात करने का मौक़ा देती है। क़ुरआन मजीद ने इस रास्ते को इस तरह बन्द किया। फ़रमायाः

فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ

कि अगर कभी कोई बात करने का मौक़ा ही बन जाए। ज़रूरत ही ऐसी पेश आ गई तो औ़रत को चाहिए कि वह अपनी आवाज़ में नर्मी न रखे, सख़्ती के अन्दाज़ में बात करे।

अब सख़्ती से मुराद बद्तमीज़ी नहीं, सख़्ती से मुराद यह है कि जो बात ज़रूरी है वह कर ले और ग़ैरज़रूरी बात का मौक़ा ही न दे।

रूखे अन्दाज़ से बात करना

रूखेपन से बात करना। जो औ़रत रूखेपन से ग़ैर-मर्द से बात

करेगी उस मर्द को जुर्रत ही नहीं होगी कि वह एक बात से दूसरी बात कह सके। और अगर बात करते हुए सारी दुनिया की मिठास ज़बान में सिमट आएगी और प्यार मुहब्बत के अन्दाज़ में नर्म बातें की जायेंगी तो कुरआन मजीद ने फ़ैसला दे दिया कि ऐसा न हो कि वह आदमी अपने दिल में लालच कर बैठे जिसके दिल में बीमारी हो।

मर्दों के दिलों में शहवत (कामवासना) और मर्ज़ तो होता ही है। ज़रा किसी ने नर्म बात की आवाज़ पसन्द आ गई, लहजा पसन्द आ गया। और कुछ भी नहीं तो मर्द के ज़ेहन में इतना ख़्याल आ गया कि यह औरत खुद बात करने का मौक़ा दे रही है तो मर्द खुद आगे क़दम बढ़ाएगा। इसलिए कि उसको तो मौके की तलाश होती है। मैंने तो पहले अर्ज़ किया कि सबके सब मर्द मौक़ा- परस्त होते हैं, इल्ला माशा-अल्लाह। अल्लाह जिसकी हिफ़ाज़त करे। जिसके दिल में औलिया का नूर हो, बस वह है कि जो इस फ़ितने से बचता है। वरना इस मामले में सबके सब मर्द एक जैसे होते हैं।

तो शरीअत ने कहा कि जब बात करने का मौक़ा मिले तो आप बात ही ज़रा रूखे अन्दाज़ से कीजिए। कई बार बच्चियों के ज़ेहन में यह बात आती है और वे एक दूसरे से बातें करती हैं कि बस मैं तो ज़रा फ़ोन पर बात कर लेती हूँ मैंने तो कभी उसे देखा भी नहीं। यह बहुत बड़ा शैतान का फन्दा है। जब आप किसी से बात करने पर आमादा हुईं तो फिर अगले काम सब आसान हो जायेंगे।

देखिए तमाम अम्बिया में से किसी ने यह दुआ नहीं माँगी कि ऐ अल्लाह! मैं अपको देखना चाहता हूँ। मैं आप से मुलाक़ात करना चाहता हूँ। सिर्फ़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ऐसे हैं कि जिनके बारे में कुरआन पाक में यह फ़रमाया कि ऐ अल्लाह! मैं आपका दीदार करना चाहता हूँ।

मुफ़स्सिरीन ने इसकी वजह लिखी कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कलीमुल्लाह थे, उनको अल्लाह तआला से हम-कलामी (बातचीत) का

मौक़ा मिलता था। और यह दस्तूर है कि जब किसी को हम-कलामी का मौक़ा मिलेगा तो अगला क़दम होगा कि एक दूसरे को देखने को दिल करेगा। तो कुरआन से यह बात साबित हो रही है कि अगर आपने फ़ोन पर बात करने की इजाज़त दे दी तो अगला क़दम फिर मुलाक़ात का होगा। और जब मुलाक़ात होती है तो फिर हिजाबात (पर्दे और झिझक) सबके सब हट जाया करते हैं।

न तू ख़ुदा है न मेरा इश्क़ फ़रिश्तों जैसा
दोनों इनसाँ हैं तो क्यों इतने हिजाबों में मिलें

फिर सब हिजाब उतर जाते हैं और इनसान को एहसास ही नहीं होता। पता तब चलता है जब गुनाह हो चुका होता है। इसलिए इसको शुरू से ही रोकिये।

और यह ज़ेहन में सोचना कि फ़लाँ की शक्ल ऐसी है फ़लाँ की शख़्सियत (personality) में बड़ी कशिश (Grace) है। इन्तिहाई बेवकूफ़ी की बात है। इसलिए कि जब अल्लाह तआ़ला ने इनसान के मुक़द्दर में यह चीज़ लिख दी कि उसको जवान होना है, फिर उसकी शादी होनी है, तो इनसान अपने वक़्त का इन्तिज़ार करे। हर चीज़ अपने वक़्त पर अच्छी लगती है। जो इनसान वक़्त से पहले गुनाहों के ज़रिये अपनी ज़रूरतें पूरी करने लगता है फिर उसकी ज़िन्दगी के अन्दर परेशानियाँ आती हैं। कोई आदमी आप दुनिया के अन्दर ऐसा नहीं दिखा सकते कि जिसने ज़िना वाले गुनाह को अपनाया हो और ख़ुशियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारी हो। बल्कि यह अगर किसी से बात करने भी लगती हैं तो हज़ार ख़तरे, बहन से छुपाओ, अम्मी से छुपाओ, भाई से छुपाओ, अब्बू से छुपाओ किसी को पता न चलने पाए।

एक गुनाह क्या किया हर वक़्त की मुसीबत ख़रीद ली। अब उस गुनाह को छुपाने के लिए उनको क़दम-क़दम पर झूठ बोलने पड़ते हैं। बहाने बनाने पड़ते हैं। बात-चीत का मौक़ा निकालने के लिए यह झूठ

और ग़लत बयानी के ज़रिये मौक़ा पैदा करती हैं, किया तो एक गुनाह है लेकिन उसने सैकड़ों गुनाहों के रास्ते खोल दिये। और कई बार तो झूठी क़समें खायी जाती हैं अपने ऐबों को छुपाने के लिए।

गुनाह का अन्जाम

चुनाँचे एक बच्ची ने ख़त लिखकर किसी मुल्क में से फ़तवा पूछा कि मैं किसी के साथ गुनाह में मुलव्वस (लिप्त) होती थी और मेरी अम्मी को पता चल गया और उसने मुझे एक बार सख़्त डाँटा और कहा तूने ऐसी हरकत क्यों की? मैंने उसको यक़ीन दिलाने के लिए क़सम खायी लेकिन उसने कहा कि मैं तुम्हारी क़सम पर भी एतिबार नहीं करती। आख़िरकार बच्ची ने यहाँ तक कह दिया कि अगर मेरे उसके साथ ताल्लुक़ात हों तो मुझे मरते वक़्त कलिमा नसीब न हो।

अब माँ के सामने तो शर्मिन्दगी से वक़्ती तौर पर अपने आपको बचा लिया। बाद में उसको एहसास हुआ कि मेरा हश्र क्या होगा। उस बच्ची ने ख़त लिखा, हज़रत! मुझे मसला समझायें। मैं न दीन की रही न दुनिया की रही, अब मेरा अन्जाम क्या होगा। यह सब किस लिए हुआ कि उसने एक ग़लत रास्ते पर क़दम उठाया। अन्जाम ईमान की तबाही निकला।

तो जब एक रास्ता है ही ख़तरनाक तो क्यों इनसान उसमें क़दम उठाए। अगर आपके सामने एक सौ टाफ़ियाँ रख दी जायें और यह कह दिया जाए कि इनमें से एक में ज़हर है बाक़ी निन्नानवे ठीक हैं। आप खा लीजिए। आप एक को भी हाथ नहीं लगायेंगी। क्यों? आप कहेंगी मेरी जान का ख़तरा है।

ऐ बेटी! तुझे जान का ख़तरा है तू एक फ़ीसद भी रिस्क नहीं लेना चाहती, उन सौ टाफ़ियों में से एक भी नहीं लेना चाहती, जहाँ तेरी इज़्ज़त का ख़तरा हो वहाँ तू क्यों रिस्क लेती (ख़तरा उठाती) है? क्यों और क़दम आगे बढ़ाती है? वहाँ भी तो हमें सौ फ़ीसद मोहतात

(एहतियात करने वाली) रहना चाहिए ताकि हमारी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त रहे।

इज़्ज़त व अ़स्मत की हिफ़ाज़त पर इनाम

क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला आप से पूछेंगे कि आपने अपनी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त क्यों नहीं की। इसलिए जवान बच्चियों को चाहिए कि वे महसूस करें कि हमारे लिए ज़िन्दगी में एक जिहाद का वक़्त होता है और वह क्या है वह है अपनी इज़्ज़त व अ़स्मत की हिफ़ाज़त करना। इसी लिए जो औ़रत अपनी इज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त करेगी और उसकी हिफ़ाज़त करते हुए अगर उसको मौत भी आई तो शरीअ़त ने कहा कि जो लड़की अपनी इज़्ज़त बचाते हुए मर जाएगी, उसको अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन शहीदों की क़तार में खड़ा फ़रमायेंगे। तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त भी बड़े क़द्रदान हैं और एक हदीस में यह फ़रमाया कि अगर किसी को किसी ने गुनाह की दावत दी और उसने जवाब में कहा कि मैं अल्लाह से डरती हूँ और गुनाह की तरफ़ क़दम न उठाया तो अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसको अपने अ़र्श का साया अ़ता फ़रमायेंगे। अब ये नेमतें क्यों मिल रही हैं? इसलिए कि उसने अपने आपको गुनाहों से बचाया।

एक बात और भी ज़ेहन में रखिए और इसको अच्छी तरह समझने की कोशिश कीजिए कि इनसान की ज़िन्दगी में हर चीज़ का एक कोटा है। साँसों का कोटा कि पूरी ज़िन्दगी में कितने साँस लेने हैं। फिर इनसान को जितने लुक़्मे खाने हैं उनका कोटा, जितने घूँट पानी पीने हैं उनका कोटा, जितने लम्हे ज़िन्दगी के गुज़ारने हैं उनका कोटा। हर चीज़ का एक कोटा मुतैयन है।

इसी तरह इनसान को अपनी ज़िन्दगी में कितनी बार उसकी जिन्सी (सैक्सी) ज़रूरतें पूरी होंगी, इसका भी एक कोटा है। अब जिसने शरीअ़त की हदों से बाहर क़दम निकाल कर इस इच्छा को पूरा

करने की कोशिश की उसके नतीजे में अल्लाह तआला उसको हलाल ज़रूरियात से मेहरूम फ़रमा देंगे।

फिर नतीजा क्या निकलता है? अब रोती फिरती हैं, शौहर हमारी तरफ़ तवज्जोह नहीं देता। फिर कहती हैं कि जी हम क्या करें ज़िन्दगी में ख़ुशियाँ नहीं हैं। शौहर अच्छे अन्दाज़ से बोलता नहीं। इसलिए कि जब आपने शरीअ़त की हदों को पार करके ग़ैर से मुहब्बत हासिल करने की कोशिश की, अल्लाह ने इसकी वजह से तुम्हें जायज़ मुहब्बत से मेहरूम फरमा दिया।

इसलिए यह चीज़ बहुत डरने की है, इसका ताल्लुक़ ख़ौफ़े-ख़ुदा से है। जिसके दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ होगा वह अपनी इ़ज़्ज़त की हिफ़ाज़त करेगी और वक़्ती लज़्ज़तों के ऊपर नज़र करने के बजाये हमेशा-हमेशा की आख़िरत की लज़्ज़तों पर नज़र रखेगी और अल्लाह के यहाँ सुर्ख़-रू (कामयाब और सफल) होगी। एक इनसान की ख़ातिर वह भी जो गुनाह की तरफ़ बुलाता है, क़ियामत के दिन इनसान हसरत और अफ़सोस करेगाः

يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ٥ (سورة فرقان)

ऐ काश मैंने फ़लाँ के साथ दोस्ती न की होती।

क्योंकि बुरे लोग ग़लत रास्ते की तरफ़ ले जाते हैं इसलिए दुनिया में भी ऐसे लोग कभी वफ़ा वाले नहीं होते।

एक उसूल अ़र्ज़ कर दूँ। औरतों को चाहिए कि तवज्जोह से सुनें कि जब किसी मर्द को किसी ग़ैर औ़रत ने, किसी लड़की ने अपने क़रीब आने का मौक़ा दिया तो अगरचे वह मर्द बहाने बनाता है, मैं शादी कर लूँगा मैं तुम्हें अपनाना चाहता हूँ। यह सब बकवास होती है। यह गुनाह करने का मौक़ा तलाश करने के बहाने होते हैं। हर मर्द यही करता है। जो भी किसी को गुनाह की तरफ़ बुलाता है। चूँकि उसको पता है कि अगर में एक दम (direct) कहूँगा कि मैं आपकी इ़ज़्ज़त ख़राब करना चाहता हूँ तो कोई भी मेरी तरफ़ आँख उठाकर नहीं

देखेगी।

हर मर्द जब भी किसी ग़ैर-औरत की तरफ़ क़दम उठायेगा तो उसकी तारीफ़ें करेगा, वह तारीफ़ें उसकी नहीं कर रहा होता वह तारीफ़ों के ज़रिये उसको अपने से मानूस कर रहा होता है। उसके दिल में उसकी तारीफ़ें नहीं होतीं, वह हक़ीक़त में मतलब निकालना चाहता है।

वह तो हमेशा तारीफ़ें करेगा, यहाँ तक कि वह उसकी ग़लतियों को भी अच्छाईयाँ साबित करेगा। और फिर दूसरी बात यह कि वह यह कहेगा कि मैं तुम्हें अपनाना चाहता हूँ मैं तुम्हें ज़िन्दगी का साथी बनाना चाहता हूँ। इससे बड़ा झूठ शायद कोई नहीं हो सकता। इसलिए कि जब वह बच्ची उसके क़रीब आ जाएगी उस पर एतिमाद कर लेगी, अपना मतलब निकालने के बाद फिर यह बहाना बना देगा कि मेरी अम्मी नहीं मानती। मेरे अब्बू नहीं मानते, घर वाले नहीं मानते। मैं तो चाहता हूँ तुम्हें अपनाऊँ लेकिन क्या करूँ घर वाले तैयार नहीं होते। इसलिए यह नौजवान उससे शादी कभी नहीं करेगा।

याद रखना जिस नौजवान ने कुंवारी बच्ची के साथ ताल्लुक़ात जोड़ लिए वह उसके साथ शादी हरगिज़ नहीं करेगा। क्योंकि हमने कुछ नौजवानों से जो गुनाहगार थे तौबा करने आए थे, उनसे यह बात पूछी कि आप लोगों ने क्यों उससे शादी नहीं की, जब मौक़ा मिल गया, सारी ज़िन्दगी क़समें खा-खाकर उनको यक़ीन दिलाते रहे। उन्होंने साफ़ बताया कि हमारे ज़ेहन में यह बात थी कि जब उस लड़की ने कुंवारेपन में हमारे साथ नाजायज़ ताल्लुक़ात बना लिए जब यह हमारी बीवी बनेगी तो हमारी बीवी होगी, घर हमारा बसाएगी, मुम्किन है दिल में किसी और को बसाए। तो मर्द के दिल में यह बात आ जाती है कि जो लड़की नाजायज़ तरीक़े से मेरे साथ ताल्लुक़ रख सकती है वह मेरी बीवी होकर कल दूसरों से नाजायज़ ताल्लुक़ क्यों नहीं रख सकती।

लिहाज़ा इस वजह से ये गुनाह तो कर लेते हैं मगर शादी करने के लिए तैयार नहीं होते। इसलिए बच्ची को चाहिए कि वह ऐसी बातों पर एतिमाद न करे और न ऐसी बातों पर ध्यान दे। यह झूठ होता है सफ़ेद झूठ होता है और दूसरे को शीशे में उतारने का तरीक़ा होता है। बच्चियाँ एतिमाद कर जाती हैं और बाद में फिर छुप-छुपकर रोती हैं। रोने का क्या फ़ायदा? उस रोने वाले रास्ते पर क़दम ही नहीं उठाना था। जब पता चल गया कि यह रास्ता ईमान के लिए ख़तरा है, इज़्ज़त के लिए ख़तरा है तो फिर उस रास्ते पर क़दम ही क्यों उठाया। इसलिए शरीअ़त ने यह हुक्म दिया कि औ़रत अपनी इज़्ज़त व नामूस की खुद हिफ़ाज़त करे। किसी की चिकनी-चुपड़ी बातों में आने की ज़रूरत नहीं और यह औ़रत का सबसे बड़ा फ़र्ज़ और कर्तव्य है।

औ़रत घर से कैसे निकले?

इसलिए औ़रत को बतलाया गया कि वह घर से बाहर निकले तो पर्दे में निकले। और पर्दा भी ऐसा न हो कि दूसरे उसको देखते ही रह जायें। आजकल की नौजवान बच्चियाँ बुर्क़े भी पहनती हैं तो ऐसे कढ़ाई वाले ख़ूबसूरत बुर्क़े ढूँढ़कर लाती हैं कि जिनको देखकर हर इनसान सोचे कि बुर्क़े के अन्दर तो हूर की बच्ची है। यह और बात है कि अन्दर चुड़ैल की बहन मौजूद होगी। तो जब पर्दा करना है तो पर्दे का क्या मतलब है कि ऐसे बुर्क़े पहनें कि जिसकी तरफ़ देखने को तबियत न करे।

आजकल तो दिखाने के लिये मोती लगाती हैं, अपने बुर्क़ों को कढ़ाईयाँ अच्छी-अच्छी करवाती हैं और फिर होती भी कुंवारी बच्चियाँ हैं। चलो बड़ी उम्र की हैं, बच्चों वाली हो गयी हैं और उसने कोई ऐसा बुर्क़ा ले लिया तो और बात होती है, जवान कुंवारी बच्ची के लिए इस क़िस्म की सजावट करना कि जिस पर ग़ैर-मर्द की नज़र ख़्वाह-मख़्वाह खिंचे यह गुनाह की दावत है, इसलिए ऐसा नहीं करना

चाहिए।

जवान बच्चियाँ घरों से अगर बाहर निकलें सादा बुर्क़े पहनकर निकलें। ताकि किसी की नज़र ही उसकी तरफ़ न आए बल्कि पहले वक़्त की नौजवान बच्चियाँ जब घर से निकलती थीं तो हमने सुना और किताबों में पढ़ा कि वे ऐसे चलती थीं जैसे बूढ़ी औ़रतें चल रही हों ताकि ग़ैर-मर्द की उनकी तरफ़ तवज्जोह भी न जा सके और अल्लाह तआ़ला के डर से वे यह सब किया करती थीं।

औ़रत कैसी ख़ुशबू इस्तेमाल करे?

इसी लिए शरीअ़त ने कहा कि जब औ़रत घर से निकले तो पर्दा करे और ऐसी ख़ुशबू न लगाये जिसकी ख़ुशबू क़रीब से गुज़रने वाले मर्दों को महसूस हो। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक हदीस पाक में इरशाद फ़रमाया कि जो औ़रत ख़ुशबू लगाकर मर्दों के पास से गुज़रे वह ऐसी-वैसी है। ऐसी-वैसी का तर्जुमा मुहद्दिसीनी ने यह किया है कि वह किरदार (चरित्र) की कमज़ोर है। उसकी नीयत में फ़तूर है। तभी तो उसने ऐसी ख़ुशबू लगायी।

तो मर्द को अल्लाह ने शरीअ़त ने इजाज़त दी कि वह फैलने वाली ख़ुशबू लगा सकता है। औ़रत ऐसी ख़ुशबू लगाये कि फ़क़त उसके क़रीब जब घर का कोई आदमी आये तो उसको ख़ुशबू महसूस हो दूर वालों को ख़ुशबू महसूस न हो।

आज तो मामला उलटा हो गया। आज तो औ़रतें यह चाहती हैं कि हम जिस गली से गुज़र जायें बाद में गुज़रने वाले भी हमारी ख़ुशबू को याद करते फिरें।

सावधानियाँ

यह ऐसा नाज़ुक मामला है कि औ़रत जिस रास्ते से गुज़र जाती है और उसके क़दमों के निशान लग जाते हैं, अगर बाद में गुज़रने वाले मर्द का पाँव उसके क़दमों के निशान पर पड़ जाए शैतान उसके

अन्दर शहवत (ख़्वाहिश) को जगा देता है। इसलिए यह बहुत नाज़ुक मामला है। इसलिए शरीअ़त ने पर्दे को बहुत अहमियत दी और उसके बारे में हदीसों में बहुत तफ़सील मौजूद है। तो जवान बच्चियों को चाहिए कि वे इसको अपना जिहाद समझें और हर वक़्त अल्लाह से दुआ़यें माँगें। ऐ अल्लाह! हमें इस जिहाद में कामयाब फ़रमा।

इसके बदले में क्या मिलेगा? अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त की रिज़ा (प्रसन्नता) मिलेगी और अगर दिल किसी की तरफ़ खिंचे तो चाहिये कि अल्लाह से दुआ़यें माँगें ताकि अल्लाह तआ़ला दिल की कैफ़ियत को ठीक कर दे। किताबों में लिखा है:

من تعشق و كتم عشقه ما ظهر فهو شهيد

यानी जिसके दिल में किसी की तरफ़ कोई मैलान आएगा और उसने उसको छुपाया और ज़ाहिर न किया, इसी हालत में मौत आ गयी तो अल्लाह क़ियामत के दिन उसको शहीदों का रुतबा अ़ता फ़रमा देंगे।

इसलिए अपनी इ़ज़्ज़त व अ़स्मत की हिफ़ाज़त करना यह बच्चियों की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है और इसके लिए ये जितनी एहतियात करेंगी उतनी थोड़ी है। हर-हर एहतियात पर उसको अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अज्र (बदला) मिलगा।

शरीअ़त ने तो यहाँ तक कहा कि अपने कपड़े ऐसी जगह पर न रखे जहाँ ग़ैर-मेहरम मर्द की नज़र पड़े। अपना नाम किसी ग़ैर-मर्द के इल्म में न आने दे। नाम तक का पर्दा रखा। ज़रूरत पड़े तो फ़लाँ की बीवी, फ़लाँ की अम्मी, इस अन्दाज़ से ग़ैर-मेहरम को बताया जाए। नाम का भी पता न चले। शरीअ़त ने तो इसमें इतनी एहतियात करने का हुक्म फ़रमाया। और यह सब एहतियात इसलिए है कि शैतान को रास्ता न मिले गुनाह करवाने का।

शैतान ने कहा कि औ़रतें मेरा वह तीर हैं जो कभी नहीं चूकता:

النساء حبائل الشيطان

औरतें तो शैतान की रस्सियाँ होती हैं।

इसलिए शैतान ऐसी सूरत में औरत के दिल में भी गुनाह का ख़्याल डालता है और मर्द के दिल में भी, और इसकी हिफ़ाज़त औरत की भी ज़िम्मेदारी है मर्द की भी ज़िम्मेदारी है। और जिसने अपनी जवानी को अफ़ीफ़ (गुनाहों से पाक-साफ़) बना लिया, पाकीज़ा बना लिया, पाकदामन ज़िन्दगी गुज़ारी, अल्लाह के यहाँ उसकी बड़ी क़ीमत है। किसी शायर ने कहा:

दर जवानी तौबा कर्दन शेवा-ए-पयम्बरी
वक़्ते पीरी गर्गे ज़ालिम मी शवद परहेज़गार

जवानी में तौबा करना यह पैग़म्बरों का शेवा और तरीक़ा (यानी पैग़म्बरों की तालीम का खुलासा और नेक लोगों का रास्ता) है। और बुढ़ापे में तो ज़ालिम भेड़िया भी परहेज़गार बन जाता है।

एक बुज़ुर्ग को जब भी दुआ की कोई ज़रूरत पेश आती तो वह नेक नौजवान को देखते और उससे दुआ करवाते। किसी ने पूछा आप इतने बड़े बुज़ुर्ग हैं और आपकी दाढ़ी भी सफ़ेद है आप ख़ुद दुआ क्यों नहीं करते? नौजवान से दुआ करवाते हैं। वह फ़रमाने लगे कि जो नौजवान अपनी जवानी की हिफ़ाज़त करता है और वह दुआ के लिए हाथ उठाता है तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त उसके हाथों को ख़ाली लौटाते हुए शर्माते हैं।

इस जवानी को इबादत के ज़रिए से महफ़ूज़ कर लीजिए अपने आपको गुनाहों के हर मौक़े पर बचाईये और आजकल तो जिनको रिसाले और मैगज़ीनें पढ़ने का शौक़ है, उनका पहला मज़मून ही 'तीन औरतें तीन कहानियाँ' है। कम्प्यूटर पर बैठें तो चैटिंग शुरू हो जाती है और अगर टी. वी. है तो यूँ समझिये कि घर के अन्दर शैतान की एक पूरी फ़ौज मौजूद है।

यह टी. वी. नहीं हक़ीक़त में यह ईमान की टी. बी. होती है। जिस घर में टी. वी. है, इज़्ज़तें कहाँ महफ़ूज़ होती हैं। बच्चे माँ-बाप की नाक के नीचे दिया जलाते हैं और उनको पता भी नहीं चलने देते कि वे क्या कर रहे हैं। ऐसी-ऐसी तरकीबें गढ़ते हैं, ऐसी-ऐसी प्लानिंग करते हैं कि कानों-कान ख़बर नहीं होने देते। शरीअ़त ने तो हुक्म दिया है कि दायें हाथ से तुम सदक़ा इस तरह दो कि बायें हाथ को पता न चले और आजकल लोग दायें हाथ से इस तरह गुनाह करते हैं कि बायें हाथ को पता नहीं चलने देते। मगर कब तक? लोगों से तो छुपा लेंगे, अल्लाह करीम जो दिलों के भेद जानने वाला है, उससे तो नहीं छुपा सकेंगे।

जल्दी की शादी वक़्त की अहम ज़रूरत

इसलिए चाहिये कि जब जवानी की उम्र आ जाए सबसे पहला माँ-बाप का फ़र्ज़ यह है कि बच्चों के जोड़ का जब भी रिश्ता मिल जाए फ़ौरन शादी कर दी जाए। कई घरों में माँ-बाप इन्तिज़ार में होते हैं कि हमें नया घर बनाना है, जब मकान बन जाएगा फिर हम बच्चों की शादी करेंगे। ऐसे माँ-बाप उन बच्चों के गुनाहों की वजह से क़ियामत के दिन जहन्नम के अ़ज़ाब में जलेंगे। ख़ुद बूढ़े हो जाते हैं और यह समझते हैं जैसे बुढ़ापे में अब हमारी सोचें पुख़्ता हो गयी हैं। एक दूसरे के बारे में हमारे दिलों में कोई ऐसी बात नहीं होती। शायद जवान बच्चों की सोच भी ऐसी है।

सैयद अ़ताउल्लाह शाह बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि की दर्द भरी नसीहत

सैयद अ़ताउल्लाह शाह साहिब बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि एक घर में मेहमान थे तो पता चला कि घर में जवान बेटी है। उन्होंने मश्विरा दिया कि इस बच्ची का जल्दी निकाह कर दो। उसकी माँ

कहने लगी अभी तो मेरी बच्ची के मुँह से दूध की बू आती है। अभी मैं शादी कर दूँ? उन्होंने कहा अम्माँ शादी कर दो। इसलिए कि दूध ख़राब हो गया तो फिर उसे कुत्ते ही पियेंगे इनसान नहीं पियेंगे।

तो पता नहीं क्यों इन्तिज़ार में होते हैं कि बच्चों की इज़्ज़तें ख़राब होंगी फिर उनकी शादियाँ करेंगे। नहीं! शरीअ़त ने हुक्म दिया कि हम पहले ही इस फ़रीज़े से फ़ारिग़ हो जायें ताकि ये अपने घर की होकर अपनी इज़्ज़त व अ़स्मत की हिफ़ाज़त करके अपनी ज़िन्दगी गुज़ारें।

औ़रत का सबसे बड़ा फरीज़ा

जिस बच्ची को अल्लाह ने शौहर दे दिया फिर औलाद दे दी वह ख़ुशनसीब बच्ची है। अब उसको चाहिए कि वह किसी की तरफ़ आँख उठाकर ही न देखे। ऐसा न हो कि अल्लाह की नेमतें उससे छिन जायें। इसलिए इज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त यह औ़रत का सबसे बड़ा फ़रीज़ा है।

अल्लाह तआ़ला ने आँखों के पर्दे का जो हुक्म दिया तो आपको पता है अल्लाह ने आँखों का पर्दा कितना छोटा और कितना तेज़ बनाया कि दुनिया में पलक झपकना एक मिसाल बन गयी मुख़्तसर वक़्त में, अल्लाह तआ़ला ने आखँ ऐसी बनाई कि पलक का पर्दा गिरता है और आँख बन्द हो जाती है। अगर यहाँ पर कोई जल्दी हरकत करने वाला या धीरे-धीरे हरकत करने वाला पर्दा होता तो लोग बहाना बना देते, कि ऐ अल्लाह! मैंने उससे निगाह बन्द करने का इरादा किया था, करते करते उस पर नज़र पड़ गयी। तो अल्लाह तआ़ला ने पूरे जिस्म में सबसे ज़्यादा जल्दी हरकत करने वाली चीज़ इनसान की आँखों की पलकें बनायी हैं। ताकि कल क़ियामत के दिन अपनी आँखों को बन्द करने के बारे में कोई यह बहाना न बना सके।

सयैदा आ़यशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फरमाती हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आँखों में वह हया देखी

कि जो मैं मदीना की कुंवारी लड़कियों की आँखों में भी नहीं देखा करती थी।

हया ईमान की कसौटी है

एक हदीस पाक में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

لا ایمان لمن لا غیرۃ له

जिस् शख़्स के अन्दर ग़ैरत नहीं उस शख़्स के अन्दर ईमान ही नहीं।

एक और हदीस में इरशाद फ़रमायाः

انا اَغیَرُ ولد ادم واللّٰہ اغیر منی

मैं इनसानों में सब से ज़्यादा ग़ैरत वाला हूँ। और अल्लाह तआ़ला मुझसे भी ज़्यादा ग़ैरत वाले हैं।

इसी लिए हदीस पाक में फ़रमाया गया कि किसी मर्द और औ़रत को ज़ैब नहीं देता, इजाज़त नहीं कि वे ग़ैर-मेहरम हों और एक जगह तन्हाई में बैठें। हमारे बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि अगर हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि जैसा उस्ताद हो और राबिया बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहा जैसी शार्गिदा हो और दोनों एक दूसरे को क़ुरआन पढ़ायें, तब भी वे अगर तन्हाई में बैठेंगे तो शैतान उनको गुनाह की तरफ़ माईल करेगा।

दुनिया और आख़िरत की कामयाबी कैसे?

हदीस पाक में आता है कि संगीत का सुनना कानों का ज़िना है। एक हदीस में फ़रमाया गया, नबी पाक ने फ़रमाया कि मैं गाने-बजाने के आलात (यंत्र और उपकरणों) को तोड़ने के लिए दुनिया में आया हूँ। और एक हदीस पाक में फ़रमाया गया कि संगीत (गाना-बजाना) सुनने से दिल में गुनाह की ख़्वाहिश इस तरह उभरती है जैसे बारिश

के होने से ज़मीन के अन्दर घास उग आती है। इसलिए जिन बच्चों को गाने सुनने का शौक़ हो हक़ीक़त में यह शौक़ उनको गुनाह की तरफ़ लेजाने वाला शौक़ है। इसलिए अपने आपको मौसीक़ी (संगीत और गाने सुनने) से बचायें। शरीअ़त ने तो यहाँ तक कहा कि जो बेपर्दा फिरने वाली औ़रत फ़ासिक़ा (बदकार और गुनाहगार) हो, पर्दे वाली औ़रत को चाहिए कि उससे भी अपने आपको पर्दे में रखे। इसलिए कि बेपर्दा फ़ासिक़ा औ़रत भी ग़ैर-मेहरम मर्द के हुक्म में है।

शरीअ़त ने मना फ़रमाया कि शादीशुदा औ़रत को नहीं चाहिए कि वह दूसरी औ़रतों लड़कियों को अपने शौहर के साथ गुज़रे हुए तन्हाई के लम्हात की बातें सुनाए। अगर कोई सुनाएगी तो शरीअ़त ने कहा कि वह ज़बरदस्त गुनाहगार होगी।

सबसे बेहतरीन औ़रत कौन है?

एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की महफ़िल में बात चली कि सबसे बेहतरीन औ़रत कौन है। किसी ने कुछ कहा किसी ने कुछ काह। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु किसी काम के लिये घर तशरीफ़ ले गये। घर जाकर बताया कि महफ़िल में यह बात चली है। हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया: मैं बताऊँ कि सबसे बेहतर औ़रत कौन है? पूछा कि बताईये। फ़रमाने लगीं कि वह औ़रत जो न तो ग़ैर-मेहरम को ख़ुद देखे और न किसी ग़ैर-मेहरम को अपने आपको देखने का मौक़ा दे।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यह जवाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर बता दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह सुनकर मुस्कुराये और फ़रमाया:

فاطمة بضعة منى

फ़ातिमा तो मेरे जिगर का टुकड़ा है।

तो ख़ातूने जन्नत फ़रमाती हैं कि सबसे बेहतरीन औ़रत वह होती

है जो न ख़ुद किसी ग़ैर-मर्द की तरफ़ देखे और न किसी ग़ैर-मर्द को अपनी तरफ़ देखने का मौक़ा दे। हर ना-मेहरम से अपने आपको बचाना चाहिये।

शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि का ईमान वर्धक वाक़िआ़

शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि का एक शार्गिद था। उसको एक बार किसी औ़रत ने बहाने से घर में बुलवाया कि एक घर में मरीज़ है उसको कुछ पढ़कर दम कर दीजिए। वह सीधा आदमी था बेचारा जब घर में गया तो दरवाज़े बन्द। तब उसको पता चला कि उस औ़रत की तो नीयत ठीक नहीं।

अब कैसे गुनाह से बचे। उसने फ़ौरन बहाना किया कि मुझे लैट्रीन में जाने की ज़रूरत है। चुनाँचे वह लैट्रीन में चला गया। वहाँ जाकर जो गन्दगी पड़ी हुई थी उसने वह गन्दगी अपने जिस्म पर मल ली। जब बाहर निकला तो उसके जिस्म से बदबू के भभूके आ रहे थे। जब वह उस औ़रत के क़रीब आया तो इतनी बदबू आ रही थी। उसने कहा मुझे क्या पता कि तुम इतने कमीने और इतने बेवक़ूफ़ इनसान हो, दफ़ा हो जाओ यहाँ से।

चुनाँचे उसने दरवाज़ा खोला और अपना ईमान बचाकर निकल आया। अब रो रहा था कि रास्ते में लोगों को बदबू आयेगी तो मैं क्या जवाब दूँगा। सीधा मदरसे में पहुँचा वहाँ जाकर गुस्लख़ाने में कपड़े भी पाक किये, धोये, गुस्ल भी किया और गीले कपड़े पहनकर हज़रत के दर्स (सबक़) के अन्दर आकर पीछे बैठ गया।

यह कभी लेट नहीं आया था, उस दिन लेट हो गया। थोड़ी देर के बाद हज़रत ने दर्स देने के दौरान रुककर पूछाः अरे तुममें से आज इतनी तेज़ ख़ुशबू लगाकर कौन आया है? लड़कों ने जब इधर-उधर

देखा। एक लड़के ने बताया कि अभी देर से यह जो नया लड़का अया है इसने ख़ुशबू लगायी हुई है।

हज़रत ने क़रीब बुलाया। फ़रमाया कि तुमने इतनी तेज़ ख़ुशबू क्यों लगाई? जब बार-बार पूछा तो बताना पड़ा। उसकी आँखों में आँसू आ गये। उसने वाक़िआ सुनाया। कहने लगा हज़रत! मैंने तो अपने दामन को बचाने के लिए इ़ज़्ज़त को बचाने के लिए अपने जिस्म पर गन्दगी को लगाया था, लेकिन अब मैं नहा भी चुका धो भी चुका जहाँ-जहाँ गन्दगी लगाई थी। मेरे जिस्म के उन-उन हिस्सों से ख़ुशबू आ रही है।

चुनाँचे जब तक यह नौजवान ज़िन्दा रहा उसके जिस्म से मुश्क की ख़ुशबू आती रही।

किताबों में लिखा है कि इसी वजह से उसका नाम ख़्वाजा मुश्की पड़ गया था। लोग उन्हें ख़्वाजा मुश्की कहते थे। कि जहाँ-जहाँ उन्होंने गुनाह से बचने के लिए गन्दगी लगायी थी, उनके जिस्म के उन-उन हिस्सों से ख़ुशबू आया करती थी।

हक़ीक़ी हुस्न

हदीस पाक में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने ग़ैर-मेहरम से अपनी नज़र की हिफ़ाज़त की उसको अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त इबादत में लज़्ज़त अ़ता फ़रमाते हैं। और यह भी ज़ेहन में रखिए कि ख़ूबसूरत औ़रत को देखने से आँखें ख़ुश होती हैं लेकिन ख़ूबसीरत औ़रत को देखने से दिल ख़ुश होता है। तो सूरत को संवारने की बजाए अपनी सीरत (चरित्र और अख़्लाक़ व आ़दात) को संवारिए।

मैं तो बच्चियों को कहता हूँ कि क़द ऊँचा Heel के जूते के बग़ैर भी बड़ा नज़र आ सकता है, अगर औ़रत की शख़्सियत के अन्दर बुलन्दी हो। आँखें बग़ैर सुर्मे के भी ख़ूबसूरत नज़र आ सकती

हैं अगर उनके अन्दर हया मौजूद हो। पलकें बग़ैर मस्कारे के भी दिल को लुभाने वाली हो सकती हैं अगर शर्म से झुकी हुई हों। पेशानी बग़ैर बिन्दया के भी पुरकशिश हो सकती है अगर उसके ऊपर सज्दों के निशान हों। अंग्रेज़ी का एक जुमला है।

welath lost nothing lost
health lost something lost
character lost everything lost.

So people feel that character is not a precious thing but you can buy the most precious thing of the world with the help of your character.

यानी माल दौलत का जाते रहना कोई नुक़सान की बात नहीं। हाँ अगर किसी इनसान का किरदार गिर जाये और उसकी इज़्ज़त पर बट्टा लग जाये तो यह सब कुछ लुट जाने जैसा है।

सीरत को बनाने वाले चमकदार पहलू

यह बात ज़ेहन में बैठा लेना, सारी दुनिया मिल जाए यह तलवार का मुक़ाबला तो कर सकती है किरदार का मुक़ाबला नहीं कर सकती। अपने किरदार को बनाईये। हज़रत मुजद्दिद् अल्फ़े सानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

आँख बिगड़ने से दिल की हिफ़ाज़त मुश्किल है। और दिल के बिगड़ने के बाद शर्मगाह की हिफ़ाज़त बहुत मुश्किल है। और अ़क़्लमन्द लोग वे होते हैं जो दूसरों की ग़लतियों से सबक़ सीखते हैं और बेवकूफ़ लोग वे होते हैं जो अपनी ग़लतियाँ करते हैं फिर उनको धक्के पड़ते हैं। तब उनको समझ आती है।

उसूली बात यह है कि हुस्न ही औ़रत की तबाही का ज़रिया बनता है। औ़रत पर जितनी भी आफ़तें आती हैं सबकी सब उसके

हुस्न की वजह से आती हैं। इसलिए शरीअ़त ने मर्दों को कहा कि तुम शरीर (बुरी) औ़रतों से दूर रहो और अगर भली औ़रतें भी हों तो उनसे होशियार रहो।

जैसे दिल के ऊपर मुसीबतें आँखों की वजह से आती हैं, अगर अम्माँ हवा 'शजरे-ममनूआ़' (यानी जिस पौधे से खाने और उसके क़रीब भी जाने को मना किया गया था) को न देखती तो उनको जन्नत से न निकलना पड़ता। अगर क़ाबील, हाबील की बीवी की तरफ़ निगाह उठाकर न देखता तो उसको क़त्ल का जुर्म अपने सर पर न उठाना पड़ता। अगर ज़ुलैख़ा यूसुफ़ को निगाह उठाकर न देखती तो क़ुरआन ने उसके गुनाह के यूँ खोलकर तज़किरे न किये होते।

और यह जो लोग कहते हैं कि जी फ़लाँ की शक्ल अच्छी लगी **Personality** अच्छी लगी, यह सब बकवास होता है। हक़ीक़त में तो मुहब्बत वह होती है जो इनसान की नेकी की वजह से होती है। चेहरे की सजावट और सिंगार यह तो आ़रज़ी (वक़्ती और अस्थाई) चीज़ है।

आज जो बच्ची जवान उम्र की है और उसके चेहरे पर जवानी की ख़ूबसूरती है, एक दो बच्चे होने के बाद उसके चेहरे की कशिश वह नहीं रहती, और जब ज़रा और उम्र गुज़र जाती है फिर तो इनसान की शक्ल व सूरत कुछ और ही हो जाती है।

अगर शौहर को औ़रत की सिर्फ़ ख़ूबसूरती की वजह से ताल्लुक़ होगा, तो चन्द सालों के बाद वह किसी और को ढूँढ़ना शुरू कर देगा। इसलिए अच्छी ज़िन्दगियों की बुनियाद ज़ाहिरी हुस्न नहीं होता। बातिनी हुस्न हुआ करता है, अच्छे अख़्लाक़ हुआ करते हैं। ज़ाहिरी हुस्न फ़ानी (ख़त्म हो जाने वाला) होता है और अख़्लाक़ का हुस्न हमेशा बाक़ी रहता है।

वैसे भी अगर दूर से किसी को देखें तो वह ज़्यादा ख़ूबसूरत नज़र आता है, क़रीब की तुलना में, अगर दूर से किसी की आवाज़

ज़्यादा दिलकश मालूम होती है क़रीब से सुनने के मुक़ाबले में, तो कहा जायेगा कि हुस्न की हक़ीक़त फ़ासला है, कि इनसान फ़ासले से रहे तो हुस्न महसूस होता ही है और क़रीब आए तो हुस्न ख़त्म हो जाता है।

कामवासना की हलाकतें

इनसान गुनाह करने से पहले तो बड़ा बहादुर बनता है लेकिन जब गुनाह कर बैठता है तो फिर इतना बुज़दिल बनता है कि फिर उसको छुपाने के लिए झूठ बोलता फिरता है। शहवत (वासना) वह शीरीनी (मीठी चीज़) है जो चखने वाले को हलाक कर देती है। और उसूल यह है कि मुहब्बत और अ़दावत (दुश्मनी) कभी छुपी नहीं रह सकती। जो इनसान यह समझे कि मैं मुहब्बत करूँगा और छुपी रहेगी या मेरी दुश्मनी छुपी रहेगी, वह इनसान बेवक़ूफ़ इनसान है। मुहब्बत और अ़दावत ऐसी चीज़ें हैं जो कभी छुपी नहीं रह सकतीं।

शहवत (वासना, जिन्सी इच्छा) की शुरूआ़त छोटे कीड़े की तरह होती है, उसको मारना आसान होता है और शहवत की इन्तिहा फुंकारने वाले अज़्दहे की तरह होती है। यह खुद इनसान को हड़प कर जाता है। इसलिए ज़ाहिरी हुस्न को बढ़ाने की बजाए अन्दरूनी हुस्न और हुस्ने अख़्लाक़ को बढ़ाने की ज़रूरत है। जिस तरह काँटों के ऊपर फूल हो तो शाख़ (टहनी) को ख़ूबसूरत बना देता है, इसी तरह जिस घर के अन्दर नेक औ़रत हो वह उस घर को ख़ूबसूरत बना देती है। उस घर को इज़्ज़त वाला बना देती है। एक बात ज़ेहन में रखिए कि इनसान को हर चीज़ से खुशी होती है लेकिन जितनी खुशी अपने आप से जीत कर होती है उतनी खुशी कभी नहीं हुआ करती।

यह बात फिर सुनियेगा और दिल में बैठा लीजिएगा कि इनसान को हर चीज़ से खुशी होती है लेकिन जितनी खुशी अपने आप से जीत कर होती है उतनी खुशी फिर कभी नहीं हुआ करती। इसलिए नौजवान बच्चियों को चाहिए कि वे अपने आप से जीत कर ज़िन्दगी

को खुशियों वाली बनायें। और अपने रब के सामने सुर्ख़-रू (कामयाब और सफल) हो जायें।

अपने आपको ग़ैर-मर्दों की नज़र से बचाईये

हदीस पाक में आता है, और मैं सनद के साथ यह बात कह रहा हूँ कि जो औ़रत इसलिए बनी-संवरी, यानी नहाई-धोई, मैकअप किंया, अच्छे कपड़े पहने, खुशबू लगाई कि ग़ैर-मर्द उसको देखकर खुश हों। इस गुनाह की यह सज़ा मिलती है कि अल्लाह तआ़ला उसके आमाल-नामे में लिख देते हैं कि मैं क़ियामत के दिन इस औ़रत की तरफ़ मुहब्बत की नज़र से नहीं देखूँगा। अब सोचिए यह कितनी बड़ी सज़ा है।

फिर सुन लीजिए! जिस औ़रत ने इसलिए खुद को सजाया-संवारा कि ग़ैर-मर्द मुझे देखकर खुश हो। अल्लाह तआ़ला लिखवा देते हैं कि क़ियामत के दिन इस औ़रत की तरफ़ मैं मुहब्बत की नज़र से नहीं देखूँगा। इसलिए अपने आपको ग़ैर-मर्दों की नज़रों से बचाईये। अपनी इ़ज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त कीजिए। अल्लाह तआ़ला हम सबका मददगार बन जाए और नेकी की ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, और जो गुनाह हो चुके उन पर सच्ची तौबा कर लीजिए कि तौबा के दरवाज़े खुले हैं मौत से पहले-पहले, किसी ने कोई भी गुनाह किया हो अल्लाह तआ़ला उसको माफ़ कर देते हैं।

वह तो इतने करीम हैं कि बनी इस्राइल की एक तवायफ़ थी। जिसने सैकड़ों मर्दों से ज़िना करवाया था। उसने एक प्यासे कुत्ते को पानी पिला दिया था, अल्लाह ने उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमा दिया। तो जो परवर्दिगार इतना करीम हो उसके करम से फ़ायदा उठाईये पिछले गुनाहों की माफ़ी माँग लीजिए।

रमज़ान मुबारक की कुछ घड़ियाँ बाक़ी हैं। यह हमारी खुशनसीबी (सौभाग्य) है कि हम इन बरकत वाली घड़ियों में सच्ची तौबा कर

सकते हैं, सच्ची माफी मांग सकते हैं। इसलिए दोस्तों के कहने और उनकी ज़िद पर इस आजिज़ ने यह प्रोग्राम बनाया कि कल का बयान मौत के उनवान पर होगा। तौबा के उनवान पर होगा। और उसके बाद जो बच्चियां जो औरतें सच्ची तौबा करना चाहेंगी उनको सुन्नत के मुताबिक तौबा के कलिमात भी पढ़ा दिये जायेंगे, ताकि अल्लाह हमें आईन्दा नेकियों से भरी ज़िन्दगी नसीब फरमा दे।

واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين○

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

आख़िरत के सफ़र की तैयारी

بسم الله الرحمن الرحيم ○ الحمد لله وكفى وسلام على عباده الّذين اصطفى اما بعد!

اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ○ (سورة العنكبوت) وقال الله فى مقامٍ اخر كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ، وَمَاالْحَيٰوةُالدُّنْيَا اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ○ (سورة ال عمران) وقال اللّٰه تعالٰى فى مقام اخر اَيْنَمَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِىْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ، (سورة النساء) وقال اللّٰه تعالٰى فى مقام اخرقُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِىْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ (سورة الجمعة) وقال الله تعالٰى فى مقام اخر كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ○ وَيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ○ (سورة الرحمن) وقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: الموت جسر يوصل الحبيب الى الحبيب، اوكما قال عليه الصلوة والسلام.

سبحن ربك رب العزة عما يصفون ○ وسلام على المرسلين ○ والحمد لله رب العالمين ○ اللّٰهم صل على سيّدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم.

इनसानी ज़िन्दगी

इनसानी ज़िन्दगी हवा में रखे हुए चिराग़ की तरह है। बूढ़ा

आदमी अगर चिराग़े-सेहर है तो जवान आदमी चिराग़े-शाम है। जिस तरह हवा के झोंकों में रखा हुआ चिराग़ एक पल का मोहताज होता है। इनसानी ज़िन्दगी भी एक पल की मोहताज होती है।

ज़िन्दगी क्या है थिरकता हुआ नन्हा सा दिया
एक ही झोंका जिसे आके बुझा देता है
या सरे-मुज़दाँ ग़म का थिरकता हुआ आँसू
पलक झपकना जिसे मिट्टी में मिला देता है

जिस तरह रोने वाले इनसान की पलकों पर आँसू होता है पलक झपकने का मोहताज, पलक झपकी और वह आँसू मिट्टी में जा मिला। यही इनसान की ज़िन्दगी का मामला है। पानी के बुलबुले की तरह है, कुछ मालूम नहीं होता कि यह बुलबुला किस वक़्त फटेगा। थोड़ी देर की बात होती है। यही मामला इनसान की ज़िन्दगी का है, किसी ने क्या ही अच्छी बात कही।

ज़िन्दगी इनसान की है मानिन्द मुर्ग़ बे-नवा
शाख़ पर कुछ देर बैठा चहचहाया, उड़ गया

जिस तरह परिन्दा किसी शाख़ पर आकर बैठता है, थोड़ी देर चहचहाता है फिर उड़कर चला जाता है। हम भी उस परिन्दे की तरह हैं, इस दुनिया के दरख़्त के ऊपर हम थोड़ी देर के लिए आये हैं और ज़िन्दगी का जितना वक़्फ़ा (समय और वक़्त) है वह हम चहचाहा रहे हैं। थोड़ी देर में उड़कर अपने असली घर होंगे।

इसलिए हमें चाहिए कि हम दुनिया से दिल लगाने की वजाये आख़िरत की तरफ़ ध्यान रखें। और उसकी तैयारी में हम हर वक़्त मशग़ूल रहें।

दुनिया में हूँ दुनिया का तलबगार नहीं हूँ
बाज़ार से गुज़रा हूँ ख़रीदार नहीं हूँ

हम इस दुनिया के बाज़ार से गुज़र जायें मगर इसके ग्राहक न बनें, ख़रीदार न बनें। हम तलबगार तो अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के हैं, आख़िरत के हैं, दुनिया तो मुसाफ़िर-ख़ाना है, यह इम्तिहान की जगह है।

दुनिया इम्तिहान की जगह है

दुनिया इम्तिहान की जगह है। यह सैरगाह नहीं, आरामगाह नहीं, क़ियामगाह नहीं। यह इम्तिहानगाह (परीक्षा का केन्द्र) है। अफ़सोस कि हमने इसे चरागाह बना लिया। हम समझते हैं कि हम दुनिया में चरने के लिए पैदा हुए हैं। बस खाना-पीना है और मोज-मैला करना है।

याद रखिएगा! कुछ लोग दुनिया में खाने पीने के लिए ज़िन्दा होते हैं और कुछ लोग ज़िन्दा रहने के लिए खाते पीते हैं। तो हम ज़िन्दा रहने के लिए खायें और अपने मक़सद को सामने रखें। अगर दुनिया के चन्द दिन हमने ऐश व आराम में गुज़ार भी लिये और आख़िरत के अज़ाबों को ख़रीद लिया तो हमने बहुत बुरा काम किया। किसी बच्चे को भी कहा जाये कि आपको हम एक लॉली-पॉप देते हैं थोड़ी देर चूस लें। फिर उसके बाद चन्द एक थप्पड़ लगायेंगे। तो छोटा बच्चा भी राज़ी नहीं होता।

कितनी अजीब बात है कि हम दुनिया के लॉली-पॉप पर इतना फ़रेफ़्ता होते हैं कि उसे चूसने में मशग़ूल होते हैं और भूल जाते हैं इस बात को, कि अज़ाबों वाले फ़रिश्ते आख़िरत में इन्तिज़ार में खड़े हैं। काश कि हम उसके लिए तैयारी कर लेते।

मुझे तो यह बात समझ में नहीं आती कि हम इतने अक़्लमन्द हैं कि दुनिया का हर काम करते हुए सोचते हैं कि उसका सुरक्षित पहलू कौनसा है। औरतों को देखो या मर्दों को देखो, हर शख़्स की सोच होती है कि हम सुरक्षित पहलू इख़्तियार करें। हज के सफ़र पर जाना है, सात बजे फ़्लाईट है, और ऐयर पोर्ट पर पहुँचना है तो औरतें

बात करेंगी कि जी हमें तो साढ़े छह बजे पहुँच जाना चाहिये। यानी एहतियात का पहलू सामने रखते हैं।

अगर कोई फंक्शन (पार्टी) है, उसमें एक सौ आदमियों को आपने दावत दी, तो आप एक सौ का खाना नहीं बनायेंगी हमेशा डेढ़ सौ सवा सौ आदमियों का खाना बनाती हैं। फ़रमाती हैं कि एहतियातन् ज़्यादा खाना बनाना चाहिए। इसी तरह आपको अगर कहीं जाना है, सफ़र का ख़र्चा लेना है तो ख़र्चा फ़र्ज़ करो आपके हिसाब से पाँच हज़ार डॉलर बनता है तो आप पाँच हज़ार डॉलर और भी अलग से रख लेंगी, कुछ और भी रख लेंगी और कहेंगी जी एहतियातन रखे हैं।

तो वह आदमी जो दुनिया के हर काम में एहतियात का पहलू सामने रखता है वह जब कोई काम करता है तो रिस्क नहीं लेता। आख़िरत के मामले में बड़े आराम और मज़े के साथ सौ फ़ीसद रिस्क ले रहा होता है। वहाँ यह क्यों नहीं सोचता कि मुझे एहतियातन और ज़्यादा अच्छीं तैयारी करनी चाहिए। कभी सोचा कि मैं इतनी नेकियाँ कर लूँ कि क़ब्र में जब अज़ाब वाले फ़रिश्ते आयें तो मैं उनको जवाब दे सकूँ कि मेरी नेकियाँ मेरी ज़रूरत से ज़्यादा हैं।

मैं इतने नेक आमाल करके आख़िरत में भेजूँ कि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के सामने मुझे सुर्ख़-रूई (कामयाबी और सफलता) हासिल हो। मैं दुनिया के अन्दर घर की ज़रूरतमन्द रहती हूँ। और मेरे दिल में यह चाहत होती है कि मेरा घर दूसरों के घरों से अच्छा हो, बड़ा हो, ख़ूबसूरत हो, हर सहूलियत उसमें मौजूद हो। आख़िरत में भी तो मेरे दिल की तमन्ना होगी कि मेरा घर दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा अच्छा और बड़ा हो, तो मैं नेक आमाल करूँ। मुझे एहतियात के तौर पर ज़्यादा से ज़्यादा नेक आमाल करने चाहिएँ ताकि मुझे यक़ीनी तौर पर जन्नत मिल जायें।

आख़िरत के मामले में इनसान को सुरक्षित पहलू अपनाना चाहिए। अगर किसी जगह एक सौ टॉफ़ियाँ रखी हैं और उनमें से फ़क़त एक

के अन्दर ज़हर है और निन्नानवे उनमें से ठीक हैं, आप किसी को कहें कि इनमें से एक टॉफ़ी खा लो, निन्नानवे तो ठीक हैं, वह एक दम जवाब देगी कि नहीं! चूँकि एक में ज़हर है, मैं एक फ़ीसद भी रिस्क नहीं लेना चाहती।

वह नौजवान बच्ची जिसको अपनी जान इतनी अ़ज़ीज़ है कि एक फ़ीसद भी रिस्क नहीं लेना चाहती। वह अपने ईमान के बारे में बेपरवाह फिरती है। सौ फ़ीसद रिस्क के ऊपर होती है। पता नहीं हमारी अ़क्ल क्यों काम नहीं करती कि हम आख़िरत के बारे में भी इसी तरह सोचें।

किसी मर्द को देखें आप उससे पूछें कि जी आप नमाज़ पढ़िये, तिलावत करिये, दीन के लिए वक़्त निकालिये। वह कहेगा जी मौलाना मेरा कारोबार ही ऐसा है कि मुझे टाईम ही नहीं मिलता। मैं क्या करूँ इतना मसरूफ़ हूँ अकेला हूँ कोई मदद करने वाला नहीं है। और जो नौकर-चाकर हैं उन पर तो बन्दा एतिमाद कर ही नहीं सकता। मुझे तो टाईम देना पड़ता है। बच्चों का मामला है तो टाईम निकाल ही नहीं सकता।

अब जो आदमी मस्जिद में आने और नमाज़ पढ़ने का वक़्त निकाल ही नहीं सकता, कहता है कि मैं तो इतना व्यस्त हूँ काम का बहुत ज़्यादा बोझ हैं। थोड़े दिनों के बाद वही आदमी आता है, कहता है कि हज़रत! मेरे लिए दुआ कर दें। एक बिज़नेस मिल रहा है, मैं ख़रीदना चाहता हूँ दुआ करें कि अल्लाह वह बिज़नेस मुझे अ़ता कर दे। अब उस नौजवान से पूछिये कि उस बिज़नेस को चलाने के लिए आप कहाँ से वक़्त निकालेंगे। वह कहेगा जी बिज़नेस मिल जाए टाईम निकाल लूँगा। तो अगर एक दुकान के होते हुए दूसरी दुकान के लिए टाईम निकाल सकते हैं, एक बिज़नेस के होते हुए दूसरे बिज़नेस के लिए टाईम निकाल सकते हैं तो हम दुनिया में रहते हुए आख़िरत की तैयारी के लिए टाईम क्यों नहीं निकाल सकते।

दुनिया की हक़ीक़त

हक़ीक़त यह होती है कि दुनिया की चीज़ें आँखों के सामने होती हैं और आख़िरत की चीज़ें पर्दे में हाती हैं। इसलिए इनसान उसके ऊपर कमज़ोर यक़ीन होने की वजह से इतनी एहतियात नहीं करता। एक मछली तैर रही थी उसको किसी बड़ी मछली ने समझाया कि अगर तुम इस तरह कोई काँटा देखो या कोई इस तरह का कीड़ा देखो या गोश्त का टुकड़ा देखो तो उसके चक्कर में न फंसना। इसलिए कि उसके पीछे एक धागा होता है, धागे के पीछे शिकारी होता है। जब तुम उस गोश्त के टुकड़े को खाने लगोगी तो काँटा तुम्हारे गले में चुभ जायेगा। फिर उस धागे की मदद से शिकारी तुम्हें खींच लेगा। फिर वह घर ले जाएगा। उसकी बीवी छुरी से तुम्हारे टुकड़े बनाएगी। फिर तुम्हें नमक-मिर्च लगाएगी और फिर वह कबाब बनाकर तेल के अन्दर तलेगी। दस्तरख़्वान पर सजाएगी, मेहमान आयेंगे और वे बत्तीस दाँतों से चबा-चबाकर तुम्हें खायेंगे। इसलिए तुम यह काम मत करना।

अब अगर वह छोटी मछली कहे कि अच्छा मैं देखती हूँ कि वह धागा कहाँ है, शिकारी कहाँ है, उसकी बीवी कहाँ है, उनका किचन कहाँ है, और वह उस दरिया के पानी में चक्कर लगाती फिरे कि यह मुझे कहीं नज़र आ जाए तो उसको वहाँ ये चीज़ें कहीं भी नज़र नहीं आ सकतीं। अगर वह भरोसा और यक़ीन कर लेगी तो उसका अपना फ़ायदा, और अगर नहीं करेगी और बात न मान कर वह गोश्त खाने लगेगी और काँटा हलक़ में चुभेगा तो उसको ख़ुद ब-ख़ुद शिकारी भी नज़र आएगा फिर उसको उसकी बीवी भी नज़र आयेगी। फिर उसको छुरी और चाकू के साथ गोश्त के टुकड़े बनते हुए भी नज़र आयेंगे, फिर नमक-मिर्च भी नज़र आ जाएगा और तेल की कढ़ाही भी नज़र आ जाएगी।

बिल्कुल इसी तरह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें

बतायाः लोगो! जब तुम्हारी मौत आएगी तो फिर जन्नत से भी फ़रिश्ते आयेंगे और जहन्नम से भी फ़रिश्ते आयेंगे। अगर तुम नेक इनसान हुए तो जन्नत के फ़रिश्ते तुम्हारी रूह ले जायेंगे और अगर बुरे हुए तो जहन्नम के फ़रिश्ते तुम्हें ले जायेंगे। नेक लोगों की रूह को इल्लिय्यीन पर लेकर जाते हैं जो ऊपर है। बुरे लोगों की रूह को सिज्जीन में लेकर जाते हैं जो नीचे है। फिर क़ब्र को जन्नत का बाग़ बना देते हैं या जहन्नम का गड्ढ़ा बना देते हैं। फिर क़ियामत के दिन लोग खड़े होंगे, उस दिन अ़र्श के साये के सिवा कोई साया नहीं होगा। जो लोग बुरे होंगे उनको जहन्नम में डाला जाएगा। नेक लोगों को जन्नत में ले जायेंगे।

अब ये बातें इतनी वाज़ेह और खुली हैं कि जिस आदमी ने यक़ीन कर लिया और अपने नेक आमाल अभी से शुरू कर दिये वह बन्दा यक़ीनन जन्नत में जाएगा। और जिसने सोचा कि यह मामला देखा तो किसी ने है नहीं, आगे जायेंगे तो देखी जाएगी। तो वह इनसान दुनिया में तो चन्द दिन मौज-मस्ती कर लेगा लेकिन जब मरेगा तो उसको जहन्नम के फ़रिश्ते भी नज़र आयेंगे, क़ब्र को भी दोज़ख़ का गड्ढ़ा बना दिया जाएगा। क़ियामत के दिन बग़ैर साये के खड़ा होना पड़ेगा और फिर उसको लम्बे-लम्बे दाँतों वाले काले फ़रिश्ते दोज़ख़ में जो लेकर जायेंगे वे भी नज़र आ जायेंगे। मगर उस वक़्त अफ़सोस का कोई फ़ायदा नहीं होगा।

मिसाल

एक और मिसाल सुन लीजिए। अगर एक अण्डे के अन्दर मुर्ग़ी का बच्चा बन चुका और थोड़ी देर में वह बाहर आने वाला है। अब फ़र्ज़ करो कि उस छोटे से बच्चे के ज़ेहन में अगर कोई डाले कि तुम एक ख़ोल (ग़िलाफ़) के अन्दर बन्द हो थोड़ी देर के बाद यह ख़ोल टूट जाएगा। तुम एक दुनिया में जाओगे जिसमें छह फुट का इनसान होता

है। पन्द्रह से बीस तीस फ़ुट के मकान होते हैं, पहाड़ होते हैं, आसमान होता है, सितारे हैं, समन्दर है, झीलें हैं और वह बच्चा ज़ेहन में यह सोचे कि अच्छा मैं देखता हूँ कि ये चीज़ें नज़र आती हैं कि नहीं, तो उसको अण्डे के ख़ोल (गिलाफ़) में से तो कोई चीज़ नज़र नहीं आ सकती। लेकिन अगर वह यक़ीन कर लेगा तो जैसे ही अण्डे के ख़ोल से बाहर आयेगा इनसान को भी देखेगा, दरख़्तों को भी देखेगा, मकानों को भी देखेगा, उसको अपनी दुश्मन बिल्ली का भी पता चल जाएगा। और उसको हर चीज़ अपनी आँखों के सामने नज़र आ जाएगी। लेकिन अगर वह कहेगा कि मैं यहाँ देखूँ तो यहाँ उसको अण्डे के अन्दर कुछ नज़र नहीं आएगा।

बिल्कुल इसी तरह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें बताया कि हम ज़मीन और आसमान के अण्डे के अन्दर फंसे हुए हैं। जन्नत भी है और दोज़ख़ भी है। क़ियामत के दिन अल्लाह इन्साफ़ की तराज़ू भी क़ायम करेंगे। अगर हम इस पर यक़ीन कर लें तो हमारा फ़ायदा है। अगर नहीं करेंगे तो मौत के वक़्त अल्लाह तआ़ला पर्दे हटा देंगे। कुरआन मजीद में फ़रमाया:

فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ○ (سورة ق آیت: ۲۲)

उस दिन अल्लाह तआ़ला आँखों के पर्दे खोल देंगे और इनसान अपनी आँखों से आख़िरत की हर चीज़ को देख लेगा। फिर पछताएगा कि काश! मैंने दुनिया में नेक काम कर लिये होते। अब पछताने से क्या होता है जब चिड़िया चुग गयी खेत। अब रोने का क्या फ़ायदा। यह मेहनत तो पहले करनी चाहिए थी। चुनाँचे यह फ़रियाद करेगा:

قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ○ لَعَلِّیْ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ (سورة المومنون)

ऐ अल्लाह! मुझे वापस जाने दीजिए एक मौक़ा और दे दीजिए। मैं बहुत नेक बनकर ज़िन्दगी गुज़ारूँगा।

अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे: हरगिज़ नहीं! हरगिज़ नहीं!

तो इसलिए हमें चाहिए कि हम मौत की तैयारी करें। अगर कोई मुर्ग़ी बिल्ली को आते हुए देखे और अपनी आँखें बन्द कर ले तो उसकी जान बिल्ली से बचती नहीं। उसकी आँखें तब खुलती हैं जब बिल्ली आकर उसका गला दबोच लेती है।

इसी तरह अगर हम मौत से आँखें बन्द कर लेंगे तो हम मौत के फ़रिश्ते से बच नहीं सकते, हमारी आँखें तब खुलेंगी जब मौत का फ़रिश्ता आकर हमारा गला दबोचेगा। फिर एहसास होगा कि काश! हमने दुनिया के अन्दर तैयारी कर ली होती। इसलिए हमें चाहिए कि नेकी पर ज़िन्दगी गुज़ारें और आज से ही इस पर मेहनत करनी शुरू कर दें।

दुनिया के अन्दर औरतें अपनी ज़िन्दगी के लिए बड़ी प्लानिंग करती हैं, कई-कई साल इस सोच में लगा देती हैं कि घर ऐसा हो, किचन ऐसा हो, लाऊँज ऐसा हो, और सारी ज़िन्दगी की जो ख़्वाहिशें होती हैं, सहूलियतें होती हैं उनका ख़्याल रखकर फिर कई सालों के बाद उनको दुनिया में मकान बनाने या ख़रीदने का मौक़ा मिलता है।

इसी तरह इनसान आख़िरत को सामने रखकर आज से नेकी शुरू कर दे। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतों पर अ़मल करे। अल्लाह तआ़ला के अहकाम पर अ़मल करे।

आख़िरत का इनाम

यह ज़िन्दगी तो थोड़ी सी है, मुश्किल में गुज़र जायेगी लेकिन आख़िरत में तो इस पर वह कुछ मिलेगा जो न किसी आँख ने देखा, ने किसी कान ने सुना और न किसी इनसान के दिल जन्नत की नेमतों का ख़्याल और गुमान तक गुज़रा।

अब हम अगर तसव्वुर करें तो हम ख़ूबसूरत से ख़ूबसूरत इनसान का तो तसव्वुर कर सकते हैं, ख़ूबसूरत से ख़ूबसूरत मन्ज़र (दृश्य) का तसव्वुर तो कर सकते हैं लेकिन हम जो कुछ सोचेंगे ये सब चीज़ें

छोटी होंगी, नीची होंगी, और जन्नत के हुस्न व जमाल का मामला और जन्नत के अन्दर की ज़िन्दगी का मामला हमारी सोच और अ़क्ल से भी बेहतर और ऊँचा होगा।

आप एक बात बताईये कि अगर कोई आदमी आकर आपको कहे कि हम आपको एक अ़मल ऐसा बताते हैं कि अगर आप उस अ़मल को कर लें तो जो आप कहेंगी वह बात पूरी हो जाएगी। तो आप इतनी ख़ुश होकर वह अ़मल करेंगी कि अगर रातों को जागकर करना पड़ता है तो वह भी करेंगी, नमाज़ों के बाद बैठकर करना पड़ता है तो भी करेंगी, अपने आपको मशक़्क़तों में डालेंगी। खाने में देर कर लेंगी रोज़े रख लेंगी, मेहनत मशक़्क़त बरदाश्त कर लेंगी, मगर कहेंगी कि मुझे एक ऐसा मौक़ा मिलेगा कि मेरी हर बात पूरी होगी।

अगर दुनिया के अन्दर हर बात पूरी होने की ख़ातिर हम इतनी क़ुरबानियाँ दे सकते हैं तो परवर्दिगारे आ़लम ने फ़रमाया कि जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी में मेरे हुक्मों पर अ़मल कर लेंगे तो जब मेरे पास आयेंगे तो:

وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ۝ (سورة حم السجدة: ٣١)

मैं उनको ऐसी ज़िन्दगी दूँगा, जो उनके दिल की चाहत होगी हर चाहत उनके दिल की पूरी कर दी जाएगी।

यह कितने नफ़े का सौदा है कि हम थोड़ी सी ज़िन्दगी में अल्लाह तआ़ला की चाहत को पूरा कर लें और फिर आख़िरत में अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त हमारी चाहत को पूरा करेगा।

याद रखें! आदमी एक जगह ही मर्ज़ी पूरी कर सकता है। या तो दुनिया में आप अपनी मन-मर्ज़ी पूरी करती फिरें या फिर दुनिया में अल्लाह की मर्ज़ी पूरी कर लें और आख़िरत में फिर आपकी मर्ज़ी पूरी होगी। हमेशा-हमेशा की ज़िन्दगी आपको आपकी मन्शा के मुताबिक़ मिल जायेगी। हमें चाहिए कि दुनिया में हम आख़िरत की तैयारी करें।

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

كن فى الدنيا كانك غريب

तुम दुनिया में ऐसे ज़िन्दगी गुज़ारो जैसे कोई परदेसी होता है।

और तयशुदा बात है कि परदेसी को परदेस में चाहे जितनी सहूलियात हों, लोग जितनी मुहब्बतें दें, लोग जितना उसका ख़्याल करें मगर बन्दे को अपने वतन की याद आती है, माँ-बाप याद आते हैं, बीवी बच्चे याद आते हैं, यार-दोस्त याद आते हैं। हर वक़्त उसका दिल तड़पता है कि काश! मैं अपने वतन पहुँच सकता। इसी तरह हमारा वतन भी जन्नत है आदम अ़लैहिस्सलाम और अम्माँ हव्वा वहाँ से दुनिया में आए। अब उस वतन की तरफ़ हमको लौटकर जाना है। तो हमें चाहिए कि हम उसके लिए तैयारी कर लें। हम तो यहाँ परदेसी हैं, थोड़े दिन की बात है ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और आख़िरकार चले जायेंगे। कितने लोग थे जो हमसे पहले आये, ज़िन्दगी गुज़ार कर चले गये। आज हम ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। कुछ अ़रसे के बाद हम भी चले जायेंगे। किसी ने क्या प्यारी बात कही है।

कोई आता है कोई जाता है, महफ़िल का है रंग वही
साक़ी की नवाज़िश जारी है, मेहमान बदलते रहते हैं

पहले हमारे माँ-बाप इस ज़मीन पर मेहमान थे, वे चले गये। अब हम ज़मीन पर मेहमान हैं, हम भी चले जायेंगे। कुछ वक़्त बाद हमारी औलादें होंगी फिर उनकी औलादें होंगी, यह सिलसिला चलता रहेगा। तो अब हमारी बारी है इसलिए हमें चाहिए कि हम डटकर नेकी कर लें जिस तरह दुनिया की ज़िन्दगी मुख़्तसर है तो चाहिये कि ख़ूब डटकर काम कर लिया जाये।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत की उम्रें साठ और सत्तर के दरमियान होंगी। पहले ज़माने में लोगों की उम्रें ज़्यादा हुआ करती थीं। चुनाँचे हज़रत नूह

अ़लैहिस्सलाम को चालीस साल की उम्र में नुबुव्वत मिली, कुरआन मजीद में है कि नौ सौ पचास साल उन्होंने अपनी क़ौम को तब्लीग़ की। और जब ज़्यादा लोग ईमान न लाये और उनको लोगों ने सताया तो उस वक़्त उन्होंने बद्दुआ़ की और अ़ज़ाब आया, तूफ़ान आया फिर तूफ़ान के बाद भी वह साठ साल तक ज़िन्दा रहे। गोया एक हज़ार पचास साल की ज़िन्दगी उनकी साबित होती है।

अब सोचिए एक हज़ार साल से ज़्यादा की उन्होंने ज़िन्दगी गुज़ारी और आज तो सौ साल की उम्र भी किसी-किसी की होती है, वरना इससे भी कम है।

एक औ़रत का आश्चर्य

किताबों में लिखा है कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में एक औ़रत आयी। कहने लगी हज़रत! दुआ़ के लिए आयी हूँ मेरे बच्चे ज़िन्दा नहीं रहते, बचपन लड़कपन में ही मर जाते हैं। पूछा कितनी उम्र में? कहने लगी, कोई सौ साल का होकर मर जाता है कोई दो सौ साल का होकर मर जाता है और कोई तीन सौ साल का होकर मर जाता है।

वह मुस्कुराये फ़रमाने लगे अल्लाह की बन्दी क़ियामत के क़रीब एक ऐसा वक़्त भी आयेगा जबकि इनसान की उम्रें ही सौ साल से थोड़ी होंगी। जब उन्होंने यह बात कही तो औ़रत हैरान होकर देखने लगी, कहने लगी, ऐ अल्लाह के नबी! जिन लोगों की उम्रें ही सौ साल से थोड़ी होंगी क्या वे दुनिया में रहने के लिए मकान बनायेंगे? फ़रमाया मकान भी बनायेंगे शादी-विवाह भी करेंगे, कारोबार भी करेंगे।

यह सुनकर उस औ़रत ने एक ठण्डी साँस ली। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने पूछाः क्यों ठण्डी साँस ली? वह कहने लगी ऐ अल्लाह के नबी! अगर मैं भी उस वक़्त में होती जब उम्रें ही सौ साल से थोड़ी होंगी, इतना थोड़ा वक़्त तो मैं एक सज्दे में ही गुज़ार देती।

हमारी ज़िन्दगी तो इतनी मुख़्तसर है। नबी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया मेरी उम्मत की उम्रें साठ और सत्तर के दरमियान होंगी। यानी कोई तो पैदा होते ही मरेगा और कोई सौ साल से ऊपर जाकर मरेगा। लेकिन जब औसत (Average) निकालेंगे, तो Gross Average इस उम्मत का साठ से सत्तर बनेगा। अब वे औ़रतें जो इस वक़्त चालीस साल से ऊपर की उम्र को पहुँच चुकी हैं, वे अच्छी तरह सुन लें कि वे अपनी ज़िन्दगी का दूसरा आधा हिस्सा गुज़ार रही हैं। पहला आधा हिस्सा गुज़ार चुकीं। यानी वे अपनी ज़िन्दगी का ज़ोहर और अ़स्र का वक़्त गुज़ार रही हैं। ज़ोहर और अ़स्र के बाद सूरज डूबते हुए देर नहीं लगती। तो हमें चाहिए कि हम आख़िरत की डटकर तैयारी करें।

ज़िन्दगी की शाम

किसी आदमी की अगर छुट्टी हो तो छुट्टी के दिन जब वह सुबह को उठता है तो उसके दिल में बड़ी तसल्ली होती है कि सारा दिन है, में बहुत काम समेट लूँगा। लेकिन जब ज़ोहर का वक़्त हो जाये उसी बन्दे को देखें कि परेशान हो रहा होगा कि काम सिमटे नहीं ज़ोहर का वक़्त आ गया। और वह सोचेगा कि बस अब तो मग़रिब क़रीब आ गयी। तो जैसे ज़ोहर के बाद मग़रिब के क़रीब होने का एहसास होता है तो जो चालीस साल से ऊपर की हैं वे समझ लें कि अब हम ज़ोहर और अ़स्र के बीच का वक़्त गुज़ार रही हैं। और मालूम नहीं कि यह ज़िन्दगी का सूरज कब डूब जायेगा।

यूँ तो पता नहीं जवानों को भी मौत आ जाती है, बच्चों को भी मौत आ जाती है, लेकिन एक उसूल बता दिया, मिसाल समझाने के लिए बता दी, कि अगर साठ-सत्तर की उम्र को हम औसत (Average) उम्र लगा लें तो जो चालीस पैंतालीस से ऊपर की औ़रतें हैं उनको तो बहुत गंभीर होकर आख़िरत की तैयारी शुरू कर

देनी चाहिए।

एक और मिसाल से यह बात ज़रा स्पष्ट हो जायेगी। क्रिकेट का खेल है, आ़म तौर पर दो पारियाँ खेली जाती हैं। जब कोई पहली पारी (Inning) खेलने के लिए आता है उसके दिल में बड़ा भरोसा और इत्मीनान होता है और वह बड़ा खुलकर शार्ट खेलता है, क्योंकि उसको यक़ीन होता है कि मैं दूसरी पारी में फिर एक बार खेलने का मौक़ा हासिल करूँगा। लेकिन वही खिलाड़ी अगर दूसरी पारी में खेलने आए तो वह बहुत संभल कर खेलता है, उसको पता होता है कि एक गेन्द आएगी और मेरी पारी ख़त्म हो जायेगी।

इसी तरह जो पैंतीस-चालीस साल से ऊपर की उम्र में हैं, ये औ़रतें अपनी ज़िन्दगी की दूसरी पारी खेल रही हैं। अब क्या मालूम कब मौत के फ़रिश्ते की तरफ़ से बुलावा आएगा और खड़े-पैर जाना पड़ जायेगा।

فَلَا يَسْتَطِيعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ (سورة يٰسين)

जब मौत का फ़रिश्ता आता है तो किसी को वसीयत करने की भी फ़ुरसत नहीं मिलती। इनसान आख़िरी सलाम भी नहीं कर सकता। खड़े-पैर जाना पड़ जाता है।

जब मौत का मामला ऐसा है तो हमें चाहिये कि हम उसके लिए अभी से तैयारी शुरू कर दें। इस दुनिया में आपको ख़ुदा के इनकारी मिल जायेंगे, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इनकारी मिल जायेंगे, क़ुरआन के इनकारी मिल जायेंगे, इस्लाम के इनकारी मिल जायेंगे। पूरी दुनिया में मौत का इनकारी कोई भी नहीं मिल सकता। हर इनसान यही कहेगा, मोमिन है या काफ़िर, कि एक न एक दिन मुझे मरना तो ज़रूर ही है। जब मरना ही है तो फिर क्यों न हम इस मरने की तैयारी कर लें।

समझदार इनसान कौन है?

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास एक नौजवान आये अन्सार में से, बड़ा ही ख़ूबसूरत सवाल पूछा। कहने लगे ऐ अल्लाह के नबी! "इनसानों में सबसे ज़्यादा अ़क़्लमन्द और समझदार इनसान कौन है?" आपने फ़रमायाः "वह जो मौत को कसरत से याद करता रहता हो" वह है जो उनमें से मौत की तैयारी दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा करता हो" ये हैं अ़क़्ल मन्द लोग जो दुनिया की शराफ़त और आख़िरत की तैयारी को ज़िन्दगी का मक़सद बना लें।

दुनिया में हमने सूखी रोटी खाई या तर रोटी खाई, दुनिया में हमने मशक़्क़त का वक़्त गुज़ारा या आराम का वक़्त गुज़ारा, इसकी क्या हैसियत है, जबकि दुनिया की ज़िन्दगी तो सौ पचास साल की है।

दो मिनट की ज़िन्दगी

आख़िरत की ज़िन्दगी हमेशा-हमेशा की है। क़ियामत का एक दिन पचास हज़ार साल का होगा। अब जिस आदमी की उम्र सौ साल हो क़ियामत के एक दिन के मुक़ाबले में अगर उसका हिसाब लगाया जाये तो वह दो मिनट के हिसाब से बनती है। अब सोचिये कि दो मिनट की यह ज़िन्दगी है, आख़िरत के एक दिन के हिसाब से, और हमको तो हमेशा-हमेशा वहाँ रहना है।

किसी आदमी को कहें कि दो मिनट ज़रा तंगी में बैठ लें फिर आपकी हर चाहत पूरी करेंगे। वह कहेगा दो मिनट के लिए मैं हर तकलीफ़ उठा लूँगा मगर उसके बाद मुझे आसानी चाहिये। और अगर कोई बन्दा कहे कि दो मिनट के लिए मुझे मस्तियाँ करने दें फिर जो मर्ज़ी हो मेरा हश्र कर देना। उसे कोई भी अ़क़्लमन्द नहीं कहेगा।

आज हमारा हाल यही है। दो मिनट के पीछे मस्तियाँ उड़ाते फिरते हैं। नमाज़ों की परवाह नहीं होती। पर्दे की परवाह नहीं होती। महसूस करती हैं, औ़रतें पर्दा कर लेंगी तो फिर हम बाहर कैसे

निकलेंगी। उन बेचारियों को महसूस होता है कि लोग हमें क्या कहेंगे, यह जो सोचती हैं कि लोग क्या कहेंगे, यह क्यों नहीं सोचतीं कि अगर बेपर्दा बाहर निकलीं तो हमें अल्लाह क्या कहेंगे।

बेपर्दगी की नहूसत

हदीस पाक का मफ़्हूम है कि जब भी कोई बेपर्दा औ़रत घर से बाहर क़दम रखती है तो अल्लाह के फ़रिश्ते उस पर लानत बरसाना शुरू कर देते हैं, जब तक वह वापस घर में दाख़िल नहीं होती अल्लाह के फ़रिश्ते लानत करते रहते हैं। फिर रोती हैं कि हमारी ज़िन्दगी में बरकत नहीं, औलाद में बरकत नहीं, औलाद हमारा कहना नहीं मानती। शौहर के कारोबार में बरकत कहाँ से आये। तेरे लिए अल्लाह के फ़रिश्ते लानतें कर रहे हैं और अल्लाह के महबूब ने सही हदीस में इसकी तस्दीक़ फ़रमा दी। तो उन लानतों के बरसने के बाद तेरी अपनी ज़िन्दगी में भी ऐसा ही मामला रहेगा। इसी लिए बेपर्दा औ़रत जो होती है उसकी ज़िन्दगी से बरकतें उठ जाती हैं। हर वक़्त परेशान होती है। दुनिया का माल भी है, सब कुछ है कभी औलाद की तरफ़ से परेशानी, कभी सेहत की तरफ़ से परेशानी, कभी शौहर की तरफ़ से परेशानी, कभी जैठानी की तरफ़ से परेशानी, कभी सास की तरफ़ से परेशानी।

आप सोचिये और अन्दाज़ा लगाईये हर नेमत उसके घर में मौजूद होगी मगर कोई न कोई उसको परेशानी लगी हुई होगी। यह परेशानी हक़ीक़त में उस बेबरकती की वजह से होती है जो वह अल्लाह के हुक्मों को तोड़ती है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतों को छोड़ देती है।

इसलिए हमें चाहिए कि हम अ़क़्लमन्दी का सुबूत दें और दुनिया के अन्दर अपनी आख़िरत की तैयारी कर लें।

आख़िरत के दहेज की तैयारी

ये औरतें इतनी समझदार होती हैं कि बच्ची पैदा होती है उस वक़्त से सोचना शुरू कर देती हैं कि मुझे इसके दहेज की तैयारी करनी है। समझ में नहीं आती कि अभी बच्ची खिलौनों में खेल रही है और उनको उसके दहेज की फ़िक्र पड़ी हुई है और उनको अपनी फ़िक्र नहीं होती कि मुझे भी तो रब के सामने पेश होना है। मेरी अपनी उम्र पचास साल की हो गयी, क्या मैंने आख़िरत का दहेज तैयार कर लिया। तो हर औरत को ज़िन्दगी में दो बार दहेज की ज़रूरत पड़ती है- एक उस वक़्त जब ज़िन्दगी में शादी होती है, शौहर से मुलाक़ात होती है। अगर उस वक़्त दहेज बड़ा होगा अच्छा होगा। समझती है कि शौहर के पास जाकर इज़्ज़त मिलेगी।

और दूसरा दहेज जब उसकी अल्लाह से मुलाक़ात होती है, अगर उसके पास नेकियों का दहेज ज़्यादा होगा तो अल्लाह के पास जाकर उसे इज़्ज़त मिलेगी। अब दुनिया में अगर शौहर ने इज़्ज़त दी तो दुनिया की ज़िन्दगी अच्छी गुज़री, और अगर आख़िरत में अल्लाह के यहाँ इज़्ज़त न मिली फिर आख़िरत की ज़िन्दगी कैसे अच्छी गुज़रेगी। इसलिए चाहिये कि जैसे दुनिया की फ़िक्र करती हैं इसी तरह आख़िरत की भी फ़िक्र रखें और उसकी तैयारी अभी कर लें। यह नहीं होगा कि उसके लिए एक अलग से वक़्त मिलेगा। अपनी इसी ज़िन्दगी में उसकी तैयारी करनी है। आख़िरत के लिए तैयार रहना है। और यह भी ज़ेहन में सोचें कि दुनिया का जो कुछ है वह आख़िरकार यहीं रह जायेगा।

असली सरमाया

आख़िरत में तो इनसान के सिर्फ़ आमाल साथ जायेंगे। इसकी मिसाल आप यूँ समझिये कि आप दिल्ली में रहती हैं और कारोबार की वजह से आप यह फ़ैसला करें कि मेरा शौहर मद्रास जाना चाहता है

तो आपके घर में सौ फ़ीसद जो सामान है वह सारा मद्रास नहीं जा सकता। न क़ालीन जा सकते हैं न सारी चीज़ें फ़र्नीचर की जा सकती हैं, न किचन के सब आईटम जा सकते हैं। आप चन्द चीज़ें यहाँ से समेटेंगी जो ज़रूरी होंगी। शायद एक ट्रंक हो, और उसको आप एक कन्टेनर में सामान डलवा कर मद्रास भिजवायेंगी। और कहेंगी कि बाक़ी चीज़ें रद्दी हैं पुरानी हैं मैं यही दे दूँगी किसी को बेच दूँगी छोड़ दूँगी।

तो आप उन चीज़ों को यहीं रहने देंगी अच्छी और क़ीमती चीज़ें अपने कन्टेनर में लेकर चली जायेंगी। यह सामान है जो एक शहर से दूसरे शहर जाते हुए आप लेकर जा रही हैं।

और मान लें कि आप यह फ़ैसला कर लें कि मुझे यहाँ से मक्का मुकर्रमा जाकर रहना है तो अब आप पूरा सामान भी हवाई जहाज़ पर साथ लेकर नहीं जा सकतीं। हवाई जहाज़ वाले लोग कहते हैं कि जी आप दो बैग साथ लेजा सकती हैं और उनका वज़न भी बीस किलो पच्चीस किलो से ज़्यादा नहीं होना चाहिए। अब उन बैगों में आप अपनी ज्वैलरी रखेंगी, चैक बुक्स रखेंगी, क़ीमती सामान रखेंगी, बाक़ी हर चीज़ यहीं छोड़ेंगी। कहेंगी कि अब मैं हमेशा के लिए मक्का मुकर्रमा जा रही हूँ। वहाँ जाकर सामान ख़रीदूँगी, घर ख़रीदूँगी और वहाँ जाकर मैं अपनी सेटलमेंट करूँगी। गोया फ़ासला जितना बढ़ता जा रहा है सामान उतना ही घटता जा रहा है। एक मुल्क के एक शहर से दूसरे शहर में जाना था, सामान थोड़ा हो गया, एक कन्टेनर बना। जब एक मुल्क से दूसरे मुल्क जाना पड़ा तो सामान सिर्फ़ दो बैग बन गये और कुछ भी साथ नहीं लेजा सकते। और जब इस दुनिया से अगली दुनिया में जाना होगा तो दो बैग भी नहीं लेजा सकेंगे। आपको एक ब्रीफ़कैस लेजाने की इजाज़त होगी जिसका नाम 'आमालनामा' होगा। उसमें नेकियाँ लिखी होंगी या बुराईयाँ लिखी होंगी। जो कुछ क्रिडेट होगा या डेबिट होगा उसमें लिखा हुआ होगा और यही लेकर आप अल्लाह के हुज़ूर (सामने) पेश हो जायेंगी। मालूम हुआ कि

जितना फ़ासला बढ़ता जा रहा है, दुनिया की चीज़ें साथ छोड़ती जा रही हैं।

दुनिया उधार का माल

जब आख़िरत का सफ़र पेश आयेगा तो दुनिया की सब चीज़ें यहीं रह जायेंगी। ये आपके अच्छे-अच्छे कपड़े इधर ही रह जायेंगे। मकान की सैटिंग के लिए आप जितनी फ़िक्रमन्द होती फिरती हैं, यह इधर ही रह जायेंगी। दुनिया का जो कुछ भी आपने अपने लिए बनाया ये सब चीज़ें यहीं रह जायेंगी। सिर्फ़ आपके आमाल होंगे नेक या बुरे, जो आपके साथ क़ब्र में जायेंगे। तो जब क़ब्र में जाना ही आमाल को है तो क्यों न आमाल बनाने की आज फ़िक्र की जाये, और इसके लिए फ़िक्रमन्द रहें। नेकी की ज़िन्दगी गुज़ारें।

मैं समझता हूँ कि आज की औरतें इतनी लिखी-पढ़ी अक़्लमन्द हैं कि अपने नफ़े नुक़सान को अच्छी तरह समझती हैं। और चन्द मिसालों को अगर वे ज़ेहन में रखेंगी तो उनके दिल में यह बात बैठ जायेगी कि दुनिया की ज़िन्दगी वक़्ती और अस्थाई है। दुनिया में जो कुछ है उधार का माल है, और वह जो उधार के माल पर लट्टू हुआ फिरता उसी को पागल कहते हैं। तो हम दुनिया के उधार के माल पर लट्टू और फ़रेफ़्ता न हों। बल्कि आख़िरत की कमाई करने की तरफ़ ध्यान दें। और अपने आपको नेक बनाने की कोशिश करें। इसलिए कि आख़िरकार इनसान को दुनिया से जाना ही है। दुनिया मिट्टी गारे की बनी हुई है और फ़ना होने वाली है, जबकि जन्नत सोने-चाँदी से बनी और हमेशा बाक़ी रहने वाली है, तो हम क्यों न आख़िरत की तैयारी करें और दुनिया के हर दिन को क़ीमती बनाने की कोशिश करें।

हज़रत ख़्वाजा अबुल्-हसन का ख़ूबसूरत क़ौल

हमारे सिलसिला-ए-औलिया नक़्शबन्दिया के एक बुज़ुर्ग थे ख़्वाजा

अबुल्-हसन ख़रक़ानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि। उन्होंने बड़ी ख़ूबसूरत बात कही, मुझे तो बहुत ही अच्छी और प्यारी लगती है। फ़रमाने लगे कि जिस बन्दे ने कोई दिन अल्लाह की नाफ़रमानी के बग़ैर गुज़ारा, गुनाहों के बग़ैर गुज़ारा। वह ऐसा ही है कि उसने वह दिन नबी अ़लैहिस्सलाम के साथ गुज़ारा।

मालूम हुआ कि अगर हम रोज़ाना सुबह उठें तो सोच में यह हो कि आज मुझे कोई भी बड़ा गुनाह नहीं करना है, न बेपर्दगी करनी है न हमको टी. वी. देखना है, न हमको म्यूज़िक सुनना है, न हमको किसी की ग़ीबत करनी है, न किसी के दिल को दुख देना है, न झूठ बोलना है। हमको कोई गुनाह नहीं करना है। तो अगर आपने कोई दिन गुनाहों के बग़ैर गुज़ार लिया तो ऐसा ही है कि आपने वह दिन नबी अ़लैहिस्सलाम के साथ गुज़ारने का मौक़ा पाया। अल्लाह करे कि ज़िन्दगी के ऐसे दिन गुज़ारने की हमें भी तौफ़ीक़ हो कि जिसमें हम गुनाहों से बच जायें और आख़िरत की तैयारी करने वाले बन जायें।

मौत तो आख़िरकार आनी ही है, और मौत के वक़्त इनसान को सौ साल की ज़िन्दगी भी यूँ महसूस होती है कि जैसे यह सुबह का वक़्त गुज़ारा या शाम का वक़्त गुज़ारा। इसी तरह का यह सिलसिला मालूम होगा।

मौत का ज़ायक़ा

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की जब वफ़ात हुई एक हज़ार पचास साल की उम्र गुज़ारने के बाद, अल्लाह तआ़ला ने पूछा ऐ मेरे पैग़म्बर! बताईये आपने ज़िन्दगी को कैसा पाया? अ़र्ज़ किया परवर्दिगारे आ़लम! यूँ महसूस हुआ कि जैसे एक मकान के दो दरवाज़े हैं। मैं एक दरवाज़े से दाख़िल हुआ और दूसरे दरवाज़े से बाहर निकल आया। एक हज़ार साल के बाद यूँ महसूस होता है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की जब वफ़ात हुई अल्लाह तआ़ला ने पूछा मेरे प्यारे कलीम! आपने मौत को

कैसा पाया। फ़रमायाः ऐ अल्लाह! मुझे यूँ महसूस होता था कि एक बकरी ज़िन्दा है और ज़िन्दा हालत में उसकी खाल उतारी जा रही है। जिस तरह ज़िन्दा बकरी को खाल उतारने की तकलीफ़ होती है मुझे मौत के वक़्त यूँ तकलीफ़ महसूस हुई। यह तकलीफ़ हमारे ऊपर भी आनी है। इसलिए कुरआन पाक में यह नहीं फ़रमाया कि तुम्हें मौत आयेगी, कुरआन पाक में फ़रमायाः

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ

तुममें से हर किसी को मौत का ज़ायका चखना है।

अब ज़ायका कभी कड़वा होता है कभी मीठा होता है। मालूम नहीं हमारी मौत के वक़्त क्या मामला हो। हम परवर्दिगारे आ़लम से तमन्ना रखते हैं, फ़रियाद करते हैं, उम्मीद रखते हैं कि हमारी मौत को हमारे लिए मीठा जाम बना दे और हमें हर तरह की तकलीफ़ों से महफ़ूज़ फ़रमा दे।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की जब मौत का वक़्त आने लगा। मलकुल्-मौत (मौत का फ़रिश्ता) आये, अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के दोस्त! अल्लाह तआ़ला ने आपको याद किया है और मैं आपकी रूह निकालने के लिए आया हूँ। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हैरान हुए फ़रमाने लगेः मलकुल्-मौत!

هل رأيت خليلًا يقبض روح خليله

क्या तुमने किसी ऐसे दोस्त को देखा है जो अपने दोस्त की रूह को क़ब्ज़ कर रहा हो।

मलकुल्-मौत अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त के दरबार में पेश हुए। अ़र्ज़ कियाः ऐ मालिक! आपके ख़लील (दोस्त) ने यह बात कही है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया। उनसे कहो क्या कोई दोस्त अपने दोस्त की मुलाक़ात को नापसन्द करता है? मौत के फ़रिश्ते ने आकर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से यह बात कह दी। हज़रत इब्राहीम

ख़लीलुल्लाह समझ गये कि मौत आयेगी तब अल्लाह की मुलाक़ात नसीब हो जायेगी।

कहने लगे ऐ मलकुल्-मौत! जल्दी कर मेरी रूह क़ब्ज़ कर ले। और मुझे अपने परवर्दिगार के साथ वासिल करवा दे। (यानी मुलाक़ात करने वाला बना दे)। इसलिए हदीस पाक में आता है:

الموت جسر يوصل الحبيب الى الحبيب

मौत तो एक पुल की तरह है जो एक दोस्त को दूसरे दोस्त के साथ मिला देती है।

अगर हमने दुनिया में अल्लाह की फ़रमाँबरदारी की होगी तो हम क़ियामत के दिन अल्लाह से इस तरह मिलेंगे जिस तरह परदेस में गया हुआ कोई मुसाफ़िर मुद्दतों के बाद आये और वह मुहब्बत वालों के दरमियान पहुँचे तो लोग कैसे मिलते हैं। एक दफ़ा गले मिलते हैं। मुहब्बत का जज़्बा ठण्डा नहीं होता तो फिर गले मिलते हैं। हमने दो दोस्तों को देखा प्राईमरी स्कूल के दोस्त थे, बीस तीस साल के बाद मिले, एक बार गले मिलते हैं फिर गले मिलते हैं तीन-तीन दफ़ा गले मिलते हैं और कहते हैं कि ऐसी ख़ुशी हो रही है कि बता नहीं सकते।

तो जैसे वे दोस्त एक दूसरे को मिले और मुहब्बत का जज़्बा इतना था कि मिलने से भी उस जज़्बे में कमी नहीं आ रही उसी तरह जो बन्दा दुनिया में अल्लाह के हुक्मों की फ़रमाँबरदारी करेगा, क़ियामत के दिन जायेगा तो एक दोस्त की तरह अल्लाह के सामने पेश कर दिया जायेगा। अब जिस बन्दे ने दुनिया में तैयारी न की यह इनसान क़ियामत के दिन मुज्रिम बनाकर पेश कर दिया जायेगा।

सोचने की बात

ज़रा एक मिसाल आप समझ लीजिए कि अगर आपको किसी दूसरे शहर में जाना हो और वहाँ आपके रिश्तेदारों का कोई घर है, वे रिश्तेदार आपको अच्छा नहीं समझते, आपको बुरा समझते हैं, बुरे

चरित्र वाला समझते हैं, बोहतान लगाते हैं, आपकी ग़ीबतें करते हैं, आपका बुरा माँगते हैं, वे सारे के सारे आपके पक्के मुख़ालिफ़ हैं और आपको उस शहर में जाना पड़ गया और आपके मियाँ आपको कहते हैं कि या तो मैं आपको किसी होटल के अन्दर कमरा लेकर दे देता हूँ या फिर आपको उनके घर में ठहरना पड़ेगा, पसन्द आपकी है।

मेरा ख़्याल है कि एक फ़ीसद भी आप तैयार नहीं होंगी कि ऐसे घर में क़दम रखें जहाँ आपको लोग बुरा समझते हैं। आप कहेंगी कि मैं तो एक मिनट के लिए भी वहाँ नहीं जा सकती। मुझे तो वहाँ साँस ही नहीं आयेगी। यह हो ही नहीं सकता कि मैं वहाँ जाऊँ। मेहरबानी करके मुझे कहीं और ठहराने का बन्दोबस्त करें। तो दुनिया में कहीं अगर कोई आपका मुख़ालिफ़ है, आप उसके घर में क़दम रख ही नहीं पातीं, और अगर आपने दुनिया में रहते हुए गुनाह करके अपने परवर्दिगार को अपना मुख़ालिफ़ बना लिया तो फिर क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने कैसे पेश होंगी। सोचिये तो सही, क्या हालत होगी।

इसलिए आज वक़्त है आख़िरत की तैयारी करने का, अपने रब को मनाने का। वह परवर्दिगार इतना करीम है कि किसी बन्दे ने कितने ही गुनाह क्यों न किये हों, अगर अल्लाह के सामने माफ़ी माँगने के लिए आ जाये तो अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा क़बूल कर लेते हैं। हमें क्या पता हमारी मौत किस हालत में आयेगी।

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि का फ़रमान

इमान ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे: मौत बर्हक़ है कफ़न के मिलने में शक है। तो मौत आनी है, क्या कफ़न मिलेगा या कि नहीं मिलेगा। कभी-कभी यह फ़रमाते थे ऐ दोस्त! तुझे क्या मालूम बाज़ार में वह कपड़ा पहुँच चुका हो जिससे तेरा कफ़न बनना है। हम मौत को भूल जाते हैं, मौत तो हमें नहीं भूलती, कितने लोग होते हैं जो शादी-विवाह में मशग़ूल होते हैं और उनके कफ़न का कपड़ा बाज़ार

में आ चुका होता है।

ऐसा न हो कि हम भी इसी तरह अचानक मौत के मुँह में दबोच लिये जायें, हम अक़्लमन्दी करें और इससे पहले-पहले आख़िरत की तैयारी कर लें।

मौत का पैग़ाम

नबी अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमायाः ऐ मौत के फ़रिश्ते! तुम आने से पहले कोई संदेश (Message) ही भेज दिया करो जैसे लोग कहते हैं कि अपने दोस्त को आने से पहले कोई ई-मेल कर देनी थी। तो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया आने से पहले पैग़ाम भेज दिया करो ताकि लोग तैयार हो जायें। मलकुल्-मौत ने कहा ऐ अल्लाह के महबूब! मैं पैग़ाम तो बहुत भेजता हूँ लोग तवज्जोह नहीं देते।

मिसाल के तौर पर किसी आदमी की बीनाई (आखों की रोशनी) का कम हो जाना यह एक पैग़ाम है कि मौत क़रीब है, दाँत के अन्दर कीड़े का लग जाना इस बात की अ़लामत है कि ज़िन्दगी ख़ूब गुज़ार चुके। खा-खाकर दाँतों में कीड़े पड़ चुके, अब मौत का वक़्त क़रीब है।

किसी इनसान के बालों का सफ़ेद हो जाना, यह भी मौत का पैग़ाम (Message) है। किसी की समाअ़त (सुनने की ताक़त) का कम हो जाना यह भी मौत का पैग़ाम है। किसी को शूगर, ब्लड प्रेशर और दिल की बीमारी, लम्बी बीमारियों का हो जाना यह मौत के क़रीब होने का पैग़ाम है। लेकिन हम इस पैग़ाम को संजीदगी से लेते ही नहीं। कान ही नहीं धरते, अपनी मस्तियों में लगे होते हैं।

इसलिए जब मौत का फ़रिश्ता आता है तो हम तैयार नहीं होते। हमें चाहिए कि हम उसकी तैयारी कर लें ताकि हम मौत से पहले मौत के लिए तैयार हों। जिस इनसान ने आख़िरत की तैयारी कर ली वह इनसान खुशनसीब इनसान है।

आख़िरत की तैयारी कैसे करें?

दुनिया के अन्दर रहकर आख़िरत की तैयारी कर लेना, मौत के लिए तैयार रहना, यह बड़े नसीबे की बात है। सहाबा-ए- किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का यह आ़लम था कि जब मलकुल्- मौत को देखते थे फ़रमाते थे, कैसा अच्छा मेहमान आया है मैं तो बीस साल से तुम्हारे इन्तिज़ार में था। और अब आप आये हो तो मैं तो जाने के लिए तैयार हों। इस तरह वे तैयारियाँ करके रखते थे और मौत के इन्तिज़ार में रहा करते थे। यही बात नबी अ़लैहिस्सलाम ने समझाई:

كن فى الدنيا كانك غريب اوعابر سبيل

दुनिया में ऐसे रहो जैसे कोई परदेसी होता है, या रास्ता चलने वाला मुसाफ़िर होता है।

मुसाफ़िर अगर थोड़ी देर रुक भी जाये तो उसको पता होता है कि मुझे सफ़र आगे करना है। तो यह दुनिया भी इसी तरह हमारे लिए मुसाफ़िरगाह है। हमको यहाँ से गुज़रकर आगे असली वतन की तरफ़ जाना है। लिहाज़ा मौत की ख़ूब तैयारी कर लें और मौत की तैयारी कोई वर्ज़िश (व्यायाम) करने का नाम नहीं कि आप सुबह उठकर कोई वर्ज़िश (व्यायाम और कस्रत वग़ैरह) करने बैठ जायेंगी तो मौत के लिए तैयार हो जायेंगी। नहीं! मौत की तैयारी कहते हैं अपने जिस्म के किसी अंग से भी अल्लाह की नाफ़रमानी न करना, जिस्म के हर अंग को सुन्नत के मुताबिक़ बना लेना।

जब इस तरह आप ज़िन्दगी को बना लेंगी तो गोया आप आ़ख़िरत के लिए तैयार हो जायेंगी। फिर आपके लिए आख़िरत की सब मन्ज़िलें आसान हैं।

याद रखना दुनिया में इनसान जिस मुल्क में रहता हो, अगर उसके पास उस मुल्क की क्रन्सी (नोट, रुपये) बहुत सारी है तो वह सुख की ज़िन्दगी गुज़ार लेता है। मकान भी बड़ा लेता है गाड़ी भी

अच्छी ख़रीद लेता है और उसको खाने पीने की हर चीज़ मन-पसन्द मिल जाती है। लिबास मन-पसन्द मिल जाता है हर चीज़ उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ मिल जाती है क्योंकि उसके पास क़न्सी मौजूद है। ज़रूरत पड़े तो वह क़न्सी ख़र्च करके अपनी हर ज़रूरत को पूरा कर लेता है।

और अगर उसके पास क़न्सी न हो तो वह तो पानी को भी तरसेगा, वह तो रोटी को भी तरसेगा। वह तो फटे हुए लिबास में होगा मगर दूसरे लिबास को तरसेगा। सर छुपाने की जगह नहीं होगी। चुनाँचे उसको सड़क के किनारे बैठना लेटना पड़ेगा।

आप बाहर निकल कर आते-जाते नहीं देखते, लोग बहुत सी बार इतने ग़रीब होते हैं कि वे खुले आसमान के नीचे ज़िन्दगी गुज़ारने पर मजबूर हो जाते हैं। इससे मालूम हुआ कि जिसके पास क़न्सी न हो उसकी ज़िन्दगी मुश्किल गुज़रती है और जिसके पास व्यापक मात्रा में पैसा हो उसकी ज़िन्दगी आसानी से गुज़र जाती है। बिल्कुल इसी तरह आख़िरत की क़न्सी नेकियाँ हैं, जिस इनसान के पास नेकियाँ ज़्यादा होंगी, क़ब्र में भी उसके लिए आसानियाँ होंगी कि वह क़ब्र जन्नत का बाग़ बन जायेगी। मौत के वक़्त भी आसानियाँ कि जन्नत के फ़रिश्ते आ जायेंगे। हश्र के दिन भी आसानियाँ कि अ़र्श का साया नसीब हो जायेगा, और जन्नत में जाना आसान कि नेकियों की वजह से Allotment मिल जायेगी। यानी वहाँ के मकान होंगे तमाम नेमतें होंगी।

अल्लाह की रहमत के समन्दर

जिस तरह दुनिया में औरत की ख़्वाहिश होती है कि माल इतना ज़्यादा हो कि मैं मन-मर्ज़ी की ज़िन्दगी गुज़ार सकूँ। ऐसे ही आपको सोचना चाहिये कि मेरे पास नेकियाँ इतनी हों कि मैं आख़िरत में मन-मर्ज़ी की ज़िन्दगी गुज़ार सकूँ। और यह नेकियाँ कमानी बड़ी आसान हैं। किसी को मीठा बोल-बोल दें तो यह सदक़ा है। औरत

किसी दूसरी औ़रत को ख़ुश होकर मिल ले तो यह सदक़ा है। किसी की बात सुनकर कोई तसल्ली के दो बोल कह दें तो यह सदक़ा है।

इतनी छोटी-छोटी बातों पर नेकियाँ मिलती हैं। अपने बच्चों को प्यार दें तो यह सदक़ा है। अपने मियाँ के साथ प्यार मुहब्बत की ज़िन्दगी गुज़ारें, झगड़े करने, दलीलें देनी ज़िद करनी छोड़ दें। मानने वाली आ़दत डाल लें तो आपको सदक़े का अज्र मिलेगा। माँ-बाप सास-ससुर को ख़ुश रखें, उनकी ख़िदमत करें आपको नेकियाँ मिलेंगी। अपने घर को साफ़-सुथरा रखें तो नेकियाँ मिलेंगी। घर के अन्दर जो खाने वग़ैरह बनवाती हैं उनमें आप नीयत करें कि मैं अल्लाह की रिज़ा के लिए बना रही हूँ तो मेहमानों को खाना खिलाने का अज्र पायेंगी। अपने बच्चों पर जो वक़्त ख़र्च करेंगी नीयत करें कि यह मेरी ज़िम्मेदारी है, तो आपको इस पर अज्र (बदला और सवाब) मिलेगा।

मियाँ के साथ जो वक़्त गुज़ारें यह नीयत करें कि मैं उसके दिल को ख़ुश करूँगी अल्लाह इसके बदले में मेरे दिल को ख़ुश फ़रमायेंगे, तो आपको अज्र मिलेगा। हर सुन्नत पर अ़मल करें कि मैं सुन्नत पर अ़मल करूँगी तो मुझे अज्र मिलेगा।

औ़रत के लिए अपने आपको बख़्शवाना तो बहुत आसान है, हर-हर नेक काम पर उसको नेकियाँ मिलती हैं। अगर अल्लाह ने आपको माल पैसा दिया है तो मस्जिद बनवायें, मदरसे बनवायें, नेक कामों में ख़र्च करें। आख़िरत में आपके लिए महल तैयार हो जायेंगे। नबी करीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

من بنى لله مسجدًا بنى الله له بيتًا فى الجنة

तर्जुमाः जो दुनिया में अल्लाह का घर बनाता है अल्लाह तआ़ला उसके बदले आख़िरत में उसका घर बना देते हैं।

अब दुनिया के घर बनाने के लिए लोगों को देखा है कि दो लाख, चार लाख डॉलर लगाने उनको कोई मुश्किल नहीं होती, लेकिन

आख़िरत के लिए उनको बड़ी मुश्किल होती है। तो हम आख़िरत की ज़रूरत को भी अपनी ज़रूरत समझें और दुनिया में रहते हुए आख़िरत की तैयारी कर लें। फिर हमारे लिए सब मामलात आसान हो जायेंगे, और जो गुनाह अब तक कर चुके हम उनकी माफ़ी माँगें। ताकि अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त हमारे उन गुनाहों को माफ़ फ़रमा दें। हम चाहें तो हमारे सारे गुनाह हमारी नेकियों में तब्दील हो सकते हैं।

बनी इस्राईल का एक आदमी था, निन्नानवे क़त्ल किये थे। किसी एक सूफ़ी से पूछने लगा कि क्या मेरी तौबा की कोई सूरत है? उस सूफ़ी ने कहा: तौबा-तौबा निन्नानवे आदमियों को क़त्ल किया ऐसे जानवर इतने ख़ूँख़ार की कोई तौबा नहीं। सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली, जैसे हम कहते हैं, उसने भी इसी क़िस्म का कोई कोरा-सा जवाब दे दिया। उस बन्दे को बड़ा गुस्सा आया। उसने कहा अच्छा निन्नानवे तो पहले कत्ल हैं फिर सैकड़ा (Century) क्यों न कर लूँ। उसने उसको भी क़त्ल कर दिया।

कुछ वक़्त के बाद फिर दिल में ख़्याल आया कि मैंने सौ क़त्ल किये हैं मैं कितना बुरा इनसान हूँ। मेरी तौबा की कोई सूरत हो सकती है या नहीं? किसी आ़लिम से मिला कि तौबा की कोई सूरत बतायें। उसने कहा यक़ीनन तौबा की सूरत है। फ़लाँ जगह पर अल्लाह के नेक बन्दे रहते हैं, उन बन्दों के पास जाओ, वे तुम्हें तौबा के कलिमात पढ़ा देंगे। अल्लाह तआ़ला तुम्हारी तौबा को क़बूल फ़रमा लेंगे।

यह बुख़ारी शरीफ़ की रिवायात है, सब लोग पढ़ते हैं मगर उनको यह बात समझ में नहीं आती कि बैअ़त करनी क्यों ज़रूरी होती है। अब हदीस में जो फ़रमाया गया कि उसे नेकों की बस्ती की तरफ़ भेजा गया, वह बन्दा इतना भी कह सकता था कि मियाँ दिल में तौबा कर लो, क़बूल हो जायेगी। मगर नहीं! उसे नेक लोगों की बस्ती की

तरफ़ भेजा गया। वहाँ जाओ, वे तुम्हें तौबा के कलिमात पढ़ायेंगे। फिर तुम्हारी तौबा जल्दी क़बूल हो जायेगी।

मालूम हुआ कि तौबा के लिए ये कलिमात किसी अल्लाह वाले के सामने पढ़ने पड़ते हैं, उनके पीछे-पीछे ये कलिमात दोहराने पड़ते हैं, तब यह पक्का काम होता है। अल्लाह तआ़ला इस तरह जल्दी तौबा क़बूल कर लेते हैं।

बहरहाल! यह नीयत करके चल पड़ा। अल्लाह की शान देखिये कि उसको रास्ते में मौत आ गयी। जब मौत आई तो जन्नत के भी फ़रिश्ते आ गये कि इसको हम लेकर जायेंगे यह तौबा की नीयत से निकला था, जहन्नम के फ़रिश्ते भी आ गये। नहीं-नहीं! इसने तो सौ बन्दों को क़त्ल किया, यह दोज़ख़ में जायेगा। दोनों में आपस में बहस हुई। अल्लाह के दरबार में मामला पेश हुआ, रब्बे करीम ने फ़रमायाः फ़ासले की पैमाईश करो, अगर यह अपने घर के क़रीब है तो जहन्नम की तरफ़ लेकर जाओ। और अगर नेक लोगों की बस्ती के क़रीब है तो फिर इसे जन्नत की तरफ़ लेकर जाओ।

फ़रिश्तों ने पैमाईश की। हदीसों में आता है कि उस आदमी को जिस जगह मौत आई थी वह बिल्कुल दरमियान की जगह थी, आधा-आधा फ़ासला था, लेकिन मरते-मरते लाश नेकों की बस्ती की तरफ़ गिर गयी थी और वह इतनी ही उस तरफ़ क़रीब हो गयी थी, चुनाँचे वह थोड़ी सी नेकों की बस्ती की तरफ़ थी, तो अल्लाह तआ़ला ने उसकी तौबा को क़बूल करके उसको जन्नत अ़ता फ़रमा दी।

सोचने की बात है कि मरते-मरते भी अगर लाश नेकों की तरफ़ गिर जाये तो अल्लाह इसका भी लिहाज़ कर लेते हैं। तो जो बन्दा जीते-जागते अपने होश-व-हवास सही होने की हालत में अल्लाह वालों की महफ़िल में आकर बैठे और सच्चे दिल के साथ अपने गुनाहों से तौबा करे, और तौबा के कलिमात पढ़ ले तो अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा को क्यों नहीं क़बूल फ़रमाते।

लिहाज़ा आज की इस महफ़िल में तौबा के कलिमात पढ़ाये जायेंगे, जो भी चाहती हैं कि पिछले गुनाहों से सच्ची तौबा करें, आईन्दा नेक आमाल वाली ज़िन्दगी गुज़ारें, उनको चाहिये कि ये तौबा के कलिमात पढ़ें और जो बाक़ायदा बैअ़त होकर ज़िक्र सीखना चाहती हैं वे दिल में यह भी नीयत कर लें कि हमारा दिली और रूहानी ताल्लुक़ इन बुज़ुर्गों से होता हुआ नवी करीम अ़लैहिस्सलाम की ज़ाते बा-बरकात तक पहुँचेगा। तो वे इस नीयत के साथ तौबा के ये कलिमात पढ़ेंगी। अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त उनको रूहानी निस्बत भी अ़ता फ़रमा देंगे। तौबा भी उनकी क़बूल होगी। परवर्दिगारे आ़लम का यह मामला है।

देखिये यह आ़जिज़ इस क़ाबिल नहीं कि आपको तौबा के कलिमात पढ़ा सके, अपने आपको इसका अहल नहीं समझता, लेकिन मजबूर है, माज़ूर है, चूँकि मेरे शैख़ ने मुझसे अ़हद लिया है कि तुम यह अ़मल आगे लोगों को बताओगे और कोई यह अ़मल करके तुमसे इस सिलसिले की बरकतें हासिल करना चाहे तो वह कर सकेगा। बस एक तरह से सर के ऊपर एक बोझ को सामने रखते हुए ये कलिमात पढ़ा दिये जाते हैं। बस एक नुमाईन्दा समझ लीजिएगा।

जिस तरह एक आदमी का कोई वकील होता है, वह वकील अपनी तरफ़ से कुछ नहीं कर रहा होता बल्कि पीछे से उसको जैसे हुक्म होता है वह तो वैसे ही कर रहा होता है। बस यूँ ही समझिये। मेरी अपनी नेकी तो शून्य है, मेरी मेहनत शून्य है, मैं अपनी ज़िन्दगी में कुछ न कर सका जो मुझे करना चाहिये था। लेकिन मेरे बुज़ुर्गों और बड़ों की दुआ़यें और उनकी कृपायें मेरे ऊपर रही हैं और उन्होंने मुझे यह बोझ दे दिया कि तुमको सारी ज़िन्दगी इस पैग़ाम को पहुँचाना है। तो यह डाकिया बनकर मैं आप तक डाक पहुँचा रहा हूँ। आपका एक ताल्लुक़ इन बुज़ुर्गों के दिलों से जुड़ता हुआ नबी अ़लैहिस्सलाम तक पहुँचेगा। इसके बदले में अल्लाह तआ़ला आपकी ज़िन्दगी में

बरकतें देंगे और आपके लिए अल्लाह तआला नेक बनना आसान फ़रमा देंगे। रब्बे करीम हमारे गुनाहों को माफ फ़रमा दे और हमें अपने पसन्दीदा बन्दों में शामिल फ़रमा ले। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَـا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ○